सहजयोग में
पुरुष एवं महिलायें

परमपूज्य श्रीमाताजी निर्मलादेवी द्वारा दिया गया परामर्श

सहजयोग में पुरुष एवं महिलायें

('मेन एण्ड वीमेन इन सहजयोगा' का हिंदी अनुवाद)

परमपूज्य श्रीमाताजी निर्मलादेवी
(सिलेक्टेड कोट्स)

अनुवाद

श्रीमती सुनीता दत्त

समर्पण

यह पुस्तक परम पूज्य श्रीमाताजी निर्मला देवीजी को अत्यंत प्रेम व श्रध्दा सहित समर्पित है जो कि इस में दिये गए समस्त ज्ञान का स्रोत है ।

श्रीमाताजी ने अपने जीवन से अनेक स्त्रियों और पुरुषों को प्रेरित किया है, उन्होंने असाधारण जीवन व्यतीत किया है जो कि हमारे अत्यंत सुन्दर स्वप्नों का द्योतक है ।

श्रीमाताजी, एक बच्चे के रुप में, एक कन्या के रुप में, एक स्त्री के रुप में, एक बेटी, एक पत्नी, एक माँ, एक नानी और एक आध्यात्मिक माँ के रुप में एक उदाहरण रही हैं।

श्रीमाताजी और उनके पति सर सी.पी. श्रीवास्तव ने जीवन के भिन्न भिन्न पहलु में अगणित स्त्री-पुरुष के स्वरूप और कर्तव्यों को दिखाया है : परिवार में, समाज में, समुदाय में, सामूहिकता में और आध्यात्मिकता में ।

जय श्रीमाताजी

परिचय

यह पुस्तक परम पूज्य श्रीमाताजी निर्मला देवीजी को अत्यंत प्रेम व श्रध्दा सहित समर्पित है जो कि इस में दिये गए समस्त ज्ञान का स्रोत है ।

परम पूज्य श्रीमाताजी ने अनेक अवसरों पर स्त्री-पुरुषों के कर्तव्यों के विषय में वर्णन किया है और परामर्श दिया है।

इस पुस्तक में इस ज्ञान को उपलब्ध कराने की चेष्टा की गई है। इस मे श्रीमाताजी निर्मला देवी व्दारा बताए गए स्त्री-पुरुषों के कर्तव्यों और सम्बन्धों को बताया गया है। कई विषयों की पुनरावृत्ती हुई है, उन्हे उनके विषय के अनुसार विभिन्न वर्गों में विभाजित किया गया है।

यह संकलन पूर्णतया श्रीमाताजी के संदेश का स्थान तो नही ले सकता है फिर भी यह स्त्री-पुरुषों के सम्बन्धों पर, श्रीमाताजी के दृष्टिकोण पर प्रकाश डालता है। हमारा सब को यह परामर्श है कि श्रीमाताजी के मौलिक भाषणों का अनुसरण करे, यह केवल अर्न्तनिर्देश है ।

स्त्री-पुरुष के संकलन का यह केवल प्रथम भाग है। इस विषय पर पूर्ण जानकारी के लिए दोनो भागों को पढ़ना उत्तम है। यह परामर्श है कि पुरुष भी स्त्रियों से सम्बन्धित अध्याय पढे और स्त्रियाँ पुरुषों के अध्याय पढ़े। यह एक दूसरे के दोषों को ढूंढने के लिए नहीं है, बल्की इस समझ के साथ कि माँ के गुणों को हम सब अपने अन्तर्निहित कर सकते हैं चाहे हम स्त्री हैं या पुरुष ।

हम आशा करते हैं कि श्रीमाताजी की शिक्षा हमारे अन्दर प्रतिध्वनित होगी और हम अपना जीवन प्रेम सन्मान और समन्वय के साथ व्यतीत कर सके ।

जय श्रीमाताजी

स्वीकृति

सहजयोग में बच्चों को कैसे बडा किया जाए (रेजिंग चिल्ड्रन इन सहजयोगा) पुस्तक के प्रकाशन के बाद सहज ही यह विचार आया कि स्त्री-पुरुष के सम्बन्ध व कर्तव्यों के विषय में भी एक पुस्तक संकलित करी जानी चाहिए।

जब हमने श्रीमाताजी के भाषण सुनने शुरू किये तो हमने उनकी विशालता का अनुभव किया-जल्द ही एक पुस्तक दो में बदल गई। पहली पुस्तक में स्त्री-पुरुष के कर्तव्य और विशेषताएं हैं और साथ ही भाई-बहन का रिश्ता। दुसरी पुस्तक में विवाहित जीवन के विभिन्न पहलू हैं।

यह पुस्तक एक सामूहिक प्रयत्न है। जिस-जिस ने इसमें योगदान दिया है, उन सबको हम हार्दिक धन्यवाद देते हैं जिस कारण यह पुस्तक बन सकी हम आशा करते हैं कि आप इस का आनन्द उठाएंगे।

टिप्पणी

इस संकलन में अनेक ऐसे विषय हैं जो श्रीमाताजी के भाषणों में कई बार दोहराये गये हैं। इन्हें उनके विषय के अनुसार वर्गीकृत किया गया है। इस भाग के शुरू में कुछ टिप्पणियाँ विषय से परिचित कराने के लिये टेढ़े अक्षरों में छापी गयी है। यह शोधक की व्याख्या है और श्रीमाताजी की नहीं है। जो भी उल्लेख ''...'' इनके मध्य में हैं, वे श्रीमाताजी द्वारा कहे गये हैं। प्रारम्भ के शिर्षक बड़े अक्षरों में हैं ताकि हम एक शिघ्र दृष्टि विषयों पर डाल सकें। पुस्तक के अन्त में, इस संकलन में श्रीमाताजी द्वारा दिए गए भाषणों का जो उपयोग किया गया है, उनकी परिशिष्ट सूची है।

विषय-सूची

I	**विश्व में संतुलन**	**9**
	संतुलन रखना	11
	स्त्रियों और पुरुषों में अन्तर	15
II	**पुरुषों के विषय में**	**25**
	विशेषताएं	26
	पुरुषों को परामर्श	40
III	**स्त्रियाँ**	**63**
	श्रीमाताजी निर्मला देवी	65
	महान स्त्रियों के आदर्श	68
	स्त्रियों की विशेषताएं	89
	स्त्रियों को परामर्श	125
IV	**पवित्रता और अबोधिता**	**163**
	अबोधिता का महत्व	165
	पवित्रता की शक्ति	177
	पाश्चात्य समाज की कल्पनाएं	193
	लज्जा का बोध होना है	204
	दोष का उद्गम	208
V	**भाई-बहन का सम्बन्ध**	**211**
	एक विशुद्ध सम्बन्ध	213
	बहन और भाई की भूमिकाएं	224
	रक्षा बन्धन की परम्परा	232
	मर्यादाओं का सिद्धान्त	236
	प्रेम के स्वांग के विषय में एवं प्रेम में बंधना	243
	श्रीमाताजी द्वारा पुरुष एवं महिलाओं पर दिये गये प्रवचन की सूची	**250**
	श्रेय (क्रेडिट)	**253**

विश्व में संतुलन

जब सृष्टि की रचना के पूर्व जब कुछ भी नहीं था, ईश्वर एक ओर अविभाजित थे। प्रारम्भ में केवल ब्रह्म थे जिसे श्रीमाताजी ने बिना आकार की ऊर्जा कहा है। इस ऊर्जा का स्वयं में ही अस्तित्व है:इच्छा करने वाली, प्रबन्ध करने वाली और प्रेम करने वाली। क्रमशः इस ऊर्जा में सृष्टि की रचना की इच्छा हुई। जब यह इच्छा बढ़ी तो अणु के केन्द्र बिन्दु ने आकार लिया। इस केन्द्रबिंदु को सदाशिव-ईश्वर कहते हैं। इसके आस-पास एक मंडल होता है, जो ईश्वर की शक्ति है, आदिशक्ति। श्रीमाताजी ने कहा है कि इस इच्छा को आदिशक्ति को दे दिया गया और इस प्रकार रचना का खेल शुरू हुआ।

इस खेल में सदाशिव साक्षी हैं-रचयिता आदिशक्ति के खेल के दर्शक। इस प्रकार हम देखते हैं कि सृष्टि की रचना आकार लेना शुरू करती है, जब आदि, आकारहीन ऊर्जा स्वयं को स्त्री और पुरुष के पहलु में विभाजित करती है: शिव और शक्ति।

जिन व्यक्तियों ने श्रीमाताजी के भाषणों को पढ़ा है, उन्होंने ध्यान दिया होगा कि उन्होंने स्त्रियों और पुरुषों के कर्तव्यों के विषय में बताया है। इन कर्तव्यों को धारण करने से पारिवारिक और सामाजिक संतुलन बना रहता है।

संतुलन रखना

यह संतुलन बहुत समय पूर्व से बनाया गया है :

''... बहुत समय पूर्व, राधा और कृष्ण के अस्तित्व के समय से। राधा शक्ति थी और कृष्ण वे थे कि जो व्यक्त करते थे। यह स्थितिज और गतिज हैं। और लोग केवल कृष्ण के बारे में जानते हैं, पर राधा शक्ति थी। जब कृष्ण को कंस का वध करना था तब उन्हें राधा से कहना पड़ा ऐसा करने के लिए। वे राधा ही थी जो सब करती थीं। उन्हें नृत्य करना पड़ता था और वे उनके पाँव दबाते थे। उन्होंने कहा कि, 'अब तुम इससे थक गई होगी'। उन्होंने नृत्य क्यों किया ? क्योंकि उनके नृत्य किए बिना कार्य गतिशील नहीं हो पाते।

सो, यह इतना पारस्परिक आश्रित है। यह इतना पारस्परिक आश्रित है, जितना कि बत्ती और प्रकाश-इन दो चीज़ों को आप अलग नहीं कर सकते। यदि इस बात को आप समझ सकते हैं तब यह संतुलन सम्पूर्णतया सुसंगत है। यह ईश्वर और उनकी शक्ति के बीच है। बिल्कुल एक है। आप सोच ही नहीं सकते कि यह कैसे ईश्वर से एकरूप हैं और उनकी शक्ति। उनकी शक्ति, उनकी इच्छा एक ही है। उनमें कोई अन्तर नहीं है। पर मानव जाति में आप विघटित लोग हैं। आपकी इच्छा भिन्न है, आपकी सोच भिन्न है, आपकी माँग भिन्न है, सब कुछ ही विघटित है। इसलिये आप समझ नहीं सकते हैं। इसलिये शादियाँ भी विघटित हैं ...।''

(१९८०, विवाह का महत्त्व, यू.के)

आप पूरे विश्व में असंतुलन करते हैं :

''... परन्तु आप वह सब मत करिये जो पुरुष करना चाहते हैं या आप वह सब नहीं करिये जो स्त्रियाँ करना चाहती हैं। जैसे कि पुरुष खाना बनाये और स्त्रियाँ गाड़ी चलाएं। यह गलत बात है। पुरुषों को, सब पुरुषों वाले कार्य आने चाहिए और स्त्रियों को स्त्रियों वाले कार्य। उन्होंने जरूर सीखना है। उन्हें अपना हृदय उसमें लगा देना चाहिए। मेरा कहने का अर्थ है कि स्त्रियों में भी

समान रूप से बुद्धिमत्ता हो सकती है। पुरुषों में भी समान रूप से बुद्धिमत्ता हो सकती है। स्त्रियाँ दायीं ओर को जा सकती हैं और पुरुष बायीं ओर जा सकते हैं, इसमें कोई शक नहीं, परन्तु इससे आप सारे विश्व में असन्तुलन पैदा कर देते हैं, यही मुख्य विषय है। ऐसा नहीं है कि, ऐसा करने से आप किसी से कम या ज़्यादा हो जाते हैं। यह सोच आपके मस्तिष्क से पूर्णतया निकल जानी चाहिए। पुरुष सोचते हैं कि, 'मैं आदमी हूँ, जो पैंट पहनता है।'

'ठीक है, आप पैन्ट पहनिये, पर हम सुन्दर स्कर्ट पहनते हैं।' ठीक है, इस तरह से लेना चाहिए...''

(१९८०, शादी का महत्त्व, यू.के)

एक दूसरे के साथ स्पर्धा करना गलत है :

''... और उस सिलसिले में स्त्रियाँ भी पुरुषों के साथ मुकाबला करने

लगती हैं कि क्या गलत है, वे पुरुषों की नकल करने लगती हैं, और ऐसा करने से, जब वे एक दूसरे के साथ स्पर्धा करने लगती हैं, तो पारिवारिक जीवन में बाधा आ जाती है, घर की स्त्री असन्तुष्ट हो जाती है, उसका अहंकार सन्तुष्ट नहीं होता।

पूराने समय में, पुरुष जंगल में जाता था और लकड़ी काटता था, घर लाता था और स्त्री को देता था और स्त्री खाना पकाती थी। कोई समस्या नहीं थी, वस्तु विनिमय व्यवस्था थी। वह पत्नी को गृह कार्य करते देख पाता था।

आजकल पति पैसे कमाता है और स्त्री खर्चती है, मेरा तात्पर्य है कि खर्चना भी एक कार्य है, परन्तु पुरुष को लगता है कि मैं कमाने वाला सदस्य हूँ और वह खर्च करने वाली।

इसलिये उसने कहा, 'ठीक है, मैं भी कमाऊंगी।' परन्तु इसमें दोनों के बीच बहुत अधिक प्रतियोगिता होती है। क्या होता है कि परिवार पीड़ित होता है, बच्चे पीड़ित होते हैं और ऐसे में, पति को पत्नी से समस्या होती है और पत्नी को पति से। इसे आप बायीं नाभि की उंगली के सैन्टर पर महसूस कर सकते हैं। यदि उस उंगली में पकड़ आ रही है तो उसका अर्थ है, कि आपके पारिवारिक सम्बन्ध में कुछ खराबी है, तो आपको समाधान करना है या पति को समाधान करना है। यह एक महत्वपूर्ण बात है...''

(१९८१, सार्वजनिक कार्यक्रम, सिडनी)

स्त्रियों और पुरुषों में अन्तर

स्त्रियाँ, स्त्रियाँ हैं और पुरुष, पुरुष हैं :

''... उत्तम रिश्ते के लिए, पवित्र सम्बन्ध होना चाहिए और वह समझदारी से होना चाहिए, माँ, माँ हैं, पिता, पिता हैं, बहन, बहन है, भाई, भाई है, यह सब अलग हैं, भिन्न-भिन्न प्रकार के सम्बन्धों को समझना चाहिए। स्त्रियों को जरूरी है कि वे समझें कि वे स्त्रियाँ हैं और पुरुषों को समझना चाहिए कि वे पुरुष हैं।

अपने स्वयं के प्रति सम्बन्ध भी बहुत महत्त्वपूर्ण है। स्त्रियों को पुरुष नहीं बनना चाहिए-बन भी नहीं सकते। पुरुषों को स्त्रियाँ बनने की जरूरत नहीं है। यह गलत है। क्योंकि मूलत: वे अलग हैं। उनका जन्म अलग रूपों में हुआ है। क्या अन्तर है? पुरुष अधिक सतर्क होते हैं, उसे मशीनों की अधिक जानकारी होती है, विस्तृत रूप से। स्त्री नमुना देखेगी। स्त्री धुन को अधिक सुनती है और पुरुष की नज़र वाद्यों की ओर अधिक होती है। इस प्रकार की प्रकृति से ईश्वर ने आपको बनाया है। आखिरकार किसी को यह देखना है और किसी को वह। दोनो ही सुन्दर हैं। कोई भी कम या ज़्यादा नहीं हैं, पर हर स्त्री को स्त्री होने का आनन्द उठाना चाहिए और हर पुरुष को पुरुष होने का आनन्द।

परन्तु पुरुष होने का अर्थ यह नहीं है कि आप बेवकूफी से सोचें कि उत्क्रान्ति में आप स्त्री से ऊँचे हैं और उस पर आक्रमण करें। या स्त्रियाँ पुरुषों पर रोब जमायें, यह सोच कर कि रोब जमा कर वे उन्हें ठीक कर सकती हैं। इस तरह से वे उन्हें कभी भी ठीक नहीं कर पायीं। पुरुष एकदम बन्द गोभी के समान हो गये हैं। जहाँ भी स्त्रियाँ रोब जमाती हैं, पुरुष बन्द गोभी बन जाते हैं। उन्होंने उन्हें ठीक नहीं किया है ...।''

(१९८३, दिवाली पूजा, यू.के.)

विशेषताओं के अन्तर को समझने की ज़रूरत है :

''... हम एक ही पथ पर जा रहे हैं, परन्तु हमें जानना चाहिए कि कोई बायीं ओर हैं और दूसरा दायीं ओर। बाएं को बाएं में ही रहना है। यदि बायाँ,

दायीं ओर जाना शुरू कर दे, तो हमारे पास एक ही पहिया बचेगा। हम इस बारे में क्या करने वाले हैं? हम सब एक ही मार्ग पर जा रहे हैं, कोई दो मार्ग नहीं हैं। संतुलन देने के लिए दो पहिये चाहिए। लोग इस बात को नहीं समझते कि हम सब एक ही पथ पर जा रहे हैं। वे सोचते हैं कि एक पहिया दायें को जाएगा और दूसरे को बायें को मुड़ना है। तो सोचिये कि ऐसे परिवार की क्या स्थिति होगी। हम एक ही पथ पर चल रहे हैं। केवल इस बात की समझ की आवश्यकता है। एक को हृदय की शक्तियों के साथ रहना है और दूसरे को विवेक बुद्धि और समझदारी से रहना है।

जब विवेक बुद्धि की स्थिति होती है तो उसे हृदय की ओर झुकना पड़ता है, क्योंकि वह ऐसी स्थिति में पहुँचता है कि जिसे वह जानता नहीं है। तब, वह हृदय की ओर आता है, जब इस बात को स्त्रियाँ समझ जाती हैं कि यह उनके स्वयं के भीतर ही है। पर, आपको हृदय की शक्ति का पोषण करना चाहिए। पर आप उनके साथ हर बात में स्पर्धा करती हैं। यदि वह घोड़े पर बैठता है तो, 'मैं क्यों नहीं'। यदि वह गाड़ी चला सकता है तो, 'मैं भी चला सकती हूँ'। आप देखिये कि इसी में बुद्धिमत्ता है कि कई कार्य आप परित्याग करें...''

(१९८०, विवाह का महत्त्व, यू.के.)

रथ के दो पहिये, एक बायीं ओर व एक दायीं ओर :

''... इसी कारण इतने तलाक हो रहे हैं और समस्यायें हैं, स्त्रियाँ अपने अधिकार की माँग करती हैं। वे अपनी हद से बाहर चली जाती हैं, वे भी रोब जमाती हैं और पुरुष भी रोब जमाते हैं, इस प्रकार से हम इसका हल नहीं ढूंढ पाते।

हमें यह जानना है कि, हम एक रथ के दो पहिये हैं, एक बायीं ओर व एक दायीं ओर। वे एक सम नहीं हैं, वे दो प्रकार के हैं, एक बायीं ओर व एक दायीं ओर, परन्तु वे समान हैं। वे जो भी करते हैं, वो एक सम है। उनका एक सम सम्मान करना चाहिए...''

(१९८१, सार्वजनिक कार्यक्रम, सिडनी)

दोनों पहिये बराबर हैं पर एक समान नहीं :

''... सो, एक दूसरे पर कोई रोब नहीं है, परन्तु हमें समझना चाहिये कि

हम एक रथ के दो पहिये हैं और दोनों पहिये बराबर के हैं पर समान नहीं।

उदाहरणतया दायाँ, बायीं तरफ़ नहीं जोड़ा जा सकता है और बायाँ दायीं ओर नहीं जोड़ा जा सकता है। वे बराबर हैं, यदि वे बराबर नहीं हैं तो वे हिल नहीं सकते, वे केवल गोल-गोल घूमते रहेंगे, झगड़ते हुए। परन्तु एक समान नहीं हैं, सो, यदि बायाँ, दायीं ओर आने लगे तो वह कभी भी उचित तरीके से नहीं जुड़ेगा। प्रकृति ने हमें दो टाँगें दी हैं, एक नहीं। सो, हम अपनी टाँगे उस प्रकार से बदल नहीं सकते...''

(१९८६, बैल्जियम और हौलेण्ड की भूमिका, बैल्जियम)

एक स्त्री को एक स्त्री के समान ही कार्य करना चाहिए :

''... अब श्रीराम जी के सम्बन्ध में, उन्होंने अपनी पत्नी को छोड़ा। सीताजी ने भी उन्हें छोड़ दिया। पर उन्होंने उन्हें इस प्रकार छोड़ा जैसे कि एक स्त्री करती है और रामजी ने उन्हें ऐसा छोड़ा जैसे कि एक पुरुष करता है। सीताजी ने भी उन्हें ऐसे छोड़ा कि जो एक स्त्री के लिए उपयुक्त हो। रामजी ने इसे इस प्रकार से किया कि जो एक राजा के लिए उपयुक्त हो।

इसी प्रकार, जब एक स्त्री कार्य करती है तो उसे एक स्त्री के समान कार्य करना चाहिए। जो एक पुरुष करता है, वही काम वह करे तो भी उसे एक स्त्री के समान होना है या पुरुष को एक पुरुष के समान होना है...''

(१९८७, श्रीराम पूजा, स्विटजरलैंड)

जो दूसरे के पास हो उसकी माँग नहीं करनी चाहिए :

''... अब आता है प्रश्न रोब जमाने का-स्त्री पुरुष पर रोब जमा रही है या पुरुष स्त्री पर रोब जमा रहा है। सहजयोग में इसका प्रश्न ही नहीं उठता। इसमें किसी भी प्रकार का कोई रोब नहीं होता है, पर इस बात का ख्याल रखना है कि बायीं ओर में बायीं ओर ही होना चाहिए और दायीं ओर में दायीं ओर होना चाहिए। जो दूसरों के पास है, उसकी माँग नहीं करनी चाहिए।

जैसे कि यदि पुरुष कहना शुरू करे कि, 'क्यों न हमें बच्चे हों, हमें भी बच्चे होने चाहिए, स्त्रियों को ही क्यों बच्चे हों?' ऐसा नहीं हो सकता और

यदि स्त्रियाँ कहने लगे कि, 'चलो, हम भी दाढ़ी रखते हैं।' कल को वे कह सकती हैं, 'हमें दाढ़ी होनी चाहिए और हमें मूछें भी होनी चाहिए।'

तो यदि इस प्रकार की माँग की जाए तो, ऐसा मुमकिन नहीं हो सकता। यह तरीका नहीं है। इन्सान के स्तर पर ये पूर्णतया दो अलग-अलग व्यक्तित्व हैं। निम्न जानवर के स्तर पर, यदि आप हरमाफ्रोडाइट के स्तर पर जाये, तब आप देख सकते हैं कि उनमें दोनों प्रकार के लिंग मौजूद होते हैं। जिसे कि तकनीकी भाषा में कहते हैं हरमाफ्रोडाइट...''

(१९८७, विवाह, कोल्हापूर, भारत)

स्त्रियों और पुरुषों को अपनी अपनी भूमिका सराहनी चाहिए :

''... आप कल्पना कर सकते हैं कि जब आप को केंचुआ बनना हो, तो आपमें दोनों लिंग आ जाते हैं, आप या पुलिंग के समान कार्य कर सकते हैं या फिर स्त्रीलिंग के समान। पर जब आप अपने उत्क्रांती के मार्ग पर बढ़ने लगते हैं धीरे-धीरे, तो आप जानने लगते हैं कि मनुष्य के स्तर पर दो अलग-अलग समूह हैं। जब आप मनुष्य के स्तर पर आते हैं तब स्त्रियाँ स्त्रियाँ होती हैं और पुरुष पुरुष होते हैं।

जितना अधिक वे स्त्रियाँ स्त्रियों के समान और पुरुष पुरुषों के समान होते हैं, तब वे प्रशंसनीय बन जाते हैं। नहीं तो ये आधे रास्ते के व्यक्ति ही रह जाते हैं, न तो वे अच्छे पति बन सकते हैं और न ही अच्छी पत्नियाँ। न ही वे अच्छा वैवाहिक जीवन पाते हैं और न ही वे किसी चीज़ का आनन्द ले पाते हैं।

यह बड़ा ही महत्त्वपूर्ण है कि आप एक दूसरे के प्रशंसा-सूचक बनें, सहजयोग के लिए। जैसा कि मैंने कहा कि रोब जमाने का प्रश्न ही नहीं उठता, स्त्री अपना स्वयं का कर्तव्य निभाती है, पुरुष को इस बात की सराहना करनी चाहिए और पुरुष अपना स्वयं का कर्तव्य निभाता है, यह स्त्री को भी सराहना चाहिए...''

(१९८७, विवाह, कोल्हापूर, भारत)

सूर्य पृथ्वी नहीं बनना चाहता और पृथ्वी सूर्य नहीं बनना चाहती :

''... मुझे इस बात से गर्व है कि मैं एक स्त्री हूँ क्योंकि स्त्रियाँ अनेक कार्य कर सकती हैं, जो पुरुष नहीं कर सकते। स्त्री भूमि माँ के समान हैं, सो हम कह सकते हैं कि पुरुष सूर्य के समान हैं। दोनों को जुड़ना है। सूर्य को हटाया जा सकता है, पर पृथ्वी को नहीं। रात के समय सूर्य नहीं होता फिर भी हम रहते हैं।

परन्तु भूमि माता को देखिए, उसे कितना सहना पड़ता है। देखिये, वह कितनी समझदार है। वह बिना किसी शिकायत के सुन्दर फूल, सुन्दर पेड़ और सब कुछ हमारे लिये बनाती है और तो और, वह हमारा पोषण करती है, जबकि हम उसके विरोध में कितने सारे पाप करते हैं। पर सूर्य पृथ्वी नहीं बनना चाहता और पृथ्वी सूर्य नहीं बनना चाहती। वे जानते हैं कि वे विशेष कार्य के लिये स्थित हैं...''

(१९८८, इन्ट्यूशन अँड वीमेन, पैरिस)

पुरुष राजनैतिक और आर्थिक स्थिति के लिए जिम्मेदार हैं और स्त्रियाँ समाज के लिए जिम्मेदार हैं :

''... परन्तु आजकल नये प्रकार के विचार उभर आये हैं। पुरुष भी स्त्रियों के प्रति बड़े क्रूर और आक्रामक हो गये हैं। उसके परिणाम स्वरूप हम देखते हैं कि पुरुषों के प्रति बड़ा विरोध आ गया है। एक प्रकार की बड़ी दरार स्त्री और पुरुषों के बीच में बन गई है। और जिस प्रकार पुरुष लम्पट, दूषित हो गये हैं, दूसरी खराब स्त्रियों के पास जाते हैं। अच्छी औरतों ने भी सोचा, 'हम भी क्यों न वैसे बन जाए?' और उन्होंने भी गलत कार्य करने शुरू कर दिए, जो उन्हें नहीं करने चाहिए थे। इस प्रकार पूरा समाज बिखर गया है।

अब पुरुष राजनीतिक व आर्थिक स्थिति के लिए जिम्मेदार हैं और देश के प्रशासक भी, पर स्त्रियाँ समाज के लिए जिम्मेदार हैं। चाहे वह घर में हैं या बाहर, चाहे वह घर में कार्य करती हैं या बाहर कार्य करती है, वह समाज को सँभालने के लिए जिम्मेदार हैं। कभी ऐसा लगता है कि स्त्री को दबाया जा रहा है या पति पत्नी को दबा रहा है, या पति का परिवार उसे दबा रहा है, पर यह स्त्री की गुणवत्ता ही है जो समाज के स्तर को ऊपर उठाती है, न केवल स्तर,

पर परिवार में भी उसकी इज्जत होती है।

गृहलक्ष्मी के रूप में बड़ा महत्त्वपूर्ण कर्तव्य है। शायद हम कभी इसे जान नहीं पाते। अब हम देखें कि यहाँ कितनी लाईटें हैं। बिजली भी चल रही है पर इस बिजली का स्रोत क्या है? सो हम कह सकते हैं कि पुरुष केवल गतिसंबंधी ऊर्जा हैं, पर शक्ति क्या है, वह घर की स्त्री है...''

(१९९३, श्री फातिमा पूजा, टर्की)

आपको पता होना चाहिए कि पति और बच्चों को कैसे खुश रखना चाहिए :

''... पुरूष का कार्य है, राजनीति, आर्थिक, पैसा कमाना। उन्होंने इन सब को बूरी तरह से चौपट कर दिया है, मैं आपके साथ सहमत हूँ, पर आपका कार्य है समाज को बनाना और समाज को बनाने के लिये, पहले आपको मालूम होना चाहिए कि बच्चों को कैसे खुश रखना है, पति को कैसे खुश रखना है, लोगों की कैसे मदद की जाए...''

(१९९७, नवरात्रि पूजा की पूर्व संध्या, कबैला)

ईश्वर ने स्त्रियों को स्त्रियों के समान और पुरुषों को पुरुषों के समान बनाया है :

''... स्त्रियों की अपनी आदतें होती हैं, वे स्त्रियाँ हैं। स्त्रियाँ, स्त्रियाँ ही रहेगी और पुरुष, पुरुष ही रहेंगे। पुरुष अपनी घड़ियाँ दस बार देखेंगे। स्त्रियाँ शायद एक बार, या उनकी घड़ियाँ गुम गई होती हैं या फिर खराब। यदि वे असल में स्त्रियाँ हैं तो वे पुरुषों के समान उछलती नहीं रहती। वे अलग हैं, पर वे स्त्रियाँ हैं और आप पुरुष हैं और ईश्वर ने ही पुरुष और स्त्रियाँ बनाए हैं। यदि उन्हें एकलिंग बनाना होता तो वे एकलिंग बनाते। उन्होंने ऐसा नहीं किया। आप जिस लिंग में पैदा हुए हैं, उसे श्रद्धा, इज्जत व मान के साथ स्वीकार करें, दोनों ने...''

(१९८८, श्री फातिमा पूजा, स्विटजरलैंड)

हमें दूसरों से उम्मीद नहीं करनी चाहिए कि वे आपके जैसे हों :

''... हम पति-पत्नी हैं क्योंकि हम एक दूसरे से प्रेम करते हैं, हम एक-दूसरे के प्रशंसा-सूचक हैं, स्त्री, स्त्री है व पुरुष, पुरुष है। पुरुषों ने स्त्री से यह

उम्मीद नहीं करनी चाहिए कि वे भी उनके समान बहुत ही तेज़ हो और स्त्रियों को यह उम्मीद नहीं करनी चाहिए कि पुरुष उनके समान हों-अति उदार। स्त्रियों की कुछ विशेषतायें होती हैं व पुरुषों की कुछ अपनी...''

(१९९३, श्री फातिमा पूजा, टर्की)

स्त्री पृथ्वी माँ के समान है व पुरुष सूर्य के समान :

''... आप बहुत संवेदनशील और समझदार हैं और मैंने जो भी आपसे कहा है, उसका आप बुरा नहीं मानें। मैं माँ हूँ और मुझे आप को सच्चाई बतानी है और आपको बुरा नहीं मानना चाहिए, यदि आप समझती हैं कि मैं आपकी माँ हूँ। यह माँ का कार्य है : उसे धैर्य रखना होता है, प्यार व स्नेह और बुद्धिमानी। शायद हम स्त्रियाँ यह नहीं समझ पातीं कि हम कितनी महत्त्वपूर्ण हैं। पुरुष राजनीति, आर्थिक कार्य कर सकते हैं और उन सब का चौपट भी कर सकते हैं, पर स्त्रियाँ समाज के प्रति जिम्मेदार हैं। वे समाज बना सकती हैं और समाज बिगाड़ भी सकती हैं। जब भी कहीं अच्छा समाज होता है, बच्चे जहाँ अच्छे होते हैं, परिवार अच्छे होते हैं और जहाँ शान्ति होती है, वहाँ स्त्रियाँ इनकी जिम्मेदार होती हैं।

स्त्री, जिस का कार्य बच्चों को संभालना होता है, विश्व पर शासन कर सकती है। स्त्री को कभी भी यह नहीं सोचना चाहिए कि वह किसी भी प्रकार पुरुष से कम है। स्त्री इस भूमि माता के समान है और पुरुष सूर्य के समान। भूमि माँ को देखें कि कैसे वह हमें संभालती है, हम कैसे उसे दुःख देते हैं और वह कैसे हमारा ध्यान रखती है, सो, स्त्री का सब से बड़ा गुण है, उसका धैर्य उसका प्रेम और उसकी बुद्धि।

मैं आपको एक अखबार दिखाना चाहती थी, वह लाना भूल गयी। अंग्रेजी का अखबार जिसमें एक स्त्री को दिखाया गया है, जो पुरुष के समान दिख रही थी और जिसके चेहरे से पुरुष के समान बाल उग रहे हैं। मैं कभी भी पुरुष बनना पसन्द नहीं करूंगी क्योंकि पुरुष को इतने सारे मालिकों (बौस) को प्रसन्न करना पड़ता है व जीवन में संघर्ष करना पड़ता है, जब कि स्त्री को केवल एक को ही प्रसन्न करना पड़ता है और वह है, उसका पति। अतः, समाज को स्त्रियों द्वारा ही ठीक किया जा सकता है, न कि पुरुषों द्वारा...''

(१९९४, लेडीज़ पब्लिक प्रोग्राम, ट्यूनिस)

बच्चों के विकास एवं पति की सुरक्षा के प्रति स्त्रियों की जिम्मेदारी :

''... पुरुष, पूर्ण रूप से अलग प्रकार के होते हैं, इस बात को आप समझ लें। वे दिल में कुछ नहीं रखते और जिन चीज़ों की स्त्रियाँ देख-रेख करती हैं, वे नहीं करते। कोई बात नहीं। क्योंकि स्त्री और पुरुष एक दूसरे के प्रशंसा-सूचक हैं। जैसे कि अलिसाहब घर के बाहर का सब संभालते थे, जब कि फ़ातिमा घर में रहती थीं, कभी बाहर नहीं गईं पर अलि साहब को पता था कि उनकी शक्ति का स्रोत कहाँ से आ रहा था।

क्योंकि स्त्रियाँ कभी भी शक्ति के रूप में माननीय नहीं थीं, वे पाश्चात्य आधुनिक विचारों की ओर झुक गईं, 'हमें पुरुषों से लड़ना है, वे समस्याओं का कारण हैं, वे हमें सता रहे हैं और हमें बदला लेना है।' इस प्रकार समाज नहीं बन सकता। स्त्रियों की जिम्मेदारी पुरुषों से कई अधिक है। पुरुषों को केवल दफ़्तर जाना है, काम करना है, घर लौट आना है। स्त्रियों को जीवन भर बच्चों के विकास के लिए, पति की सुरक्षा के लिए और अन्य समझदारी के कार्यों के लिए जीवन भर ऊर्जा खर्चनी पड़ती है। इसलिये भारतवर्ष में हम कहते हैं कि, 'हमें एक स्त्री को पूर्ण रूप से सम्मान देना चाहिए और उसे भी सम्माननीय होना चाहिए।' अधिकांश मैंने देखा है कि न केवल भारतवर्ष में, सब जगह ही स्त्रियाँ सदा सम्मानित की जाती हैं, अगर वे गृहलक्ष्मी होती है तो।

उदाहरण के लिये जब मैं किसी कार्यक्रम में अपने पति के साथ जाती हूँ तो मेरा भी उतना ही सम्मान होता है, जितना कि मेरे पति का। उदाहरण के लिए, उनके डिप्टी का इतना सम्मान नहीं होता जितना कि मेरा, सेक्रेटरी भी इतना सम्मानित नहीं होता, कोई भी नहीं, मैं, एक पत्नी के रूप में सम्मानित होती हूँ क्योंकि मैं उनकी पत्नी हूँ। कोई भी मुझे नीचा नहीं देखता क्योंकि मैं किसी की पत्नी हूँ। सब जगह ऐसा ही है...''

(१९९३, श्रीफ़ातिमा पूजा, टर्की)

स्त्री का आदर्श स्वरूप है, ''मैं दूसरों को कैसे शक्तिशाली बना सकती हूँ'' :

''... मैं यह कहूँगी, एक पुरुष सूर्य के समान होता है, पर एक स्त्री भूमि माता के समान होती है। अन्तर इस प्रकार है। सूर्य चमकता है, प्रकाश देता है

और एक प्रकार से भूमि माँ को पोषण देता है और भूमि माँ सब कुछ देती है। वह बहुत सहन करती है। वह हमारे सब पापों को सहती है, सो घर की पत्नी एक भूमि माता के समान होती है, वह सब को आनन्द देती है, अपने पति को, अपने बच्चे को। वह अपने बारे में नहीं सोचती। वह यह नहीं सोचती, 'मैं अपनी सुन्दरता से, अपनी शरीर से, अपनी पढ़ाई, अपनी शक्तियों द्वारा बड़ी चीज़ें कैसे प्राप्त करूँ?'

नहीं वह ऐसा नहीं करती। वह सोचती है, 'मैं दूसरों को कैसे शक्तिशाली बनाऊँ? मैं उन्हें कैसे शक्ति दूँ, मैं कैसे सहायता करूँ?' यह स्त्री का आदर्श स्वरूप है। यदि ऐसा नहीं है तो वह स्त्री नहीं है। जब कोई कहता है, 'मैं आपके घर आना चाहता हूँ।' तो वह अत्यन्त प्रसन्न हो जाती है। 'अब मैं क्या पकाऊँ, मैं क्या करूँ?' यह स्त्री का तरीका होता है...''

(१९९३, श्रीफ़ातिमा पूजा, टर्की)

किसी को उसके कुछ अधिकारों से वंचित करना, क्योंकि वे स्त्री या पुरुष है, एकदम निरर्थक है :

''... क्राइस्ट ने भी यही कहा है। उन्होंने यह नहीं कहा कि स्त्रियों की आत्मा नहीं होती या पुरुषों की आत्मा होती है। देखिए, ये लोग कैसी बातें करते हैं कि ये संघ-दीक्षा नहीं ले सकती हैं। वैसे संघ दीक्षा एक गलत बात है, पर फिर भी मैं कहूँगी कि किसी को भी कुछ विशेष अधिकारों से वंचित करना, केवल इसलिये कि वे स्त्री या पुरुष हैं, निरर्थक है, गलत है। इसकी धर्म से कोई सम्बद्धता नहीं है। क्योंकि धर्म का अर्थ है सन्तुलन...''

(१९९२, श्रीगणेश पूजा, पर्थ)

स्त्रियाँ भी एक मुख्य कार्य में हिस्सा ले सकती हैं, पर यह बड़ा महत्त्वपूर्ण है कि वे यह न भूलें कि वे स्त्रियाँ हैं, जिन्हें माँ के प्रेम की अभिव्यक्ति करनी है :

''... मेरे अपने देश में एक संस्कृत की कहावत है, 'यत्र नार्या पूज्यन्ते, तत्र रमन्ते देवता'। इसका अर्थ है, 'जहाँ स्त्रियों का सम्मान होता है और खुद भी वे सम्माननीय हैं, वहाँ हमारे क्षेमकारी ईश्वर निवास करते हैं।'

अब हमारे लिये, इस समय, जो महान शक्ति रचयिता ने हमें दी है, उसका मूल्य जानें। पर हम क्या ढूँढते हैं? चाहे वह पूर्व हो या पश्चिम, स्त्रियों ने अपनी महानता की पूरी अभिव्यक्ति नहीं की है। मैं यह नहीं बता रही हूँ कि स्त्री का कार्य समाज में केवल माँ का है, बच्चों को जन्म देना व पालना है, या पत्नी या बहन का है।

स्त्रियों को पूरा अधिकार है कि वे जीवन के हर पहलु में भाग लें- सामाजिक, सांस्कृतिक, शिक्षा विभाग, राजनैतिक, आर्थिक, प्रशासन और बाकी सब। हर प्रकार के विभाग में भाग लेने के लिए उन्हें स्वयं को तैयार करना होगा, उन्हें ज्ञान के हर क्षेत्र में शिक्षा पाने का अधिकार होना चाहिए। परन्तु यदि वे माँ हैं तो उनकी बहुत अधिक जिम्मेदारी है, बच्चों के प्रति और समाज के प्रति। पुरुष, देश की आर्थिक एवं राजनैतिक स्थिति के लिए जिम्मेदार हैं, परन्तु स्त्रियाँ समाज के प्रति जिम्मेदार हैं। स्त्रियाँ, पुरुषों को सहायता कर सकती हैं, किसी भी पद पर अग्रगामी भाग ले सकती हैं, पर यह बड़ा महत्त्वपूर्ण है कि वे यह नहीं भूलें कि वे स्त्रियाँ हैं, जिन्होंने गहरा मातृत्व अभिव्यक्त करना है। यदि वे पुरुषत्वमयी व आक्रमक हो जाएं, तो समाज का सन्तुलन नहीं बनाया जा सकता...''

(१९९५, वर्ल्ड कानफ्रेन्स ऑन वीमेन, बीजिंग)

पुरुषों के विषय में

श्रीमाताजी ने पुरुषों की तुलना श्रीराम से की है, जो कि अत्यन्त उदार और सच्चरित्र हैं। वे एक आदर्श पुत्र, भाई, पति, पिता और राजा हैं। वे अपनी जिम्मेदारियों को, अनुशासित, माननीय और प्रेम के तरीके से धारण करते हैं।

इसी प्रकार पुरुष की विशेषतायें अधिक दायीं ओर की हैं। वह स्पष्टवादी हैं, उसे काम करना है और लोगों के साथ, ईमानदारी, विनम्रता और उच्च आचरण के साथ बर्ताव करना है।

पुरुष घर का बड़ा है और उसका कर्तव्य संरक्षण देना है, सुरक्षा देनी है व बिना रोब जमायें जिम्मेदार रहना है। सच्चा पुरुष, स्त्रियों की इज़्ज़त करता है और अपनी अबोधिता एवं पवित्रता की मान्यता देता है।

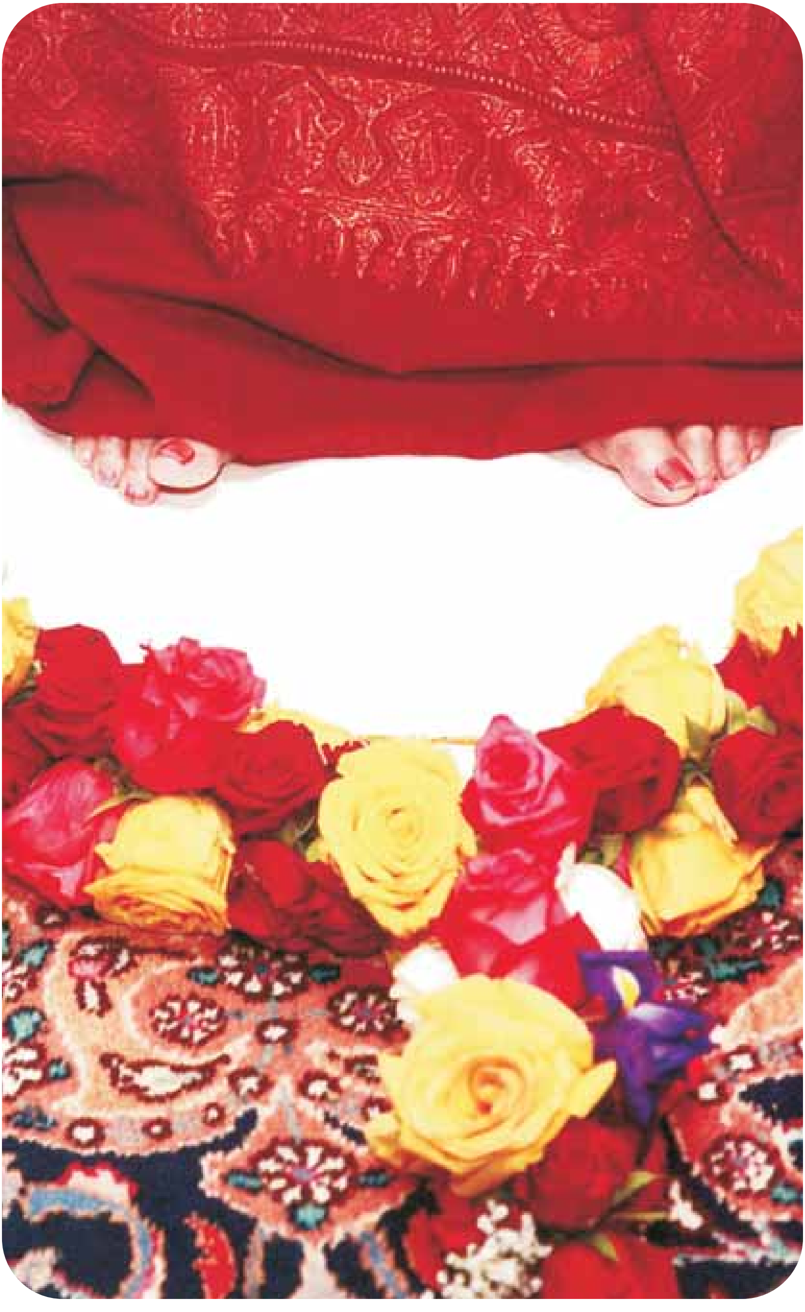

विशेषताएं

I. आप मुखिया हैं

पुरुष को ही मुखिया होना चाहिए :

''... अन्त में आपको आत्मा बनना है, जो हृदय में है। जिसे मस्तिष्क, आप जानते हैं लेता है। इसीलिये पुरुष को मुखिया (बड़ा) होना है। उसे बाहर जाना है, उसे काम करना है, उसे लोगों के साथ व्यवहार करना होता है, आप उसे बहिर्मुख कह सकते हैं...।''

(१९८०, विवाह का महत्त्व, यू.के.)

II. संरक्षण

पुरुष को संरक्षण करना है और देखभाल करनी है :

''... सो, पुरुष को पुरुष होना है और पुरुष श्रीराम के जैसा व्यक्ति होता है। आपने उनके जीवन के बारे में सुना है, वे कैसे थे, वे कैसे अपनी पत्नी से प्रेम करते थे, अपनी पवित्रता का सम्मान करते थे, एक पुरुष जो अपनी पवित्रता का सम्मान नहीं कर सकता, वो पुरुष नहीं है। वह पूर्णतया एक केंचुआ है।

सो यह इस प्रकार है। एक पुरुष का चरित्र होना आवश्यक है, उसमें शूरता होनी चाहिए, उसमें साहस होना चाहिए, यदि घर में चोर घुस जाएं और पुरुष अपनी पत्नी से कहता है, 'अरे, तुम जा कर दरवाज़ा खोलो और मैं छुपने जा रहा हूँ' और जब चोर चले जाएं तो वह कहता है, 'मैं रोब जमाऊंगा', यह कोई तरीका नहीं हुआ ...''

पुरुष को सुरक्षा देनी है। उसे देखरेख करनी है। हम कह सकते हैं कि वह काँटे के समान हैं और स्त्रियाँ फूलों के समान हैं। अब फूल और काँटे के बीच, आप फूल ही बनना पसन्द करेंगे, क्या ये सही नहीं है? परन्तु पुरुष और स्त्री में आप काँटा बनना पसन्द करेंगे, तो वह गलत है। उसे रक्षा करनी है, उसे परिवार को आक्रमण से बचाना है, जीवन को और अन्य चीज़ों को। परन्तु

इन सब के विपरीत वे ही परिवार में गलत लोगों द्वारा घुसपैठ करवाते हैं। ये पुरुष ही हैं। वे भयंकर स्त्रीयों को ले आते हैं, वे भयंकर लोगों को ले आते हैं, रोब जमा कर। 'ओह्, यह मेरी दोस्त है, तुम उसे दु:खी कैसे कर सकती हो?' पर वह किस प्रकार की दोस्त है? यह उसने (पुरुष) स्पष्ट कहना चाहिए, 'मुझे इस प्रकार के लोगों का घर आना पसन्द नहीं है, वे ठीक नहीं हैं, उन्हें बाहर जाना होगा।' यह पति को ही कहना चाहिए और पत्नी को समझना चाहिए। परन्तु यदि वह केवल रोब जमाने के लिए ऐसा कहता है, तो फिर यह बेवकूफ़ी है...''

(१९८०, विवाह का महत्त्व, यू.के.)

III. वास्तविक शक्ति

कोई भी, जो शक्तिशाली होता है, उसे विनम्र और अहिंसक होना ही है :

''... वह हनुमान शक्ति है। वे सब शक्तियों के साथ इतने विनम्र और समर्पित व्यक्तित्व के थे। यह शक्तिशाली सहजयोगी का गुण है। जो भी शक्तिशाली हैं, उसे विनम्र और अहिंसक होना चाहिए। महात्मा गांधी कहते थे कि, 'एक कमजोर व्यक्ति की अहिंसा क्या है?' कमजोर व्यक्ति तो वैसा ही होगा, वह अहिंसक ही होगा क्योंकि वह सामना नहीं कर सकता, वह विरोध नहीं कर सकता।

परन्तु शक्तिशाली का अहिंसक होना, एक सच्चे अहिंसक का चिन्ह है। जो शक्तिशाली हैं और वे अहिंसक हैं तो इसका अर्थ है कि उन्हें अपनी शक्तियों पर पूर्ण विश्वास है। जिन व्यक्तियों को अपनी शक्तियों पर विश्वास है, वे दूसरों पर आक्रामिक क्यों होंगे? वे खड़े हो जाते हैं, 'ठीक है, आईये, आपको क्या चाहिए?' ऐसा केवल कहने मात्र से लोग भाग जाते हैं।

जो व्यक्ति, हिंसक, क्रोधी, बड़े कमजोर व्यक्तित्व के लोग होते हैं। उसका चरित्र कमज़ोर होता है। यदि उनका चरित्र ठीक होता तो वे यह सब न करते। यह ऐसे व्यक्ति का चिन्ह है जो भूतग्रस्त है और भूतबाधा के असर में है जिसकी वजह से वह ऐसा कर रहा है या फिर वह बहुत कमज़ोर है और अपने क्रोध से ग्रसित है क्योंकि उसमें कुछ सहने की शक्ति नहीं है।

सबसे शक्तिशाली पृथ्वी माता है, क्योंकि उसमें सहन करने की शक्ति

है। जिसमें सहनशक्ति है, वही शक्तिशाली है ...''

(१९८७, श्रीराम पूजा, स्विटजरलैंड)

दिव्य व्यक्ति की कोमलता को विकसित करना :

''... पुरुषों को वह प्रतिष्ठा विकसित करनी है, वह प्रेम, वह समझदारी, दिव्य व्यक्ति का शिष्टाचार, वह मधुरता, दिव्य व्यक्ति की कोमलता। निश्चय ही इसका यह अर्थ नहीं है कि पुरुष, स्त्रियों के समान चलने लग जाये...''

(१९८०, विवाह और सामूहिकता, यू.के)

IV. पवित्रता

पवित्रता केवल स्त्रियों के लिए ही नहीं है, यह पुरुषों के लिए अधिक ध्यान देना है :

''... सर्वप्रथम और सर्वश्रेष्ठ चीज़ यह है कि श्री गणेश का सम्मान करने के लिए यह बहुत ही महत्त्वपूर्ण है कि हम पवित्रता के महत्त्व को पहले समझें। पवित्रता केवल स्त्रियों के लिए ही नहीं है, यह पुरुषों के लिए भी अधिक ध्यान देने वाली बात है। यदि आप में आत्मसम्मान है, वास्तविकता में, तो फिर आप पवित्रता को अपनायेंगे बिना किसी तकलीफों के। परन्तु यदि आपमें आत्मसम्मान नहीं है, तो आप निम्न हरकतों के पीछे भागते हैं जो बहुत ही घटिया श्रेणी की हैं। सो, यह बहुत ही महत्त्वपूर्ण है कि पवित्रता का सम्मान किया जाए, समझा जाए और आचरण में उतारा जाए...''

(१९९८, श्रीगणेश पूजा, कबेला)

उस पवित्रता के बिना आप कुछ नहीं कार्यान्वित कर सकते हैं :

''... प्रारम्भ में, लोग ऐसे लोगों पर हँसते हैं। उनका वे मज़ाक उड़ाते हैं। पर पवित्रता हमारे अन्दर की शक्ति है। जैसा कि आपने सुना है कि राजपूत स्त्रियाँ स्वयं को सती कर देती थीं ताकि कोई भी उनकी पवित्रता को नष्ट न कर सके। क्योंकि उनको इस पवित्रता की शक्ति के बारे में पता था। इस पवित्रता का ज्ञान ने हमारे देश में अनेक स्त्रियों की सहायता करी है, जिससे वे

प्रगतिशील और पवित्र जीवन व्यतित कर सकी हैं।

यह कहा गया है कि पवित्रता के बिना आप कुछ भी कार्यान्वित नहीं कर सकते। मैंने यहाँ तक सुना है कि भारतवर्ष में यदि आपको कुश्ती लड़नी है तो व्यक्ति को पवित्र होना चाहिए। यदि एक अपवित्र व्यक्ति है, तो अन्त में वह अपने जीवन में विफल रहेगा। यहाँ तक कि जो लोग दूसरे खेल खेलते हैं उन्हें हनुमान के समान पवित्र होना चाहिए, अन्यथा वे अपने खेल को जारी नहीं रख सकते और हो सकता है कि वे अपने अन्दर कोई शारीरिक समस्या पैदा कर लें।

जो योद्धा लड़ाईयों में जाते थे और लड़ाई करते थे, उन्हें बहुत पवित्र जीवन व्यतित करना होता था, अन्यथा उन्हें कष्ट उठाना पड़ता था। जैसा कि आपने देखा कि वियतनाम से वापिस आने वाले व्यक्ति पागल हो गये थे। जीवन के हर क्षेत्र में पवित्रता का बहुत महत्त्व था और इस बहुत महत्त्वपूर्ण विषय की ओर ध्यान देना होता था।

जिन लोगों ने शिवाजी के साथ लड़ाई लड़ी थी, उन्हें कोई प्रतिक्रिया नहीं हुई थी, परन्तु जब मैं दूसरे देशों में लड़ाई के बाद की प्रतिक्रिया देखती हूँ, तो मैं बड़ी हैरान होती हूँ। इसका कारण है कि लड़ाई लड़ते समय वे अहंकार के जाल में फँस गये और अपनी पवित्रता की परवाह नहीं की। पवित्रता केवल स्त्रियों के लिए ही नहीं है। यह बड़ी गलत धारणा है : यह पुरुषों के लिए कहीं अधिक होती है। जो व्यक्ति पवित्र जीवन व्यतित करते हैं वे गौरवपूर्ण व्यक्ति होते हैं। जिन्हें हम तेजपुण्य कहते हैं...''

(१९८७, अबोधिता और श्री गणेश, गणपतिपुले)

अबोधिता आपको पवित्रता देती है :

''... सहजयोगियों के लिए सबसे महत्त्वपूर्ण बात है कि वे पवित्र जीवन बितायें, बाकी सब सांसारिक है। जैसा कि मैंने बताया है कि ईसा मसीह जो पृथ्वी पर अवतरित हुए, वे श्री गणेश की पवित्रता का अवतार थे। उन्होंने तो यहाँ तक कहा, 'दाऊ शैल्ट नॉट हैव अडल्ट्रस आईज़'। यहाँ तक कि आपकी आँखें भी पवित्र और अबोध होनी चाहिए। अबोधिता आपको पवित्रता देती है, जैसे कि बच्चे पवित्र होते हैं, क्योंकि वे इतने अबोध होते हैं। बच्चों की

सादगी से हमें बहुत कुछ सीखना है, उनकी अबोधिता से। वे अपवित्र बातों में शामिल नहीं होते...''

(१९८७, अबोधिता और श्रीगणेश, गणपतिपुले)

पुरुषों को स्त्रियों का बहन के समान सम्मान करना चाहिए :

''... कृपया इस बात को समझिये कि आपको अपनी पवित्रता का सम्मान करना चाहिए और पुरुषों को बहन के समान स्त्रियों का सम्मान करना है और नहीं कि हर स्त्री उनके लिए है, उनके इस्तेमाल के लिए है। ऐसी सोच के कारण ही वे अपनी माँ और बहनों का मूल्य कम कर रहे हैं। जिस देश में स्त्रियों का सम्मान नहीं होता, वहाँ कोई भी भगवान नहीं रहते...''

(१९८०, रक्षाबन्धन, लंडन)

स्त्रियों को उदारता और पवित्रता की भावना उत्पन्न करनी चाहिए ताकि पुरुष उनका सम्मान करें और अपने अन्दर उस भावना को विकसित करें:

''... आपने भारत में देखा होगा कि स्त्रियों को अच्छा नहीं लगता, यदि उन्हें कोई देखता है या छूने की चेष्टा करता है। उन्हें पसन्द नहीं होता है। हज़ारो स्त्रियों ने अपने आपको मार डाला, जला दिया क्योंकि उन्होंने सोचा कि दूसरे लोग उनके शरीर को न छुएं। इसका आत्मा से सम्बन्ध है।

जैसे कि यह शरीर है, अबोधिता आपकी आत्मा का शरीर है। आप सब वे बन सकते हैं क्योंकि आप अब योगिनी बन गई हैं। वे योगिनी नहीं थीं पर उन्हें एक बात पता थी-अपनी पवित्रता की शक्ती। यह स्त्रियों के लिए जरूरी है कि वे उदारता व पवित्रता की भावना उत्पन्न करें, अपने आसपास पवित्रता, ताकि पुरुष स्वयं उनका सम्मान करें और वही भावना अपने अन्दर विकसित करें...''

(१९८५, मूलाधार प्रवचन, बर्मिंगहैम, यू.के.)

अपनी आँखों को अत्यन्त शुद्ध रखें :

''... हमें इस बात के लिए सावधानी रखनी चाहिए कि अपनी आँखें एकदम शुद्ध रखनी चाहिए जैसे कि योगेश्वर की आँखें, जो कि श्रीकृष्ण थे। वे साक्षी थे। वे इस पृथ्वी पर थे, उन्होंने राधा के संग खेल रचा। उन्होंने पाँच

स्त्रियों के साथ विवाह किया जो कि पाँच तत्व थे। सोलह हज़ार स्त्रियों के साथ विवाह किया जो कि सोलह हज़ार उनकी शक्तियाँ थीं। पर वे योगेश्वर थे, उनकी आँखों में कोई वासना नहीं थी, न ही उनके मस्तिष्क में। वे उन सब से ऊपर थे। वे योगेश्वर थे। उनकी यह परीक्षा थी कि उनकी आँखों में कोई वासना नहीं थी, इन स्त्रियों के बारे में, ऐसे योगेश्वर वे थे।

निश्चय ही मैं आप लोगों से श्रीकृष्ण होने की उम्मीद नहीं करती पर आपके पास अपनी पत्नी है। जिनके पास पत्नी नहीं है, वे पत्नी का इन्तजार कर सकते हैं। उन्हें पत्नी मिल जाएगी और, ...आपकी पत्नी होगी, जो आपकी अपनी होगी। ताकि आपकी आँखें हर उस स्त्री पर न गिरे जो भी मिले ...मैंने देखा है कि लोग यहाँ तक कि फोटो देख कर भी, बड़ी हैरानगी की बात है। मेरा मतलब है कि फोटो में कुछ नहीं होता फोटो में क्या है? पर एक फोटो तक उनका चित्त आकर्षित कर सकती है, मुझे समझ नहीं आता कि उनके चित्त को क्या आकर्षित करता है, इस प्रकार।

परन्तु वे इतनी शीघ्र भेदित हो जाते हैं कि उन्हें अपनी आँखों पर नियंत्रण ही नहीं है, बिल्कुल नियंत्रण नहीं, वे एकदम खो जाते हैं, और उनमें कुछ नियंत्रण नहीं होता है। इससे पता चलता है कि उनमें कोई शक्तियाँ नहीं हैं और वे अपनी अनुक्रियाओं के गुलाम हैं। आँखें बहुत अधिक महत्त्वपूर्ण हैं...''

(१९८६, श्रीकृष्ण पूजा, स्विटजरलैंड)

IV. श्रीराम का आदर्श

श्रीराम को ज्ञात था कि किसी के साथ कितनी दूर तक जाना चाहिए :

''... वे मर्यादा पुरुषोत्तम कहलाते हैं, इसका अर्थ है कि उन्हें ज्ञात था कि किसी के साथ किस हद तक जाना चाहिए। मर्यादा, किसी के साथ किस प्रकार बात करनी चाहिए, किसी के पास किस प्रकार जाना चाहिए। जब हम देखते हैं कि लोग दुर्व्यवहार कर रहे हैं, पतियों के साथ, पत्नियों के साथ, बच्चों के साथ, हर एक के साथ और बाहर भी, वे दूसरों पर कूदने को तैयार हो जाते हैं, यह पूर्णतया श्रीराम के विरोध में है। यह रावण के समान है। यहाँ तक कि रावण भी ऐसा नहीं था, वह ऐसी प्रकृति का नहीं था क्योंकि उसके

अन्दर कुछ धार्मिकता थी, वह साक्षात्कारी पुरुष था पर वह राक्षस बन गया था क्योंकि वह घमण्डी बन गया था।

परन्तु उसके घमंड का आधुनिक लोगों के साथ मेल नहीं कर सकते, न ही आधुनिक लड़कियों, आधुनिक पुरुषों के साथ, जो मैं सुनती और देखती हूँ। यह हैरानगी की बात है कि उन्होंने रावण को भी पीछे छोड़ दिया है। रावण के तो दस सिर थे, पर कभी-कभी मैं सोचती हूँ कि आधुनिक पुरुषों के, खास कर स्त्रियों के एक सौ आठ सिर होंगे। घमंड, इतनी अधिक घृणा कि मुख-मुद्रा, सब इतना उपहासपूर्ण होता है कि व्यक्ति एकदम बेकार दिखने लगता है, पर मैं अक्सर ऐसे लोगों को देखती हूँ कि जो सहजयोग में भी किसी प्रकार घुस जाते हैं। दर असल, ऐसे लोग ईश्वर को पूर्णतया नापसन्द होते हैं...''

(१९८७, श्रीराम पूजा, स्विटजरलैंड)

श्रीराम किसी से भी अपना कुछ कार्य नहीं करवाते थे :

''... श्रीराम का जन्म आदि अग्नि द्वारा सामने लाया गया है, और वे सूर्य वंश में पैदा हुए थे, सूर्य। सो, अग्नि के आशीर्वाद से जन्म और सूर्य के वंश में जन्म, फिर भी वे, जितने अवतार हुए हैं उनमें सबसे शांत अवतार थे। वे बहुत औपचारिक स्वभाव के थे, संकोच, वे किसी और से अपनी समस्या न कह कर, अपने ही भीतर, सहन करने के लिये किसी भी हद तक चले जाते थे। हमारे भारत वर्ष में भी अभी तक कई लोग हो गए हैं।

जैसे कि, हमारे एक प्रधान मंत्री थे, लाल बहादुर शास्त्री। जब वे किसी कमरे में अन्य व्यक्तियों के साथ बैठे होते थे और बत्ती जल रही होती थी और वे उसे बुझाना चाहते थे तो वे किसी से बंद करने को नहीं कहते थे, धीरे से वे अपनी कुर्सी से उठ कर 'स्विच' के पास जाकर बंद कर देते थे, ताकि वे किसी से कुछ करने को न कहें। यह श्रीराम की एक बहुत बड़ी विशेषता है, कि वे कभी किसी से अपना कार्य करने को नहीं कहते थे या आज्ञा देते थे, न ही किसी का इस्तेमाल करते थे। जब कि उन्हें अग्नि का आशीर्वाद था और सूर्व के वंश में पैदा हुए थे।

परन्तु हम देखते हैं कि जो लोग बहुत निम्न परिवारों में, नकारात्मक परिवारों में, कह सकते हैं बायीं ओर के लोग, हर प्रकार की समस्याओं से

घिरे हुए परिवारों में जन्म लेते हैं, उनका बड़ा ही खराब आज्ञा चक्र होता है...''

(१९८७, श्रीराम पूजा, स्विटजरलैंड)

दूसरों के प्रति सहनशक्ति से चरित्र का पता चलता है :

''... जिस व्यक्ति का सूर्य में जन्म होता है, उसे अत्यन्त विनम्र होना चाहिए, वह दर्शाता है कि उसे कुछ भी प्रभावित नहीं कर सकता, उसे कुछ भी यह अहसास नहीं दिला सकता कि वह महान है। जब हम आगे उनका जीवन देखते हैं, तो वे बड़े विनम्र व्यक्ति थे। जो लोग दूसरों को नापसन्द करते हैं, 'मैं तुम्हें पसन्द नहीं करता, मुझे पसन्द नहीं है, यह ठीक नहीं है, यह बड़ा कठिन है।' इस बात का प्रतीक है कि ऐसा व्यक्ति बड़े निम्न चरित्र का है, उसका कोई चरित्र नहीं है, पर बड़ा निम्न है। जिस व्यक्ति में चरित्र होता है वह दूसरों के लिए सहनशीलता से दर्शाता है। असहनशीलता, ऐसे व्यक्तियों का प्रतीक है, जो अत्यधिक अहंकारी होते हैं, जो दिखावा करते हैं, व्यर्थ में...''

(१९८७, श्रीराम पूजा, स्विटजरलैंड)

वे इतने विनम्र थे कि उनके पूरे चरित्र में सुन्दरता दिखायी देती है :

''... श्रीराम अपने राज्य में बहुत प्रिय थे और उनकी बहुत ही सुन्दर पत्नी थी, जो बड़े सम्मानित एवं पूजित पिता राजा जनक की पुत्री थीं। पर वे इतने विनम्र थे, इतने विनम्र थे कि उनके पूर्ण चरित्र में सुन्दरता दिखाई देती है।

जब वे बनवास के लिए गए तो वे एक छोटी नाव में जा रहे थे। जो उन्हें ले जा रहा था, वह एक साधारण व्यक्ति था। मल्लाह बहुत दुःखी हो रहा था कि वह अयोध्या के राजा के समक्ष बैठा है और उसके पास ढंग के कपड़े भी नहीं हैं। श्रीराम तो स्वयं वल्कल वस्त्रों में थे, जो गाँवों के लोग पहनते हैं। उन्हें वे वस्त्र धारण करने पड़े क्योंकि उनकी सौतेली माँ ने उनके पिता से उस प्रकार का वरदान माँगा था।

तब श्रीराम ने उससे कहा, 'तुम क्यों चिंतित हो? मैं इन्हें पहने हूँ, मैं अब राजा नहीं हूँ, मैं तुम्हारे समक्ष इस प्रकार से बैठा हूँ, तुम आराम से बैठो और मुझे तो नाँव चलानी भी नहीं आती, जब कि तुम्हें नाँव चलानी आती है, सो तुम क्यों चिंतित हो?'

इस प्रकार जो लोग समाज में निम्न माने जाते थे, उन्हें भी उन्होंने बड़े ऊँचे स्तर पर रखा, जो यह दर्शाता है कि वे इन्सानों की इज्जत करते थे...''

(१९८७, श्रीराम पूजा, स्विटजरलैंड)

श्रीराम हर व्यक्ति को हीरा बनाना चाहते थे :

''... श्रीराम की मधुरता जिस प्रकार वे लोगों को सुविधाजनक बनाते थे, उदाहरण के लिए मैं बताऊंगी कि जिस प्रकार एक सीप के अन्दर यदि एक पत्थर चला जाए तो वह अपने अन्दर से एक चमकीला द्रव्य निकालता है और उस पत्थर को उस चमकीले द्रव्य से ढ़क देता है और उसे मोती बना देता है। उसे आराम देने के लिए वह अपना आराम नहीं देखता। श्रीराम में थोड़ा सा अन्तर था कि वे सबको हीरा या मोती बनाना चाहते थे, ताकि दूसरा व्यक्ति चमके, अच्छा दिखाई दे और इस प्रकार उन्हें आराम मिलता था...''

(१९८७, श्रीराम पूजा, स्विटजरलैंड)

श्रीराम किसी व्यक्ति के बाह्य आवरण की परवाह नहीं करते थे :

''... यह बड़ा महत्वपूर्ण है कि भीतर से सब ठीक हो न कि बाहर से, इसके उदाहरण श्रीराम हैं। वे किसी को बाहर से नहीं देखते थे या कोई बाहर से कैसा दिखता है, इस पर ध्यान नहीं देते थे, क्योंकि वे श्रीकृष्ण से पहले आये थे। उन्होंने इन्सानों के भीतरी आवरण को बनाने की कोशिश की...''

(१९८७, श्रीराम पूजा, स्विटजरलैंड)

जो ऊँचा बोलता है और गलत स्थानों पर हँसता है, वह सहजयोगी नहीं हो सकता :

''... जब कोई पाश्चात्य स्तर के अनुसार अच्छा नहीं दिखाई देता। मेरे अनुसार पाश्चात्य स्तर अजीब है क्योंकि पाश्चात्य स्तर न श्रीकृष्ण के समान दिखाई देते हैं और न ही श्रीराम के। श्रीराम बड़े तन्दुरुस्त और लम्बे व्यक्तित्व के थे, उनके हाथ घुटनों तक पहुँचते थे, अजानुबाहू।

वे कुछ मोटे (पुष्ट) थे, दोनों ही पुष्ट थे। उनको पुष्ट होना ही था क्योंकि

चाहे वे अग्नि से पैदा हुए, पर श्रीविष्णु का मुख्य तत्व जल है। इसलिये वे सब पुष्ट व्यक्ति थे। वे लकड़ियों के समान पतले नहीं थे, जैसे कि आजकल आधुनिक विचार हैं, एकदम लकड़ी के समान पतला होना, टी.बी. के मरीज़ों के समान।

इसका यह अर्थ नहीं है कि सब पुष्ट लोग अच्छे होते हैं। हम सदा सोचते हैं कि यदि माँ कह रही हैं तो पुष्ट लोग अच्छे होते हैं। यह बात नहीं है। मैं इसके अन्दर की बात कर रही हूँ, अन्दर की बात इसके विपरीत है। इसके अन्दर से एकदम सुन्दर और प्रेमभरा, स्नेही व उत्तेजना से भरा हुआ है। जिस व्यक्ति में ये सब गुण नहीं हैं वह सहजयोगी नहीं है, सर्वप्रथम। जो व्यक्ति बहुत जोर से बात करता है, जोर से बोलता है व गलत बातों पर हँसता है वह सहजयोगी नहीं हो सकता...''

(१९८७, श्रीराम पूजा, स्विटजरलैंड)

श्रीराम एक अटल व्यक्ति थे :

''... उनका एक और चरित्र का गुण था कि वे अटल थे। वे श्रीकृष्ण के समान भिन्न नहीं थे। श्रीकृष्ण कूट-नीतिज्ञ थे और कूटनीति दृढ़ता में होती है। श्रीकृष्ण की पद्धती अलग थी। पर सहजयोग में आप श्रीराम के समान ही नहीं करते जा सकते। कभी-कभी आपको परशुराम के समान भी बनना पड़ता है, अन्यथा सब कुछ कार्यान्वित नहीं हो पाता।

अब उनका चरित्र इतना सुन्दर था कि आप पाएंगे कि वे एक दृढ़ व्यक्तित्व के थे। जीवन भर उन्होंने जो कहा वह किया। उदाहरण के लिए उन्होंने कहा कि, 'मैं एक पत्नी में विश्वास रखता हूँ, एक पत्नी व्रत।'

नि:संदेह उनकी पत्नी बड़ी अच्छी थीं, बड़ी सुन्दर, पर उन्हें रावण ले गया और वे अकेले हो गए। जब उन्होंने 'राजसूय यज्ञ' प्रारम्भ करना था, जो पूरे विश्व को जीतने के लिए था, तो उन्हें कहा गया, 'आपको विवाह करना पड़ेगा क्योंकि आपके साथ आपकी पत्नी होनी चाहिए।'

उन्होंने कहा, 'नहीं, मैं विवाह नहीं कर सकता क्योंकि कोई भी मेरी पत्नी के समान नहीं हो सकता और मैं विवाह नहीं कर सकता। मैं इस प्रकार के यज्ञ को छोड़ सकता हूँ, पर मैं पुन: विवाह नहीं कर सकता।'

तब, सब ने कहा, 'ठीक है, आप एक कार्य कर सकते हैं, आप सीता जी की स्वर्ण की मूर्ति बना कर इस्तेमाल कर सकते हैं, जो आप की पत्नी का प्रतिनिधित्व करें।'

उन्होंने कहा, 'मैं इसे मानूँगा।' उन्होंने अपने सब गहने उतार कर मूर्ति बनवायी और इस यज्ञ को किया। तो, जो भी उन्होंने कहा, उसे पूर्ण रूप से किया। अपने धर्म में वे सम्पूर्ण थे...''

(१९८७, श्रीराम पूजा, स्विटजरलैंड)

श्रीराम के लिए यह महत्वपूर्ण था कि प्रजा खुश रहे :

''... जब श्रीराम ने राज्य चलाना शुरू किया तो उनकी परोपकारिता सामने आई। वे प्रजा की जरूरतों का ध्यान रखते थे। उनके लिए यह बात बहुत महत्त्व रखती थी कि जिन लोगों पर वे राज्य कर रहे हैं, वे खुश व आनन्दित रहें। वे उनका ध्यान अत्यन्त प्रेम से रखते थे...''

(१९८७, श्रीराम पूजा, स्विटजरलैंड)

परोपकारी राजा, अत्यन्त प्रेममय पति और प्रेममय पिता :

''... आईये, हम देखें कि उन्होंने हमारी किस प्रकार सहायता की। श्रीराम ने अपने चरित्र द्वारा, संतुलन द्वारा, अपनी शान्ति, कोमलता से और अपनी मधुरता से दर्शाया है कि एक राजा को किस प्रकार क्षेमकारी राजा होना चाहिए और साथ ही एक अत्यन्त प्रेममय पति, प्रेममय पिता और धार्मिक व्यक्ति...''

(१९८७, श्रीराम पूजा, स्विटजरलैंड)

श्रीराम प्रणव-ठंडी हवा के दाता हैं :

''... श्रीराम प्रणव को देने वाले हैं, जीवन संबंधी वायु जिसे हम अन्दर लेते हैं। यह जीवन संबंधी वायु जब गर्म हो जाती है तो हमें समझ लेना चाहिए कि हम अब श्रीराम के साथ नहीं हैं। आपके नाक व मुँह से ठंडी हवा आनी चाहिए। मुझे आपके बारे में नहीं पता पर मेरे संग यह हर समय होता रहता है।

जब आप क्रोधित होते हैं तो नथुने फूल जाते हैं और गर्म हवा, गर्म शब्द

और सब कुछ गर्म, गर्म आँखें और सब कुछ टेढ़ा हो जाता है और आप खूँखार रावण के समान हो जाते हैं क्योंकि आपको श्रीराम के चरित्र की सुन्दरता को भूल गए हैं...''

(१९८७, श्रीराम पूजा, स्विटजरलैंड)

आप किस प्रकार के पिता हैं, आपको निर्णय करना है :

''... उन्होंने आपके मध्य हृदय के चक्र के लिए बहुत महान कार्य किया है, उन्होंने आपको आपके अन्दर पितृत्व दिया है क्योंकि श्रीराम पितृत्व का प्रतिनिधित्व करते हैं। अब आप किस प्रकार के पिता हैं, आपको फ़ैसला करना है...''

(१९८७, श्रीराम पूजा, स्विटजरलैंड)

हम यह निर्णय करें कि हमारे भीतर परोपकार, प्रेम, करुणा, सुरक्षा शान्ति, आनन्द, अनुशासन है :

''... इसलिये मुझे आपसे इस दशहरा के दिन कहना है, आईये हम निर्णय करें कि हम सहजयोग में राम-राज्य स्थापित करेंगे, जहाँ परोपकार, प्रेम, करुणा, सुरक्षा, शान्ति, आनन्द और अनुशासन हमारे भीतर हो। हमारे अन्दर ही सब अनुशासन है। मैं श्रीराम के विषय में यह कहती हूँ कि उन्होंने स्वयं ही स्वयं को मर्यादा के अनुशासन में रखा है। इसी प्रकार हमें भी अपने आपको मर्यादा के अनुशासन में रखना चाहिए।

(१९८७, श्रीराम पूजा, स्विटजरलैंड)

जिनके हाथ में सब कार्यों की पतवार है, उनके हृदय में जन्म लेना :

''... रामराज्य को आना है, इसके लिए श्रीराम को उन लोगों के हृदय में जन्म लेना है जिनके हाथ में सब, कार्यों की पतवार है और हमें श्रीराम से इस प्रकार प्रार्थना करनी है, 'कृपा कर के दया और करुणा करें और ऐसे व्यक्तियों के हृदय में जन्म ले सकें...''

(१९८७, श्रीराम पूजा, स्विटजरलैंड)

पुरुषों को परामर्श

I. स्त्रियों की सराहना व सम्मान करना चाहिए

स्त्रियाँ प्रेम देना चाहती है और पुरुषों को इस बात की सराहना करनी चाहिए :

''... सहजयोग में इस प्रकार है। हम प्रेम देना चाहते हैं और पुरुषों को इस प्रेम की सराहना करनी चाहिए, इस आनन्द की, चाहे आप एक भाई हैं, या पति या पुत्र, कुछ भी, स्त्री का प्रेम आपके लिए है। वह आपको प्रेम देती है, जो आपको न केवल आनन्द देता है, पर धार्मिक भी बनाता है...।''

(१९९३, श्रीफ़ातिमा पूजा, टर्की)

पुरुषों को भी उन स्त्रियों का सम्मान जरूर करना चाहिए जो सम्माननीय हों :

(१९८६, द रोल ऑफ बेल्जियम अँड हौलेण्ड, बेल्जिअम)

पुरुष को पत्नी का सम्मान करना चाहिए यह बड़ा महत्त्वपूर्ण है :

''... पुरुष को पत्नी की पूजा करनी चाहिए। ऐसा कहा जाता है 'यत्र नार्या पूज्यन्ते, तत्र रमन्ते देवता' जहाँ भी पत्नी का सम्मान होता है, वहाँ ही देवता निवास करते हैं...''

(१९८८, श्रीफ़ातिमा पूजा, स्विटजरलैंड)

यदि वह पत्नी का सम्मान नहीं करता, तो गृहलक्ष्मी तत्व को सँभालना संभव नहीं :

''... क्योंकि हम आर्थिक, राजनीति व प्रशासन में एकदम बेकार हैं। पुरुष घरेलू मामलों में बेकार हैं, उन्हें घरेलू कार्य नहीं आते, स्त्रियों ने घर का काम-काज अपने पास रखा है, पर हमारा समाज उच्चतम श्रेणी का है, यह घर-बार की स्त्रियों द्वारा सँभला है।

तो, पुरुष को घर की पत्नी का सम्मान करना है, यह बड़ा महत्त्वपूर्ण है,

यदि वह पत्नी का सम्मान नहीं करता तो गृहलक्ष्मी तत्त्व को सँभालना संभव नहीं है। यह गृहलक्ष्मी तत्त्व की परीक्षा के लिए है। परन्तु कुछ पुरुष, मेरा अर्थ है कि, अधिकतर पुरुष यह सोचते हैं कि पत्नियों के साथ दुर्व्यवहार करना उनका जन्मसिद्ध अधिकार है, उन्हें कष्ट देना, हर प्रकार की बात कहना, क्रोधित होना, यदि वह एक अच्छी स्त्री है। परन्तु यदि वह हर समय कोसने वाली है, वह एक भूत है, तो पति हर समय उसे खुश करने में लगे रहता है। मेरा मतलब है कि अत्यन्त दयालु, वह जानता है कि वह एक भूत है। बेहतर है कि सावधान रहूँ, पता नहीं कब भूत, एक साँप के समान ऊपर गिर जाए और यदि वह जानती है कि कैसे चिक-चिक करे या तर्क करना है, तब भी वे ड़रते हैं, वहाँ कोई प्रेम नहीं होता। उन्हें पत्नी के लिए प्रेम या सम्मान नहीं होता, पर उनके भीतर एक प्रकार का भय होता है और वे ऐसी स्त्री से डरते हैं...''

(१९९३, श्रीफ़ातिमा पूजा, स्विटजरलैंड)

पुरुषों को ऐसी स्त्री का सम्मान करना चाहिए, जो उन्हें प्रेम करती हो, जो पवित्र हो, जो अच्छी है, जो उन्हें सामूहिक बनाना चाहती हो, जो चाहती हो कि सहजयोग विकसित हो :

''... पुरुषों को अपनी स्त्रियों का सम्मान करना चाहिए, जो इस प्रकार की हों, परन्तु पुरुष मूर्ख होते हैं क्योंकि वे ऐसी स्त्री का सम्मान नहीं करेंगे, जो उन्हें प्रेम करती हो, जो पवित्र हो, जो अच्छी हो, जो उन्हें सामूहिकता में रखना चाहती है, जो चाहती है कि वे दें, दानी हों, जो चाहती है कि सहजयोग विकसित हो और वह चाहती हो कि उसका पति प्रसन्न व आनन्दित हो, और वह भी सहजयोग में आए। पर इसके स्थान पर वे अजीब व मूर्ख स्त्रियों के पीछे भागते हैं। ऐसी भूतिया स्त्रियों के प्रति इतने आकर्षण का क्या कारण है? उनमें भी भूत ही होंगे। मुझे वह पता नहीं, जिस प्रकार वे आकर्षित होते हैं...''

(१९९३, श्रीफ़ातिमा पूजा, स्विटजरलैंड)

यदि आप में अपनी शक्तियाँ हैं, तो अन्त में उसे आकर समझ आ जाएगी कि आप क्या हैं :

''... और पुरुषों को यह आभास होना जरूरी है कि उन्हें स्त्रियों का

सम्मान करना चाहिए। मेरा यह अर्थ है कि इतना अधिक नहीं कि यदि वह आप से कहे कुछ गलत करने को, तो आप उसी में खो जाएं। वह तरीका नहीं है। वह गुलामी है। पुरुषों को पुरुष होना चाहिए। इसका किसी भी प्रकार यह अर्थ नहीं है कि स्त्रियां पुरुषों द्वारा लताडी जाएं। यदि, आप में अपनी शक्तियाँ हैं तो अन्त में, चाहे कैसा भी पति हो उसे यह समझ आएगी कि आप क्या हैं। उसे जानना ही होगा कि आप क्या हैं। अपने अपने जीवन काल में, बहुत बार यह देखा है कि इसी प्रकार होता है...''

(१९९३, श्रीफ़ातिमा पूजा, टर्की)

यदि आपकी पत्नी एक पवित्र स्त्री है तो आपको उसका सम्मान करना चाहिए :

''... कृपया समझिए कि यदि आपकी पत्नी एक पवित्र स्त्री है तो आपको उसे सताने का कोई अधिकार नहीं है। यही नहीं, उसे भी सम्मान पाने योग्य होना चाहिए, पर आपको देखना चाहिए कि सब उसका सम्मान करें, कोई उसकी बेइज्जती न करे, आपको उसके साथ खड़ा होना चाहिए। आपकी उसके साथ पहचान होनी चाहिए।

परन्तु यदि वह पवित्र स्त्री नहीं है और वह उस प्रकार की है, तो बेहतर है, दूर रहें। मेरे पास इतना साहस नहीं है कहने के लिए 'ठीक है, उसका साथ निभाओ और मैं देख-रेख करूंगी।' यह बड़ा कठिन है, मुझे पता नहीं कि क्या जटिलतायें आएंगी...''

(१९९३, श्रीफ़ातिमा पूजा, स्विटजरलैंड)

प्रशंसा सूचक पर समरूप नहीं :

''... दुर्भाग्यवश पुरुषों ने शारीरिक शक्ति का उपयोग कर के स्त्रियों को लताड़ने (दबाने) की स्थिति प्राप्त की है। उन्होंने यह नहीं पहचाना है कि स्त्रियाँ प्रशंसासूचक और बराबर की हैं, पर मनुष्यता की कोशिश में समरूप नहीं हैं। वह समाज, जो इस मूल सत्य को मान नहीं देता और स्त्रियों को उनके अधिकृत कर्तव्यों को नहीं देता, सभ्य समाज नहीं है...''

(१९९५, वर्ल्ड कान्फरेन्स ऑन वीमेन, बीजिंग)

पुरुषों को स्त्रियों के महान गुणों का सम्मान करना चाहिए :

''... निश्चय ही पुरुषों को स्त्रियों का सम्मान करना चाहिए और उनके विशेष गुणों का सम्मान करना चाहिए : उनकी सन्तुष्टि, उनकी सहनशक्ति, उनकी समझदारी। सब का सम्मान करना चाहिए। और हर समय अपनी पत्नियों का उपहास नहीं करना चाहिए। मैंने देखा है कि यदि ऐसा किया जाता है तो स्त्रियां भी उसी स्तर पर गिर जाती हैं। यह दोस्ती नहीं है, मित्रता में आपको सम्मान जरूर रखना चाहिए, ठीक है आप अपने मित्रों के साथ ऐसा कर सकते हैं, परन्तु पत्नी के साथ नहीं। और यह बात मुझे समझ नहीं आती कि पुरुष अपनी बुद्धि को इतनी मूर्खता से कैसे इस्तेमाल कर सकता है। क्योंकि वह आपके बच्चों की माँ है। यदि आप उसका उपहास करेंगे तो बच्चे भी उसका उपहास करेंगे...''

(१९९७, शक्ति पूजा, कलवे, भारत)

वह अपना अधिकार आपसे प्राप्त करती हैं :

''... जाहीर है कि उन्हें आपका सम्मान करना है, क्योंकि वे अपना अधिकार आपसे प्राप्त करती है, पर आपको भी उनका अधिकार बनाये रखना है। आपको उन्हें उचित आकार में बनाये रखना होगा।

(१९९७, श्री शक्ति पूजा, कलवे, भारत)

आपको सहजयोग को अच्छा नाम देना है :

''... छोटी-छोटी बातों में, पति अपनी पत्नियों को छोड़ देते हैं और दुर्व्यवहार करते हैं। यह जान कर बड़ा आघात लगता है कि सहजयोग में पुराने लोगों ने अपने विवाहित जीवन में मूर्खता के कार्य किए हैं। मैं उन पर हैरान हूँ। वे कैसे कर सकते हैं, यह मुझे वास्तव में आघात देता है। मुझे कहा गया था कि इस वर्ष कुछ सहजयोगी पथ भ्रष्ट हो जाएंगे, वे बूरे कार्य करेंगे, खराब कार्य करेंगे, अपवित्र बातें करेंगे और वे सहजयोग का नाम खराब करेंगे।

यदि ऐसी भविष्यवाणी हो, तो आप सोच सकते हैं, मुझे इस उम्र में

लड़ना पड़ेगा। पर आप लोग इसे लड़ सकते हैं, इस समझदारी से, कि यह सहज जीवन नहीं है और आपको सहज के तरीके के अनुसार रहना है, सहजयोग को अच्छा नाम देना है। आडम्बर से नहीं पर वास्तविकता में... लोगों को कहना चाहिए कि, यदि वे किसी सन्त से मिले हैं तो सहजयोग में...''

(१९९७, शक्ति पूजा, कलवे, भारत)

माँ की प्रतिष्ठा का सम्मान होना चाहिए :

''... मुझे पूर्ण विश्वास है कि आप सबने अपनी माँ का बहुत सम्मान किया होगा, पर अब मुझे पता नहीं है कि एक माँ के रूप में आपका सम्मान होगा या नहीं। एक बार जब यह स्थापित हो जाए कि एक स्त्री का सबसे बड़ा पद माँ का होता है और उसका सम्मान होना चाहिए, तो सब प्राथमिकताएं, स्त्रियों में भी बदल जाएंगी। क्योंकि वे क्या कर सकती हैं, माँ के रूप में उनका कोई स्थान नहीं है और वे अपने बच्चों से तंग आ जातीी हैं और वे सोचती हैं, 'इस मातृत्व का क्या लाभ है? यह बिना किसी आभार का कार्य है', यह सब तभी बदल सकता है, जब पुरुष अपने अन्दर से बदलता है, जब बदलाव आता है...''

(१९८२, हृदय, विशुद्धि, आज्ञा और सहस्रार, यू.के.)

एक पुरुष पर-स्त्री में रुचि नहीं रख सकता :

''... कुछ कार्य ऐसे होते हैं, जो पुरुष नहीं कर सकता। जैसे कि दूसरी स्त्रियों में रुचि कुछ पुरुष इतने गर्म होते हैं, भयानकता से वे पूरी तरह से, यह समझ नहीं आता कि वे किस प्रकार स्त्रियों में इतनी रुचि रखते हैं। स्त्रियाँ कैसे कपड़े पहनती हैं आदि, यह सब चूहे के समान बर्ताव बड़ा भयानक है, इसमें पुरुषार्थ नहीं है। इसका अर्थ है कि वे स्त्रियों के गुलाम हैं...''

(१९८०, विवाह का महत्त्व, यू.के.)

किसी स्त्री से नहीं कहो कि 'तुम बहुत सुन्दर लग रही हो' :

''... इस प्रकार की बात यदि आप किसी से कहते हैं, भारतीय स्त्री को यदि आप इस प्रकार की टिप्पणी करते हैं, किसी साधारण भारतीय स्त्री को,

तो वह आत्महत्या कर लेगी, ऐसा कभी नहीं कहा जाता, कि कोई भी आकर कहे, 'आप बड़ी सुन्दर लग रही हो।' ठीक है, आप अपनी माँ से कह सकते हैं, 'आप अच्छी लग रही हो।' वह अलग बात है, पर आप किसी भी स्त्री को ऐसे नहीं कहते। आपको स्वयं को बाहर निकालना पड़ेगा...''

(१९८५, श्री गणेश पूजा, यू.के.)

II. प्रभुत्व

क्या होगा :

''... यदि मस्तिष्क, हृदय पर ज़्यादा प्रभाव दिखाये तो क्या होग? तब वहाँ शुष्कता आ जाएगी। आप देखते हैं कि कई पुरुष बड़े लकीर के फ़कीर होते हैं, वे सिर-दर्द हैं, स्वयं के लिए भी पूर्ण सिर-दर्द है, दूसरों के लिए व पूरे समाज के लिए। ऐसे लोग अत्यन्त शुष्क हो सकते हैं। सारे समय वे कभी अपनी पत्नी का आनन्द नहीं ले सकते, वे कभी बच्चों का आनन्द नहीं ले सकते, वे किसी भी चीज़ का कुछ भी आनन्द नहीं ले सकते.... क्योंकि वे बड़े लकीर के फ़कीर होते हैं...''

(१९८०, विवाह का महत्व, यू.के.)

आपको दायें हृदय की पकड़ हो सकती है :

''... यदि आप ऐसी औरतों को प्रोत्साहित करते हैं, उनके पीछे भागते हैं, जो किसी काम की नहीं हैं, तात्पर्य है कि सामूहिक रूप से वे अच्छी होनी चाहिए। यदि सामूहिक रूप से वे ठीक बर्ताव नहीं करती, सामूहिकता में यदि वे आक्रमक हों, सामूहिकता में यदि वे दूसरों को पीड़ा दे रही हैं, तो ऐसी स्त्रियों को बिल्कुल भी प्रोत्साहित नहीं करना चाहिए। निश्चय ही मारने की जरूरत नहीं है। मेरा कहने का तात्पर्य है कि आपको स्त्रियों में से यह सब बूराईयाँ निकालनी है। यह बड़ा महत्वपूर्ण है। नहीं तो यदि आप अपनी पत्नियों को सही रास्ते पर लाने के कार्यक्रम में लग जाएंगे तो आपको दायें हृदय में पकड़ आ सकती है व अन्त में अस्थमा हो सकता है, क्योंकि आप व आपकी पत्नी समाज का अंग हैं, और समाज के कुछ नियम होते हैं, जो बड़े

महत्वपूर्ण होते हैं...''

(१९८५, श्रीराम पूजा, स्विटजरलैंड)

बंद गोभी के समान नहीं होना है :

''... यहाँ केवल स्त्रियाँ ही बोलती हैं, मैंने देखा है, पुरुष बात नहीं करते। यदि आप टैलिविज़न देखें, तो उसमें भी केवल स्त्रियाँ ही बोलती हैं। पुरुष कभी बात नहीं करते। बच्चा मर गया, तब भी माँ ही बात कर रही है, मुझे पता नहीं कि जब बच्चा मर गया है तो वह कैसे बात कर सकती है। वह बात करेगी और पिता दु:खी व चूहे के समान एक ओर मुँह बंद कर के बैठा है। मैंने अनेकों बार इंग्लैंड के और दूसरे सहजयोगिओं से कहा है कि तुम लोग बंद गोभी के समान हो। यदि आप ऐसा बर्ताव करोगे तो एक दिन आएगा, जब आप सब इन भयानक स्त्रियों द्वारा नष्ट हो जाओगे...''

(१९८८, स्त्रियों की भूमिका, यू.के.)

मैं सोचती हूँ कि हमें पुरुषों को स्त्रियों से अधिक शिक्षा देनी है :

''... सब धार्मिक लकीर के फ़कीर स्त्रियों से अपेक्षा रखते हैं कि वे पूर्णतया सदाचारी हों और पुरुष जो चाहे कर सकते हैं। मैं समझती हूँ कि हमें पुरुषों को स्त्रियों से अधिक शिक्षा देने की ज़रूरत है, क्योंकि आक्रमण का विचार भी पुरुषों से ही आता है...''

(१९९५, वर्ल्ड कान्फरेन्स ऑन वीमेन, बीजिंग)

III. सजगता

दूसरों की भावनाओं के प्रति सजगता :

''... यही मैंने पुरुषों में देखा है। यह स्त्रियों के साथ नहीं होता, परन्तु पुरुषों में वह सजगता जो होनी चाहिए, नहीं होती। उनके बीच आपस में बातचीत नहीं होती। उनमें वैसे काफ़ी सजगता होती है, परन्तु उनमें दूसरों की भावना के प्रति कोई सजगता नहीं होती। जैसे कि एक पति है जो अपनी पत्नी के साथ बड़ा रुखा-व्यवहार करता है, हमेशा उसकी बेइज़्जती करता है। फिर

भी यदि वह दुर्व्यवहार करता है, तो उसे कहो, 'आपको कोई पानी नहीं मिलेगा, आपको जो करना है करो,' ऐसा दण्ड उस व्यक्ति को देना चाहिए जो दुर्व्यवहार करता है, जिसे अपनी पत्नी के लिए कोई भावना नहीं है, जो खराब व्यवहार करता है। या जो व्यक्ति बड़ा प्रणयवादी होता है, आपको उसका उपहास करना चाहिए...''

(१९९१, श्री हम्सा पूजा, न्यूयौर्क)

पैसा कैसे खर्चा जा रहा है के प्रति सजगता :

''... पुरुषों में सजगता अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है, उन्हें सजग होना चाहिए कि पैसा कैसे खर्च हो रहा है। आप को अच्छी प्रकार पता है कि उन्होंने सैन दिएगो आश्रम में मुझसे कैसे पैसे बनाए। किसी ने यह जानने की कोशिश भी नहीं की कि इसे क्या हो रहा है। वे अपना किराया दे रहे हैं, समाप्त! वे कहाँ खर्च रहे हैं? इस विषय में वे क्या कर रहे हैं? किसी को इस बारे में नहीं पता।

मैंने उनसे पूछा, 'क्या आपने पता किया कि वे कहाँ पैसा भेज रहे थे? क्या उन्होंने मुझे पैसे भेजे? मेरा किराया आदि?' कुछ नहीं।

'माँ हमें पता नहीं, हमने नहीं देखा, हमने ख्याल नहीं किया।' इस ओर सजगता होनी चाहिए कि कितना पैसा कहाँ जा रहा है, कहाँ खर्चा जा रहा है, कितना आपके पास है। आप किसी आश्रम जाएं और उन्हें पूछें, 'अब आपके पास कितने पैसे हैं?' 'आपको पता ही नहीं कि आपके पास कितने पैसे हैं?' 'नहीं माँ, हम वहाँ गए थे और हमने बीस डिब्बे मछली के खरीदे और सब पैसे खत्म हो गये।'

'पर क्यों?' आपने क्यों बीस डिब्बे मछली के खरीदे?'

'क्योंकि स्त्रियों ने कहा कि बेहतर है आप बीस डिब्बे मछली के खरीदो।'

'खाने के लिए कितने व्यक्ति हैं?'

इस प्रकार, उनको कोई ख्याल नहीं है, न सजगता है, कुछ नहीं। सब कुछ गड़बड़ है। किस समय लोग उठते हैं, किस समय सोते हैं, किस समय क्या करते हैं:इस विषय में कोई सजगता नहीं है, क्योंकि सहजयोग में आप

स्वयं के गुरु हैं। सब कोई गुरु हैं, महान गुरु हैं वे!

नि:संदेह, आप स्वयं के गुरु हैं, पर आपमें स्वयं का अनुशासन होना चाहिए। गुरु होने के लिए आप में स्वयं का अनुशासन होना चाहिए, और दृढ़ता, सम्पूर्ण दृढ़ता, ऊपर उठने के लिए, उत्थान के लिए, हर संभव प्रयास से, जो कुछ भी आपके उत्थान के लिए आवश्यक है। यह उस व्यक्ति के चिह्न हैं, जो गुरु बनेगा।

आपस में कोई बातचीत ही नहीं है। बातचीत के बीच एक बड़ी दरार है। आपस में कोई एक दूसरे को समझने की शक्ति नहीं है। समस्यायें हैं, किसी के साथ भावनात्मक प्रीति नहीं है। यह आश्रम नहीं है...''

(१९९१, श्री हम्सा पूजा, न्यूयौर्क)

सो वह सजगता होनी चाहिए :

''... जब तक आप आश्रम के प्रति सजगता को नहीं समझेंगे, वे अनाथालय के समान हैं। लोग, जैसे कि, लीडर, अत्यन्त मीठे बने रहते हैं ताकि वे अच्छे से खा-पी सकें, या कोई अत्यधिक अनुशासित आता है, वह दूसरा हिटलर होता है। कोई समझदारी नहीं है कि आपको अनुशासित होना है पर साथ ही साथ आपको प्रेममय, फिक्रमंद और संरक्षण देने वाला होना चाहिए। मज़ाक में कई बातें कही जा सकती हैं, पर वह लोगों में घुसती नहीं है। पर एक सहजयोगी को सोचना चाहिए कि वह कितना भाग्यशाली है कि माँ उसे कुछ कह रही हैं, आप यह करिए या वह करिए, वे आप के बारे में इतनी चिन्तित हैं, आपके परिवार के बारे में, आपके बच्चों के बारे में, आपके आश्रम के बारे में।

वह सजगता आश्रम के पुरुषों में भी होनी चाहिए; कैसा व्यवहार करना चाहिए, कैसी बात करनी चाहिए, क्या कहना चाहिए। आप ईश्वर के द्वारा बात करने के लिए नियुक्त (माऊथपीस) किए गये हैं। आप गप्पें मारने में कैसे समय व्यर्थ कर सकते हैं? सो यह समझना है कि इस प्रकार ईश्वर द्वारा नियुक्त व्यक्ति को कैसा व्यवहार करना चाहिए। आप उनका प्रतिनिधित्व कर रहे हैं, वास्तविकता में। आपको कैसे वस्त्र पहनने चाहिए, कैसे चलना

चाहिए, आपको कैसे बैठना चाहिए, कैसे खाना चाहिए।

मैं हैरान हो गई, यह जान कर कि लोग आश्रम में 'बीयर' पी रहे थे, मेरा तात्पर्य है कि यह मद्यहीन है, पर यह बीयर है, मोलासिस से बनी हुई पर है, तो बीयर, उसे आप कैसे पी सकते हैं? क्या आप कभी किसी 'शुगर फैक्ट्री' में गए हैं? उस मोलासिस की बदबू आप अपने अन्दर डाल रहे हैं।

सो, आप जो कुछ भी खा रहे हैं, जो खर्च रहे हैं, जो कुछ बोल रहे हैं, जो कुछ भी बाह्य है, वह आपकी अन्तर्दशा को व्यक्त करता है...''

(१९९१, श्री हम्सा पूजा, न्यूयौर्क)

IV. निपुण होना

आपको प्रथम श्रेणी का होना है, अपनी अयोग्यता, अपर्याप्तता, व्यर्थता को न्यायिक नहीं ठहराइये :

''... हम ऐसे विषय बिन्दू पर आये हैं कि हमें सक्रिय होना है। हमें और कमाने के लिए सक्रिय होना है। इस प्रकार नहीं, कि कहीं से धन उठा कर कहीं और रखें, पर हमें और धन उत्पन्न करना है। अब आप कैसे और धन उत्पन्न कर सकते हैं? अपने तरीके बदलने से या कुछ और करने से, हमें और धन उत्पन्न करना चाहिए।

उदाहरणतया, यदि सहजयोगी सोचता है, 'ठीक है, मैं काम नहीं करूंगा, मैं घर बैठूंगा व बर्तन साफ़ करने का काम करूंगा।' यह तरीका नहीं है।

सहजयोगियों को न केवल काम करना है पर अपनी योग्यता के अनुसार काम करना है। उसके अलावा उन्हें स्वयं को सुधारना है। जैसे कि, 'ओह, मैं ठीक हूँ, मैं थोड़ा पेन्ट कर सकता हूँ, पर बेहतर करने के लिए मुझे किसी और को लाना होगा।

इसका अर्थ है कि आपको पेन्ट करना तक नहीं आता। आपको सक्रिय होकर, उस व्यवसाय को सम्पूर्ण बनाना है। सब सहजयोगियों को ऐसा व्यवसाय आना चाहिए जिसे वे सम्पूर्णतया जानते हैं। ऐसा नहीं कि, 'मैं व्यर्थ हूँ', ठीक है, स्थिति को स्वीकार करो, 'मैं निरर्थक हूँ, निरर्थक के समान बैठा

हूँ, कोई काम नहीं कर रहा' तब ऐसी समस्यायें उभरती हैं, जैसे कि हमें आई थीं और आप स्त्रियों द्वारा पैसा कमाना शुरू करते हैं या बेकार के काम करते हैं, जैसे कि धोखा देना, कहानियाँ बना-बना कर पैसे निकलवाना। सो, ऐसे बेकार के लोग सहजयोग में स्वीकार्य नहीं हैं। जो भी बेकार का व्यक्ति होगा, उसे बाहर निकाल दिया जाएगा।

कभी भी अपनी व्यर्थता, अपर्याप्तता, अयोग्यता को न्यायिक न ठहरायें। आपको प्रथम श्रेणी का होना है, हर क्षेत्र में निपुण। आप में आत्मविश्वास की कमी नहीं होनी चाहिए, अन्यथा आप सहजयोग के लिए किसी काम के नहीं। ऐसा नहीं कि आप पैसे के पीछे ही लग जाएं, पर राजलक्ष्मी ; तात्पर्य है कि आपके समस्त गुणों की अभिव्यक्ति पूर्ण सक्रिय रूप से होनी चाहिए।

सुधरने की कोशिश करिए, सुधरने की कोशिश करें। इसका अर्थ यह नहीं कि आप पागलों के समान भागदौड़ करें पर सहजयोग के लिए कुछ नहीं ! यहाँ मुझे आपको सावधान करना है, परन्तु आपको केवल एक निरर्थक व्यक्ति नहीं होना है, भिखारी के समान नहीं घूमना है। यह सही नहीं है। अपनी दशा को सुधारें, अपनी तकनीक को सुधारें, अपनी निपुणता को सुधारें और पूरे विषय को समझें। जो भी कार्य आप लें, उसे कार्यान्वित करें। आप वह बने...सहजयोग के साथ आप कर सकते हैं।

यह सहजयोगियों की एक बड़ी समस्या है, क्या आपको मालूम है? एक सबसे बड़ी समस्या क्योंकि कोई आपसे प्रभावित नहीं है, कोई भी प्रभावित नहीं है, वे सोचते हैं कि कुछ निकम्मे लोगों ने मुझे घेरा हुआ है। कोई भी प्रभावित नहीं है। सब अव्यस्थित व्यक्तित्व के लगते हैं, इस प्रकार चलते हैं। वे सोचते हैं कि माँ ने उन्हें मंत्रमुग्ध किया होगा और वे एक लहर के समान चल रहे हैं, यहाँ और वहाँ।

सो, आज दीवाली के दिन हमें कहना है कि हम और निपुण बनेंगे, जो भी हम कर रहे हैं, उसमें विशेषज्ञ बनेंगे। हमें होना है। हमें प्रभावशाली लोग बनना है। इस संसार में लोगों को क्या प्रभावित करता है? केवल दो चीज़ें, या तो...प्रारम्भ में बाह्यता, दो चीज़ें ही बाह्यता में प्रभावित कर सकती हैं। क्योंकि प्रथम, वे बाह्य हैं। जब वे हमें देखेंगे, वे हमारा प्रथम प्रभाव देखेंगे।

पहले वे देखेंगे कि आप क्या हो ? मेरा कहने का अर्थ है कि यदि आप शराबी के समान दिखाई देंगे, तो कोई नहीं आएगा। किसी को हिप्पी लोगों में रुचि नहीं है, मुझे आप से यह स्पष्टत: कहना है...''

(१९८१, दिवाली पूजा, लन्दन)

V. नौकरी के विषय में और किस प्रकार लोगों को प्रभावित करना है और असर छोड़ना है

हमें सम्मानित लोग बनना है और ढ़ंग की नौकरी होनी चाहिए :

''... हमें यह समझ लेना चाहिए कि, हमारे पास ढ़ंग की नौकरी होनी चाहिए। हमें सम्मानित व्यक्ति होना चाहिए। हमारे पास योग्य पढ़ाई-लिखाई होनी चाहिए, बेहतर होगा कि कुछ योग्यता प्राप्त करें। आप सब बहुत बुद्धिमान लोग हैं और आप योग्यता प्राप्त करें। समाज में वे सोचेंगे कि यह माँ, सब भिखारियों की माँ है।

सो, स्वयं को अपनी नौकरी एवं घरों में स्थिर करो। स्वयं को स्थिर करने के लिए आपको यह सीखना है कि आप बदलें नहीं। बदलाव आपको अस्थिर कर देता है। सो, बदलाव का कोई प्रश्न ही नहीं है, 'मैं इसमें से गुज़रुंगी।' तब यदि आवश्यकता हो, कार्यान्वित नहीं हो रहा हो, तो तब आप बदल सकते हैं। यह सब पर लागू होता है...''

(१९८५, श्रीदेवी पूजा, सैन दिएगो, कैलिफोर्निया)

अपने उदाहरण से सब को प्रभावित करना है :

''... अब, जब लोग बोलते हैं, तो या तो वे प्रभावित नहीं कर सकते, या वे पागल के समान वे कुछ सिर में डाल लेते हैं और कुछ भी बोलते हैं। यह तरीका नहीं है। आपको अभ्यास करना चाहिए। समुद्र के पास जाओ, कहीं भी खुले में जाओ, ज़ोर से बोलो। उदाहरण के लिए आप 'हाईड पार्क' जाइए और जो भी बोलना है, ज़ोर से बोलिये। ज़ोर से बोलें व अभ्यास करें, जैसे आप कहते हैं, कहें, अभ्यास करें। अपनी गलतियों पर विजय पाएं, अपनी गलतियों का आनन्द न लें, वह तरीका नहीं है, उस प्रकार की चीज़ों के लिए

कोई समय नहीं बचा है। क्योंकि लोगों का प्रभाव दूसरों पर नहीं है। वे आपसे प्रभावित नहीं हैं। आप देखिए, मेरे साथ जो कुछ भी प्रभावित होता है, ठीक है। परन्तु आप लोगों को गुरु बनना है, आप को 'लीडर' बनना है और लोगों पर आपका यह प्रभाव होना चाहिए कि आप तीक्ष्ण बुद्धि के हैं, आपको आपका काम पता है, आपको मालुम है कि कैसे बोलना है, सहजयोग को कैसे सामने लाना है, और इस प्रकार करना है कि वह संवेदनशील, प्रेममय, स्नेहमय हो, न कि ज्वालामुखी समान। कभी-कभी कुछ लोग बड़े ज्वालामुखी समान हो जाते हैं, दूसरों के साथ। आपको करना है सम्पूर्ण सन्तुलन और आत्मनियंत्रण के साथ।

यह केवल स्वयं के अनुशासन से ही प्राप्त कर सकते हैं। आपको स्वयं को अनुशासित करना चाहिए और स्वयं को व्यर्थ न करें, आत्मसम्मान होना चाहिए।

सहजयोग में आज यह सबसे बड़ी कमी है। लोगों पर कोई प्रभाव नहीं है और यह आपको अपने अभ्यास में करना है कि आप कैसे लोगों के साथ बोलते हैं, आप कैसे बर्ताव करते हैं, यह बाहरी रूप से बहुत महत्त्वपूर्ण है, परन्तु अन्दर यदि आप सारे समय कहते रहें कि, 'मैं नहीं कर सकता, यह मेरे लिए नहीं है, मैं केवल इतना ही कर सकता हूँ।', तो तब आप अपने साथ और किसी और के साथ दयालु नहीं हैं, सो ऊपर उठिए...''

(१९८१, दिवाली पूजा, लन्दन)

व्यवहार में आत्मनियंत्रण :

''... आपके राजलक्ष्मी व गृहलक्ष्मी तत्त्व के लिए यह महत्त्वपूर्ण है कि आपके बर्ताव में आत्मनियंत्रण हो, कैसे आप बात करते हैं। जब आप बात करते हैं, यदि आप घटिया व्यक्ति के समान बोलते हैं या मदहोश व्यक्ति के समान, तो कोई भी प्रभावित नहीं होगा। आप कैसे व्यवहार करते हैं, बड़ा महत्त्वपूर्ण है, आप कैसे बैठते हैं, कैसे बोलते हैं...''

(१९८१, दिवाली पूजा, लन्दन)

हमें ज्ञात होना चाहिए कि हमें अपने ऊपर कितना नियंत्रण है :

''... वह बड़ा महत्त्वपूर्ण है। उदाहरण के लिए, कुछ लोगों की कोई भी

ढ़ंग की छवि नहीं होती है और वे दूसरों को प्रभावित करने की कोशिश करते हैं, तो यह मज़ाक ही है। जिस व्यक्ति की स्वयं की कोई छवी नहीं होती। उससे कोई भी प्रभावित नहीं होता है, सो, बाह्य से कार्यान्वित करने से पूर्व आन्तरिक रूप को कार्यान्वित करना चाहिए।

उदाहरणतया, एक व्यक्ति जो सदा दफ्तर में देर से आता है, उसके लिये कोई समय का महत्व नहीं होता है, कभी भी आदरणीय नहीं होता। सो, जब आप औरों को समय पर आने के लिए कहते हैं तो स्वयं पहले सही समय पर आयें। आप हमेशा पूर्ण रूप से समय को रखें। आप सही समय रखने के लिए पहचाने जाने चाहिए। यदि आपको दफ़्तर दस बजे पहुंचना है तो आप ऐसे दफ़्तर पहुँचे कि पाँच मिनट जल्दी आयें, बाहर प्रतीक्षा करें और निर्धारित समय पर प्रवेश करें।

वह समय-निष्ठता बड़ी महत्त्वपूर्ण है। इससे लोगों को सहायता मिलती है, और लोगों को आपके लिए आदर होता है। वे सोचते हैं, 'यह भद्र-पुरुष कितना नियमित है और मैं ही सदा देर करता हूँ।' यदि आप किसी से कहते हैं कि, 'मुझे किसी से निर्धारित समय पर मिलना है और इसकी किसी निर्धारित समय पर व्यवस्था की जानी चाहिए।' तो आपको पूर्णतया नियमित होना चाहिए। आपके द्वारा नियमितता बनाये रखना बड़ा महत्त्वपूर्ण है...''

(१९८६, लीडरशिप ॲण्ड एडमिनिस्ट्रेशन, द हेग, होलैन्ड)

यदि आप स्वयं एक आलसी व्यक्ति हैं तो आप किसी को प्रभावित नहीं कर सकते :

''... मैंने विशेषतया पाश्चात्य देशों में देखा है, कि लोग बहुत देर से उठते हैं, बड़े आलसी हैं। वे एक ठेले के समान चलते हैं और उन्हें देख कर यह लगता है कि उन्हें दुनिया में कोई रुचि नहीं है, जबरदस्ती कुछ कर रहे हैं, जैसे कि उन्हें इसमें धकेला गया होगा। ऐसा व्यक्ति कभी भी किसी को प्रभावित नहीं कर सकता, क्योंकि लोग भी आपकी छवि देखते हैं कि आप खुद ही अपने जीवन को किसी प्रकार घसीट रहे हैं, सो, जो वह कर रहा है, उसी चीज़ को क्यों करना? वह हमें कुछ नहीं बता सकता। अत: इसलिये यदि आप स्वयं ही आलसी व्यक्ति हैं तो आप किसी को प्रभावित नहीं कर

सकते।

जिस व्यक्ति ने दूसरों को प्रभावित करना हो, उसे जल्दी उठना चाहिए, सोने की सही आदतें होनी चाहिए, सुबह उठ कर ठीक से ब्रश करें, सफ़ाई करें और फुर्तीला व्यक्ति होना चाहिए...''

(१९८६, लीडरशिप ॲण्ड एडमिनिस्ट्रेशन, द हेग, होलैन्ड)

आपका आत्मविश्वास आपके संपूर्ण वर्तन जैसे बातचीत, उठने-बैठने, चलने और संदेश देने में दिखना चाहिए :

''... यह बड़ा महत्वपूर्ण है कि जब आप लोगों से बात करते हैं तो आप का बोलने, चलने का सही तरीका होना चाहिए। एक उचित तरीका। सब स्वच्छ, साफ-सुथरा होना चाहिए और आप शिथिलता से न चलें, टाँगें इधर-उधर फेंक कर, परन्तु सीधे होकर व सीधे बैठें। लोगों को दिखे कि सर्वप्रथम, आपमें आत्मविश्वास है। यदि आपमें, स्वयं में ही विश्वास नहीं है... मेरा अर्थ है, आपका कोई भी व्यवहार जो दर्शाता है कि आपमें आत्मविश्वास नहीं है, तो आप दूसरों को प्रभावित नहीं कर सकते।

आपका आत्मविश्वास, आप के व्यवहार से दिखना चाहिए, जैसे कि, बात करना, चलना, बैठना और संदेश देना। विश्वास की भावना होनी चाहिए। आत्मविश्वास तब आता है जब आप जान जाते हैं कि आप पूरी तरह सुरक्षित हैं। सहजयोग में आप जानते हैं कि यदि आप का 'सैन्टर हार्ट' (मध्य हृदय) सुरक्षित है, स्वयं को कहें, 'माँ मेरे साथ है, माँ मेरी सहायता कर रही हैं, मैं माँ के साथ हूँ, मुझे कोई चिन्ता की ज़रूरत नहीं है।' तब आपका मध्य हृदय ठीक रहेगा। निश्चय ही, यह आप दूसरों को नहीं कह सकते। परन्तु यदि आपमें वह व्यक्तित्व है, तो आप आसानी से यह दूसरों में ग्रहण करवा सकते हैं।

पर यदि आप में आत्मविश्वास नहीं है, तो आप इसे नहीं कर सकते। अत: सर्वप्रथम स्वयं में आत्मविश्वास स्थापित करना है। सहजयोगियों के लिए यह आसान है कहना, 'मैं आत्मा हूँ और मैं बच्चा हूँ, मैं स्वयं आदिशक्ति द्वारा चयनित हूँ।' अत: आपके अन्दर अत्यन्त अधिक

आत्मविश्वास होना चाहिए...''

(१९८६, लीडरशिप ॲण्ड एडमिनिस्ट्रेशन, द हेग, होलैन्ड)

इन सभी चीज़ों को लोग देखते हैं, आप कैसे खाते हैं, कैसे बोलते हैं :

''... उदाहरण के लिए, जब आप लोगों के बीच में होते हैं, आप कैसे अपना भोजन खाते हैं। कुछ लोग अपना मुँह हर समय खोलते हैं, कुछ आवाज़ निकाल कर खाना खाते हैं। यह सब चीज़ें दूसरों द्वारा देखी जाती हैं, आप कैसे खाते हैं, कैसे बोलते हैं। आपको अपना मुँह खुला नहीं रखना चाहिए, साधारणतया। आप कभी दूसरों को प्रभावित नहीं कर सकते। अपना मुँह-एकदम चिपका कर भी नहीं रखना चाहिए, पर सामान्य तरीके से बंद, ताकि लोग ऐसा न सोचें कि आप उन्हें घूर रहे हैं, यदि आप अपना मुँह सारे समय खुला रखें।

या वे यह न सोचें कि आप आक्रामिक हैं उनके साथ या क्रोधित हैं। परन्तु सामान्य चेहरा रखें, ऐसा चेहरा जो न तो आक्रामिक हो और न ही गुलामों के समान। यदि आप खुला मुँह रखें, वे सोचेंगे, 'ओह्, वह बेवकूफ़ है।' यदि आप अपने होंठ चिपका कर रखें, वे सोचेंगे कि आप आक्रामिक प्रकृति के हैं। सो, आपको समझना है कि, आप दूसरों के सामने कैसे बैठे हैं, कैसे बात कर रहे हैं। और दूसरों को प्रभावित करने के लिए, सर्वप्रथम, जैसा कि, मैंने कहा, 'आपको अपने स्वयं के व्यक्तित्व को सम्मानित करना चाहिए और फिर अपने व्यवहार द्वारा दूसरों के व्यक्तित्व का सम्मान करें...''

(१९८६, लीडरशिप ॲण्ड एडमिनिस्ट्रेशन, द हेग, होलैन्ड)

उनके साथ अत्यन्त सज्जनता से बात करें :

''... जैसे, जब कोई आता है, तो आपको उनसे बड़ी सज्जनता से बात करनी चाहिए, यह सोच कर कि एक दूसरा भगवान अन्दर आ रहा है। यदि मेरे अन्दर आत्मा है तो उसमें भी आत्मा है। आपको देखना चाहिए, कि वह ठीक से बैठ पाये, आरामदायक हो, उसे पूछिए कि क्या वह चाय पियेंगे। उन्हें आरामदायक बनायें। उन्हें यह अहसास करायें कि आप किसी भी प्रकार से अशांत नहीं हैं, न ही चिढ़े हुए हैं, पर आप उनसे मिल कर बड़े प्रसन्न हैं

और आप दयालु भाव से करिये।

कभी-कभी आत्मविश्वास के कारण आप थोड़ा डावांडोल महसूस करते हैं, वह असुरक्षितता का प्रतीक है। जब किसी के साथ बात कर रहे हों तो डरपोक नहीं होना चाहिए। आपको ऐसा होना चाहिए कि दूसरा व्यक्ति पूर्णतया विश्वस्त हो जाए और उसे लगे कि यह पुरुष बड़ा आनन्ददायक है।

(१९८६, लीडरशिप ॲण्ड एडमिनिस्ट्रेशन, द हेग, होलैन्ड)

दूसरों को बात करने का अवसर दें :

''... दूसरों को प्रभावित करने का एक और तरीका है कि उन्हें बात करने का अवसर दें, उन्हें ठीक तरह से सुनें। खुद नहीं बोलें, उन्हें सुनें। जब वे कुछ कह लेते हैं, तब कहिये, 'वह सच ही, निश्चय ही, मैं आपसे सहमत हूँ...पर।' तब आप प्रारम्भ करें। सो, आप उन्हें यह कह कर न घबड़ा दें, 'नहीं, कदापि नहीं।' परन्तु इसके विपरीत, आप देखिये कि, उन्हें क्या कहना है, आप मुझे देख सकते हैं, मैं प्रायः इस प्रकार करती हूँ। जब कोई कुछ कहता है, 'ओह्, वह सत्य है पर आप देखिए, इस प्रकार है...।' तब उन्हें बुरा नहीं लगता। वे सोचते हैं कि आपने इसकी दूसरी ओर भी देखी है, आपमें सन्तुलन है, आप केवल अपने विचार दूसरों पर मत थोपिए।

एक प्रकार से आप करते हैं, पर आप इस प्रकार करिए कि किसी को यह न लगे कि आप इस प्रकार का कुछ कर रहे हैं...''

(१९८६, लीडरशिप ॲण्ड एडमिनिस्ट्रेशन, द हेग, होलैन्ड)

किसी को कुछ करने को मत कहिए :

''... जहाँ तक हो सके, किसी से कुछ करने को नहीं कहिए, इससे लोगों को दुःख होता है। उदाहरणतया, जब मैं आप लोगों से कहती हूँ, 'यह करो, लाईट बंद करो।' आखिर आप मेरे बच्चे हैं। यह ठीक है, यह अलग सम्बन्ध है। पर जब आप दूसरे लोगों से बर्ताव कर रहे हैं, जैसे कि कोई बैठा है, यदि आप, बात करते हुए, धीरे से बत्ती जलाना चाहते हैं, आप उठ कर बत्ती जला दें। उससे पूछिए, 'आपको आपत्ति तो नहीं, यदि मैं बत्ती जला दूं

तो।' व्यवहार में कोई भी आक्रमकता सब से पहला प्रभाव छोड़ती है...''

(१९८६, लीडरशिप ऑण्ड एडमिनिस्ट्रेशन, द हेग, होलैन्ड)

वस्त्र भी, मैं कहूँगी कि दूसरों को प्रभावित करने के लिए वस्त्र बड़े महत्वपूर्ण हैं :

''... यदि आप किसी से औपचारिक प्रकार से नाता रखते हैं, या आप उसे व्यापार आदि में प्रभावित करना चाहते हैं, तो आपको ढ़ंग के औपचारिक वस्त्र पहनने चाहिए, न कि अनौपचारिक, ढीले-ढाले। आपको औपचारिक वस्त्र पहनने चाहिए, जैसे कि गाढ़े नीले रंग का सूट, सही तीन पीस सूट, साफ़ जूते, बाल ठीक से बनाए हुए, शायद थोड़ा सा तेल लगाया हुआ हो, ठीक है, सज्जन, तीक्ष्ण पुरुष के समान।

परन्तु यदि आप संसार के फैशनों में लगे रहें तो, वे तो रोज़ बदलते रहते हैं। आज बाल इस तरफ़ होंगे तो कल उस तरफ़, तो बाल ठीक से कंघी कर के अफ़सर के समान बनायें। पुराने समय में, आप देखें कि फिल्म के नायक भी बालों में तेल लगाते थे। वे कभी ऐसे सूखे बाल नहीं रखते थे। मेरा अर्थ है कि तेल न सही पर ठीक से बनाये होने चाहिए। बाज़ार में अनेक ऐसी चीज़ें मिलती हैं जिनसे आप बिना तेल लगाए बाल सफ़ाई से बना सकते हैं। बाल सही तरीके से बनाए होने चाहिए, ताकि यह दिखे कि आपने अपनी उपस्थिति और बालों के ढ़ंग पर ध्यान दिया है। इस प्रकार अपनी एक ऐसी छवि बना लेते हैं जो पूर्णतया एक विशेष कार्य के लिए उपयुक्त है।

उदाहरण के लिए, यदि खानसामा तैरने के सूट में आता है, तो आप उस बारे में क्या सोचेंगे? यह भयंकर है। खानसामा को खानसामा के समान ही वस्त्र पहनने चाहिए, उसी प्रकार बिज़नेस मैन को भी बिज़नेस मैन के समान वस्त्र पहनने चाहिए। आप अपने दफ़्तर में जीन्स पहन कर नहीं जा सकते। क्योंकि यदि आप ऐसा करते हैं, तो सभी करेंगे और ये सब बातें शिथिलता उत्पन्न करती हैं। यह शिथिलता दफ़्तर के बाहर ठीक है, पर जब आपको औपचारिक कार्य करने हैं...''

(१९८६, लीडरशिप ऑण्ड एडमिनिस्ट्रेशन, द हेग, होलैन्ड)

पहनावा आपके स्पष्ट उच्चारण में अन्तर लाता है :

''... मैं आपको एक और घटना के बारे में बताती हूँ : सी.पी. के दफ़्तर में एक स्त्री जीन्स पहन कर आई और सी.पी. ने उसे बुलाकर कहा, 'मैडम, ऐसे नहीं चलेगा, आप पैन्ट पहन सकती हैं या कोई और ढ़ंग के वस्त्र पर जीन्स नहीं।'

उसने कहा, 'नहीं, पर सर, आज कल यह अच्छी है।'

उन्होंने कहा, 'हाँ, ठीक है, आप गली में पहन सकती हैं, घर में पहन सकती हैं, कहीं भी पहन सकती हैं, पर दफ़्तर में नहीं।'

वह बोली, 'नहीं सर, ऐसा नहीं हो सकता।'

उन्होंने कहा, 'ठीक है, तो आप कृपा कर के इस्तीफ़ा दीजिए, मैं आपको नहीं रखूंगा।' और उसने ढ़ंग के कपड़े पहनने शुरू कर दिए। उससे वास्तव में अन्तर हो जाता है। सदा पहनावा स्पष्ट उच्चारण के लिए अन्तर लाता है। पूर्णतया...''

(१९८६, लीडरशिप ॲण्ड एडमिनिस्ट्रेशन, द हेग, होलैन्ड)

लोगों के साथ व्यवहार करते समय ध्यान रखिए कि आपको सत्यवादी होना चाहिए :

''... झूठ मत बोलिए, यदि कुछ कहना है तो स्पष्टतया कहना चाहिए। पर ज़रूरी नहीं कि हर बात बतानी चाहिए, वह झूठ बोलना नहीं होता। जो भी आपको बताना है, उतना ही कहें, पर आज कुछ और कह रहे हैं, कल कुछ और, परसो कुछ और, ऐसा नहीं कहना चाहिए। वह इन्सान के दिमाग में एक बड़ी दरार बना देते हैं। अचेतन में वह सोचता है, 'ओह वह धोखेबाज है और इस विषय से दूर भाग रहा है,' मानिए, कि अभी मैं आपसे बात कर रही हूँ, फिर मैं घड़ी को देखना शुरू करती हूँ। वह बेइज्जत करना है। सोचिए, कि यदि आप किसी विशेष विषय पर बात कर रहे हैं और मैं विषय बदल देती हूँ, तो वह भी बेइज्जती करना है, क्योंकि सब में इतनी बुद्धि होती है, कि वे जान लेते हैं कि आप विषय से दूर भागने की कोशिश कर रहे हैं। पर आप इसे एक हद

तक लें और फिर यदि सब कुछ अजीब हो, तो आप विषय पर ले आएं...''

(१९८६, लीडरशिप ॲण्ड एडमिनिस्ट्रेशन, द हेग, होलैन्ड)

दूसरों के साथ बात करते समय, अपने विषय में मत बोलिए :

''... 'मैं यह हूँ, मैं वह हूँ,' वह किसी को भी अच्छा नहीं लगता है। स्वयं के विषय में बोलना बेवकूफ़ी है। 'मेरे पास यह है, मैं यह हूँ,' कुछ नहीं। आप हर समय यह पूछें कि, 'आप क्या कर रहे हैं? आपका क्या व्यवसाय है? आप कैसे हो? यह, वह,' हर प्रकार के प्रश्न उनसे पूछें...''

(१९८६, लीडरशिप ॲण्ड एडमिनिस्ट्रेशन, द हेग, होलैन्ड)

अपने संघठन के विषय में आप सदा 'हम' कहें :

''... तब आपको कहना है, यदि अपने संघठन के विषय में तो, आपको 'मैं' नहीं कहना चाहिए, सदा 'हम' कहें, 'हम नहीं करते', हम हमेशा संघठन का उल्लेख करें स्वयं का नहीं, 'मैं ऐसा काम नहीं करूंगा', 'मैं इससे घृणा करता हूँ, मैं इसमें विश्वास करता हूँ,' यह एकदम मूर्खतापूर्ण है। 'हमें क्या करना है, हम विश्वास करते हैं; हम ऐसा सोचते हैं और आपकी क्या राय है? हमारे पास इस प्रकार की चीज़ है।'

या जो भी आप उनसे कहना चाहते हैं, अपने संघठन के विषय में या अपने स्वयं के सामान के बारे में। आपको उन्हें कहना है, 'देखिए, यही उपलब्ध है। अब यह यहाँ और हमने देखा है, कि इसने बहुत अच्छाई की है, इस प्रकार यह कार्यान्वित होता है। हमें इसके बारे में बहुत बढ़िया वृत्तान्त मिला है। आप उन नतीजों को देख सकते हैं। हमारे पास नतीजे हैं यहाँ, आप देख सकते हैं कि यह क्या है। यदि आप चाहें तो इसका परिक्षण कर सकते हैं...''

(१९८६, लीडरशिप ॲण्ड एडमिनिस्ट्रेशन, द हेग, होलैन्ड)

दूसरों में ज्ञान बाँटिए :

''... मैं यह कह रही हूँ कि जब हम लोगों को बाहर जा कर समझा रहे हैं, तो आप दूसरे छोर पर हैं। आपकी किसी ने भी सेवा नहीं करनी बल्कि

आपको ज्ञान बाँटने की सेवा करनी है। एक बार जब आप को इस बात का भान हो जाता है कि आपको यह सेवा का कार्य करना है, तो आपका रवैया बदल जाता है। आपने लेगों को ज्ञान देने की सेवा करनी है, इसी से सब कार्यान्वित होगा। मैं आपको बताऊंगी कैसे...''

(१९८६, लीडरशिप ॲण्ड एडमिनिस्ट्रेशन, द हेग, होलैन्ड)

लोगों को जिम्मेदार बनाना, प्रशासकता का एक बड़ा महत्त्वपूर्ण भाग है:

''... यदि आप सब कार्य स्वयं ही करना शुरू कर देंगे तो लोग आपका कार्य कभी नहीं बाटेंगे। वे कभी कुछ नहीं करेंगे। उन्हें जिम्मेदार बनाने के लिए सबसे उत्तम तरीका है, उन्हें इनाम दें। यदि किसी ने अच्छा कार्य किया है तो उसे जरूर इनाम दें। 'तुमने बड़ा अच्छा कार्य किया है' ऐसा प्रत्यक्ष में न कह कर अपरोक्ष रूप से इनाम दें। दयालु भावना से छोटी चीज़ों में...''

(१९८६, लीडरशिप ॲण्ड एडमिनिस्ट्रेशन, द हेग, होलैन्ड)

ये युक्तियाँ जो मुझ में प्राकृतिक हैं, परन्तु आप भी उन्हें ग्रहण कर सकते हैं :

''... ऐसी छोटी-छोटी चीज़ों से अन्तर आता है। जब वे बीमार होते हैं तो उनकी देखरेख करें। जानिए, कि क्या उनके बच्चे बीमार हैं, या उनकी पत्नियाँ बीमार हैं। आपको उनसे सम्बन्ध रखना है और उनके साथ पहचाने जाने चाहिये। एक संस्था को परिवार के समान समझना चाहिए, एकदम परिवार के समान। उसे क्या समस्या है? क्या वह ठीक है? क्या आप को कोई सहायता चाहिए? यह बात, वह बात। जब पति बीमार हो या पत्नी बीमार हो तो कभी फूल भेजें या उनके बच्चों के विषय में पूछताछ करें। इन सब बातों का बड़ा अर्थ होता है।

साधारणतया, लोग क्रिसमस के दिन कार्ड या कुछ भेज देते हैं, पर एक संस्था में आप एक सही तरीके से कार्ड की व्यवस्था या प्रणाली बना सकते हैं। उसे स्वयं हस्ताक्षरित करें और बीच में एक पंक्ति डालें, 'मैं आशा करता हूँ कि आपकी पत्नी ठीक है या आपके बच्चे ठीक हैं।' यदि आप उनकी पत्नी

को जानते हैं तो, 'कृपया मेरी शुभकामनायें दें।' उन्हें मछली के समान शराब पिलाने की जरूरत नहीं है, पर इसलिये कि उन्हें यह अनुभूति हो कि उन्हें प्यार किया जाता है, वे संस्था में पसन्द किये जाते हैं और वे बड़े महत्वपूर्ण हैं। इस प्रकार से...''

(१९८६, लीडरशिप ॲण्ड एडमिनिस्ट्रेशन, द हेग, होलैन्ड)

स्त्रियाँ

जब हम श्रीमाताजी के जीवन के बारे में मनन करते हैं तो हम देखते हैं कि वे इस प्रकार का जीवन व्यतीत कर रही हैं, जैसा हर स्त्री का स्वप्न होता है। वे एक आदरणीय बेटी, स्त्री और पत्नी रही हैं : सुन्दर, चुम्बकीय और प्रगतिशील। उनका सुखद वैवाहिक जीवन है और वे अद्‌भुत माँ, नानी और परनानी हैं- प्रेममयी, सहनशील आर विनोदमयी। वे स्वतंत्र हैं और समाज में सक्रिय भाग लेती हैं और पूरे विश्व में माननीय हैं: न्याय और शान्ति फैला रही हैं। मनुष्यों की हर स्तर पर सहायता कर रही हैं, सामाजिक और आध्यात्मिक।

ऐसी वे उदाहरणात्मक एवं असाधारण जीवन व्यतित कर रही हैं। अपनी सभी विशेषतायें पूर्ण आत्मविश्वास और प्रेम के साथ अभिव्यक्त कर रही हैं, जिन्हें वे, स्त्रियों में विकसित होने के लिए प्रोत्साहित कर रही हैं।

श्रीमाताजी निर्मला देवी
एक असाधारण जीवन

क्योंकि मैं सुरक्षा दे रही थी, वे कुछ नहीं कह सके:

''... अब मैं आपको अपने जीवन काल का एक उदाहरण दूंगी। मैं दिल्ली में थी और तब विभाजन की समस्या शुरू हुई थी। बहुत लोग इधर-उधर भागे। एक बार मैं अपने पिता के घर में बाहर बैठी थी, मैं बुन रही थी। कल्पना का जन्म होने वाला था और मैं बाहर बैठ कर बुन रही थी। एक स्त्री मेरे पास आकर बोली, 'हम शरणार्थी हैं, क्या आप हमें अपने घर में शरण दे सकती हैं?'

मैंने कहा, 'ठीक है।' वह मेरे पिता का बहुत बड़ा घर था। मैंने कहा, 'यह इतना बड़ा घर है, और हमारे पास बाहर जगह है, जिसे आप इस्तेमाल कर सकती हैं। वहाँ रसोईघर व स्नानघर भी है, आप वहाँ रह सकती हैं।'

उसने कहा, 'हमारे साथ एक दोस्त और मेरे पति हैं, क्या हम रह सकते हैं?'

मैंने कहा, 'ठीक है।'

हमने उनके ठहरने का प्रबन्ध कर दिया, मेरे परिवार के लोगों को यह अच्छा नहीं लगा, विशेषतया मेरा भाई, मेरे पति ने भी कहा, 'मैं इस स्त्री का यहाँ रहना पसन्द नहीं करूंगा। पता नहीं वह किस प्रकार की स्त्री है?'

मेरे भाई ने कहा कि, 'अब मेरी बहन ने कह दिया है, इस कारण मैं कुछ नहीं कह सकता, पर उसे ही इस बात का निर्णय लेना है। सो वह उसका कार्य है, उसे ही निर्णय करने दो, मैं कुछ नहीं कह सकता।' सो, सब चुप हो गये और वे वहाँ ठहर गये।

उसके पति का दोस्त एक मुसलमान व्यक्ति था और दिल्ली में बड़ा उपद्रव मचा हुआ था। बहुत बड़ा उपद्रव। हिन्दु, जैसे कि जनसंघी और जड़वादी लोगों ने समूह बना लिया था, जो अनेक मुसलमानों को मार रहे थे और उन लोगों को नौकरों आदि से ज्ञात हो गया कि हमारे पास मुसलमान रह रहा है। पाँच या छह लोग हमारे घर, ये, वो ले कर आ गये। ये लोग डर गये।

मैंने उस मुसलमान व्यक्ति से कहा कि, 'जाकर मेरे कमरे में छुप जाओ। मैं उनका सामना करती हूँ।' मैं बाहर गई।

उन्होंने कहा, 'हमने सुना है कि आप के घर में एक मुसलमान छुपा है।'

मैंने कहा, 'नहीं, कोई नहीं है, यहाँ कोई मुसलमान इस घर में नहीं है।'

उन्होंने कहा, 'हम जा कर तलाशी लेंगे।'

मैंने कहा, 'आप नहीं जा सकते, यदि जाना ही है तो मुझे मार कर ही जा सकते हो।'

उन्होंने मेरा बड़ा सा टीका देखा। मैंने कहा कि, 'आप अन्दर नहीं जा सकते। मैं यहाँ खड़ी रहूँगी आप मेरे घर में प्रवेश कदापि नहीं कर सकते।'

वे चले गये। उन्हें ज्ञात था कि अन्दर मुस्लिम है, अन्यथा मैं इतना अड़ नहीं जाती। परन्तु चूंकि मैं सुरक्षा दे रही थी, वे कुछ नहीं कह सके, बाहर चले गये व यह व्यक्ति सुरक्षित हो गया। बाद में यह स्त्री बहुत नामी अभिनेत्री बन गई। उसने कई कार्य किये। मेरा तात्पर्य है कि सब कुछ बदल गया...''

(१९८१, महालक्ष्मी तत्त्व, लन्दन आश्रम, यू.के.)

हमारा अधिकार हमारे भीतर है, हमारी शक्तियों में है :

''... मैं भी एक स्त्री हूँ, जैसा कि आपको ज्ञात है, मेरा परिवार भी है। मैं उन्हें कभी भी अपनी शक्तियाँ नहीं दिखाती। मैंने सदा अपने पति की बात सुनी। मैंने उनकी आज्ञा का पालन किया। वे ऐसे समाज से सम्बन्धित थे, जहाँ मुस्लिम संस्कृति का प्रभाव था। पर मेरे लिए यह एक ठिठोली थी, क्योंकि मैंने सोचा कि, वे एकदम बच्चे के समान हैं। मुझे उनके साथ बड़ा धैर्यशील रहना पड़ता था। वे हमेशा कहते हैं कि मेरी शक्तियों के कारण उन्होंने जीवन में सब कुछ पाया है, हमेशा सब की उपस्थिति में वे ऐसा कहते हैं, इसका मुझे पता नहीं पर निश्चय ही मैं अपने वैवाहिक जीवन में सन्तुष्ट हूँ। मैं और लोगों के समान कभी नहीं सोचती कि मुझे अपने पति को दबा कर रखना चाहिए, उससे झगड़ना चाहिए, हमारा यह करने का अधिकार होना

चाहिए। हमारा अधिकार हमारे भीतर है, हमारी शक्तियों के अन्दर...''

(१९९३, श्रीफ़ातिमा पूजा, इस्तंबूल)

मैं कभी कुछ नहीं कहती :

''... यदि वे क्रोधित होते हैं तो मैं चुप रहती हूँ, ठीक है? आखिरकार उन्हें बाहर सब का सामना करना पड़ता है और उन्हें अपना क्रोध मुझ पर ही निकालना पड़ता है। मैं क्या कर सकती थी? यदि वे बाहर वालों के साथ ऐसा करेंगे तो लोग उन्हें मारेंगे, सो, बेहतर है कि वे अपना गुस्सा मेरे ऊपर उतारें। और मुझे कभी भी यह विचार नहीं आया कि वे मुझे दबा रहे हैं। केवल मैंने यही सोचा कि वे अपना गुस्सा निकाल रहे हैं।

परन्तु मैंने देखा है कि जब भी मैंने उनसे कुछ कहा है तो उन्होंने सोचा है। उनके जीवन काल में मैंने ग्यारह निर्णय लिये हैं और वे सारे निर्णय उन्हें अभी तक एक-एक कर के याद हैं और उन्हें ज्ञात है कि वे कितने महत्त्वपूर्ण थे। बाकि सब बातें मैं उन्हें कभी नहीं बताती कि क्या करना चाहिए। जो सबसे महत्त्वपूर्ण था, वह है सिद्धांत। अब उन्होंने भी यह समझ लिया है कि मेरा बड़ा महत्त्वपूर्ण लक्ष्य है। तो उन्होंने मुझे पैसा दिया, समय दिया, मुझे पूर्ण स्वतन्त्रता दी, परन्तु प्रथम मुझे अपने आपको एक समझदार समर्पित पत्नी के रूप में स्थापित करना था...''

(१९९३, श्रीफ़ातिमा पूजा, इस्तंबूल)

जब हमें अंग्रेजों के साथ लड़ना था तो तब मैं केवल सत्रह-अठारह वर्ष की थी और मैं अत्यन्त सक्रिय थी :

''... आप सब अपने देशों में एक बड़ा भाग ले सकते हैं। बड़ा कार्य कर सकते हैं। जैसे कि जब हमें अंग्रेजों से लड़ना था, तब मैं केवल सत्रह-अठ्ठारह वर्ष की थी, पर बड़ी सक्रिय थी। उन्होंने मुझे बिजली के झटके लगाए। मुझे बर्फ़ पर सुलाया, हर प्रकार के काम किए, परन्तु उस समय हमारे देश को स्वतन्त्रता चाहिए थी। परन्तु अब हमें अहंकार एवं प्रतिअहंकार से स्वतन्त्रता पानी है...''

(१९९४, लेडीज़ पब्लिक प्रोग्राम, ट्यूनिस)

महान स्त्रियों के आदर्श

I. श्री लक्ष्मी

वह लोगों पर दबाव नहीं डालती :

''... अब यह लक्ष्मी वह देवी है जो कमल पर खड़ी होती हैं। वे क्षेम, सम्पत्ति, सम्पत्ति का वैभव, सम्पत्ति की सजावट, जो भी मंगलमय है, उन सबका प्रतिनिधित्व करती हैं। जो भी मंगलमय नहीं है, वह सम्पत्ति नहीं है। सहजयोग के अनुसार, धार्मिक ग्रन्थों के अनुसार वह सम्पत्ति नहीं है। सो, लक्ष्मी जी कमल पर खड़ी होती हैं, यह दर्शाती हैं कि जिनके पास सम्पत्ति होती है, उन्हें ऐसा व्यक्ति होना चाहिए जो औरों पर दबाव नहीं डालता, जो लोगों को आस-पास धकेलता नहीं है, जो दबाता नहीं है और साथ ही वह एक स्त्री हैं, एक माँ हैं ...।''

(१९८२, दिवाली पूजा, लन्दन)

उनका स्वयं का अस्तित्व है, दबाव नहीं :

''... परन्तु सर्वोत्तम है कि वे कमल पर खड़ी हैं। इसका अर्थ है किसी पर दबाव नहीं। उनका स्वयं का अस्तित्व है, कोई दबाव नहीं। वे किसी पर भी किसी प्रकार का दबाव नहीं डालतीं। वे केवल स्वयं खड़ी होती हैं, उनका सारा वजन और सन्तुलन उनकी अपनी प्रतिष्ठा पर है। लक्ष्मी को इस प्रकार होना चाहिए...''

(१९९८, दिवाली पूजा, इटली)

जब वे वहाँ होती हैं तो वे केवल उनकी कमल के समान सुगन्ध अनुभव कर सकते हैं :

''... लक्ष्मी के चार हाथ होते हैं और वे कमल पर खड़ी होती हैं और उनका शरीर, मेरा तात्पर्य है कि पतला सा शरीर नहीं होता। उनका घना शरीर है। वे कमल पर खड़ी होती हैं, इसका अर्थ है कि वे जहाँ भी निवास करती हैं,

वे वहाँ रहने की अपनी उपस्थिति नहीं दिखाती हैं। वे इतनी सुन्दर हैं कि वे स्वयं को कमल के अनुकूल बना लेती हैं। वे सस्ती औरतों के समान अपना वजन नहीं झाड़तीं। वे स्त्रियाँ कहीं भी जाएंगी, कहेंगी, 'मुझे यह पसन्द नहीं है, वह पसन्द है। मैं यह लेना पसन्द करूंगी। मैं, इस प्रकार के स्थान पर सोना पसन्द करूंगी और मुझे इस प्रकार की चीज़ें पसन्द है।'

सो, जिस स्त्री में लक्ष्मी तत्त्व है, उसका प्रथम गुण है अनुकूलता। कोई उनकी उपस्थिति अनुभव नहीं करता, जब वे वहाँ होती हैं। केवल उनकी सुगन्ध, जो कमल के समान है, उसे अनुभव कर सकते हैं। मेरा यह तात्पर्य है कि जो स्वयं को अनुकूल बना लेती है, वही स्त्री का प्रतीक है। उसे अपने जीवन की परवाह नहीं होती, परन्तु वह दूसरों की परवाह करती है...''

(१९८१, दिवाली पूजा, लन्दन)

वह देती है और सुरक्षा प्रदान करती है :

''... तब खोज गहराई की ओर जाती है। तब वही लक्ष्मी महालक्ष्मी बन जाती है। जब आप स्वयं को ऊँचाई की ओर व गहराई में विशाल करते हैं, तब यह लक्ष्मी आपको अधिक आकर्षित नहीं करती, वह केवल वहाँ आपके गौरव के लिए है परन्तु सन्तुष्टि के लिए नहीं। धन-सम्पत्ति बाँटने के लिए है। आप आनन्द लेते हैं, मैं सोचती हूँ कि धन के लिए कोई शब्द नहीं है? उदारता, परन्तु उदारता भिन्न है। मैं जो कह रही हूँ, उदार लगाव, यह एक लगाव है कि आपको उदार होना है। यह एक अत्यन्त प्रसन्नता व आनन्द है, जो आप अनुभव करते हैं। जब आप उदार होते हैं तो वह उच्चतम होता है। जब आप दे देते हैं। वह एक लगाव है, वह मनुष्य की स्वयं की अनुभूति होती है कि आप उदार होना चाहते हैं। और वह उदारता तभी आती है जब आप में महालक्ष्मी तत्त्व जागृत हो जाता है। पर लक्ष्मी तत्त्व पर भी वे ऐसे खड़ी होती हैं, उनका हाथ ऐसे होता है (देने की मुद्रा) दूसरा हाथ ऐसे होता है (संरक्षण)।

इसलिये कंजूसी धन-सम्पत्ति का प्रतीक नहीं है। मेरा अर्थ है कि यदि आप कंजूस हैं तो आप उदार नहीं है। यदि आप वास्तव में सम्पत्ति के मालिक हैं तो आप क्यों कंजूस होंगे? यह सीधा, सरल समीकरण है, कि यदि आप

वास्तव में धनी हैं तो आप दे देंगे। यदि आप कुछ नहीं दे सकते तो आप गरीब हैं, आप भिखारी हैं। आप अभी भी उसके पीछे भाग रहे हैं। इसका अर्थ है कि आप अभी भी भिखारी हैं।

बायें हाथ से वे सदा देती रहती हैं और दायें हाथ से संरक्षण देती हैं। वे लोगों को सुरक्षा प्रदान करती हैं। धन से सदा लोगों को सुरक्षा देनी चाहिए, इस प्रकार कि औरों का क्षेम देखें न कि आपकी स्वयं की आसक्ति में रहें, जैसे कि सर्वोत्तम चीज़ें अपने लिए ले लें जब कि और लोग भूखे हैं। यह धनी आदमी का प्रतीक नहीं है। धनी आदमी वही है, जिसे यह ज्ञात है कि जब तक वे औरों के साथ बाँटेगा नहीं, वह खुश नहीं हो सकता।

(१९८२, दिवाली पूजा, लन्दन)

सर्वप्रथम जो लक्ष्मी देती हैं:अच्छे गुणों की पद्धति :

''... आपके गुणों की पद्धति सही हो जाती है। आप स्वयं का मूल्य ठीक से जान जाते हैं, जैसे कि आपको इस वस्तु का मूल्य पता है, उस वस्तु का मूल्य पता है। पर दिव्य व्यक्ति का मूल्यांकन धन से नहीं होता या उसके पास कितने पदार्थ हैं, पर वह कैसा चैतन्य है उस पर निर्भर करता है। जब आपकी दिव्यता की प्रकृति हो जाती है तो सारे मूल्यांकन की पद्धति बदल जाती है, आप देखना शुरू कर देते हैं कि जिसमें अधिकतम चैतन्य है वही अमूल्य है। साक्षात्कारी व्यक्ति के लिए, चैतन्य वाली वस्तु ही कीमती है, जिसमें दिव्यता नहीं है, वह कुछ नहीं है। आप हैरान होंगे कि जो भी वस्तु दिव्य है, वह कीमती भी होती है...''

(१९८२, दिवाली पूजा, लन्दन)

उसे सहनशील, धैर्यशील होना चाहिए और बिल्कुल माँग नहीं करनी चाहिए :

''... अतः, क्षेम केवल यह नहीं कि आप के पास धन है। सो, क्षेम के विषय में, क्या होता है ? उनका एक हाथ ऐसे होता है। इसका अर्थ है कि एक हाथ के द्वारा जाना चाहिए, केवल जाना चाहिए। उसे सहनशील होना चाहिए, धैर्यशील होना चाहिए और उसे बिल्कुल किसी चीज़ की माँग नहीं

करनी चाहिए...''

(१९८१, दिवाली पूजा, लन्दन)

श्री लक्ष्मी स्त्रित्व की सम्पूर्णता है :

''... मैं आपको श्री लक्ष्मी के विषय में बताने का प्रयत्न करूंगी, लक्ष्मी का प्रतीक। श्री लक्ष्मी स्त्रित्व की सम्पूर्णता है। वे सम्पत्ति, खुशहाली, मंगलता लाती हैं। वे समझदारी, उदारता, शक्ति और आनन्द लाती हैं। वे सब प्रकार के आशीर्वाद देती हैं। लक्ष्मी का प्रतीक है कि वे कमल पर खड़ी होती हैं, जो गुलाबी रंग का होता है। गुलाबी रंग मातृत्व के स्नेह का प्रतीक है। भारतवर्ष में, एक छोटी बच्ची को भी माँ कहते हैं। सो, लक्ष्मी के भिन्न-भिन्न पहलूओं में, प्रथम प्रतीक है कि वह स्नेहपूर्ण व्यक्तित्व है। एक हाथ में उनके कमल होता है जो गुलाबी रंग का है, वह भी उनके स्नेह को दर्शाता है। यहाँ तक कि काँटों से भरा भँवरा कमल में प्रवेश करता है, वह आराम करने के लिए स्थान पा लेता है। वह (स्त्री) अपने घर में आए मेहमानों को घर बुलाती है व सबसे उत्तम बिस्तर व सर्वोत्तम खाना देती है। साधारणतया पुरुष मेहमान लाता है व पत्नी उनकी देखभाल करती है। इसका अभिप्राय है कि जिस प्रकार का भी मेहमान हमारे घर आता है, हमें उसका ध्यान रखना चाहिए और पूर्ण श्रद्धा के साथ बाहर से आए हुए मेहमान की देखरेख करनी चाहिए।

वे कमल पर खड़ी है व गुलाबी रंग की साड़ी पहनी होती है। इसका अर्थ है कि, आपमें कमल के जैसे कोमल फूल पर खड़े होने के लिए सन्तुलन होना चाहिए, क्योंकि वे पानी के बीचोंबीच है और उनके आसपास कई जानवर हैं, जानवरों के समान व्यक्ति जो उन्हें आकर्षित करने का प्रयत्न करते हैं, इसलिये उन्हें सम्पूर्ण सन्तुलन रखना होता है। और उनके दो हाथों में कमल होता है और एक हाथ से वे देती हैं और दूसरे से आशीर्वाद देती हैं। इसका अर्थ है कि उसे उदार होना चाहिए, सदा दूसरों को देना चाहिए और स्वयं के लिए नहीं। उसे यह नहीं कि सब कुछ अपने ऊपर खर्चे और बच्चों एवं मेहमानों पर कुछ नहीं। सो, यह लक्ष्मी है, जिसे देना है, उदार होना है...''

(१९९७, दिवाली पूजा, रोमानिया)

जब आप में लक्ष्मी जागृत हो गई है तो आपको पैसे की चिन्ता क्यों करनी है ? :

''... ऐसा होता है सदा। जब आप लोगों के प्रति दयालु होते हैं तो सब कुछ आपके पास वापिस आ जाता है, या यदि आप लोगों के प्रति उदार हैं। बाद में आपको पता चल जाएगा, और अनेकों को पता चल चुका है कि पैसा बह कर उनके पास आता है। उन्हें समझ नहीं आता कि कहाँ से पैसा आ रहा है। बस, ऐसा कार्यान्वित हो जाता है कि आपको पैसा मिल जाता है, जब भी आप चाहते हैं। आपको पैसे की चिन्ता नहीं करनी चाहिए, केवल भूल जाओ और वह आपके पास आ जाता है।

जो लोग हर समय, हर सुबह पैसे गिनते रहते हैं, कभी सन्तुष्ट नहीं होते और उनको किसी भी प्रकार के आशीर्वाद नहीं मिलते। परन्तु, यदि आप पैसे की चिन्ता भगवान पर छोड़ दें, तो सब कुछ कार्यान्वित हो जाता है। सो, हम इससे क्या समझते हैं? कि यह सब सर्वशक्तिशाली परमात्मा के हाथों में है। सहजयोग में आने के पश्चात् आपको किसी प्रकार की चिन्ता नहीं, करनी चाहिए। सब परमात्मा के हाथों में छोड़ दो और सब कुछ कार्यान्वित हो जाएगा। सब लोगों से यह बताने की आवश्यकता नहीं है कि, 'मैं इतना चिन्तित हूँ, मेरे पास कुछ पैसा नहीं है,' यह दर्शाता है कि आप सहजयोगी नहीं हैं। सो , यदि आपको बेहतर बनाना है अपने पड़ोसियों को या दोस्तों को या अपने देश को, तो सर्वप्रथम आपको परिपक्व सहजयोगी बनना होगा। लक्ष्मी पहिले से ही आपमें जागरूक हो गयी हैं, वह आपके नाभि चक्र में निवास करती हैं। सो, लक्ष्मी जागरूक होते हुए, आपको पैसे की क्यों चिन्ता करनी है?...''

(१९९७, दिवाली पूजा, रोमानिया)

मेहमान को भगवान के जैसे मानना चाहिए :

''... आखिरी दिन लक्ष्मी देवी की पूजा की जाती है क्योंकि उनके आशीर्वाद फलस्वरूप ही ये सब सुन्दर सम्मेलन आयोजित हुए। इसलिये वे लक्ष्मी की पूजा करते हैं। हमारे अन्दर नौ प्रकार की लक्ष्मी निवास करती हैं,

जो मैं सोचती हूँ कि कुछ समय पहले मैंने आपको बताई हैं।

अब लक्ष्मी पूजा में आप स्वयं लक्ष्मी की पूजा करते हैं, इसका अर्थ पैसा नहीं है, बिल्कुल भी नहीं। पैसे की पूजा करना गलत है। परन्तु इसका अर्थ है कि लक्ष्मी पैसा है, जो हमारे साथ है या जो भी खुशहाली उनसे है, उसे बड़े ध्यानपूर्वक खर्चना चाहिए, क्योंकि वे बड़ी गतिशील हैं और पैसा फ़िसल सकता है। इसके विपरीत आपको बिल्कुल भी कंजूस नहीं होना चाहिए। कंजूस लोगों के साथ लक्ष्मी प्रसन्न नहीं रहती हैं। परन्तु यदि आपको खर्चना है तो आपको सही तरीके से खर्चना चाहिए अन्यथा पैसा गलत तरीके से खर्च हो जाएगा।

जब लक्ष्मी की रचना हुई, आप जानते होंगे, समुद्र मंथन से वे बाहर निकलीं, उनके चार हाथ थे। एक हाथ देने के लिए था। वे उदार हैं, वे देती हैं। इस प्रकार वे देती हैं और एक हाथ से वे आशीर्वादित करती हैं। ये उनके दो हाथ हैं। एक देने के लिए और एक व्यक्ति को आशीर्वाद देने के लिए। यह बड़ा महत्त्वपूर्ण है कि जब आप किसी को कुछ देते हैं, तो आप भूल जाईये और उस व्यक्ति को आशीर्वाद दें। न केवल आप उसे पैसा दें, पर साथ ही उसे आशीर्वाद दें।

दूसरे दो हाथों में गुलाबी रंग के दो कमल हैं। गुलाबी रंग प्रेम का प्रतीक है और जिस व्यक्ति के पास पैसा होता है उसका घर प्रेम से भरा होना चाहिए। जो भी मेहमान घर में आए, उसका सम्मान करना चाहिए। उसे भगवान के समान सम्मानित करना चाहिए। भारतवर्ष में आपने देखा होगा कि कैसे वे सोचते हैं कि विदेशी, अर्थात् उनके लिए भगवान हैं। यहाँ 'विदेशी' एक बूरा शब्द है, परन्तु भारतवर्ष में बड़ा सम्मानित शब्द है। यदि आप विदेशी हैं तो मतलब है कि आप भगवान हैं। आपको ज्ञात है कि भारत में, उन्होंने कैसे आपका ध्यान रखा। यही कारण है। यह भारत की मूल संस्कृति है। जो भी मेहमान हैं, वह चाहे कुछ भी हो, पर यदि वह मेहमान हैं तो उसका भगवान के जैसा सम्मान होना चाहिए। दूसरे देशों में यह विपरीत है। यदि आप विदेशी हैं तो लोग आपसे बात करना भी ठीक नहीं समझते मुझे पता नहीं कि ऐसी मानसिकता क्यों है? पर सहजयोग में नहीं। सहजयोगी ऐसे नहीं हैं। वे

मेहमानों के साथ बड़ा अच्छा व्यवहार करते हैं, मैंने सुना है। वे एक दूसरे का ध्यान रखते हैं और वे सुन्दरता के साथ सामूहिक हैं। सो, यह कमल का अर्थ है, प्रेम से भरा घर! जैसे कि भंवरा, जो कांटों से भरा होता है, जब वह कमल पर आता है, कमल खुल जाता है और भंवरा अन्दर जाकर बड़े अच्छे से और आराम से सोता है, यहाँ तक कि भंवरा, बिना किसी रुकावट के...''

(१९९८, दिवाली पूजा, इटली)

वह समुद्र में से बाहर निकलती हैं और राजलक्ष्मी एवं गृहलक्ष्मी बनती हैं:

''... वे समुद्र में से बाहर निकली हैं, इसलिये वे मिरियम हैं, आप उन्हें कह सकते हैं, वे मेरी हैं। इसलिये क्राईस्ट की माँ का नाम मेरी था क्योंकि वे समुद्र में से निकली थीं। मुझे पता नहीं कि लोग इस बारे में सोचते हैं, आखिर वे क्यों 'मेरी' बुलाई जाती थीं। क्यों यह 'मेरी' नाम? अब यह शक्ति, जो समुद्र से बाहर निकली ती, क्योंकि परमात्मा की खोज समुद्र से शुरू हुई थी, सबसे पहले, जैसा कि आप जानते हैं। वह समुद्र से ही शुरु होनी थी क्योंकि पहले पशु समुद्र में ही पैदा हुए थे। जब वे समुद्र से बाहर निकलती हैं तो एक राजलक्ष्मी और एक गृहलक्ष्मी बनती हैं।

राजलक्ष्मी वे हैं, जहाँ आप सामूहिकता में अपने क्षेम का आनन्द लेते हैं, आप कह सकते हैं सामूहिकता में, दायीं ओर। जैसे कि कुछ स्थान होते हैं, जो जनता के इस्तेमाल के लिए होते हैं, जनता के क्षेम के लिए। और गृहलक्ष्मी वह है, जो वैयक्तिक है, वैयक्तिक क्षेम।

इस प्रकार हम में लक्ष्मी का सार है, जब हम उत्क्रान्ति में ऊपर उठने लगे तो हमारे पास घर होने लगे, हमारा परिवार, हमारा निजी जीवन, सो हमारे पास गृहलक्ष्मी थीं। तब हमारे पास सामूहिकता होने लगी, जैसे कि हम कह सकते हैं कि महारानी यहाँ राजलक्ष्मी की प्रतिनिधि हैं। महारानी यहाँ इंग्लैंड की राजलक्ष्मी का प्रतिनिधित्व करती हैं। वे उसका प्रतीक हैं। हमारी महारानी, यहाँ राजलक्ष्मी का प्रतीक हैं। 'राज' शब्द का अर्थ है, राज्य या आप कह सकते हैं राजसी (शाही) राजकीयता का राजसी पहलु। सो, जब लक्ष्मी राजकिय लक्ष्मी है तब वह सामूहिकता के लिए है। महारानी स्वयं के

लिए नहीं जीती है, वह सब सामूहिक लोगों के लिए जीती है। इसी प्रकार राजलक्ष्मी वह है, जो हम सब के लिए हैं...''

(१९८१, दिवाली पूजा, लन्दन)

श्री लक्ष्मी का आशीर्वाद, जो क्षेमकारी है, आपको मिलता है :

''... तब आपके पास अपनी पत्नी है, जो गृहलक्ष्मी है। सो, हमारी एक पत्नी होनी चाहिए, जो गृहलक्ष्मी के समान होनी चाहिए। ये दो बातें हमें स्पष्टतया समझ लेनी चाहिए, क्योंकि हम उन्हें गड़बड़ा देते हैं। पत्नी एक गृहलक्ष्मी है, वह गृहस्थी की देवी है। अब उसे भी देवी समान हो होना चाहिए, मेरा तात्पर्य है कि वह केवल कहने से देवी नहीं बन जाती, आपको होना पड़ता है। आपको देवी बनना है और घर की देवी, गृहलक्ष्मी है।

अब इस देवी को घर की पत्नी के साथ एक होना चाहिए। तब लक्ष्मी के सार का आशीर्वाद, जो कि क्षेमकारी है, आपको मिलता है। यदि वह देवी नहीं है, तो आप सदा कष्ट पाएंगे। आपको सदैव समस्यायें होंगी, आपको सदा अनकही दु:ख, तकलीफ़ होंगी। इनका आशीर्वाद ही आपको सान्तवना, शान्ति और मुक्ति देगा, हर चीज़ से मुक्ति। इसी कारण बायीं नाभि बहुत महत्त्वपूर्ण है, और वह पाश्चात्य देशों में बहुत खराब है...''

(१९८१, दिवाली पूजा, लन्दन)

वह आपके भोजन का, आराम का ध्यान रखती है, वह आपको सुरक्षित करती है, पोषण करती है, वह आपको आनन्द देती है :

''... आज का दिन तेरहवाँ दिन, देवी का है, इसे धनतेरस कहते हैं, यह गृहलक्ष्मी का दिन है। वे गृहलक्ष्मी के रूप में आईं। गृहस्थी में स्त्री गृहलक्ष्मी का प्रतीक है, क्योंकि वही आपके भोजन का ध्यान रखती है, आपके आराम का ध्यान रखती हैं, वह आपको सुरक्षित करती है, पोषण करती है और आपको आनन्द देती है। जो स्त्रियाँ यह नहीं कर सकतीं, वे गृहलक्ष्मी नहीं हैं, घर की पत्नी उनके लिए बड़ा कमज़ोर शब्द है। वे गृहलक्ष्मी हैं, इसका अर्थ है कि वे घर की देवी हैं...''

(१९८२, दिवाली पूजा, लन्दन)

पहला दिवस है जिस दिन गृहलक्ष्मी की पूजा होती है :

''... आज हम कोई हवन नहीं करेंगे, जो हमने सोचा था, क्योंकि दिवाली में हवन करने की कोई आवश्यकता नहीं है, हम केवल पूजा करेंगे। अब आज पूजा है:जैसा कि आपको ज्ञात है कि पाँच दिन का उत्सव होता है। पहला दिन, तेरहवें दिन होता है, जब कि गृहलक्ष्मी का दिन होता है, उस दिन गृहलक्ष्मी की पूजा होती है। पर गृहलक्ष्मी को भी पूजा के योग्य होना चाहिए, तब गृहलक्ष्मी को कोई बर्तन दिया जाता है। कोई भी प्रकार का बर्तन गृहलक्ष्मी को भेंट स्वरूप दिया जाता है। उस दिन लक्ष्मी का जन्म हुआ था। लक्ष्मी भूमि माँ में से उत्पन्न हुई थीं, पर वे समुद्र में से बाहर निकली थीं, मंथन के बाद, सो वह लक्ष्मी का जन्म है। वे सम्पत्ति (वैभव) की दात्री हैं, सम्पत्ति जो भौतिक है एवं आध्यात्मिक हैं...''

(१९८३, दिवाली पूजा, यू.के)

पहला दिवस घर की पत्नी की पूजा का है :

''... ये पाँच दिन एक साथ सम्मिलित हैं। उनके अलग-अलग पहलू हैं, पर हर पहलू में एक समानता है, कि देवी का ही मुख्य भाग है। पहला दिन घर की पत्नी की पूजा का है, जहाँ आपको कोई भी बर्तन, रसोईघर के लिए खरीदना होता है जो पत्नी की उपयोगिता के लिए हो, या पत्नी के लिए कोई भेंट...''

(१९९७, दिवाली पूजा, रूमानिया)

प्रथम स्त्री राजलक्ष्मी है :

''... यदि पुरुष एक राष्ट्रपति है, और उसकी पत्नी अजीब सी स्त्री है, जैसे कि, कैनेडी की पत्नी थी, तो वहाँ कभी शान्ति नहीं हो सकती। न तो समाज में न ही... क्योंकि वह जहाँ भी जाएगी, वहाँ समस्या खड़ी कर देगी। वह समाज में जाएगी और चूंकि वह प्रथम स्त्री है, सब उसका अनुसरण करेंगे। यहाँ भी आप देखिए, जब महारानी ऐलिज़ाबेथ को गर्दन पर कुछ समस्या थी, कोई धब्बा सा हो गया था, तो उन्होंने 'कौलर' इस्तेमाल करना शुरू किया और सबने 'एलिज़ाबेथ कौलर' पहनना शुरू कर दिया। इस प्रकार

आप देखें कि जो भी समस्या हो, जैसे कि विक्टोरिया को थी और उसने पोशाक बनवाई, बाकियों को भी उसी प्रकार की पोशाक पहननी पड़ी।

इस प्रकार समस्त सामूहिक नमूने व फैशन इत्यादि प्रथम स्त्री के माध्यम से आते हैं। तो प्रथम स्त्री राजलक्ष्मी है और सबको उस राजलक्ष्मी का सम्मान करना चाहिए, एक स्त्री के रूप में, महारानी...''

(१९८१, दिवाली पूजा, लन्दन)

राजलक्ष्मी लोगों के कार्यों से आती है :

''... हर किसी में राजलक्ष्मी की प्रतिष्ठा, पवित्रता होनी चाहिए। वह राजलक्ष्मी इंग्लैंड के लिए बड़ी महत्त्वपूर्ण है क्योंकि आजकल हम राजलक्ष्मी तत्त्व को खो रहे हैं। और वह राजलक्ष्मी लोगों के कार्यों से आती है, यदि आप अक्रिय हैं तो राजलक्ष्मी नीचे चली जाती हैं...''

(१९८१, दिवाली पूजा, लन्दन)

राजलक्ष्मी वह है जो देश का गौरव है :

''... राजलक्ष्मी एक प्रतिष्ठित महारानी है, वह देश का गौरव है, उसे गौरवशाली स्त्री होना ही है। वह ऐसी स्त्री होनी चाहिए, जिसमें महारानी के सब गुण हों। और वह राजलक्ष्मी है : महारानी है या वह देवी जो महारानी है।

वह हर देश में निवास करती है। प्रत्येक देश में गृहलक्ष्मी होती है और यदि उसका अपमान हो, तो लोग.... वे कई प्रकार के कष्ट पाएंगे जैसे कि उन्हें पैसे की समस्यायें होंगी, आर्थिक समस्यायें होंगी। उन्हें समाज की समस्या भी होगी, हर प्रकार की चीज़ें। क्योंकि जो भी महारानी करती है या महाराजा करता है, वह बाकि सब के द्वारा किया जाता है। विशेषतया महारानी। जैसे कि इंग्लैंड में अधिकतर फ़ैशन वे ही आए हैं, जो महारानी ने शुरू किये। इसलिये वह जो भी करती है, बड़ा महत्वपूर्ण है और उसे यह समझ होनी चाहिए, कि वह देवी है। उसे उस देवी का प्रतिनिधित्व करना है जो हर देश में निवास करती है। सो, वह राजलक्ष्मी हैं...''

(१९८२, दिवाली पूजा, लन्दन)

राजलक्ष्मी सन्तुलन एवं प्रतिष्ठा की दात्री हैं :

''... अहंकार को सरलता से व्यवस्थित किया जा सकता है, यदि आप राजलक्ष्मी की पूजा करें। वे सन्तुलन देती हैं।

प्रथम वे हाथी पर सवार होती हैं। स्त्री के लिए हाथी पर चढ़ना सरल नहीं है। मैंने किया है, यह आसान नहीं है। बिना किसी भय के वे हाथी पर पूर्ण सन्तुलन के साथ सीधी बैठती है। उनके आशीर्वाद असीम हैं। प्रथम आशीर्वाद जो उनसे मिलना है, वह है प्रतिष्ठा ग्रहण करना। राजा की प्रतिष्ठा, रानी की प्रतिष्ठा। आप रानी हैं इसलिये गली की औरत के समान आप व्यवहार नहीं कर सकतीं। उनके आशीर्वाद से सर्वप्रथम आपको वह प्रतिष्ठा मिलती है। वह प्रतिष्ठा प्रेम से परिपूर्ण होती है, दूसरों के प्रति प्रेम। वह व्यक्तित्व और कुछ नहीं, केवल दूसरों के लिए प्रेम व क्षेम होता है। जहाँ भी वह देखती है, उनकी हर दृष्टि में लोगों के लिए आशीर्वाद होता है। वे दूसरों से कुछ आशा नहीं रखती, वह महारानी है, आप रानी को क्या दे सकते हैं? वे हर तरीके से उच्चतम हैं, आप उन्हें क्या दे सकते हैं?

(१९९४, श्रीराजलक्ष्मी पूजा, नई दिल्ली)

आप विनोदपूर्ण एवं समझदारी की प्रवृत्ति विकसित करते हैं :

''... देवी राजलक्ष्मी का दूसरा आशीर्वाद है कि आपकी ऐसी प्रवृत्ति विकसित हो जाती है, जो प्रतिष्ठामयी होती है, परन्तु साथ ही विनोदपूर्ण एवं समझदारी की होती है, जो लोगों को पसन्द आती है।

एक राजा की कहानी है, जो घोड़े पर बैठ कर जा रहा था और एक शराबी को मिला। आप कह सकते हैं कि इस शराबी की तुलना राजनैतिकों के साथ की जा सकती है। शराबी रुका और बोला, 'मैं आपका घोड़ा खरीदना चाहता हूँ।'

लोगों ने कहा, 'तुम जानते हो कि ये कौन हैं?'

'मुझे पता है, कि यह राजा हैं, पर मैं इनका घोड़ा खरीदना चाहता हूँ।'

राजा ने कहा, 'ठीक है, आज नहीं, कल हम तुम्हें यह घोड़ा बेच देंगे।'

वह चला गया, दूसरे दिन उसे बुलाया गया। वह हाथ जोड़ कर आया और झुका। राजा ने कहा, 'तुम्हीं मेरा घोड़ा खरीदना चाहते थे, तुम्हें क्या हो गया है ? मैं इसे तुम्हें बेचना चाहता हूँ।'

वह बोला, 'श्रीमान, वह, जो खरीदना चाहता था, वह मर गया है। मैं एक साधारण व्यक्ति हूँ।'

ऐसा ठोस व्यक्तित्व कि कोई भी क्रोधित हो जाता व कहता कि, इस आदमी को मारो, बाहर फेंक दो, यह मेरे साथ इस प्रकार बात करता है, ऐसा व्यवहार करता है। पर, जो राजा ने कहा, वह विलक्षण था क्योंकि वह जानता था कि यह शराब में धूत है, अपनी चेतना में नहीं है इसलिये इस प्रकार बात कर रहा है। उसके साथ क्रोधित नहीं हुआ, वह बोला, 'ठीक है, कल आओ, मैं तुम्हें घोड़ा बेच दूंगा।'

यह तभी संभव है यदि आप में राजलक्ष्मी है, अन्यथा आप कभी ऐसा व्यवहार नहीं करेंगे...''

(१९९४, श्रीराजलक्ष्मी पूजा, नई दिल्ली)

वे दिखावा करने के लिए वहाँ नहीं बैठी हैं :

''... हमें यह भी देखना चाहिए कि लोग धार्मिक ग्रन्थों का गलत उपयोग कैसे करते हैं। राजलक्ष्मी ठीक है, हाथी पर बैठती हैं, सो, लोगों को बड़ी कारें चाहिए। वे हाथी पर बैठती हैं क्योंकि हाथी सबसे बड़ा जानवर है, वह बड़ा दयालु होता है, बड़ा क्षमाशील होता है और अत्यन्त तेज़ स्मृति होती है। इसलिये वे हाथी पर बैठती हैं। वे दिखावे के लिए नहीं बैठी हैं, पर वे आसपास सब देखने के लिए बैठी हैं, कि क्या हो रहा है, अवलोकन, वे देख सकती हैं कि आसपास क्या हो रहा है, ऊँचाई पर बैठने के लिए। इसलिये राजा को ऊँचे स्तर पर बिठाया जाता है, पर उसका कारण दिखावा करना नहीं होता। कारण यह होता है कि ऊँचाई पर बैठ कर वे सबको अच्छे से देख सकते हैं, दूसरों पर नज़र रख सकते हैं...''

(१९९४, श्रीराजलक्ष्मी पूजा, नई दिल्ली)

श्री लक्ष्मी के नाम : महालक्ष्मी के आठ पहलु हैं :

''... **प्रथम, आद्यलक्ष्मी -** आद्यलक्ष्मी का अर्थ महालक्ष्मी हैं।

दूसरा, विद्यालक्ष्मी - विद्या सहजयोग की कला है, जो आप जानते हैं। वही विद्या है, बाकि सब अविद्या है। कुण्डलिनी को कैसे उठाना है, देवी देवताओं को कैसे जागरूक करना है, स्वयं को कैसे साफ़ करना है, दूसरों को कैसे साफ़ करना है, सारा ज्ञान, यह सब विद्या कहलाता है, लक्ष्मी। लक्ष्मी श्री है, चेतना, जो श्री सम्पन्न है।

सौभाग्यलक्ष्मी - सौभाग्य का अर्थ है अच्छा भाग्य। लक्ष्मी, जो आपको हर चीज़ में भाग्य देती है, जैसे कि वे आपको पैसे में अच्छा भाग्य देती हैं। आपके निवास में, भोजन में हर प्रकार से। कोई भी अच्छा भाग्य परमात्मा द्वारा दिया जाता है, केवल परमात्मा हैं, जो अच्छा भाग्य देते हैं।

अमृतलक्ष्मी - अमृत का अर्थ है, वह चीज़ जिसकी मृत्यू नहीं होती। इस संसार में लक्ष्मी आपकी सम्पत्ति के रूप में निवास करती हैं। अब कौनसी ऐसी सम्पत्ति है, जो मरती नहीं है? वह आत्मा है। सो, आत्मा का आशीर्वाद अमृतलक्ष्मी है.....बाकि सब चीज़ें मर जाएंगी। और जो कुछ भी आत्मा को प्रसन्न करने के लिए, आत्मा द्वारा किया जाता है, वह अमृत लक्ष्मी है। उदाहरणतया, दूसरों को प्रेम करना.... प्रेम का अर्थ है, बिना किसी उम्मीद के देना, केवल देना और आनन्द लेना। महानतम है, वाईब्रेशन्स देना, वाईब्रेशन्स मर नहीं सकते।

गृहलक्ष्मी और राजलक्ष्मी - आपको पता है।

सत्यलक्ष्मी - मैंने आपको बताया था, चेतना। इन्होंने ही आपको चेतना दी है। चेतना, लक्ष्मी का चरित्र है। सत्य का अर्थ है सच, जैसे-जैसे आप चेतना में ऊपर उठते हैं, आपको सत्य पता चलता है.... सत्य क्या है? आपको किस की चेतना है? आपको यह चेतन है कि आप परमात्मा के यंत्र हैं और वे आपके द्वारा कार्य कर रहे हैं। आपको इस बात का ज्ञान है क्योंकि यह आपके सैन्ट्रल नर्वस सिस्टम में बह रहा है। यह ही सत्य है जिसकी आपको चेतना होनी चाहिए। दूसरा सत्य क्या है? वह है, आप कौन हैं? कि

आप आत्मा हैं और तीसरा सत्य है 'मैं कौन हूँ? परमात्मा कौन है, आपका प्रारब्ध क्या है?' यदि वे सब आपकी चेतना बन जाएं, तब आपको सत्यलक्ष्मी प्राप्त हो गई हैं।

भोग्यलक्ष्मी - भोग का अर्थ है कि वह जिसके द्वारा आप आनन्द लेते हैं, मेरा अर्थ है कि पूरा आनन्द का महासागर आपके आसपास है और आप उस पक्षी के समान हैं जो उसे पी नहीं सकता। केवल भोग्य लक्ष्मी के आशीर्वाद से ही आप आनन्द ले सकते हैं।

योगलक्ष्मी - लक्ष्मी की शक्ति जो योग देती है। लक्ष्मी आपके योग की शक्ति को चेतना दे कर आधार देती है.... सो, योगलक्ष्मी वह शक्ति है जिसके द्वारा आप योग में जाते हैं..... और एक बार जब आपको योग प्राप्त हो जाता है तो आपको आशीर्वाद मिलता है। लक्ष्मी आशीर्वाद है। आपको एक संत का आशीर्वाद मिलता है।

I. श्री सीता

वह स्त्री की शोभा है :

''... अन्त में अब इस पुरुष को अपनी पत्नी को छोड़ना पड़ा। इस अन्तर में आप व्यक्तित्व की लहर का ऊपर उठना एवं नीचे गिरना देख सकते हैं। जिस समाज में वे रहते थे, उसे सीता के रावण के घर में रहने में आपत्ति थी और जनता ने इस विषय में बात करनी शुरू कर दी थी। सो, एक आदर्श राजा के रूप में उन्होंने सोचा कि उनकी पत्नी को हमेशा के लिए छोड़ देना चाहिए। तब उन्होंने उसे एक सुन्दर रथ पर अपने प्रधान मंत्री एवं भाई लक्ष्मण के साथ भेज दिया, वे उन्हें ले गये और बताया कि, यह हुआ है और श्रीराम ने हमसे कहा है कि आपको ऋषि वाल्मिकि के आश्रम में छोड़ दें। इसके फलस्वरूप वे बहुत दु:खी हो गई और कहा, वे आदिशक्ति थीं और उन्हें चिंता करने की आवश्यकता नहीं थी। उन्होंने कहा, 'आप केवल मुझे यहाँ छोड़ दें।' अत्यन्त आत्मसम्मान वाली व्यक्ति। उन्होंने यह नहीं कहा, 'नहीं, नहीं, नहीं, मैं उनके पास जाऊंगी, मैं उन्हें कोर्ट में ले जाऊंगी और उनका सारा पैसा लूंगी, उनकी हिम्मत कैसे हुई मुझे फेंकने की।' वैसा कुछ नहीं। वह स्त्री की शोभा है।

पूर्ण शोभा के साथ उन्होंने कहा, 'ठीक है, आपने अपने भाई का कहना माना है, मैं आपकी भाभी हूँ, वह भी बड़ी, अब आप मेरा कहा मानों और मैं आपकी भाभी के रूप में कहती हूँ कि आप अब जाओ। मुझे यहाँ अकेला छोड़ दो। मैं नहीं चाहती कि आप मेरे साथ आगे आओ, किसी के पास छोड़ने के लिए।

और वे गर्भवती थीं, यहाँ यदि ऐसा होता, निश्चय ही बड़ी खराब वारदात हो सकती थी, परन्तु भारतवर्ष में यदि ऐसा होता है, तो पत्नी स्वयं को मार देती है और यह सब सहन नहीं कर पाती। मैं सोचती हूँ कि दोनों बातें एक समान हैं, पलायन। यदि कोई आक्रामिकता नहीं है तो पीछे हटना है। पर उन्होंने कहा, 'मुझे इन दो बच्चों को जन्म देना है, मैं अपना ध्यान रख सकती हूँ। बड़ी शोभा के साथ उन्होंने ऐसा किया है, कृपया उन्हें कहिए, कि मेरी चिन्ता न करें।' और उन्होंने श्री लक्ष्मण से कहा, 'ठीक है, आप उनकी देखभाल करिए, मैं केवल यही चाहती हूँ' और मंत्री से कहा, 'आप राज्य की देख-भाल करिए...''

(१९८७, श्रीराम पूजा, स्विटजरलैंड)

स्वयं के साथ सन्तुष्टि, इतना सन्तुलन, विश्वास और शक्ति से परिपूर्ण, यह सीता के जीवन का संदेश है :

''... श्रीराम की प्रतिष्ठा, सन्तुलन, चारित्र्य और व्यक्तित्व देखिए। उन्हें मर्यादा पुरुषोत्तम कहा जाता है और उनकी पत्नी को देखिए, वे हर तरीके से उनके बराबर थीं। जब उन्हें रावण ने रखा, तब रावण उनकी शक्ति से, इतना भयभीत था कि वह उन्हें छू नहीं सकता था। वह उन्हें यह कह कर भयभीत करता था, 'मैं भारतवर्ष की स्त्रियों के साथ यह करूंगा, मैं विश्व की स्त्रियों के साथ यह करूंगा। मैं वह खराब कार्य करूंगा, मैं दूसरा जन्म लूंगा, मैं दुर्व्यवहार करूंगा।'

उन्होंने कहा, 'करो, जो करना है, तुम मुझे छू नहीं सकते।'

वह उतना भयभीत था कि उनका हाथ भी छू नहीं सकता था और जब हनुमान श्रीराम की अंगूठी लेकर वहाँ आयें और सीताजी को भेंट दी और

कहा कि, यह श्रीराम की अंगूठी है, उन्होंने कहा, 'हाँ मुझे पता है, वे कैसे हैं?'

वे बोले, 'ठीक है, माँ मैं आपको अपनी पीठ पर ले जा सकता हूँ। मैं सरलता से आपको ले जा सकता हूँ। आप मेरी पीठ पर आईये और मैं आपको ले जाऊंगा।'

वे बोलीं, 'नहीं, मैं आपके साथ नहीं जाऊंगी, श्रीराम, जो एक बहादूर राजा हैं, उन्हें आना चाहिए, रावण के साथ युद्ध करके उसे मारना चाहिए, क्योंकि वह शैतान है और तब मैं उनके साथ पूर्ण प्रतिष्ठा के साथ जाऊंगी।'

वे किसी चीज़ से भयभीत नहीं थीं। उनके लिए महत्त्वपूर्ण था कि रावण को मारना चाहिए। वह दुष्ट है और उसे श्रीराम द्वारा मारा जाना चाहिए। एक स्त्री के लिए कितनी महान हिम्मत। दोनों ओर यदि आप देखें तो आप समझेंगे कि एक स्त्री का चरित्र कितना शक्तिशाली है। यह प्रतिक्रिया नहीं है, 'मेरा पति ऐसा है, इसलिये मैं ऐसी हूँ।' या 'मेरा पति मेरे लिए ऐसा नहीं करता है, इसलिये मैं ऐसी हूँ, मेरा पति चला गया है, इसलिये मैं खत्म हो गई हूँ, मैं अपने पति के बिना क्या करूँ?' ऐसा कुछ भी नहीं। वे अपने पैरों पर खड़ी होती है।

उन्होंने हनुमान को 'ना' कहा और वे अपने पैरों पर खड़ी होती हैं और कहती हैं, 'जब राम आएंगे और इस दुष्ट को मारेंगे और इस दुष्ट को पृथ्वी पर से उठा लेंगे, तभी वे मुझे अपने साथ ले जा सकते हैं। मैं आपके साथ नहीं जाऊंगी, मैं भागूंगी नहीं, मैं भाग कर नहीं जाऊंगी, मैं स्वयं इसका सामना करूंगी।' एक स्त्री के लिए इस प्रकार कहना एक बहुत बड़ी बात है, इतने दुष्ट व्यक्ति को कैद में बन्द या ऐसा स्थान जो बहुत खरतनाक है उनके लिए और कहना, 'मैं नहीं जाऊंगी, आप कितना भी प्रयत्न करो, जो भी युक्तियाँ करने का प्रयत्न करो, आप कुछ भी कहो, मैं नहीं जाऊंगी।' केवल कल्पना कीजिए और रावण इतना भयंकर आदमी था। उसने उनके साथ कई प्रकार के प्रयत्न किये, पर वे पूर्णतया शान्त एवं मौन रहीं, अपने पति के आने का इन्तज़ार कर रही थीं। क्या इस आधुनिक समय में हम ऐसी स्त्रियों के विषय में सोच सकते हैं? स्वयं के साथ सन्तुष्ट, इतने सन्तुलन में, इतने विश्वास एवं शक्ति से परिपूर्ण। यह सीता के जीवन का संदेश है...''

(१९८७, श्रीराम पूजा, स्विटजरलैंड)

स्त्री को गृहलक्ष्मी होना चाहिए, अत्यन्त मधुर स्वभाव की :

''... सो, यह पैसे से सम्बन्धित है, इस प्रकार कि, चूंकि सीताजी श्री लक्ष्मी थीं और सीताजी ही श्रीराम की शक्ति थीं, इसलिये जब आप एक खराब पिता या एक खराब पति होते हैं तो श्रीलक्ष्मी आपसे नाराज़ हो जाती हैं। इसलिये गृहलक्ष्मी बड़ी महत्वपूर्ण है।

परन्तु स्त्री को गृहलक्ष्मी होना चाहिए। उसे झगड़ालू नहीं होना चाहिए और फिर पति को उसके प्रति दयालु होना है। तब तो यह बिगाड़ने की बात है। वह बहुत बूरा है। स्त्री को गृहलक्ष्मी ही होना चाहिए। एक सुन्दर स्त्री जो बहुत मधुर स्वभाव की है और पति के साथ संकोच से बात करती है, बच्चों का ध्यान रखती है, परिवार का ध्यान रखती है, मेहमान जो उसके घर आते है, उनका ध्यान रखना...''

(१९८७, श्रीराम पूजा, स्विटजरलैंड)

III. महान स्त्रियों के अन्य उदाहरण

फ़ातिमा बायीं नाभि के तत्व का अवतार थीं :

''... सो, हमारे सामने अली और उनकी पत्नी फ़ातिमा हैं, जो बायीं नाभि के सिद्धान्त पर अवतरित हुईं, वे अपने घर रहीं, अपनी गृहस्थी में और वे परदा या नकाब में रहती थीं, अपना चेहरा ढ़कने के लिए, यह इस बात का प्रतिक है कि एक स्त्री जो एक घर की पत्नी है, उसे अपने पावित्र्य की रक्षा अपना चेहरा ढ़क कर करनी है, क्योंकि वह एक सुन्दर स्त्री थी और वे ऐसे देश में पैदा हुए थे, जो बहुत-बहुत आक्रमक था और यदि वे उस प्रकार के तरीके से न रहतीं तो निश्चित है उन पर हमला होता।

जैसा कि आप जानते हैं कि ईसा के समय में, मेरी, चाहे महालक्ष्मी का अवतरण थीं, उन्हें मौन रूप से शक्तिशाली व्यक्तित्व होना था क्योंकि ईसा नहीं चाहते थे कि किसी को पता चले कि वे कौन थीं।

परन्तु, चाहे वे घर में थीं, वे शक्ति थीं (फ़ातिमा) उन्होंने अपने पुत्रों को अनुमति दी, वास्तव में उन्हें आदेश दिया, उन पाखंडियों से युद्ध करें, जो

उनके पति के अधिकार को छीन रहे थे और आप जानते हैं कि वे दोनों, हसन एवं हुसैन मारे गये थे। यह बड़ा सुन्दर है कि कैसे सीता के महालक्ष्मी तत्व ने विष्णुमाया का रूप लिया, केवल गृहलक्ष्मी के सुन्दर सिद्धान्त को स्थापित करने के लिए। वे निःसंदेह बड़ी शक्तिशाली थीं और उन्हें ज्ञात था कि उनके बच्चे मारे जाएंगे, पर वे लोग कभी मारे नहीं जाएंगे, वे कभी नहीं मरते, न उन्हें तकलीफ़ें सहनी पड़ती, यह नाटक है जो उन्हें खेलना है, ताकि लोगों को दिखा सकें कि वे कितने मूर्ख हैं...''

(१९८८, श्रीफ़ातिमा पूजा, स्विटजरलैंड)

भारतीय स्त्रियों में अनेक चीज़ों की योग्यता होती है :

''... वही साड़ी जो आपने पहनी है, यहाँ तक कि नौ गज़ की साड़ी पहने, हमारी रानियाँ भी जिन्होंने अंग्रेजों के साथ युद्ध किया। आपने झाँसी की रानी के विषय में सुना होगा। वह बहुत ही कम उम्र की थीं। उन्होंने ८० फीट की ऊँचाई से, पीठ पर बच्चा बाँध कर छलांग लगाई। वे विधवा हो गयी थीं और उन्होंने अंग्रेजों के साथ युद्ध किया, दायें और बायें। और जब वे मारी गईं, तो जो व्यक्ति वहाँ अंग्रेजों का प्रतिनिधि था, गवर्नर, उसने कहा, 'हमने युद्ध जीत लिया है, पर गौरव झाँसी की रानी को जाता है।'

हमारे यहाँ एक और थी, चाँद-बीबी, दूसरी स्त्री, अहमदनगर में थी। उन्होंने युद्ध किया। हमारे यहाँ अनेकों स्त्रियाँ उस प्रकार की थीं। विशाल स्वरूप की स्त्रियाँ थीं, चाहे वे साधारण स्त्रियों के समान रहती थीं। हमारे पास पद्मिनी थी, नूरजहाँ थी, अहिल्याबाई थी। बहुत सी स्त्रियाँ थीं, वे मर्दाना प्रकार की बिल्कुल नहीं थीं, एकदम स्त्रियों के समान। एक आखिरी थी, शिवाजी की बहू। वह केवल सत्रह वर्ष की थी और औरंगज़ेब के साथ युद्ध किया और वे ही थीं, जिसने उसे हराया। कोई भी औरंगज़ेब को नियंत्रित नहीं कर पा रहा था, इतने खराब लोग थे। पर उन्होंने उसे हरा दिया। सो, चाहे भारतीय स्त्रियाँ बड़ी सीधी लगती है, बात मानने वाली लगती हैं, पर जब उनके व्यक्तित्व का प्रश्न होता है, तो वे विशाल कार्य करने की योग्यता रखती है...''

(१९९०, मैरेज, एडवाईज टू वीमेन, भारत)

पद्मिनी :

''... एक कहानी है, जो मैं आप से ज़रूर कहूंगी, यह एक अत्यन्त सुन्दर स्त्री के विषय में है जिसका नाम पद्मिनी था। वह राजा की पत्नी थी और एक दुष्ट मुसलमान राजा था, जो इस स्त्री को देखना चाहता था क्योंकि उसने सुना था कि वह अत्यन्त सुन्दर है। यह बड़ी अजीब बात थी। वह उनके राज्य में आया और बोला, 'मुझे इस स्त्री को अवश्य ही देखना है, अन्यथा मैं सारे राज्य को नष्ट कर दूंगा।' लोगों ने कहा कि वह उनकी रानी है और रानी को इस प्रकार देखा नहीं जा सकता है।

उसने (पद्मिनी) सोचा कि, 'ठीक है, वह मुझे न देखे, मेरा प्रतिबिम्ब देख लें,' सो वह शीशे के सामने खड़ी हो गयी और उसने उसका प्रतिबिम्ब देखा।

तब वह और भी पागल हो गया और बोला, 'मुझे यह स्त्री चाहिए, यदि मुझे वह नहीं दोगे तो मैं तुम सबको नष्ट कर दूंगा।' जरा सोचिए, एक राजा इस प्रकार की निरर्थक बातें कर रहा था, एक स्त्री के लिए। यह दर्शाता है कि वह कितना व्यर्थ का आदमी था। सो, वह अपनी पूरी सेना ले कर आया, और किले के पास धरना दे दिया, जहाँ ये लोग रहते थे और संदेश भेजा कि, 'यदि इस स्त्री को मेरे पास नहीं भेजा तो मैं वार कर दूंगा।'

वे तैयार नहीं थे। उन्हें समझ नहीं आया कि क्या करें। तब उन्होंने कहा, 'चलो, हम जाकर युद्ध करते हैं। हम अपनी रानी को उसे देने की अनुमति नहीं दे सकते, यह हमारे सम्मान का प्रश्न है।' वे एकसौ पालकियाँ ले कर गये और हर पालकी में चार-चार सैनिक बैठ गये, अपने अस्त्र-शस्त्र ले कर। और दो सैनिक थे जो उन्हें ढो रहे थे और उन्होंने कहा, 'ठीक है, रानी अपनी एक सौ नौकरानियों के साथ आ रही है,' उस समय जो मुसलमान थे, उन्होंने, मुस्लिम राजा था, उसने खूब शराब पी, खुशी के कारण कि रानी आ रही है। सो, ये लोग वहाँ गये और अपनी पालकियों में से बाहर निकल कर लड़ने लगे। उन्होंने इन स्त्रियों से कहा था कि, 'यदि हम जीत गये, तो सुबह पाँच बजे तक हम आग जलाएंगे, यदि तुमने आग देखी, तो समझना कि हम जीत गये हैं, पर यदि न दिखी तो समझ लेना कि निश्चित ही हम हार गये हैं।'

वे लोग केवल चार सौ या छह सौ लोग थे और इस आदमी के साथ हज़ारों थे और उसके पास बन्दूकें इत्यादि थीं। सो, वे लड़ने लगे। उस लड़ाई में वह मुस्लिम राजा जीत गया क्योंकि उसके पास काफ़ी सेना थी और इन लोगों में से अधिकतर लोग मर गये। यहाँ तक कि राजा भी मर गया। सुबह पाँच बजे कोई आग नहीं जली, अतः इन स्त्रियों ने देखा कि वहाँ कोई आग नहीं लगी है। सो, इन स्त्रियों ने एक विशालकाय चिता बनाई, उसमें आग जलाई और उसमें सब मर गईं। तीन हज़ार औरतें मर गईं क्योंकि वे नहीं चाहती थीं कि दूसरे आदमी उनके शरीर को छूएं। कोई दूसरे आदमी आकर उन्हें छूते तो उसका अर्थ होता कि उनकी पवित्रता समाप्त हो गई...''

(१९९३, श्रीफ़ातिमा पूजा, इस्तंबुल)

प्रिंसैस डायना :

''... मैं चकित थी कि, किस प्रकार उन्होंने डायना की प्रशंसा की (इंग्लैंड की राजकुमारी डायना), उसकी मृत्यू के लिए। बेशक मुझे बुरा लगा कि वह मर गई, परन्तु उसमें कोई मर्यादा नहीं थी... सो, सहजयोग के हिसाब से, यह सब एक बड़ा नाटक था, आवश्यक है, यह दर्शाना आवश्यक है, कि कोई भी स्त्री जो करुणामयी है, जो दयालु है, उसका बड़ा सम्मान होता है। मैं आशा करती हूँ कि अब अंग्रेज औरतें दूसरों के प्रति अपना व्यवहार बदलेंगी क्योंकि उनके लिए यह एक पाठ होना चाहिए कि यह स्त्री, क्योंकि वह इतनी करुणामयी थी व अच्छी थी कि उसे इतना सम्मान मिला...''

(१९९७, श्रीगणेश पूजा के पहले की शाम, कबेला)

स्त्रियों की विशेषताएं

श्रीमाताजी ने प्राय: कहा है कि, स्त्रियों का समाज में एक विशेष कार्य है, उनमें विशेष गुण और शक्तियाँ होती हैं। यह महत्वपूर्ण है कि हम इस कार्य के महत्व को समझें और उन गुणों को विकसित करने का प्रयत्न करें।

श्रीमाताजी ने स्त्रियों को अपनी पवित्रता एवं आत्मसम्मान को बनाये रखने के लिए प्रोत्साहित किया है। समाज में सम्मान एवं पहचान बनाने के लिए पुरुषों के गुण अपनाने के बजाए, स्त्रियों को अपने आप को विशेष कार्य के योग्य बनाने का प्रयत्न करना चाहिए और अपने भीतर की शक्तियों का उपयोग करना चाहिए।

I. एक विशेष भूमिका

परमात्मा ने आपको विशेष गुण दिये हैं :

''... सो, अब आपको एक नयी परम्परा बनानी है, एक नया युग, एक नया व्यक्तित्व, ऐसा व्यक्तित्व जो संरक्षण देता है, पोषण देता है, सब कुछ, बच्चों को पति को साथ एवं स्नेह देता है। स्त्रियों को अनेक गुण दिये गये हैं, क्योंकि उनका रहन-सहन पुरुषों से अधिक कठिन है। इसलिये मुझे आप से एक अनुरोध करना है कि आपको स्वयं को सही सहजयोगिनी बनाने का प्रयत्न करना चाहिए। मैं कहूँगी कि मैं भारतीय स्त्रियों को इसकी सम्पूर्ण प्रतिष्ठा देती हूँ, क्योंकि उन्होंने एक सुन्दर समाज बनाया है। हमारी एक प्रधानमंत्री थी, जो स्त्री थी, परन्तु हमारे पास अनेक महान योद्धा थे, जो स्त्रियाँ थीं, जो सेना की मुखिया थीं। पर यह युद्ध के समय था, हर समय नहीं वैसे वे केवल घर की पत्नियाँ थीं।

सो, परमात्मा ने आपको विशेष गुण दिये हैं, यदि आप उन्हें और सुधारना चाहती हैं, यदि आप उन्हें अभिव्यक्त करना चाहती हैं, तो आपको समझ लेना चाहिए कि आप एक स्त्री हैं और आपको एक स्त्री के समान प्रतिष्ठित होना है...''

(१९८०, इन्ट्युशन एण्ड वीमेन, पैरिस)

उसमें अनेक सुन्दर गुण हैं :

''... एक स्त्री, एक पुरुष को उदार व्यक्तित्व का बना सकती हैं, क्योंकि वह स्वयं उदार है। उसमें अनेक सुन्दर गुण हैं, वह एक कलाकार है और वह अपने आस-पास सुन्दरता रच सकती है, अपने घर में, अपने परिवार में, अपने समाज में, हर क्षेत्र में, परन्तु कोई स्त्री पुरुषों के समान लड़ना नहीं चाहती, पर उनके 'युनियन' होते हैं। वे अपने अधिकारों के लिए लड़ने के लिए यूनियन बनाती हैं। मैं मानती हूँ कि कुछ पुरुष बड़े क्रूर होते हैं, कुछ कानून बड़े क्रूर होते हैं, इ. और उन्हें बताना पड़ता है, पर यह तरीका नहीं है। पुरुषों को सुधारने के और भी तरीके हैं, जो लोग स्त्रियों को नष्ट करने का प्रयत्न करते हैं, क्योंकि स्त्रियों के पास एक महान गुण है, कि गण उनके सात हैं और गणपति उनके साथ हैं। वे कभी पुरुषों का पक्ष नहीं लेंगे। यदि वे (स्त्रियाँ) पवित्र हैं और अपना शरीर दिखाने का प्रयत्न नहीं करतीं, अपनी सुन्दरता का प्रदर्शन नहीं करतीं और उससे पैसा नहीं बनातीं, ऐसी स्त्रियाँ अत्यन्त शक्तिशाली होती हैं, अत्यन्त शक्तिशाली, वे अपना साहस, जब आवश्यकता हो तो दिखाती हैं...''

(१९८८, श्रीफ़ातिमा पूजा, स्विटजरलैंड)

एक स्त्री होना बड़ी महान बात है क्योंकि स्त्रियों के पास इतनी शक्तियाँ होती हैं :

''... स्त्री होना एक बहुत बड़ी बात है। आपकी माँ एक स्त्री हैं, आप जानते हैं कि एक स्त्री होना कितनी महान बात है। यह बड़ी महान बात है, एक स्त्री होना क्योंकि स्त्रियों के पास इतनी शक्तियाँ होती हैं। पुरुषों के साथ होड लगाने में हमने अपने आप को पूरी तरह से नष्ट कर लिया है...''

(१९८०, मैरिज एण्ड कलेक्टिविटी, यू.के.)

उसे दयालु होना चाहिए :

''... स्त्रियाँ परिवार के गौरव के लिए जिम्मेवार हैं। उसे दयालु होना चाहिए। यह अच्छा नहीं लगता है कि स्त्री, पुरुष के समान व्यवहार करे क्योंकि पुरुष का उतना दयालु होना इतना आवश्यक नहीं है जितना कि स्त्री

का, आखिर वह एक पुरुष है, सो, ठीक है, मेरा अर्थ है कि उसके व्यवहार में, उन्हें भद्दा उपद्रवी नहीं होना चाहिए, पर मेरा मतलब है कि वह कभी-कभार चिल्ला सकते हैं, कोई बात नहीं। परन्तु एक स्त्री के लिए ऐसा करने से फर्क पड़ता है क्योंकि वह गौरवमयी हैं...''

(१९८०, विवाह का मूल्य, यू.के.)

आपके जीवन का लक्ष्य है, बेटे को, पति को, समाज को शक्ति देना। स्त्री शक्ति देती है :

''... परन्तु आजकल बड़ी अजीब स्थिति हो रही है। मैं हैरान हो गई, जब मैं इटली गई, कि कैसे स्त्रियों ने अपने आपको इतना सस्ता बना दिया है। वे हर पुरुष के सामने आकर्षक दिखना चाहती है। इस प्रकार का सस्तापन स्त्रियों को कोई भी शक्ति या आनन्द नहीं देगा। इसकी क्या आवश्यकता है? यह एक आनन्दविहीन लक्ष्य है, जिसमें पुरुष जा रहा है और स्त्रियाँ अपने आपको पूर्ण रूप से सस्ता बना रही हैं। मुझे पता है कि एक स्त्री को अत्यन्त दु:ख होता है जिस प्रकार पुरुष उसके साथ व्यवहार करता है, पर आपका अपना व्यक्तित्व जरूर होना चाहिए। आपको स्वयं की समझ होनी चाहिए, कि आप एक स्त्री है, आप शक्ति हैं व शक्ति को कोई दबा नहीं सकता। परन्तु यदि आप अपना व्यक्तित्व नहीं रखतीं या पवित्रता नहीं रखतीं, तो आप अपने जीवन में अपना लक्ष्य नहीं प्राप्त कर सकतीं। और आपके जीवन का लक्ष्य है, अपने बेटे, अपने पति व समाज को शक्ति देना। स्त्री शक्ति देती है...''

(१९९३, श्रीफ़ातिमा पूजा, इस्तंबुल)

II. वह प्यार करती है

वह हृदय हैं :

''... यदि स्त्री समझें कि उसकी हैसियत कितनी महत्वपूर्ण है, तो वह कभी नहीं अनुभव करेगी कि उसे छोटा दिखाया गया है या दबाया गया है, यदि उसे ज्ञात हो कि वह हृदय है। मैं सोचती हूँ कि यह विचार, लोग, विशेषतया पाश्चात्य देशों की स्त्रियाँ भूला चुकी है और इस बात को समझती

नहीं हैं। यदि इस बात को वे समझ जातीं तो वहाँ समस्यायें कम होती...''

(१९८०, विवाह का मूल्य, यू.के.)

प्रेम व करुणा :

''... सहजयोग में स्त्रियाँ बड़ी महत्त्वपूर्ण हैं, मेरे लिए। परन्तु सर्वप्रथम उनमें सहनशक्ति होनी चाहिए और उनमें बहुत अधिक प्रेम एवं करुणा होनी चाहिए। कल्पना कीजिए कि यदि मेरे स्थान पर ईसामसीह होते, तो वे सहजयोगियों की हालत देखतें और स्वयं को सूली पर चढ़ा लेते, समाप्त। या यदि कृष्ण होते, तो वे अपने हाथ में सुदर्शन चक्र ले कर हर एक का सिर काट देते, समाप्त। यदि राम होते, तो अपने बाणों से आप सब को खत्म कर देते। वे कुछ भी ख्याल नहीं करते। आपको धैर्य रखना ही है, आपको ध्यान रखना है, आपको सहन करना है, यदि आपको फल पाना है।

सो, केवल स्त्रियाँ ही फलधारण कर सकती हैं, आप केवल ऐसे बच्चे पैदा कर सकती हैं, जो आत्मसाक्षात्कारी हों, परन्तु यदि आप अहंकार पर सवार हैं, तो आप न ही पुरुष हैं न स्त्री। आप दोनों के बीच के बन जाते हैं, न यहाँ न वहाँ, किसी काम के नहीं...''

(१९८८, इन्ट्युशन एण्ड वीमेन, पैरिस)

''...स्त्री को प्रेम करने का कर्तव्य स्थापित करना है...''

(१९८०, विवाह का मूल्य, यू.के.)

किसी को नियंत्रित करने के लिए प्रेम सर्वोत्तम मार्ग है :

''... एक स्त्री को अहंकारी होना शोभा नहीं देता है। उसे भावनात्मक होना ज़्यादा शोभा देता है। जैसे कि वह कभी उदास होती है व कभी उसकी आँखों में आँसू आते हैं, जैसे कि आप देखते हैं, कि मैं भी कभी-कभी रो पड़ती हूँ। मैं जब आपको छोड़ कर जाती हूँ तो मैं इतनी उदास हो जाती हूँ। मैं अपना हाथ हिलाकर यह नहीं कहती कि, 'वहाँ बैठ जाओ, ऐसा करो।' मैं वैसे बात नहीं करती। मैं ऊँची आवाज़ भी नहीं करती, वह केवल पुरुष कर सकते हैं।

जो भी वे कर सकते हैं, उन्हें करने दो, जो आप कर सकती हो वह आप

करो। सम्पूर्ण स्त्रित्व आपकी वृद्धि की पराकाष्ठा है। सम्पूर्ण स्त्रित्व चरम सीमा है। आप को स्त्री होने में विशेषज्ञ होना चाहिए। खाना बनाने में, बगीचे के काम में, लोगों की देखभाल में, प्रेम करने में और इस प्रकार आप सबको नियंत्रित कर सकती हैं। देखभाल कर के आप सबको नियंत्रित कर सकती हैं, न कि पुरुषों के समान, जिस प्रकार वे सब को नियंत्रित करते हैं।

किसी को भी नियंत्रित करने के लिए प्रेम सबसे बेहतर मार्ग है। परन्तु प्रेम का अर्थ है त्याग। परन्तु कुछ समय पश्चात् आपको त्याग का अनुभव नहीं होगा। एक बार आप देने का आनन्द पाना शुरू करते हैं तो वह त्याग नहीं रहता...''

(१९८८, इन्ट्युशन एण्ड वीमेन, पैरिस)

स्त्री का प्रेम करने का सामर्थ्य विशाल होता है, विशाल :

''... आप अपनी माँ के बारे में इतना अधिक क्यों सोचते हो क्योंकि उन्होंने बहुत त्याग किया है, पर बिना जाने कि वह त्याग कर रही है। उन्होंने आपके लिए बहुत किया है। स्त्री का प्रेम करने का सामर्थ्य विशाल होता है, विशाल। और यही हमें फ़ातिमा से सीखना है। उन्होंने अपने दोनों बच्चे मरने के लिए दे दिये, उन्हें पता था, आखिरकार वे विष्णु माया थीं। वे विष्णुमाया का अवतार थीं। उन्हें ज्ञात था कि उनके बच्चे मारे जाएंगे, पर फ़िर भी उसने अपने बच्चों को भेज दिया, 'ठीक है, कोई बात नहीं, यहाँ तक कि मुझे ज्ञात है कि वे मरने वाले हैं, ठीक है।' इतनी बहादुरी, इतना साहस, अपने बच्चों के कर्तव्य की इतनी समझ।

आज हम उन्हें हसन और हुसैन के नाम से याद करते हैं। यदि उन्होंने कहा होता, 'नहीं, नहीं, नहीं, नहीं, युद्ध के लिए नहीं जाओ, घर में रहो।' और यदि उसने उन्हें जबरदस्ती घर रहने को कहा होता, तो वे नहीं जाते, तो आज हम उनके विषय में बात नहीं कर सकते थे। किसी भी स्थिति में, कुछ समय पश्चात उन्होंने मरना ही था, पर योद्धा की मृत्यु उन्हें, अपनी माँ के कारण मिली, नि:संदेह वे भी एक प्रकार के अवतरण थे, पर जिस प्रकार उसने उन्हें परिपूर्ण प्रोत्साहन दिया, 'जाओ और सही बात के लिए लड़ो,' क्योंकि ये धर्ममार्तण्ड अपना पाखण्ड लाने का प्रयत्न कर रहे थे...''

(१९९३, श्रीफ़ातिमा पूजा, इस्तंबुल)

आपका हृदय बहुत-बहुत विशाल होना चाहिए :

''... सो, फ़िर से वही बात आती है कि स्त्रियों का हृदय बड़ा विशाल होना चाहिए, सुन्दर हृदय। और आपकी गुरु एक माँ है, इसलिये आपको विलक्षण माँ होना चाहिए और विलक्षण पत्नी और बहुत बड़ा विशाल हृदय होना चाहिए। सो, वह सब स्वार्थ, यहाँ तक कि यदि आप ऐसा करेंगे तो बैंक भी बंद हो जाएगा। यह इसलिये हैं क्योंकि हमारे छोटे हृदय हैं। मैंने यह विशेषतया कहा है, क्योंकि मुझे स्त्रियों के बारे में अनेक शिकायतें आई हैं, जिनकी यहाँ शादी हुई है, कुछ भारतीय स्त्रियाँ भी। इसलिये मैं आपसे बता रही हूँ...''

(१९९७, नवरात्रि पूजा की पूर्व संध्या, इटली)

आपको बहुत ही सरल होना जरुरी है, सरल हृदयी :

''... इसका मतलब यह होता है कि, आप जो भी करते हो, उसे आप प्यार से करते हो। अगर आप उसे प्यार से करते हो, तो आप उसे शुभ बना सकते हो। पर अगर उसमें प्यार नहीं है, आप उसे केवल करना है इसीलिए करते हैं, फिर तो ये बेकार है। यही है, जो हमें देना है। श्रीराम जैसे व्यक्ति के लिए, एक ऐसे महान अवतरण के लिए। उन्होंने (सीताजी ने) केवल अपने प्यार के बारे में सोचा और उसे उनको दे दिया। इसी तरह से आप को भी सरल होना है, सरल हृदयी और फिर आप को समझ में आयेगा कि क्या करना सब से अच्छा है...''

(१९९८, दिवाली पूजा, इटली)

पुरुषों को नियंत्रित करने के लिए, स्त्री को पता होना चाहिए कि किस तरह से प्यार देना चाहिए :

''... अगर स्त्री दुर्व्यवहार करने लग जाये, जो कि समाज के लिए सबसे खराब होगा। पुरुष भी दुर्व्यवहार करना शुरू कर देते हैं, वैसे भी पुरुष बहिर्मुखी होते हैं। इसलिए पुरुषों को नियंत्रित करने के लिए, अच्छे गृहस्वामियों के रूप में उन्हें बनाने के लिए स्त्री को पता होना चाहिए कि किस तरह से उन्हें प्यार देना है। घर चलाना कोई सरल बात नहीं है, आप के घर की

देखभाल करना कोई सरल बात नहीं है, आप के बच्चों की देखभाल करना कोई सरल बात नहीं है। बहुत ही मुश्किल है। और जिनके पास यह सब गुण है, वे सबसे अच्छी महिलाएं हैं और वास्तव में वे इसे प्राप्त करती हैं...''

(१९९३, श्रीफ़ातिमा पूजा, इस्तंबुल)

III. अंतर्ज्ञान

इस अंतर्ज्ञान को विकसित करना चाहिए :

''... सहजयोग में इन सब पुरुष और स्त्री को मैंने अपने अंतर्ज्ञान से सम्भाला है। पर पश्चिम में महिलाओं में बहुत ही कम अंतर्ज्ञान है। ये मुझे कहना चाहिए क्योंकि वे बहुत ही तार्किक हैं। आप को इस अंतर्ज्ञान के द्वारा विशेष गुणवत्ता को विकसित करना है।

(१९८८, अंतर्ज्ञान और महिलायें, पैरिस)

अपने अंतर्ज्ञान को विकसित करें और अपने अंतर्ज्ञान के साथ रहें :

''... तो अपने अंतर्ज्ञान का विकास करें और हमेशा, हर वक्त हाँ ही कहें, हर किसी के लिए और आप के साथ वही होगा, जो आप जानते हैं। पर अगर हम निश्चय कर लें कि नहीं ये इस तरह से होना चाहिए, ऐसा होना ही चाहिए, वैसा होना चाहिए, अगर आप हमेशा इसी तरह से करने जाएंगे तो फिर आप भी दु:खी हो जाएंगे और आप सभी को दु:खी कर देंगे। अगर आप ने कप इस तरह से रखा होगा, फिर आप कहोगे, कि ये इस तरह से नहीं होना चाहिए। फिर आप के पति आएंगे और उसे इस तरह से रखेंगे। फिर आप उसे दूसरी तरह से रखोगे। इस तरह से यह चलता ही रहेगा। पर आप जो अगर सही में एक असली स्त्री हैं तो फिर आप कहेंगी कि, 'ठीक है, आप इस कप को ऐसे ही रख लीजिए। ठीक है, रहने दो।' और फिर सारे गण आ जाएंगे आप की मदद के लिए। वे या तो उस कप का सारा चाय उसके ऊपर गिरा देंगे या फिर कप की हैंडल को तोड़ देंगे। इस तरह से गण आप की मदद करेंगे

आप देवियाँ हैं। आप देखिये, वे सब आप की देखभाल करेंगे। अगर आप को पुरुष बनना है, आधे इधर, आधे उधर, तो फिर गण क्यों परवाह

करेंगे, ऐसे आधे-अधूरे लोगों की ? ऐसा मैं कई बार देख चुकी हूँ और लोग कई बार अक्सर बहुत ही अधिक दिखावा करने की कोशिश करते हैं और इन सब के पीछे उन्हें ये नहीं पता कि वे कितना क्या खो देते हैं। सो, आप को अपनी अंतर्ज्ञान को विकसित करना है और उसके साथ ही रहना है और जो भी आप का अंतर्ज्ञान होगा वह सच होगा क्योंकि अंतर्ज्ञान जो है, वो गणों द्वारा आता है। सो, बाईं ओर को विकसित करना चाहिए कि जिससे गण प्रसन्न रहें। एक बार जो आप के गण विकसित हो जाते हैं तो फिर आप को कोई छू भी नहीं सकता...''

(१९८८, अंतर्ज्ञान एवं महिलायें, पैरिस)

अंतर्ज्ञान और कुछ नहीं है, केवल गणों की सहायता है :

''... इड़ा नाड़ी की विवेकता ही अंतर्ज्ञान है। जब आप वह अंतर्ज्ञान आप में विकसित करते हैं, आप के ध्यान की शक्ति से, तब वह अंतर्ज्ञान विकसित होता है। अंतर्ज्ञान और कुछ नहीं बस गणों की सहायता है, जो आप के चारों ओर होता है। अगर आप गणों की सहायता लेते हुए चलेंगे तो फिर अंतर्ज्ञानी बनोगे, अपनी बुद्धि का अधिक उपयोग न करते हुए आप सही बात कर पाएंगे। सारा सहजयोग ही, पचास प्रतिशत मैं कहूँगी कि अंतर्ज्ञान पर आधारित है। उसके लिए आप को श्रीगणेश को सही मायने में विकसित करना होगा। आप को श्रीगणेश को सही तरीके से समझना होगा। यहाँ से इसकी शुरुआत होती है क्योंकि वे गणपति हैं, क्योंकि ये गुरु हैं, सभी गणों के प्रमुख हैं, सभी गणों के। ये गण ही हैं कि जो आप को अंतर्ज्ञान प्रदान करते हैं...''

(१९८८, हम्सा पूजा, जर्मनी)

IV. पवित्रता

सर्वप्रथम स्त्रियों में पवित्रता की बुद्धि होनी चाहिए :

''... हम पुरुषों के ऊपर जिम्मेदारी नहीं डाल सकते हैं। जिस प्रकार स्त्रियाँ घूमती हैं, जिस प्रकार वे व्यवहार करती हैं, हर समय जैसे वे होती हैं। यहाँ, मैं हैरान हो गई, यह देख कर कि जब पुरुष एक स्त्री को देखते हैं तो वे

अपने कोट का बटन ही बंद कर लेते हैं और स्त्री अपने कपड़े खोल लेती है, जब कि इसके विपरीत होना चाहिए। पुरुष के शरीर में छुपाने के लिए क्या है? परन्तु एक स्त्री को सम्माननीय होना चाहिए, यदि वह सम्माननीय नहीं तो उसे कोई अधिकार नहीं बनता कि वह बलात्कार, गंदगी जो चल रही है, उस सबके विषय में शिकायत करें। सहजयोगी होने के नाते, मैं आपसे आग्रह करती हूँ कि आप समाज के इस मार्ग की ओर चित्र डालें, जो बहुत ही महत्वपूर्ण है कि कैसे स्त्रियाँ मूर्खतावश पुरुषों की सनक की गुलाम बन रही हैं।

स्त्रियों को अपने मान एवं गौरव में खड़ा होना चाहिए और यह जान लेना चाहिए, कि पवित्रता उनकी शक्ति है...''

(१९८०, रक्षाबन्धन, लन्दन)

पवित्रता पूरे समाज को ऊर्जा देती है :

''... और आप हैरान होंगे, जब आप जानेंगे कि पवित्रता स्त्री के लिए कितनी महत्वपूर्ण, गौरवपूर्ण और ऊर्जा प्रदान करने वाली है और पूरे समाज को, उसके अपने भाई को, अपने पिता को, माँ को और सबको, उसके बच्चों को, क्योंकि वही वास्तविकता में शक्ति है। और यदि वह अपनी शक्ति को इस प्रकार व्यर्थ गंवाती रहे, तो पूरे देश व समाज की शक्ति अदृश्य हो जाएगी...''

(१९८०, रक्षाबन्धन, लन्दन)

''...मैं आपको बताती हूँ कि भारत में, विशेषतया स्त्रियाँ, अत्यन्त सावधान रहती हैं, अपनी पवित्रता के प्रति, अत्यन्त सावधान...''

(१९९१, श्रीगणेश पूजा, ऑस्ट्रेलिया)

यह परमात्मा की संस्कृति है :

''... हम इस विषय में बड़े जागरूक रहते हैं कि अन्य लोग हमें इज़्जत दें, हमारा सम्मान करें, अन्यथा हम क्रोधित हो जाते हैं। क्या आपने अपने स्वयं की इज़्जत की थी? पाश्चात्य देशों में कभी-कभी लोगों को लगता है कि माँ उन्हें भारतीय संस्कृति सिखाने का प्रयत्न कर रही हैं। बहुत लोग उस

प्रकार सोचते हैं। परन्तु मैं कहती हूँ कि हमें विज्ञान पश्चिम से सीखना चाहिए। ठीक है, हमें अन्य बातें पश्चिम से सीखनी चाहिए, सौन्दर्य-शास्त्र, पेंटिंग और कला, शायद रंगों की योजना भी। परन्तु संस्कृति, तो बेहतर होगा कि आप भारतीयों से सीखें। वहाँ संस्कृति की कमी है, बिल्कुल भी संस्कृति नहीं है। मैं देखती हूँ कि वह कैसी संस्कृति है, जहाँ स्त्री को अपना शरीर दिखाना होता है? सीधी बात है, वह वेश्या की संस्कृति सम है। इसका सामना करिए, कि जहाँ स्त्री को अपने गुप्त अंगों का सम्मान करना नहीं आता, वहाँ परमात्मा की शास्त्रों में भी कोई संस्कृति नहीं होती...''

(१९८५, श्रीगणेश पूजा, ब्राईटन, यू.के.)

जब तक आप उच्च चरित्र स्थापित नहीं करती हैं, तब तक आदमियों को सुधारा नहीं जा सकता :

''... इस प्रकार, की आप श्री गणेश के आशीर्वाद का आनन्द लें। यह पुरुषों की अपेक्षा स्त्रियों के लिए अधिक है, क्योंकि पुरुष स्त्रियों की अपेक्षा कहीं अधिक तकलीफ़ पाते हैं और इसलिये स्त्रियों को बहुत सावधान रहना चाहिए। अपने भाईयों के साथ बड़े अच्छे सम्बन्ध विकसित करें। जब तक कि आप वास्तव में बहुत उच्च चरित्र स्थापित नहीं करतीं, तब तक पुरुषों को सुधारा नहीं जा सकता है।

आप ने देखा है, भारत में यदि स्त्रियों को कोई देखता है या उन्हें छूने का प्रयत्न करता है तो उन्हें अच्छा नहीं लगता। उन्हें अच्छा नहीं लगता। स्त्रियों ने अपने आप को मारा है, जलाया है, हज़ारों स्त्रियों ने, क्योंकि उन्होंने सोचा कि दूसरे लोग आकर उनके शरीर को छूएंगे। इतना इसका सम्बन्ध आपकी आत्मा से जुड़ा हुआ है। यदि यह आपका शरीर है तो अबोधिता आपकी आत्मा का शरीर है। आप सब वह हो सकते हैं क्योंकि अब आप योगिनी हो गई हैं। वे सब योगिनी नहीं थीं, परन्तु उन्हें एक बात पता थी, उनके पावित्र्य की शक्ति। अधिकतर स्त्रियों ने अपने आस-पास तेजस्विता, पवित्रता की भावना उत्पन्न करना चाहिए, ताकि पुरुष स्वयं ही इनका सम्मान करें और वह भावना अपने अन्दर विकसित करें...''

(१९८५, मूलाधार, बर्मिंगहैम, यू.के.)

‘‘...**परन्तु स्त्री की उच्चतम शक्ति उसका पावित्र्य है।** यदि उसकी पवित्रता बाधित हो जाती है तो वह खतरनाक होती है, अत्यन्त खतरनाक। वह न केवल अपने पति को हानि पहुँचा सकती है पर अपने बच्चों व समाज को भी...’’

(१९९३, श्रीफ़ातिमा पूजा, इस्तंबुल)

‘‘... **भारतीय संस्कृति में स्त्रियाँ अपनी पवित्रता का सम्मान, विश्व की किसी भी वस्तु से अधिक करती है।** वे कुछ भी छोड़ सकती हैं, परन्तु अपना पावित्र्य नहीं...’’

(१९९३, श्रीफ़ातिमा पूजा, इस्तंबुल)

वह एक केन्द्रबिंदू है, जिस पर उसकी सब गतिविधियाँ घूमती हैं :

‘‘... इस सब अनभवों के साथ हम एक बात निश्चय ही समझते हैं कि स्त्री कहीं अधिक आन्तरिक है, उसके पास अधिक शक्तियाँ हैं, और लोगों की अपेक्षा अधिक समझदार होती है, यदि वह अपनी पवित्रता संभाल कर रखती है। उसी केन्द्र बिन्दु पर उसकी गतिविधियाँ घूमती हैं, उसका व्यक्तित्व घूमता है...’’

(१९९३, श्रीफ़ातिमा पूजा, इस्तंबुल)

स्त्रियों को अत्यन्त धार्मिक एवं पवित्र होना चाहिए :

‘‘...स्त्रियों को यह समझने का प्रयत्न करना चाहिए कि उन्हें जीवन में एक विशेष कार्य करना है। अब निश्चित ही स्त्रियों को बड़ा धार्मिक एवं पवित्र होना चाहिए। उन्हें स्वभावतः अबोध होना चाहिए, न कि धूर्त और चालबाज़...’’

(१९८६, बैल्जिअम और हौलेण्ड की भूमिका, बैल्जिअम)

वह अपनी ही धार्मिकता, नैतिकता और गुणों के प्रति आज्ञाकारी होती है :

‘‘... अब कुछ स्त्रियाँ सोचती हैं, कि यदि वे प्रेम का स्वांग करेंगी तो पति बेहतर तरीके से नियंत्रित होता है। पर वे अपना मूल सिद्धान्त भूल जाती हैं, अपनी मूल शक्ति को गुमा देती है और वे मुश्किलों में पड़ जाती है। सो, गृहलक्ष्मी का मूल सिद्धांत है कि वह पवित्रता का सम्मान करें, अपनी

पवित्रता की आन्तरिक एवं बाह्य ओर से। वही उसकी स्थिरता है। निश्चित ही बहुत सारे पुरुष उस का लाभ उठाते हैं। यदि पत्नी सीधी या आज्ञाकारी है तो वे उस पर दायें, बायें सब ओर से शासन करते हैं। परन्तु गृह की पत्नी को जान लेना चाहिए कि वह सम्भालने योग्य, सीधी सी नहीं है, वह अपनी स्वयं की धार्मिकता, नैतिकता और अपने गुणों की आज्ञाकारी है। यदि पति, मूर्ख है, ठीक है, वह मूर्ख है बच्चे के समान, तो खतम...''

(१९८८, श्रीफ़ातिमा पूजा, स्विटजरलैंड)

उसकी नैतिकता उसका श्रीगणेश है जो उनमें वह पावित्र्य फैलाते हैं :

''... मैं सोचती हूँ कि इस बारे में अधिक स्त्रियाँ अनैतिक हैं, प्रथम, पुरुष हुआ करते थे, जो अनैतिकता करते थे, परन्तु आजकल स्त्रियाँ जो कि अबोधिता ही नहीं, पर शक्ति भी हैं, एक प्रकार की निर्लज्जता करती हैं, अपनी अबोधिता का विचार ही नहीं करतीं। उनकी अबोधिता ही उनकी शक्ति है। यदि, एक स्त्री अबोध ही नहीं है, तो उसमें शक्ति कैसे होगी? यदि वह अनैतिक जीवन व्यतित कर रही है तो उसकी शक्ति समाप्त हो जाएगी। केवल उसकी नैतिकता उसके श्रीगणेश हैं जो उसमें यह पवित्रता देते हैं।

आजकल, मुझे लगता है कि जिस प्रकार लोग हमारे सिर में हौलीवुड के विचार भर देते हैं और हम उन्हें स्वीकार कर लेते हैं। यह बड़े निम्न स्तर पर शुरू होता है जब हम अपने बच्चों को घृणा करने लगते हैं ...''

(१९९६, श्रीगणेश पूजा, कबेला)

परमात्मा का साम्राज्य तब तक नहीं हो सकता जब तक स्त्रियों को पूर्ण रूप से पवित्र, शुद्ध न रखा जाए :

''... मोहम्मद साहब के समय में विभिन्न जातियों में संघर्ष, लड़ाई व युद्ध हो रहे थे, जिसके कारण अनेक छोटी उम्र के लड़के मारे गये। केवल वृद्ध अवस्था के लोग एवं स्त्रियाँ बची थीं। इसी कारण मोहम्मद साहब ने कहा कि, 'आप चार या पाँच पत्नियों के साथ विवाह कर सकते हैं, परन्तु उन्हें विवाह से वंचित न रखें क्योंकि वे खराब सम्बन्ध रख सकती हैं और वह इस्लाम या धर्म का सबसे बड़ा पतन होगा।' सो, वे समझ गये कि जब तक

स्त्रियों को पूर्णतया पवित्र न रखा जाये, तब तक वहाँ परमात्मा का साम्राज्य नहीं हो सकता...''

(१९९३, श्रीफ़ातिमा पूजा, इस्तंबूल)

V. उदारता, आतिथ्य और सन्तुष्टि

वह अपनी उदारता के बारे में सोचती हैं, उसका आनन्द लेती हैं :

''... परन्तु मैं सोचती हूँ, एक घर की पत्नी है, 'ओह, अब मैं कितना बनाऊँ?' उदाहरणतया पचास लोग आ रहे हैं।

पति कहता है, 'परन्तु केवल दस आ रहे हैं, तुम पचास व्यक्तिओं को क्यों लाना चाहती हो?'

'परन्तु हो सकता है, वे अधिक खाना चाहें।'

'पर तब तुम पचास प्लेटें क्यों रख रही हों?'

'हो सकता है, वे अपने दोस्तों को लाएं।'वह अपनी उदारता के बारे में सोचती हैं। वह अपनी उदारता का आनन्द लेती हैं...''

(१९८८, श्रीफ़ातिमा पूजा, स्विटजरलैंड)

इस भूमि माता के समान :

''... अब यह गृहस्ती किस के लिये हैं? केवल उसके लिए ही नहीं है, नहीं, ना ही पति के लिए, नहीं, ना उसके बच्चों के लिए, पर अन्य लोगों का सत्कार करने के लिए है। जिस प्रकार भूमि माँ ने यह सब सुन्दर चीज़ें फैलाई हैं ताकि आप आयें, बैठें व आनन्द लें...''

(१९८८, श्रीफ़ातिमा पूजा, स्विटजरलैंड)

वह हर चीज़ आपको इतनी अधिक देती हैं, यह उसकी आधार देने की शक्ति है :

''... पर वे बड़ी सख्त होती हैं, 'इसे खराब मत करो, इसे अच्छा रखो, उसे अच्छा रखो!' पति घर में एक मुज़रिम के समान आता है। उसे चाईना

शॉप में एक बैल के समान होना चाहिए। यह एक प्रकार से अच्छी बात है, यह अच्छी बात है कि उसे कुछ कैसे करना है, पता ही नहीं है। यह आपके लिए बेहतर है, परन्तु हर समय उसे गुलाम बनाये रखना, 'यह करो, तुमने यह मेरे लिए नहीं किया, मेरे लिए वह करो।' यह घर की पत्नी का कार्य नहीं है। उसका कार्य भूमि माता के समान है, क्या वह शिकायत करती है? नहीं, वह आपको सब कुछ, इतना देती है, यह उसका व्यवहार है.... प्रतिष्ठा, इतनी शक्तियाँ उसमें हैं, क्या वह किसी से कुछ लेने की परवाह करती है?...''

(१९८८, श्रीफ़ातिमा पूजा, स्विटजरलैंड)

वे अन्नपूर्णा है :

''... वे अपना प्रेम भोजन के द्वारा दर्शाती हैं। वे भोजन देने वाली है, 'अन्नदा'। वे अन्नपूर्णा हैं और उनकी यह एक विशेषता है, उदारता। यदि एक स्त्री में उदारता नहीं है तो वह सहजयोगिनी नहीं है, किसी भी प्रकार से। पति, हो सकता है कि थोड़ा कंजूस हो, कोई बात नहीं, परन्तु पत्नी को अत्यन्त उदार होना चाहिए और कभी-कभी वह छुपा कर भी पैसे देती है, अपने बच्चों को नहीं, परन्तु दूसरों को। ऐसी सुन्दर स्त्रियाँ सहजयोग में होनी चाहिए...''

(१९८८, श्रीफ़ातिमा पूजा, स्विटजरलैंड)

उन्हें खाना बनाना आना चाहिए और दूसरों को प्रेम से देना चाहिए :

''... मेरा तात्पर्य है कि उन्हें सबको खाना खिलाना चाहिए, हर एक की देख-रेख होनी चाहिए और अंत में उन्हें खाना चाहिए। हर एक को बिस्तर मिलना चाहिए। उन्हें देखना चाहिए कि सब सो गये हैं। सब बच्चों को ढ़कना चाहिए, सब कर के, फिर उन्हें सोना चाहिए। परन्तु नहीं, वे बैठ जाती हैं और मिनी माताजी बन जाती हैं या माताजी से भी बड़ी। 'मेरे लिए यह लाओ, मेरे लिए वह लाओ, यह करो, वह करो।' अधिकतर उनमें से किसी को खाना बनाना नहीं आता है। हर लीड़र को खाना बनाना है या सीखना है, यह अब आवश्यक है। उन्हें खाना पकाना है और हृदय से बनाना है। उन्हें खाना बनाना आना चाहिए और दूसरों को प्रेम से देना चाहिए। यह अन्नपूर्णा की

कम से कम आवश्यकता है...''

(१९८८, श्रीफ़ातिमा पूजा, स्विटजरलैंड)

स्त्री को दूसरों के भावनाओं की सही समझ होनी चाहिए :

''... दूसरी बात यह है कि आपको सदा दूसरों की भावनाओं का ख्याल रखना चाहिए। स्त्री को दूसरों की भावनाओं की सही समझ, सही तरीके से देनी चाहिए। वे क्या सोचते हैं या जब वे भारतीय घर में जाते हैं जहाँ खाने की गंध आ रही हो, वे खाना खाएंगे और तत्क्षण टिप्पणी करेंगे, यह बड़ा पाश्चात्य विचार है। अच्छे भारतीयों को ऐसा करते हुए आप नहीं पाएंगे, मुझे आधुनिक भारतीयों का पता नहीं, परन्तु तत्क्षण वे ऐसी बातें कहेंगे, जिससे दुःख हो। एक स्त्री को इस प्रकार से बात नहीं करनी चाहिए। इसके विपरीत सदा प्रशंसा करें, इसमें क्या हानि है? कुछ प्रशंसा करने से आपका व्यापार खो नहीं जाएगा। ऐसा कह कर 'कितनी अच्छी चीज़ है, कितना अच्छा भोजन है,' वे भोजन का आनन्द लेंगे, पर यही दर्शाने का प्रयत्न करेंगे कि यह निम्नस्तरीय है, मैं कहूँगी कि यह बड़ा पाश्चात्य है। यदि कोई अच्छे कपड़े पहने हो, अच्छी साड़ी, कितने अच्छे कपड़े हैं, कहने में क्या हानि है? आप अपनी मधुरता का आनन्द लेंगे। आप जानते हैं, आप वास्तव में अपनी मधुरता का आनन्द लेंगे। यह झूठ बोलना नहीं है, इतना ईमानदार होने की आवश्यकता नहीं कि यदि आपको कुछ अच्छा नहीं लगता तो, 'मुझे अच्छा नहीं लगा' कहने की। सहजयोग से ये शब्द निकल जाने चाहिए, 'मुझे यह पसन्द है और मुझे वह पसन्द नहीं है।' यह बड़ा महत्वपूर्ण है कि इसे छोड़ दो, 'मुझे यह पसन्द है, मुझे यह पसन्द नहीं है।' आप कौन हैं पसन्द करने वाले या नापसन्द करने वाले? आपकी आत्मा का क्या? आप के हृदय का क्या?...''

(१९९७, नवरात्रि पूजा की पूर्व संध्या, कबेला)

यदि स्त्रियाँ अधिक समाजवादी हो जाएं तो यह अधिक अच्छी कल्पना होगी :

''... उस दिन भी मैंने कहा था, कि कंजूसी, सहजयोगी का गुण नहीं है। उसे पता है कि वह जो चाहता है, वह पायेगा। जितना आप बाँट सको, उतना

बाँटते रहना चाहिए। यह सब आपके हित में कार्यान्वित होगा। पुरुषों से अधिक स्त्रियाँ कंजूस होती हैं। वे अपने बच्चों की देखभाल करेंगी, परन्तु दूसरे बच्चो की नहीं, दूसरे लोगों की नहीं। अत: यदि स्त्रियाँ अधिक समाजवादी हो जाएं तो यह बेहतर विचार होगा। इससे उन्हें अपनी शक्ति के प्रति न्याय करने में सहायता मिलेगी, क्योंकि आपके भीतर की शक्ति चाहती है कि आप उदार बनें, दयालु बनें, प्रेममयी बनें। यदि आप प्रेममयी नहीं हैं तो यह कार्यान्वित नहीं होगी...''

(१९९७, शक्ति पूजा, भारतवर्ष)

स्त्रियों को अत्यन्त प्रेममयी एवं अत्यन्त अनुकूलित होना चाहिए :

''... हमें देखना चाहिए कि यदि पुरुषों को मालुम नहीं है तो कोई बात नहीं, परन्तु आप अपने घरों को पूर्ण रूप से कलामय बनायें। इसे कमल के समान आरामदेह बनायें जैसा कि मैंने कहा था, वैसे होना चाहिए। परन्तु कुछ स्त्रियाँ, एकदम हिटलर के समान होती हैं, गृहस्थ में, अत्यन्त शासकीय। 'यह ऐसा होना चाहिए, वह वैसा होना चाहिए,' पुरुषों का जीवन पूर्ण रूप से दु:खी कर देती हैं। मैं एक व्यक्ति को जानती थी, जो अपने घर एक अखबार ले कर जाता था, मैंने पूछा, 'आप क्यों हर समय यह ले कर जाते हो?' उसने कहा, 'मैं जब भी बैठता हूँ, मैं पहले अखबार बिछाता हूँ, फिर बैठता हूँ।'

'क्यों?'

'क्योंकि थोड़ा सा भी घर खराब हो जाए तो मेरी पत्नी मुझ पर चिल्लाएगी।'

मैंने कहा, 'क्यों?'

'क्योंकि उसे कुछ भी खराब होना अच्छा नहीं लगता, वह इतनी इस ओर सावधान रहती है, मैं इसलिये हर समय अखबार अपने साथ रखता हूँ, जहाँ भी बैठता हूँ, वहाँ बिछा लेता हूँ।'

मैंने कहा, 'यह तो हद से अधिक है।'

वह बोला, 'आपको भी ऐसी ही करना पड़ेगा, मैं कह देता हूँ।'

इतना अधिक इस ओर ध्यान देना कि उस घर में रहना असंभव हो जाता

है, अस्पताल से भी बदतर। कुछ स्त्रियाँ इस बारे में अत्यंत सावधान होती हैं और बहुत ही व्यवस्थित। परन्तु साधारणतया स्त्रियों को बहुत प्रेममयी एवं अत्यन्त अनुकूलित होना चाहिए और घर के सब सदस्यों के साथ दोस्ताना होना चाहिए।

इसे ही हम मंगलता कहते हैं, लक्ष्मी का एक महान गुण। यह मंगलमय होना चाहिए। जो भी आप देते हैं, मंगलमय होना चाहिए। जैसे कि कभी-कभी मैंने देखा है, छोटे बच्चे, शरारत से एक छिपकली ले आएंगे और आपको देने का प्रयत्न करेंगे। यह बड़ा अमंगलमय है, पर उन्हें यह नहीं बताया गया है कि यह अमंगलता है, इसलिये वे कर रहे हैं। उन्हें यह बताना होगा कि यह मंगलमय नहीं है, यह देवी को प्रसन्न नहीं करेगा। इसे अच्छी तरह समझ लेना चाहिए कि, आपको लक्ष्मी को अपमानित करने का प्रयत्न नहीं करना चाहिए, कुछ गलत चीज़ दे कर। यदि आपको पता नहीं है, तो आप पता करें और सही तरीके से करें...''

(१९९८, दिवाली पूजा, इटली)

यदि आपको किसी को प्रसन्न करना है तो वह गुलामी नहीं है :

''... यह बड़ा महत्वपूर्ण है कि हमारा हम्सा चक्र सही हो, कि हम एक सुन्दर घर बना सकें, शान्तिपूर्ण घर, न केवल हमारे परिवार के लिए, परन्तु सब सहजयोगियों के लिए, जो हमारे घर आते हैं।

जानना चाहिए, कि प्रत्येक व्यक्ति को क्या पसन्द है, यह गुलामी नहीं है। यदि आपको किसी को प्रसन्न करना हो तो वह गुलामी नहीं है। पूरी प्रकृति हमें प्रसन्न करने के लिए है, क्या वह गुलामी है?...''

(१९९१, हम्सा पूजा, न्यूयोर्क)

देने के प्रेम को अनुभव करें, और आप इतने प्रसन्न होते हैं :

''... देने का समय जब आता है, तो अपने हृदय से दें। केवल देने के प्रेम का अनुभव करें और इतनी खुशी का अनुभव करेंगे। क्योंकि आप अपने आप को महान समझते हैं, महासागर के समान, जो इतने बादल देता है और

फ़िर अपने में नदियों को ग्रहण करता है और फ़िर उन्हें बादलों में बदल देता है। यह एक प्रकार का सुन्दर रूपान्तरण का गोलाकार है, सुन्दरता में और फिर सुन्दरता शुरू होती है, यह इतना सुन्दर है। और वही हमें बनने का प्रयत्न करना है...''

(१९८०, बचपन पर, यू.के.)

सबसे महान उदारता, एक व्यक्ति कर सकता है, क्षमा करना :

''... मेरा अर्थ है कि यह उदारता दूसरों के प्रति नहीं है, पर अपने स्वयं के प्रति है। सर्वप्रथम अपने प्रति उदार बनिये। वह है, सबको क्षमा कर दें। यदि आप सब को क्षमा करते हैं तो आप उससे पीड़ित नहीं होते, आप स्वयं को उनके द्वारा पीड़ित होने से बचाते हैं। यह उदारता आपके अपने प्रति है। अपने प्रति महानतम उदारता है कि आप अपने अन्दर किसी के भी प्रति मलिनता या कड़वाहट नहीं रखते हैं। परन्तु एकदम स्पष्ट विचार कि, 'वह ऐसा है और यह वैसा है' केवल स्पष्ट विचार परन्तु इससे कोई प्रतिक्रिया नहीं।

एक आदमी कहिए कि, वह भूतिया हैं, ठीक है वह भूतिया आदमी है, हमें पता है कि वह भूतिया है, अपने आपको बंधन में रखिए, पर उससे कोई प्रतिक्रिया न करें, तभी आपने सब को क्षमा कर दिया है। क्षमा आपको बहुत बड़ा बंधन देता है, बड़ी सुरक्षा, आप कह सकते हैं कि एक ढ़ाल, हर प्रकार के अनिष्ट से, जो लोग आप में डाल सकते हैं। केवल उन्हें क्षमा कर दें व फिर देखें कि उनके साथ क्या होता है। आप केवल इस युक्ति का प्रयोग करें, केवल क्षमा करें व देखे कि दूसरों को क्या होता है, जो आपको पीड़ित करने का प्रयत्न करते हैं। निश्चित ही परमात्मा किसी को पीड़ित नहीं करना चाहते, वह पक्का है। वे कभी पीड़ित नहीं करना चाहते, वे पूर्णतया उदार हैं, वे क्षमा करना पसन्द करते हैं। वे अपनी क्षमा का आनन्द लेते हैं, वे वास्तव में आनन्दित होते हैं। उदारता का आनन्द उसी प्रकार लेना चाहिए, जिस प्रकार क्षमा का आनन्द होना चाहिए, यह अत्यन्त आनन्ददायक है। जब आप दूसरों को क्षमा करते हैं तो सबसे अधिक आनन्ददायक बात होती है कि आप लीला देखते हैं, आप साक्षी बन जाते हैं...''

(१९८२, दिवाली पूजा, लन्दन)

जिस स्त्री को देना है, वह माँग कैसे कर सकती है :

''... इसलिये ऐसी स्त्री को आत्मसन्तुष्ट होना चाहिए, अपने आप में सन्तुष्ट, क्योंकि उसे देना है। जिस स्त्री को देना है वह माँग कैसे कर सकती है। उसे प्रेम देना है क्योंकि उसे प्रेम मिलता है, उसे सब प्रकार की सेवा करनी है, सब वस्तुएं देनी है, उसे सान्तवना देनी है, कितनी जिम्मेदारी, मैं आपसे कहूँ, कितनी जिम्मेदारी है। प्रधानमंत्री से भी अधिक, राजा से भी अधिक, राजा से भी अधिक या किसी से भी अधिक, उसे इस बात का गर्व होना चाहिए कि ऐसी जिम्मेदारी उस पर आयी है। एक घर की पत्नी की जिम्मेदारी सहजयोग के लीडर से भी अधिक होती है...''

(१९८८, श्रीफ़ातिमा पूजा, स्विटजरलैंड)

यदि आप एक सन्तुष्ट व्यक्ति हैं, तो आपका कार्य भी सन्तोष जनक होगा :

''... यदि एक स्त्री की नाभि अच्छी है और वह जब खाना बनाती है, तो उसके थोड़े से भोजन से ही आप सन्तुष्ट हो जाते हैं। वह जो भी करेगी वह अतिउत्तम होगा। अतः, हर प्रकार की नाभि की समस्या के लिए एक ही मंत्र याद रखना है, सन्तुष्टि...''

(१९७९, सब चक्रों पर परामर्श, मुम्बई)

VI. संरक्षण, सुरक्षा एवं शान्ति दें

''...आपको उन सबको सुरक्षित करना है, जो आपके नीचे कार्य करते हैं, जो आप पर निर्भर हैं, अपने बच्चों को...''

(१९८०, बचपन पर, यू.के.)

लक्ष्मी सुरक्षा देती है :

''... अब एक दूसरे हाथ पर, उनका एक हाथ सुरक्षा के लिए है। तब लक्ष्मी सुरक्षा देती है, यहाँ तक कि पति से भी। यहाँ तक कि पति से भी वह सुरक्षा देती है। उदाहरण के लिए, मैं बताऊंगी मेरी अपनी भाभी, इतनी लक्ष्मी

स्वरूप थी और यदि मेरा भाई हमारे ऊपर थोड़ा कड़क होता था, वे हमारे से काफ़ी बड़े थे, तो वह हमारी सुरक्षा के लिए आ जाती थी। वह कहती थी, 'आप ऐसे कैसा उन्हें कह सकते हैं?' इतनी मधुर वे थीं कि आप कल्पना भी नहीं कर सकते हैं। और तब वे... मेरा अर्थ है, मेरा खुद का भाई। वह कहती थी कि, 'नहीं आप अपनी बहन के साथ ऐसा नहीं कर सकते।'

मेरे साथ भी ऐसा ही था। मेरी ननद मेरे साथ, मेरे पति के बजाए, अधिक जुड़ी हुई थीं। उसी कारण से कि मैं उन्हें सदा अपने पति से बचाती थी। चाहे वे उनका भाई हैं, मेरा तात्पर्य है कि स्वभावत: वे आपस में एक दूसरे के बड़े समीप हैं, परन्तु आपको उनकी रूचि को उस स्तर तक सुरक्षित करना है। फिर अपने नौकरों को सुरक्षा दें, जो आपके घर आते हैं, उन्हें सुरक्षा दें। वह उसका कर्तव्य है, यदि वह करे, तो वह उसे बड़ी अच्छी तरह से कर सकती हैं...''

(१९८१, महालक्ष्मी सिद्धान्त, लन्दन)

उन्हें सदैव दूसरों से सुरक्षा देनी है :

''... मैं यह कह रही हूँ कि एक गृहपत्नी को सुरक्षा देनी है। लक्ष्मी को देनी है सुरक्षा। जिस आदमी के पास पैसा है, उसे दूसरों को सुरक्षा देनी चाहिए। उसे लोगों को अपने आश्रय में लेना चाहिए, जैसे कि नौकरों को, नौकरों के परिवार को। कुछ लोग अपने नौकरों के साथ बहुत खराब व्यवहार करते हैं और वे बड़े ही.... वे दुर्व्यवहार करते हैं और यह तरीका नहीं है गृहलक्ष्मी का। जैसे कि, कुछ विद्यार्थी आपके घर रह रहे हैं या कुछ बच्चे रह रहे हैं, या आपके घर कुछ लोग हैं, अस्थायी निवासी या सहजयोगी कुछ लोगों के साथ रह रहे हैं, जिन्हें देख-रेख की आवश्यकता है, स्त्रियों के साथ हैं, उन्हें दूसरों से हर समय सुरक्षा देनी है। वह लक्ष्मी का कार्य है। माँ को अपने बच्चों को सुरक्षा देनी है। चाहे बच्चों में कोई भी खराबी हो, पर उसे अपने बच्चों को सब लोगों से बचाना है। निश्चित है, गलत कार्यों में नहीं, मेरा अर्थ है कि उसे बताना नहीं चाहिए, मेरा मतलब है, कि मुझे सदैव हर बात की दूसरी ओर भी देखना पड़ता है क्योंकि हो सकता है कि आप कहें, 'मेरे बच्चे ने जा कर किसी की पिटाई की है।'

सो, वह ठीक नहीं है, वह सुरक्षा नहीं है। मैं यह कह रही हूँ कि यदि बच्चे किसी तकलीफ में हैं, तब लक्ष्मी को उन्हें सुरक्षा देनी है। यह गृहलक्ष्मी का कार्य है...''

(१९८१, दिवाली पूजा, लन्दन)

न्यायिक बुद्धि बायीं नाभि के विशेष गुण से आती है :

''... सो, न्यायिक बुद्धि बायीं नाभि के विशेष गुण से आती है। न्याय में, आप मुख्य इस बात का ध्यान रखते हैं कि आप अबोध व्यक्ति को हानि न पहुंचाएं, वह मौलिक गुण है। वह कानून का मूल है। यह देखना चाहिए, कि जिन्हें दोष दिया जा रहा है, वे निर्दोष हैं या नहीं। मुज़रिमों को नहीं, परन्तु निर्दोष को बचाना है। वह अबोधिता की सुरक्षा का कानून है...''

(१९८६, द रोल ऑफ़ बैल्जिअम एण्ड हौलेण्ड, बैल्जिअम)

वे समाज को सुरक्षा देंगी :

''... पूर्वी देशों में जो बात स्त्रियों के लिए अत्यन्त शर्मनाक और निम्नस्तरीय मानी जाती है, वही पाश्चात्य में गौरवपूर्ण मानी जाती है। मैंने दोनों संसारों का गहरा अध्ययन किया है व इस नतीज़े पर पहुँची हूँ कि जब तक हम एक नयी संस्कृति नहीं लाते जिसमें पूर्व व पाश्चात्य की स्त्रियाँ, दोनों अपने सम्मान में ऊपर उठें और स्वयं की अभिव्यक्ति इस प्रकार करें कि वे समाज के लिए उच्च नैतिक स्तर बना सकें, तब तक पूर्व व पाश्चात्य की स्त्रियाँ अपनी सम्पूर्ण स्त्रित्व की विशेषताओं से पूर्णतया ऊपर नहीं उठेंगी।

विशेषता यह है कि यदि स्त्रियों की इज़्जत की जाए, उनके स्त्रित्व की, उनकी शक्ति की, योग्यता की, वह किस प्रकार आवश्यकतानुसार स्वयं को शिक्षित कर सकती हैं, सब प्रकार की उन्हें सुरक्षा दी जाए और वे समाज को सुरक्षा देंगी...''

(१९९५, वर्ल्ड कान्फरेन्स औन वीमेन, बीजिंग, चीन)

यह शान्ति तभी संभव है, जब घर की पत्नियाँ अपना महत्त्व समझें :

''... मैं सोचती हूँ कि मैंने आप से कभी शान्ति के विषय में बात नहीं

की है। शान्ति केवल गृहलक्ष्मी के द्वारा ही प्राप्त की जा सकती है, अपनी प्लीहा की सही व्यवस्था से, मैं कह सकती हूँ। क्योंकि प्लीहा रक्तकोष देती है, ठीक है? यह पूरे शरीर के लिए पोषण तैयार करती है। हमारे भीतर यदि उस स्थान पर शान्ति नहीं है, तो सारा संस्थान खत्म हो सकता है क्योंकि हमारे भीतर वह पोषण का केन्द्र है, वही पोषण का केन्द्र है। वह चक्र हमारे अन्दर शान्ति का पोषण करता है, तब आप देखिए शान्ति। आपने सुना होगा 'या देवी सर्व भूतेषु, शान्तिरूपेण संस्थिता', देवी, जो शान्ति के रूप में हर इन्सान में है।

सो, यह शान्ति तभी संभव है, यदि घर की पत्नियाँ अपना महत्त्व समझें, स्वयं के ऊपर सहन करें, क्षमाशील हैं और पारिवारिक जीवन को ऊपर उठाती हैं। उन्हें पारिवारिक जीवन को उठाना है और जहाँ यह खराब हो जाता है, वहाँ पूरा संस्थान बिगड़ जाता है।

(१९८१, दिवाली पूजा, लन्दन)

यदि घर की पत्नियाँ ठीक नहीं हैं, तो वहाँ सदैव आघात रहेगा :

''... देखिए, अमेरिका, मैं वहाँ गई और देखा कि सभी को बाईं नाभि की समस्या है, वे बड़े हिंसक है, अत्यन्त हिंसक। मैंने यह अनुभव किया है कि प्रारम्भ में समाज ने घर की स्त्रियों की अवहेलना करी। घर की पत्नी की संस्था जो देवी की है, और अब स्त्रियाँ क्षमा नहीं कर पा रहीं। अब चूंकि स्त्रियाँ उन्हें क्षमा नहीं कर पा रही, तो वहाँ, यह एक बड़ा संघर्ष बन गया है। बच्चे हिंसक बन गये हैं, मेरा तात्पर्य है कि यदि घर की स्त्रियाँ ठीक नहीं हैं तो वहाँ सदैव हिंसा ही रहेगी...''

(१९८१, दिवाली पूजा, लन्दन)

तीव्र बातों को शान्त करें :

''... अब भारतवर्ष में हमारे संयुक्त परिवार होते हैं, आपके भी सम्बन्धी होते हैं, अंकल, आंटी इत्यादि। घर की स्त्री का कार्य लोगों की तीव्र बातें, जिनसे झगड़ा हो सकता है, उन्हें शान्त करना है।

(१९९८, श्रीफ़ातिमा पूजा, स्विटजरलैंड)

VII. घर की स्त्री की भूमिका

यह सबसे उत्तम व्यवसाय है :

''... भारतवर्ष में स्त्रियाँ भिन्न-भिन्न तरीकों में विविध प्रकार के व्यक्तित्व की होती हैं। परन्तु सर्वप्रथम वे घर की स्त्री हैं। घर की पत्नी के रूप में उन में सब शक्तियाँ थीं। इसलिये घर की पत्नी को नीचा नहीं देखें। जब मैं हवाई यान में यात्रा करती हूँ तो वे मुझ से पूछते हैं कि, 'माँ, आपका क्या व्यवसाय है?'

'घर की पत्नी', मेरा व्यवसाय है घर की पत्नी। मैं एक बहुत ही बड़े परिवार की स्त्री हूँ। मैं अपने बच्चों की देखरेख करती हूँ, उन्हें प्रेम करती हूँ, वे मुझ से प्रेम करते हैं और यह व्यवसाय सर्वोत्तम है, मैं सोचती हूँ, क्योंकि यह इतना आनन्ददायक है, यह इतना सुन्दर है, यह प्रेम है, यह इतना ऊर्जा प्रदायक है। इस उम्र में भी मैं कभी अपनी आयु का अनुभव नहीं करती, क्योंकि मैं आप जैसे कितनों की माँ हूँ। और यह मेरे मस्तिष्क में कभी नहीं आता कि मैं बूढ़ी हूँ अब, मुझे अब आराम करना चाहिए, मुझे यह कार्य उनके साथ अब नहीं करना चाहिए, क्योंकि यह प्रेम की भावना अपने बच्चों के लिए है, मुझे उनका पोषण करना है, मुझे उनका ध्यान रखना है, क्योंकि मेरी सब शक्तियाँ उनके साथ हैं। मैं कभी भी अपनी शक्तियों का आपके सामने दिखावा नहीं करती, किसी भी प्रकार से नहीं। केवल आप हैं, जिन्हें मेरी सब शक्तियाँ ग्रहण करनी चाहिए। यही केवल मेरी इच्छा है, कि आप मेरे जितने शक्तिशाली बनें...''

(१९९३, श्रीफ़ातिमा पूजा, इस्तंबुल)

वह, जो गृहस्थी की देवी हैं :

''... सो, इन स्थानों की स्त्रियों को अच्छी, घर की पत्नियाँ बनना है, यह बड़ा महत्वपूर्ण है। उन्हें गृहलक्ष्मी बनना है, जो कि गृहस्थ की देवी है और उसका बहुत अच्छा उदाहरण है, यह स्त्री, आप उसे सुन नहीं सकते हैं। सो, स्त्रियों को बहुत अच्छी पत्नी बनना है और घर की पत्नी का यह अर्थ नहीं है, कि आप घर को बड़ा अच्छा रखें। सब को बड़ा अच्छा रखें, या स्वयं

को, स्वार्थी रूप से...''

(१९८६, द रोल ऑफ़ बैल्जिअम एण्ड हौलेण्ड, बैल्जिअम)

आध्यात्मिकता में गृहलक्ष्मी का स्थान सर्वोच्च है :

''... और गृहलक्ष्मी एक बड़ी शक्तिशाली संस्था है, एक प्रकार से। किसी प्रधान मंत्री से भी अधिक या किसी भी सर्वोच्च पद से भी अधिक। आध्यात्मिकता में गृहलक्ष्मी का स्थान सर्वोच्च माना गया है, उन्हें अत्यन्त खुले हृदय वाली, प्रेममयी समर्पित व्यक्तित्व होना चाहिए।

भारतवर्ष में गृहलक्ष्मियों की अनेक कहानियाँ हैं, मैं आपको एक हज़ार एक बता सकती हूँ, जहाँ उन्होंने स्त्रियों की शक्ति को दर्शाया है। स्त्रियाँ, जैसे कि हम उन्हें सशरीर शक्ति कहते हैं, परन्तु गृहलक्ष्मी सबसे अधिक शक्तिशाली शक्ति है। और वह विशाल प्रेम की शक्ति, करुणा और क्षमा की शक्ति हैं...''

(१९८६, द रोल ऑफ बैल्जिअम एण्ड हौलेण्ड, बैल्जिअम)

यह एक मनुष्य की रचना नहीं है :

''... अब गृहलक्ष्मी का सिद्धान्त उत्क्रान्ति से बना है और परमात्मा द्वारा विकसित हुआ है। यह किसी मानव की रचना नहीं है, जैसा कि आप जानते हैं यह बायीं नाभि में निवास करता है। गृहलक्ष्मी का प्रतिनिधित्व फ़ातिमा के जीवन काल में हुआ है, जो कि मोहम्मद साहब की पुत्री थीं...''

(१९८८, श्रीफ़ातिमा पूजा, स्विटजरलैंड)

गृहलक्ष्मी की विशेषतया रचना हुई थी, ताकि घृणा खत्म हो सके :

''... यह गृहलक्ष्मी का सिद्धान्त विशेषतया क्यों रचा गया था, ताकि घृणा से बाहर आ सकें, ताकि बर्फ़ के समान घृणा को खत्म किया जा सके, ताकि लोगों के मस्तिष्क में से घृणा निकाली जा सके, यह गृहलक्ष्मी का सिद्धान्त बनाया गया था। कैसे?

परिवार में जब आपका घर होता है, वहाँ गृहलक्ष्मी सिद्धान्त को बच्चों

के बीच की घृणा को समाप्त करना है, पति व बच्चों के बीच में। परन्तु यदि वह स्वयं ही अपनी घृणा का आनन्द लेती है, तो वह कैसे इसे समाप्त कर सकती है? वह उस शान्ति का स्रोत है, जो घृणा को समाप्त करता है...''

(१९८८, श्रीफ़ातिमा पूजा, स्विटजरलैंड)

वह क्षेम का सारांश है, जो शान्ति है :

''... सर्वप्रथम हमें अपने समाज को दोष देना है। हमारे घरों की स्त्रियों का सम्मान नहीं किया जाता है। घर की स्त्री वह है जो एक समर्पित पत्नी होती है, अवधूत से ऊपर उसका स्थान होता है। अवधूत लोग उच्चतम विकसित हैं, उन्हें अवधूत कहा जा सकता है, वे उच्चतम उन्नत साधु हैं और एक समर्पित पत्नी के पास अवधूत से भी अधिक शक्तियाँ होती हैं, ऐसा कहा जाता है। यहाँ तक कि कृष्ण भी इस विषय में थोड़े चिन्तित थे। सबको चिन्ता थी।

सो, आप देखिए, कि एक समर्पित पत्नी गृहलक्ष्मी इतनी महत्त्वपूर्ण होती है, क्योंकि वह क्षेम का सारांश है, जो शान्ति है...''

(१९८१, दिवाली पूजा, लन्दन)

गृहलक्ष्मी तत्व, सहजयोग में बहुत महत्वपूर्ण है :

''... जिन लोगों को सहजयोग में आने के पश्चात समस्यायें हैं, अधिकतर उन लोगों ने गृहलक्ष्मी तत्व की उपेक्षा करी है, क्योंकि यदि गृहलक्ष्मी खराब हो तो 'सैन्टर हार्ट' पकड़ता है...''

(१९८८, श्रीफ़ातिमा पूजा, स्विटजरलैंड)

आपको अपने भीतर फ़ातिमा को जागरूक रखना है :

''... फ़ातिमा ने अपने दो बच्चों को खो दिया और वह साकार गृहलक्ष्मी थी। वह हमारी बायीं नाभि में निवास करती हैं, सो सभी बीमारियाँ जो कि प्लीहा से सम्बन्धित हैं, सब समस्यायें जो आपकी बायीं नाभि से जुड़ी हैं, वे केवल फ़ातिमा द्वारा ही ठीक होती हैं, इसलिये आपको अपने अन्दर फ़ातिमा को जागरूक रखना है।

हम यहाँ इस्लाम की संस्कृति में हैं, हम कह सकते हैं कि यह इस्लामी संस्कृति का स्थान है और इस्लामी संस्कृति में, घर की स्त्री को बड़ा महत्वपूर्ण स्थान दिया गया था...''

(१९९३, श्रीफ़ातिमा पूजा, इस्तंबुल)

शान्ति, समझदारी बनाना और प्रेम क्या है इसकी पूरी कल्पना देना:

''... सब से पहले हमें समझना है कि समाज पूर्ण रूप से गृहलक्ष्मी पर निर्भर है, इसका अर्थ है कि एक घर की स्त्री का बड़ा उच्च चरित्र होना चाहिए, सम्मानीय एवं प्रतिष्ठित होना चाहिए। समाज उसकी जिम्मेदारी है। वह शान्ति बनाने के लिए, समझदारी एवं पूर्ण रूप से प्रेम क्या है, उसे अभिव्यक्त करने के लिए जिम्मेदार है। मैं सोचती हूँ कि उसकी जिम्मेदारी, पुरूषों से कहीं अधिक कठिन एवं सूक्ष्म हैं, और वह परिवार की शक्ति है। इसलिये उसे इस प्रकार से व्यवहार नहीं करना चाहिए, जो प्रतिष्ठित और परिपक्व न हो...''

(१९९७, दिवाली पूजा, टिमिसोअरा, रूमानिया)

वास्तव में वे सब जगह सम्मानित हैं :

''... क्योंकि वह घर की स्त्री का दिवस है और उस दिन को घर की स्त्री का दिवस मनाया जाता है। उसके परिणाम स्वरूप, आप जानते हैं कि भारत में, अभी भी घर की पत्नी का बड़ा सम्मान होता है, वास्तव में वे सब स्थानों पर सम्मानित हैं। आप हैरान होंगे, यहाँ तक कि सरकारी स्वागत प्रलेख में भी पत्नी बड़ी महत्वपूर्ण होती है। वह कहाँ बैठी है, उसका क्या पद है, सब कुछ बड़ा महत्वपूर्ण होता है। यहाँ तक कि आज भी बड़े आधुनिक व प्रगतिशील देशों में घर की स्त्री का विशेष मान है। घर की स्त्री हो सकता है पढ़ी-लिखी न हो, वह हो सकता है बड़ी सीधी स्त्री हो ज़्यादा आधुनिक न हो...''

(१९९८, दिवाली पूजा, इटली)

वह सर्वोच्च मानी जाती है :

''... एक घर की पत्नी से यह अपेक्षा रखी जाती है कि उसका पहनावा शिष्ट हो, माननीय पहनावा और किसी सैक्रेटरी या ऑफ़िस वाली के समान

पहनावा न हो क्योंकि वह सर्वोच्च मानी जाती है, चाहे आपको अच्छा लगे या न लगे...''

(१९९८, दिवाली पूजा, इटली)

उसे शिष्ट और अत्यन्त प्रतिष्ठित होना चाहिए :

''... घर की स्त्री, घर की प्रतिष्ठा होती है, केवल वह ही नहीं, पर वह पूरे देश की संस्कृति के लिए जिम्मेदार है, उस देश की पूर्ण संस्कृति के लिए। वे संस्कृति का प्रतिनिधित्व करती हैं। जैसे कि भारत में आजकल, फिल्मों में हर प्रकार के अजीब कपड़े दिखाने शुरू कर दिए हैं। परन्तु मैंने किसी घर की पत्नी को वैसा पहने नहीं देखा है, किसी को नहीं देखा। यह वास्तविकता में नहीं होता है। यह केवल फ़िल्मों में होता है, क्योंकि समाज इतना मज़बूत है और घर की स्त्री एक शिष्ट व्यक्ति होनी चाहिए। उसे शरीफ़, अत्यन्त प्रतिष्ठित होना चाहिए और उसे प्रतिष्ठित तरीके से व्यवहार करना चाहिए...''

(१९९८, दिवाली पूजा, इटली)

यह एक प्रकार की, घर की स्त्रियों की महान सामूहिकता है, जिसे कार्यान्वित होना है :

''... आप देखिए कि, यह एक प्रकार की घर की स्त्रियों की महान सामूहिकता है जिसे कार्यान्वित होना है। उनके एक सी समस्यायें होती हैं, उन्हें अपने बच्चों का सामना करना होता है, उन्हें घर-गृहस्थी की देखभाल करनी होती है, सब कुछ, मेरा अर्थ है कि घर की स्त्रियों की अनेक एक सी समस्यायें होती हैं। और उन्हें सब छोटी-छोटी बातें भी पता होती हैं। आप देखें कि पुरुषों को अधिक जानकारी नहीं होती है, कम से कम भारत में क्योंकि वे हवा में रहते हैं, मैं सोचती हूँ...''

(१९९८, दिवाली पूजा, इटली)

वे अत्यन्त अच्छा परिवार, अच्छा समाज और अच्छे बच्चे बन जाते हैं :

''... जिस देश में स्त्रियाँ समझदार एवं परिपक्व होती हैं, आप हैरान होंगे कि वे अत्यन्त अच्छे परिवार, अच्छा समाज एवं अच्छे बच्चे बन जाते

हैं। इसलिये मैं कहती हूँ कि भारत एक बड़ा अच्छा देश है, जिसमें बड़ा अच्छा समाज है। यह घर की स्त्रियों के कारण है, घर की गृहलक्ष्मी, जिन्होंने सारा महत्त्वपूर्ण कार्य किया है, जहाँ तक संस्कृति से सम्बन्धित है। भारतवर्ष में यह है कि लोग घर की पत्नियों की इज़्जत करते हैं...''

(१९९८, दिवाली पूजा, इटली)

VIII. मातृत्व

यह सर्वोच्च चीज़ है। मुझे देखिये :

''... माँ होना सर्वोच्च बात है:आप देखें कि आपको माँ होना है और अपने बच्चों से उस प्रतिष्ठा एवं प्रेम से व्यवहार करना है, जो एक माँ को देना चाहिए। कुछ लोगों के लिए यह बड़ा कठिन होता है कि माँ के पद को स्वीकार करें। वे सोचते हैं कि, 'क्यों स्त्रियों को ही माँ बनना चाहिए?' मैं कहती हूँ कि यह सर्वोच्च स्थान है। मुझे देखिए। यह सर्वोच्च बात है कि आप माँ बनें, सबको प्रेम करें, ताकि वे आप पर प्रेम और मार्गदर्शन के लिए निर्भर करें। केवल प्रेम के लिए। कितनी बड़ी बात है, कहना, 'हे परमात्मा, आप देखें मैं कितना दे सकती हूँ, मैं कितने प्याले भर सकती हूँ।' यह कितनी उच्च भावना है। मैं इच्छा करती हूँ कि आप जानें कि माँ क्या होती है, और मातृत्व आपको अपने बच्चों एवं पोते-पोतियों से सीखना है और पूरे ब्रह्माण्ड में फैलना है...''

(१९८०, बचपन पर, यू.के.)

मातृत्व एक सर्वोच्च बात है, जो कि एक स्त्री प्राप्त कर सकती है :

''... क्यों, क्यों, हमने अपने आप को इतना सस्ता बनाना है? हम माँ हैं और हमें मातृत्व का गर्व होना चाहिए। मातृत्व एक सर्वोच्च चीज़ है, जो एक स्त्री प्राप्त कर सकती है। मेरा अर्थ है, मैंने इसे प्राप्त किया है, क्योंकि मैं हज़ारों की माँ हूँ। और मैं सोचती हूँ कि एक स्त्री का माँ बनना, सबसे महान बात है।

और माँ और एक गुरु, आप मेरी दयनीय स्थिति सोच सकते हैं। यह बड़ी खराब बात है कि आपको अपने बच्चों को कुछ करने को कहना पड़ता है, जो कि आप नहीं कहना चाहते। तब हमें, उन्हें ठीक करने के लिए, छोटी

मधुर युक्तियाँ उपयोग में लानी पड़ती हैं। माँ होना बड़ा रुचिपूर्ण है और एक सुन्दर जीवन है, हमें गर्वित माँ होना चाहिए। परन्तु मैं कहूँगी कि पुरुषों को भी दोष देना है, क्योंकि वे माँ में रुचि नहीं रखते, वे छोटी उम्र की लड़कियों में ही रुचि रखते हैं, यह विकृति का लक्षण है, यह पूर्ण विकृति का लक्षण है...''

(१९८२, हृदय, विशुद्धि, आज्ञा, सहस्रार, ऑस्ट्रेलिया)

मातृत्व उसे चमकने की विशेष क्षमता देता है :

''... आप एक बच्चे को देखें, आप एक लड़की को देखें जो अबोध है, उसकी रुचि केवल उसकी छोटी सी गुड़िया है। वह पूर्णतया एक माँ है। यदि वह बचपन से ही ठीक प्रकार से बड़ी की गई है, तो वह माँ है और मातृत्व, स्त्रीत्व का शिखर स्थान है।

कितनी ही महान आत्माएं हैं, जो जन्म लेना चाहती हैं। ये महान फल हैं जो आपके पारिवारिक जीवन के पेड़ पर विकसित होंगे। और यदि आप बच्चे नहीं पाना चाहते तो आप यहाँ क्या कर रहे हैं?

सो, विष्णुमाया की मुख्य चीज़ है कि एक स्त्री को माँ बनना है। तब वह मातृत्व उसे चमकने की विशेष क्षमता देता है...''

(१९८७, श्रीहनुमान पूजा, न्यूयोर्क)

मुझे एक स्त्री होने का बड़ा गर्व है :

''... यह मैं हूँ, मुझे स्त्री होने का बड़ा गर्व है और मैं कभी भी एक पुरुष बनना पसन्द नहीं करूंगी। श्रीकृष्ण को देखिए, उन्हें १६,००० स्त्रियों के साथ विवाह करना पड़ा, उन्हें उनसे विवाह करना पड़ा। वे उन्हें शिष्यों के रूप में नहीं रख सकते थे। वे शक्तियाँ थीं, वे उनकी शक्ति थीं, उनकी शक्तियों को स्त्रियाँ ही होना था। पहले ही लोग कहते हैं कि वह स्त्रियों का पुरुष था। परन्तु मुझे कोई ऐसा नहीं कह सकता है, क्योंकि मैं एक स्त्री हूँ और माँ को ललकारा नहीं जाता। पिता को सदा ललकारा जाता है, माँ को नहीं...''

(१९८८, रोल ऑफ़ वीमेन, यू.के.)

हम माँ हैं और आपको माँ होने पर गर्व होना चाहिए :

''... जब आप छोटी बच्चियाँ होती हैं तब आप देवियाँ होती हैं, उस समय आप अबोध होती हैं। तब आप का विवाह हो जाता है। आप का विवाह होना एक बड़ी बात है, यह बड़ा मंगलदायक होता है, तब विवाह के उपरान्त आपके बच्चे होते हैं, यह उससे भी अधिक सम्मानजनक है आप के लिए, क्योंकि आप माँ हैं। हम अभिनेत्रियाँ नहीं हैं, हम माँ हैं और आपको माँ होने का गर्व होना चाहिए और आपको अपने बच्चों पर गर्व होना चाहिए। तब आप नानी या दादी बन जाती हैं। मैं सोचती हूँ कि यह एक उच्च उपलब्धि है और आपको अपनी उम्र पर गर्व होना चाहिए, कि आप एक नानी हैं। यदि आप छोटी उम्र का लगने के लिए संघर्ष करती रहेंगी तो आप बड़ी बूढ़ी लगेंगी। आप देखिए, आप की माँ सत्तर वर्ष की है और सब कहते हैं कि मैं अपनी आयु की नहीं दिखती। मैंने अपनी दिखावट की कभी परवाह नहीं करी, मेरे पास समय ही नहीं है, मेरे इतने बच्चे हैं और मुझे अपनी आयु पर गर्व है। उम्र के साथ आप विकसित होते हैं, परिपक्व होते हैं, अधिक बुद्धिमान होते हैं, तब आपके पास अपने व्यक्तित्व के सभी पहलु हैं। यदि आप वास्तव में अपनी आयु का सम्मान करते हैं, तो लोग आपसे सलाह, परामर्श लेंगे, सहायता लेंगे और तब आप सहजयोग का प्रचार कर सकते हैं। फ़ैशनों के उद्योगी जिस प्रकार स्त्रियों का लाभ उठाते हैं, उसमें अनेक जटिलताएं होती हैं...''

(१९९७, दिवाली पूजा, रूमानिया)

प्रत्येक की माँ :

''... यह नहीं कि, मेरा बच्चा, मेरा पति, मेरा घर, मैं इस घर का क्या करूं, मेरा घर, मेरे बच्चे, मेरा घर, मेरे बच्चे। आपके पास एक बच्चा है, उसके प्रति जो आपका प्रेम है, उसे विशाल करें, वही आपको सब अन्य बच्चों के लिए अनुभव करना चाहिए। आप को सभी बच्चों की माँ होना है, न केवल अपने बच्चे की। दोनों के लिए, विशेषतया मुझे कहना है कि जितने वे अभी सामूहिक हैं, उससे अधिक उन्हें सामूहिक बनना है। वह पहली बात है:उन्हें स्वयं को विशाल बनाना है, जो इस प्रकार की स्त्री नहीं है, उसका कोई भी

सम्मान नहीं करेगा। आपको हर एक की माँ बनना है...''

(१९८०, विवाह और सामूहिकता, यू.के.)

आप एक माँ हैं, चाहे आप एक पुरुष हैं या स्त्री :

''... सो, एक गुरु को माँ होना है, उसमें माँ की विशेषतायें होनी चाहिए, आधुनिक माँ नहीं, पर इस शब्द की वास्तविक सार्थकता में, कि एक गुरु को अपने बच्चों को प्रेम करना है और उसमें अपने बच्चों की सही करने की शक्ति एवं साहस होना चाहिए और शुद्ध इच्छा होनी चाहिए, कि उन्हें सही मार्ग पर लायें, मार्गदर्शन करें और उनके उत्थान में सहायता करें।

प्रथम पोषण हमें अपनी माँ द्वारा मिलता है, जब हम अपनी माँ की कोख में होते हैं, सो आप एक माँ हैं, चाहे आप स्त्री हैं या पुरुष, परन्तु गुणों में आप माँ हैं, आप जो भी सोचते हैं या करते हैं उसका प्रभाव बच्चे पर होता है। जिस प्रकार आप व्यवहार करते हैं, आप बात करते हैं, जिस प्रकार आप रहते हैं, हर बात का बच्चे के विकास पर प्रभाव पड़ता है। इसी प्रकार जब एक सहजयोगी साक्षात्कार देने का प्रयत्न कर रहा है और अगर वह गलत प्रकार का व्यक्ति है, वह एक पाखण्डी है। यदि वह अपने गुरु का सम्मान नहीं करता है तो बच्चे भी उसी प्रकार का व्यवहार करते हैं और वे गलत बातें अधिक शीघ्रता से अपनाते हैं, वे पहले गलत बातों को देखते हैं...''

(१९८९, गुरुपूजा, इटली)

माँ, जो अपने बच्चों से प्रेम करती हैं वह उसके हर कार्य का आनन्द लेती हैं :

''... एक माँ व एक बच्चों से क्रोधित माँ में यह अन्तर है कि:जो माँ अपने बच्चे से प्रेम करती हैं, वह उसके लिए जो भी कार्य करती है, उसका आनन्द लेती है, जब कि वह माँ जो बच्चे से प्रेम नहीं करती है वह सोचती है कि वह बच्चे के लिए अत्यधिक कार्य कर रही है, अब वह नहीं कर सकती, यह बहुत ही अधिक है। यदि आप उससे पूछें कि क्या बात है? तो वह कहेगी, 'मुझे यह धोना है, यह साफ़ करना है, मुझे इस बच्चे की देखभाल करनी है।' ये सब तो हर प्रकार की कहानियाँ है। परन्तु एक माँ जो प्रकाशित है, वह सब कार्य प्रेम से करेगी और उनका आनन्द लेगी। उस के अन्दर अपने

बच्चों के लिए इज़्जत होगी और वह उन्हें माननीय बनाएगी...''

(१९९४, श्रीगणेश पूजा, मॉस्को)

आपको इस देश की माताओं के रूप में अपना महत्व जानना है :

''... सो, अब आपको इस देश की माताओं के रूप में अपना महत्व जानना है। मोहम्मद साहब ने जो भी किया है वह स्त्रियों को मान देने के लिए किया। उन्होंने ईसा मसीह की माँ के विषय में बाइबल से भी अधिक लिखा है। वे कहते हैं कि उनकी (ईसा की माँ) पवित्रता को किसी को भी ललकारना नहीं चाहिए। सहजयोग में आप जानेंगे कि वे कौन थे:फ़ातिमा कौन थीं? हज़रत अली कौन थे? मोहम्मद साहब कौन थे? इन महान अवतारों की सूक्ष्मता को आप जानेंगे। और आपको सबूत मिलेगा। यह वास्तविकता है, पूर्ण रूप से वास्तविक, इस प्रकार आप विश्वास करेंगे, परन्तु उसके लिए प्रथम आपको सहजयोग में विकसित होना है। भारत में स्त्रियों को शक्ति माना गया है...''

(१९९४, लेड़िज पब्लिक प्रोग्राम, ट्युनीशिया)

माँ का प्रेममय प्रशिक्षण ही प्रथम और सर्वाधिक प्रभावशाली है :

''... स्त्रीत्व का मुख्य कार्य है कि अच्छा समाज बनाये जो शान्ति का बेहतर आनन्द ले सके। दुराचार, भ्रष्टाचार और हिंसा बड़े राक्षस हैं जो हमारे समाज को खा रहे हैं। इन भ्रष्ट व अनैतिक लोगों की माँ को मैं दोष दूँगी क्योंकि उनके बचपन में उनकी माँएं अपने कर्तव्य में विफ़ल रही। माँ का प्रेममय प्रशिक्षण ही प्रथम और सर्वाधिक प्रभावशाली होता है बच्चों को सुन्दर नागरिक बनाने में। जिन माँओं ने अत्यधिक परवाह और प्रेम के साथ मार्गदर्शन करने का प्रयत्न नहीं किया या पत्नियाँ या बेटियाँ जो पुरुषों के डर में हैं या विनाशकारी संस्कृति में हैं, उन्होंने एक परिवार के अखंड सदस्य के रूप में अपना कर्तव्य नहीं पालन किया है, पुरुषों की नैतिकता को मज़बूत करने में...''

(१९९५, वर्ल्ड कान्फरन्स ऑन वीमेन, बीजिंग)

IX. प्रतिष्ठा

वे सस्ती, बचकानी, जवान, ओछी लड़कियों जैसा व्यवहार करना चाहती हैं। वे अपने अस्तित्व की प्रतिष्ठा का अनुभव नहीं करती हैं :

''... अब पश्चिम में, स्त्रियों के साथ यह समस्या है कि वे अपनी शक्ति को समझती नहीं हैं। एक अस्सी साल की स्त्री भी दुल्हन के समान दिखना चाहती हैं। वे अपनी प्रतिष्ठा का अनुभव नहीं करती हैं और अपने अन्दर की प्रतिष्ठा का आनन्द नहीं लेती हैं। वे घर की रानी हैं, परन्तु वे सस्ती सी, बचपने से भरी, कम उम्र की, ओछे व्यवहार करने वाली लड़कियों के समान व्यवहार करना पसन्द करती हैं। वे अपने अस्तित्व की प्रतिष्ठा का अनुभव नहीं करती हैं। वे बहुत अधिक बात करती हैं, वे ऐसा व्यवहार करती हैं, जो घर की स्त्री को शोभा नहीं देता। जैसे कि वे अपने हाथ नचा कर मछिआरों की स्त्रियों के समान बात करती हैं, जब उन्हें किसी को मछली बेचनी होती है या किसी से लड़ाई करनी होती है।

या कभी-कभी वे चिल्लाती हैं, वे चिल्लाती हैं, मैंने सुना है कि वे चिल्लाती हैं और कभी-कभी अपने पतियों को मारती हैं। वह तो हद है। वे हमेशा स्वयं की अपने पतियों के साथ तुलना करनी शुरू करती हैं, प्रारम्भ में। जैसे कि, 'मैं इतना अमीर आदमी हूँ, मैं अमीर आदमी की बेटी हूँ, मैं उस परिवार से हूँ, मेरा पति इतने छोटे परिवार से है, उसके पास कोई पैसा नहीं है, वह शिक्षित नहीं है।' सो, उसके साथ दुर्व्यवहार करती हैं, उसके साथ ऐसा व्यवहार करती हैं, जिसमें कोई इज़्ज़त नहीं होती।

ऐसी स्त्री की समस्त शक्तियाँ खो जाएंगी और वह अपने ही तरीके से दोषी भावना से ग्रसित होगी क्योंकि सर्वप्रथम किसी को भी दूसरे को नीचा दिखाने का अधिकार नहीं है, विशेषतया सहजयोग में। उसके बाद अपने पति को नीचा दिखाना अविश्वसनीय है। वह हो सकता है, सहजयोगी न हो.... ठीक है, वह उस योग्य न हो शायद, परन्तु अपने व्यवहार से, अपनी शक्ति से आप उसे बचा सकती हैं, परन्तु स्वयं को क्यों खो रही हो ?...''

(१९८८, श्रीफ़ातिमा पूजा, स्विटजरलैंड)

सहज धर्म में स्त्रियाँ निर्मल होती है :

''... वे मूर्ख, ओछी और हर बात पर हँसने वाली नहीं होती है। वह स्त्री का तरीका नहीं है। कुछ भी होगा तो वे ज़रूर हँसेंगी। मेरा तात्पर्य है कि यदि कुछ हँसने योग्य हो तो ठीक है, पर कुछ बातें हँसे योग्य नहीं होती हैं, पर वे फिर भी हँसेंगी। वह तरीका नहीं है। कभी-कभी वे विद्रूपी होती हैं और दूसरों का उपहास करती हैं। परन्तु प्रशंसा के लिए हँसना, आनन्द की हँसी इतनी निर्मल होती है और एक सुन्दर वातावरण बना देती है...''

(१९९७, श्रीकृष्ण पूजा, कबेला)

अपनी शक्ति को बचाए रखने के लिए हमें प्रतिष्ठा की समझ होनी चाहिए :

''... एक स्त्री का गुण, धरती माँ की शक्ति के समान होता है या किसी भी ऊर्जा की शक्ति, जैसे बिजली की शक्ति कहीं और होती है। आप यहाँ लाईट देखें, कोई अन्तर नहीं पड़ता, एक लाईट या दो लाईटें, पर शक्ति महत्वपूर्ण है। सो, हमें यह समझना चाहिए कि हमारे में शक्ति है और उस शक्ति को बचाने के लिए, हमें प्रतिष्ठा की समझ होनी चाहिए, सम्मान एवं धार्मिकता अपने अन्दर...''

(१९८८, श्री फ़ातिमा पूजा, स्विटजरलैंड)

आप जानती नहीं हैं कि आप रानी हैं, आप पर कोई अधिकार नहीं जता सकता :

''... सहजयोग में किसी भी प्रकार वर्चस्व नहीं होता, परन्तु हीनता और वर्चस्व वृत्ती आदि विचार, आपकी प्रतिष्ठा के प्रति गलत धारणाओं के कारण आते हैं, आपकी अपनी समझदारी के कारण। आपको अपने बारे में पता ही नहीं है, आपको पता नहीं है, कि आप रानी हैं, कोई आपको दबा नहीं सकता है। एक स्त्री जो घर की शासक है, उसे कौन दबा सकता है...''

(१९८८, श्री फ़ातिमा पूजा, स्विटजरलैंड)

एक प्रकार की शराफ़त, सौजन्यता, कुछ प्रतिष्ठा होती है :

''... जैसे कि स्त्रियों को कहना पड़ता है, वे ज़बरदस्ती की हँसी हँसती है या किसी भी बात पर हँसती जाएंगी, 'ही ही ही ही'। वह तरीका नहीं है। वे स्त्रियाँ बड़ी हो गई हैं। ठीक है, जब आपको हँसना होता है, तब आप हँसिए, मैं भी हँसती हूँ। पर एक समय होता है जब आपको हँसना चाहिए, पर वे हँसती जाती हैं। मैं सोचती हूँ कि मौलिक तौर पर भारतीय परिपक्व लोग होते हैं। वे किसी भी बात पर खि-खियांगेगी नहीं। यहाँ तक कि बड़ी उम्र की औरतें। आप देखिए यह बड़ी उम्र की स्त्रियों के साथ भी होता है। यह बड़ा अजीब है। जब हम वहाँ जाते हैं, तो ये सब बातें पहले से ही बता देनी चाहिए। यह सब बातें, वे सब इन्सान हैं। यदि वे परिपक्व हो सकते हैं, तो हम क्यों नहीं परिपक्व हो सकते? हम सहजयोगी हैं, हम साक्षात्कारी आत्माएं हैं। एक प्रकार की शराफ़त होती है, सौजन्यता की समझ, कुछ प्रतिष्ठा...''

(१९८६, टॉक टू द लीडर्स, हौलेण्ड)

स्त्रियों को परामर्श

I. अपने महत्व को समझें

हम सब कर सकते हैं, जो आज माँ कर रही हैं :

''... यह जो स्त्रियों के स्वतंत्रता की नई गति चली है, यह गोपनीय कार्य, जो चल रहा है, उसका प्रतीक है। क्योंकि स्त्रियाँ बाईं ओर की होती हैं, उनमें कपट होता है। वे बड़ी होशियारी और चतुराई से इसे कार्यान्वित करती हैं। परन्तु आप सब मेरे समान हो सकती हैं। यदि आप चाहें तो आप सब मेरी सब शक्तियाँ, पुरुषों से अधिक प्राप्त कर सकती हैं।

परन्तु आपको, अपने आपको गौरवान्वित करने के छोटे विचारों व छोटी दृष्टि से बाहर आना होगा। मुझे पूरा विश्वास है कि यदि आप सोच लें कि हम भी कर सकते हैं, जो आज माँ कर रही हैं, तो यह कार्यान्वित हो सकता है...।''

(१९८८, श्री एकादश रूद्र पूजा, ऑस्ट्रिया)

वे इस विश्व को सुन्दर बना देंगी :

''... परन्तु एक स्त्री बिना धार्मिकता के, बिना पवित्रता के, बिना विनम्रता के एक स्त्री नहीं है। करूणा उसकी सजावट है। मैं इच्छा करती हूँ कि मैं विल्यम ब्लेक के समान लिख सकती हूँ। मैं इच्छा रखती हूँ कि उन्होंने पाश्चात्य की स्त्रियों के विषय में, उनकी जो सुन्दरता थी उस बारे में लिखा होता। और उसे उन्हें उपलब्ध करना है। एक बार जब स्त्रियों को वास्तव में अपनी शक्ति का पता चल जाए, तो वे इस संसार को एक सुन्दर संसार बना देंगी। मैं उसे जानती हूँ। परन्तु उनकी कमज़ोरियाँ नहीं, जब वे पुरुषों के तरीके अपनाती हैं। वही उनकी कमज़ोरी है...''

(१९८८, श्री एकादश रूद्र पूजा, ऑस्ट्रिया)

आप इतनी महत्वपूर्ण हैं, आपके बिना कुछ शुरू नहीं हो सकता :

''... आप हैरान होंगे कि जब मैं उन स्त्रियों को देखती हूँ, जिन्होंने बहुत

ही दूषित जीवन, सन्मार्ग से हट कर बिताया है, वे पुरुषों से भी ज़्यादा खराब हैं। विवाह के बाद पुरुष ठीक हो जाते हैं, स्त्रियाँ नहीं। उनकी मानसिक समस्यायें होती हैं क्योंकि आपको यह जरूर जान लेना चाहिए कि आप भावनायें हैं, आप पूरे विश्व की इच्छाशक्ति हैं। आप इतनी महत्वपूर्ण हैं। आप के बिना कुछ शुरू नहीं हो सकता। यदि मैं इस पृथ्वी पर नहीं आती, सब को एक साथ नहीं किया होता, सदाशिव से गणेश तक, वे कुछ नहीं कर सकते थे। यह वास्तविकता है। यह मैंने एक स्त्री के समान, माँ के समान, पत्नी के समान, यह उपलब्ध किया है। और यही आपके लिए सबसे आसान काम है क्योंकि मैं एक स्त्री हूँ और मैंने एक स्त्री के समान जीवन व्यतीत किया है और मैंने पूरे विश्व में सारे बच्चों को व्यवस्थित किया है। पूरा खेल संभाला है। अपने परिवार को अच्छी तरह संभाला है और अब यह किस प्रकार प्रमाणित हो गया है कि एक स्त्री न केवल एक पुरोहित हो सकती है, पर वह उच्चतम गुरुओं की गुरु भी हो सकती है। मैं, अब आप सब को आधार पर रखती हूँ।

सो, मुझे आपको बताना है, कि आप को ऊपर उठना है और आप को सहज की देखरेख करनी है। आप बहुत महत्वपूर्ण हैं क्योंकि एक खराब स्त्री और एक खराब पत्नी, पुरुष से भी अधिक हानिकारक हो सकती हैं।

(१९८८, श्री एकादश रूद्र पूजा, ऑस्ट्रिया)

आप स्त्री होकर बहुत सी चीज़ें साध्य कर सकती हैं :

''... उसके लिए आपको कुछ बातें जाननी हैं। दूसरों के प्रति अपने प्रेम को कैसे अभिव्यक्त करना चाहिए। दूसरों को अपनी असली शुद्धता कैसे अभिव्यक्त करनी चाहिए। सहजयोग में अपने पति की किस प्रकार सहायता करनी चाहिए। सहजयोग के विवाह में आपने मुझ से वादा किया है कि आप सहजयोग के लिए कार्य करेंगी और अपने पति की सहज योग करने में सहायता करेंगी। जब आपके पति दूसरे सहजयोगियों की देखभाल करेंगे तो आप उनकी सहायता करेंगी और अन्य सहजयोगी जो आप के घर आएंगे, उनकी देखभाल करेंगी। आप अपने घर को सहजयोग का केन्द्र बनाएंगी, अपने घर लोगों का सत्कार करेंगी और हमेशा सामूहिकता को बढ़ावा देंगी। इन वादों के साथ आप का विवाह हुआ है। आप ही उसे दर्शा सकती हैं।

एक स्त्री के लिए, छोटी दृष्टि रखना, छोटा हृदय व नीच प्रकृति का होना आसान है, पुरुष के लिए वैसा बनने में समय लगता है। परन्तु इन सब में, अगर आप पुरुष पर हावी होंगे तो आप न यहाँ की रहेंगी न वहाँ की। तब आप न स्त्री हैं न पुरुष। आप इसका नाम बताएं जो व्यक्ति न स्त्रीलिंग हैं न पुलिंग। आईये हम स्त्री रहें और उससे गर्वित रहें। इस प्रकार हम सब के लिए एक बहुत अच्छा विश्व बना सकते हैं...''

(१९८८, श्री एकादश रूद्र पूजा, ऑस्ट्रिया)

जहाँ स्त्रियाँ सम्माननीय होती हैं एवं सम्मानित होती हैं, वहाँ देवी-देवता निवास करते हैं :

''... और पुरुषों को, जो स्त्रियाँ सम्माननीय होती हैं, उनका सम्मान करना चाहिए। संस्कृत में कहा गया है, 'जहाँ स्त्रियाँ सम्माननीय होती हैं और सम्मानित होती हैं, वहाँ देवी-देवता निवास करते हैं।' अर्थात् स्त्रियों को भी सम्माननीय होना चाहिए, उन्हें असम्माननीय चरित्र का जीवन नहीं व्यतीत करना चाहिए। इस दृष्टि को समझ कर, मुझे विश्वास है कि आप अपनी महान शक्तियों एवं महान पद को समझेंगी...''

(१९८६, द रोल ऑफ़ बैल्जिअम एण्ड हौलेण्ड, बैल्जिअम)

स्त्रियाँ पूरे विश्व को एक सुन्दर विश्व बना सकती हैं :

''... एक प्रकार की नकारात्मक शक्ति जैसे कि हिटलर की शक्ति स्त्रियों में ऊपर उठ रही है, सभी देशों में। यह दुष्ट हिटलर एवं जो जर्मन में मर गये हैं, वे सब स्त्रियों द्वारा जन्म ले रहे हैं। वे अब शैतान के समान बन रहे हैं। बिल्कुल नाज़ी के समान। सो, स्त्रियों को बड़ा सावधान होना होगा कि जो नकारात्मक शक्तियाँ अन्दर में कार्य कर रही हैं, उनके प्रति। उन्हें विनम्र होना है, उन्हें मधुर होना है, त्यागी होना है क्योंकि उनमें यह करने की शक्ति है। केवल स्त्रियाँ ही इसे कर सकती हैं, पुरुष नहीं। पुरुष ऐसे नहीं कर सकते। उनमें दूसरी प्रकार की मधुरता होती है। पुरुषों में कुछ उनकी मधुरता होती है, परन्तु स्त्रियों में वह तीक्ष्ण बुद्धि होती है जो सारे विश्व को एक सुन्दर विश्व बना सकती हैं...''

(१९८८, श्री एकादश रूद्र पूजा, ऑस्ट्रिया)

आप ही बचा सकती हैं, अपनी बुद्धि एवं स्वाभाविक प्रेम से :

''... मुझे विशेषतया एक विनती करनी है स्त्रियों से, कि आज-कल के आधुनिक समय में वे ही हैं, जो विश्व को बचा सकती हैं, पुरुष नहीं। उन्होंने अपना कार्य पहले कर लिया है, अब यह आपके ऊपर है बचाना, अपनी समझदारी से, करुणा से, अपने त्याग से, अपने विवेक से और अपने स्वाभाविक प्रेम से, न केवल अपने बच्चों को, पति को, परिवार को, परन्तु पूरे विश्व को।

यह आप सबके लिए अपना योगदान देने के लिए बड़ा अच्छा अवसर है। हमारी कुछ बड़ी महान सहजयोगिनियों के साथ बड़ा विशाल अनुभव रहा है, उनमें से कुछ ने परमानन्द की अड़िग स्थिरता उपलब्ध की है, वास्तव में उनमें से कुछ ने प्राप्त की है अड़िग स्थिरता, परमानन्द की। यदि वे आ रही हों तो तत्क्षण मैं अनुभव कर लेती हूँ कि वे आ रही हैं। पूरा वातावरण उनकी प्रतीक्षा करता है, पूरा ब्रह्माण्ड उनके आगमन की प्रतीक्षा सम्पूर्ण सम्मान से करता है। कुछ स्त्रियाँ उन गुणों वाली हैं। हमें उन्हें अपना आदर्श मानना चाहिए न कि मूर्ख, बेकार, व्यर्थ की स्त्रियाँ। हमें उन्हें कुछ महान रूप में लेना चाहिए...''

(१९८८, श्री एकादश रूद्र पूजा, ऑस्ट्रिया)

''... परन्तु जब एक नकारात्मक स्त्री में अहंकार प्रवेश करता है तो कोई भी उसकी सहायता नहीं कर सकता है...''

(१९८८, इन्ट्युशन एण्ड वीमेन, पैरिस)

आपको चरम सीमा की प्रगतिशील होना है :

''... अब पुरुषों में अहंकार का भाग है और स्त्रियों में दूसरा भाग है और स्त्रियों में दूसरा भाग है कि कभी-कभी वे बड़ी सुस्त होती हैं। अत्यन्त सुस्त। वे यह नहीं सोचती हैं कि उन्हें एक प्रगतिशील कर्तव्य करना है, जब कि वे शक्ति हैं। जैसे कि वे ताली तक नहीं बजाएंगी, वे अपनी 'टॉर्च' भी नहीं रखेंगी यह देखने के लिए कि क्या हो रहा है। कुछ नहीं। वे केवल यह सोचती हैं कि वे एक प्रकार की परजीवी हैं। वे यहाँ आती हैं, साड़ियाँ पहन कर, एक पत्नी के रूप में, बहन के रूप में या जो भी।

अब आप को चरम सीमा की प्रगतिशील होना है, आपको सब कुछ सहजयोग के विषय में जानना चाहिए। आप को चक्रों के विषय में सब जानना चाहिए, आप को सब कुछ जानना चाहिए...''

(१९९०, मैरिज एडवाईस टू वीमेन, भारत)

''...सो, केवल अपनी जिम्मेदारी के विषय में सोचिए, आप कितनी ही पीड़ित स्त्रियों का भाग्य बदलने में बहुत कार्य कर सकती हैं...''

(१९९४, लेडीज़ पब्लिक प्रोग्राम, ट्यूनीशिया)

स्त्रियों को अपना पद भूमि माँ के समान रखना चाहिए, सम्पूर्ण मनुष्यता के भवन के रूप में :

''... यह स्पष्ट है कि स्त्रियाँ सम्पूर्ण मानव जाति की रचना करती है और उसकी रक्षा करती हैं। यह कार्य उन्हें परमातमा ने दिया है, उन्हें सौंपा है। बीज़ अपने आप कुछ नहीं बना सकते, यह भूमि माँ है, जो फूल और फल और अन्य अनुदान देती हैं। इसी प्रकार स्त्री बच्चे की रचना करती है, जो बच्चे का पोषण करती है और आखिर उसको बड़ा कर के कल का नागरिक बनाती है। स्त्रियों को इस कारण से अपने आप को भूमि माँ के पद के समान समझना चाहिए, सम्पूर्ण मनुष्यता के भवन के रूप में...''

(१९९५, वर्ल्ड कान्फरन्स ऑन वीमेन, बीजिंग)

आप को यह समझना है कि आप इन भयंकर स्त्रियों के समान नहीं है :

''... और यह स्त्रियों की जिम्मेदारी है कि वे समाज की देखभाल करें। यदि समाज में कुछ गलत हो गया है तो वह इन स्त्रियों के कारण है, जिन्हें ज्ञात नहीं है कि उनका कार्य क्या है, उनका कर्तव्य क्या है? और उनका चित्त इतना नीचे गिर गया है कि वे अपने आप की सस्ती औरतों के साथ तुलना करती हैं, सस्ती अभिनेत्रियों के साथ, और उन स्त्रियों के साथ जिनके जीवन में कोई आदर्श नहीं है।

आप को, सहजयोगी होने के नाते यह समझना चाहिए, कि आप इन भयंकर स्त्रियों के समान नहीं हैं। आप विशेष प्रकार की हैं। और ये औरतें जो

पैसे के लिए करती हैं, उन मूर्ख बातों को आपको अपनाना नहीं है। मैं सोचती हूँ कि यह वेश्यावृत्ति के समान है, जिस प्रकार लोग पैसे के लिए कार्य कर रहे हैं।

इसलिये आप सन्तुष्ट रहें। यदि आप सन्तुष्ट हैं, तो आप वास्तव में आनन्द पाएंगे। आप अपने पारिवारिक जीवन का आनन्द पाएंगे। जो स्त्री सन्तुष्ट नहीं है, वह सदा दूसरों में दोष ढूंढ़ती है, हमेशा कुछ माँग करती रहती है, वह कभी एक अच्छी पत्नी नहीं बन सकती है और कभी अच्छा समाज नहीं बना सकती है और यह समाज जो वह बनाएगी, वह अगले समाज को नष्ट कर देगा...''

(१९९७, शक्ति पूजा, कलवे, भारत)

II. दिखावट, आकर्षण, बहकाना, लज्जा की बुद्धि

यदि वे सम्माननीय नहीं हैं तो उनका सम्मान कैसे हो सकता है :

''... पर कहा है कि स्त्रियों का सम्मान होना चाहिए, वे किस प्रकार सम्मानित की जा सकती हैं...''

(१९९७, दिवाली पूजा, रोमानिया)

आपको पुरुषों को क्यों आकर्षित करना है ? :

''... परन्तु आप उनके (पुरुषों) साथ होड़ करना शुरू करती हैं और उन्हें काफ़ी हद तक गुलाम बनाती हैं, जिस प्रकार यह संस्कृति है जिसमें स्त्रियाँ अपने शरीर को, पुरुषों को आकर्षित करने के लिए दिखाती हैं। हर समय पुरुषों को आकर्षित करना क्या है ? क्यों आप को पुरुषों को आकर्षित करना चाहिए ? सदैव अपने शरीर को नग्न कर के दिखाना, केवल पुरुषों को प्रसन्न करने के लिए, क्यों ? हमें वैसा क्यों करना चाहिए ? क्यों हमें अपना शरीर दिखाना चाहिए ?...''

(१९८८, इन्ट्युशन एण्ड वीमेन, पैरिस)

हम ऐसी हैं, जैसे कि हमें पुरुषों का चित्त चाहिए, पुरुषों का गंदा ध्यान :

''... आप देखिए, किस प्रकार स्त्रियाँ अपने आप को खुला दिखाती हैं,

पुरुषों के पीछे भागती हैं। तब हम कैसे शिकायत कर सकते हैं कि बलात्कार इत्यादि होता है। मेरा अर्थ है कि हम इस प्रकार का चाहते हैं। हम ऐसे हैं, जैसे कि हमें पुरुषों का ध्यान चाहिए, गंदा चित्त पुरुषों का चाहिए।

परन्तु सहजयोगिनी ऐसी नहीं हैं। वे प्रतिष्ठित हैं। वे अपना सन्तुलन रखती हैं। उन्हें स्वयं के लिए सम्मान होता है क्योंकि वे योगिनी हैं। उनके सिर के ऊपर प्रकाश है। वे विशेष लेग हैं। इसलिये हमें अपने आप को थोड़ा सा बंधनों से बाहर निकालना है। विशेषतया अहंकार, जो पाश्चात्य में अत्यधिक विकसित है, उसे स्त्रियों द्वारा नीचे लाना चाहिए...''

(१९८८, इन्ट्युशन एण्ड वीमेन, पैरिस)

वे चाहती हैं कि सारे समय सब लोग उन्हें देखते रहें :

''... स्त्रियों का कोई मान है, वे चाहती हैं कि हर कोई हर समय उन्हें देखते रहें। भारतवर्ष में यदि कोई पुरुष एक स्त्री को सारे समय देखने का प्रयत्न करता है, तो वह जा कर उसे दो चांटे लगाती है...''

(१९९४, लेडीज़ पब्लिक प्रोग्राम, ट्यूनिशिया)

कल्पना कीजिए, यदि सब को एक ही नमूने में पलटन के समान ढाल दिया जाए :

''... अन्यथा, यह नहीं होगा। तब यदि आप आयें, शारीरिक ओर, जैसे कि यदि एक स्त्री बड़ी पतली है, तो वह चाहती है, टांगें ऐसी हों, हाथ ऐसे हों, शरीर ऐसा हो, क्यों? मेरा अर्थ है, कल्पना करिए, सब लोग एक ही नमूने में पलटन के समान ढाल दिये गये हों, इतनी कमर, इतना यह, भयंकर होगा, यह मेरा तात्पर्य है कि आप थक जाएंगे और उकता जाएंगे।

अब फैशन आता है कि हमें मिस्टर अमेरिका होना चाहिए या आप जो भी इसे कहें। सो, सब कदम दौड-भाग कर रहे हैं, सब पागलों के समान भाग रहे हैं, परन्तु क्यों? आप का स्वयं का व्यक्तित्व है, उसे बनाए रखें। आपको अपने शरीर के लिए कुछ चीज़ें चाहिए होती हैं। यदि आप का स्वास्थ्य ठीक नहीं है, तो आप, अपने चक्रों के साथ प्रयत्न करते हैं, ठीक करते हैं। परन्तु

आकृतियाँ, यह सोचना कि, 'मुझे ऐसा दिखना चाहिए, मुझे वैसा दिखना चाहिए,' इससे कुछ फ़र्क नहीं पड़ता है...''

(१९८५, श्रीदेवी पूजा, यू.एस.ए.)

उन्हें कभी भी बहुत पतली लड़कियाँ पसन्द नहीं थीं :

''... मेरा अर्थ है कि भारत में कोई भी अपने शरीर के आकार की इतनी परवाह नहीं करता। कम से कम मेरी उम्र में लोगों को बहुत पतली लड़कियाँ कभी पसन्द नहीं थीं क्योंकि वे सोचते थे कि वे लड़कियाँ बड़ी चिड़चिड़ी, क्रोधित व हर समय सोच-विचार करने वाली होंगी। उन्हें कभी भी बहुत पतली लड़कियाँ पसन्द नहीं थीं। मैं आपको वास्तव में अब बताती हूँ कि मेरे पति को अभी भी पसन्द नहीं हैं। वे कहते हैं कि, 'पुरुषों ने स्त्रियों को मूर्ख बनाया है और इसलिये स्त्रियाँ यह सब कर रही हैं।' आप देखिए, वह एक सरल सीधे पुरुष हैं, सो, वे सोचते हैं कि पुरुषों ने उन्हें मूर्ख बनाया है। सो, यह उस प्रकार है और फिर वे टाँगें ऐसी बनाती हैं, दाँत ऐसे या नाक ऐसा और आप एक प्लास्टिक का नाक लगवाते हैं, क्यों?...''

(१९८५, श्रीदेवी पूजा, यू.एस.ए.)

सहजयोगिनिओं को प्रतिष्ठित होना चाहिए :

''... सहजयोगिनियों को प्रतिष्ठित होना चाहिए-इस देश में कितने प्रतिष्ठित पहनावे हैं, मुझे पता नहीं, वे सब कहाँ गायब हो गए हैं। मुझे पता नहीं, उन्हें क्या हो गया है? अब जिस प्रकार स्त्रियाँ यहाँ चलती हैं, मुझे लगता है कि शब्दकोष में से वेश्या आदि शब्द पूरी तरह गायब हो जाएगा। चाहे यह बड़ी पुरानी बात लगे, पर यह अत्यन्त आधुनिक विचार है। यदि आप इस पर विचार करें, तो यह आप के लिए एक ऐसा वातावरण बनाएगा, जिसमें पूर्ण रूप से सुरक्षित महसूस करेंगे।

अब आप देखें, आधुनिक बीमारी, जो स्त्रियों को होती है, वह है 'ब्रैस्ट कैन्सर'। आप को पता है कि 'ब्रैस्ट कैन्सर' मध्य हृदय की समस्या के कारण होता है। यह मध्य हृदय स्त्रियों को होता है, जब वे अपने पतियों को व्यभिचारिक आँखों वाला देखती हैं, जैसा कि ईसामसीह ने कहा है। वह

कार्य करना शुरू करता है, वह ऐसे पुरुष के साथ हर समय असुरक्षित महसूस करती हैं। वह हाथ में हाथ डाल कर चलती है, परन्तु अन्दर में वह हर समय असुरक्षित बनती जाती है। वे सब स्त्रियाँ जो अचेतन की चिन्ताओं या अचेतन से पीड़ित हैं-जिसे आप भय कह सकते हैं, उन्हें 'ब्रेस्ट कैन्सर' हो जाता है।

सो, वे स्त्रियाँ जो इस प्रकार चलती हैं, इसमें और जमा कर रही हैं। अब वे स्त्रियाँ जो इस प्रकार चलती हैं, वे सहजयोग के अनुसार श्री गणेश का आशीर्वाद भी पूर्ण रूप से खो देती हैं। क्योंकि आप और कुछ नहीं, वेश्या बनने का प्रयत्न कर रही हैं, जरा सोचिए! और यह बात मैं आपसे बताने की सोच रही थी और आज सर्वाधिक मंगलमय दिवस है कि मैंने यह सब आपको स्पष्ट शब्दों में कहा है...''

(१९८०, रक्षाबन्धन, लन्दन)

यह आकार का पागलपन आपको अज़ीब बना देता है :

''... मैंने सदैव देखा है, कि जो स्त्रियाँ पतली होती हैं, उनके पति अस्थिर होते हैं, क्यों? क्योंकि पत्नी हर समय उससे भाग-दौड़ करवाती है, 'यह करो, वह करो, आप मेरे लिए यह नहीं लाये, मैंने आपसे कोका-कोला लाने को कहा था, आप लाये नहीं।' आपने वह नहीं किया, जैसे कि वह हर समय पापी हो और पति डरपोक बन जाता है, हर समय डरपोक। उसे डरपोक होने के लिए कुछ मिलता है और पत्नी को कुछ सताने के लिए मिलता है। वहाँ कोई प्रेम नहीं होता, वहाँ कोई आनन्द नहीं होता, वहाँ कोई प्रसन्नता नहीं होती है।

यह आकार का पागलपन जो अब कम हो रहा है, भगवान का शुक्र है कि यह अमेरिका से कम होना शुरू हुआ है। यह आकार का पागलपन आपको अज़ीब बना देता है। स्त्रियों को 'स्थिरता' की स्त्रियाँ होना चाहिए, उन्हें गृहस्थी होना है, जो घर में स्थिर होती है। उसे अपने घर-गृहस्थी से सन्तुष्ट होना चाहिए। यदि वह सारे समय भागती रहती है और घर में रहना नहीं चाहती, तब वह घर की पत्नी नहीं है, पर वह नौकरानी है...''

(१९८८, श्रीफ़ातिमा पूजा, स्विटजरलैंड)

उसे कुछ मोटा होना चाहिए, पुरुष से अधिक मोटा :

''... स्त्री को बाईं ओर का होना है। उसे थोड़ा मोटा होना चाहिए, पति से अधिक मोटा, उसे बच्चों को जन्म देना है। यहाँ तक कि पशुओं में भी आप देखें, कि स्त्रीलिंग में अधिक वसा होती है। उनमें चर्बी होनी ज़रूरी है क्योंकि उन्हें बच्चा धारण करना है, उन्हें बच्चे के लिए काम करना है।

अब आप देखें, कि पाश्चात्य की लड़की, वह इतनी पतली होती है, और उसके बच्चे हैं, उसे घर का कार्य आदि करना है और वह पागल हो जाती है। इसलिये वह अपने बच्चों को प्यार नहीं कर पाती, क्योंकि वह सनकी हो जाती है। उसमें कोई संचित ऊर्जा नहीं है और पश्चिम में बहुत अधिक तनाव हैं। बिना बात के इतने अधिक तनाव। बड़ा कृत्रिम। और माँ में चर्बी होनी चाहिए। यदि माँ में चर्बी नहीं होती तो बच्चों को हड्डियाँ चुभती हैं, आप जानते हैं? और स्त्रियाँ मशीनी और शुष्क हो जाती हैं। शुष्क स्त्रियाँ...''

(१९८४, ग्रेगौयर के घर पर अनौपचारिक बातचीत, विएन्ना, ऑस्ट्रिया)

एक लक्ष्मी में वैभवता होनी चाहिए, :

''... लक्ष्मी का एक और पहलु है जहाँ वह हाथी के समान गोल है। उसमें रूझान होता है, वह मच्छर के समान नहीं होती है। मेरा अर्थ है कि आजकल बहुत लोग सोचते हैं कि मच्छर के समान दिखना बड़ा अच्छा है, परन्तु मैं सोचती हूँ कि यदि आप का मच्छर के समान व्यक्तित्व है, तो कोई भी आपका सम्मान नहीं करता है। सब सोचते हैं कि आप किसी प्रकार की टाईपिस्ट हैं या कोई शारीरिक काम करती हैं या बहुत परिश्रम का काम करती हैं, इसलिये आप अपनी सारी प्रतिष्ठा खो चुकी हैं। सो, एक लक्ष्मी का वैभव होना चाहिए...''

(१९८६, श्रीलक्ष्मी पूजा, बैल्जियम)

आप अपने अन्दर कुछ अत्यन्त प्रगतिशीलता का प्रतिनिधित्व कर रही हैं :

''... सो, ये सब रोमांस और निरर्थकता के मूर्ख विचारों को समाप्त करना है। पति पर आधिपत्य, 'किस समय तुम आए, किस समय तुम गये, कहाँ तुम गये?' और यहाँ भारत में, स्त्रियाँ-जब शिवजी ने अपनी लड़ाई शुरू

की, वे अपनी उंगली या अंगूठा काटती थीं और पति के माथे पर टीका लगाती थीं जो युद्ध में जा रहा होता था और कहती थीं, 'अपनी पीठ दिखा कर मत आना,' इस महाराष्ट्र में इतनी महान स्त्रियाँ थीं, वे इतनी शान्त होती थीं।

जब उनके देश का प्रश्न है, जब उनके स्वयं के व्यक्तित्व का प्रश्न होता है, उनकी पवित्रता आदि का, वे विशाल हैं, बिल्कुल शेरनियों के समान। सो, इस साड़ी के साथ बहुत सारी बाते साथ-साथ चलती हैं। यह केवल साड़ी ही नहीं है, या पहनना ही नहीं है, अपितु आप अपने अन्दर की अत्यन्त प्रगतिशीलता का प्रतिनिधित्व कर रही हैं...''

(१९९०, मैरिज एण्ड एडवाईज टू वीमेन, भारत)

हमारे शरीरों के सर्वाधिक महत्वपूर्ण चक्र :

''... मैं आपको अपनी खुद की बेटी की कहानी बताऊंगी। वह दिल्ली गई और वहाँ सब लड़कियाँ बिना बाजू के ब्लाऊज पहने हुए थीं। सो, उसने मुझ से पूछा, 'मैं बिना बाजू के ब्लाऊज लेना चाहती हूँ।' वह बड़ी हो चुकी थी। कॉलेज जाती थी।

मैंने कहा, 'ठीक है, जो चाहिए ले लो।'

उसने कहा, 'आप क्यों नहीं बिना बाजू के ब्लाऊज़ पहनती हो?'

मैंने कहा, 'मुझे शर्म आती है।'

'तब आप मुझे क्यों अनुमति दे रही हैं? यह तो कोई कसौटी नहीं है। मैं जो भी पूछती हूँ, आप हाँ कहती हैं मुझे, मैं इतनी अधिक बड़ी नहीं हुई हूँ।'

यहाँ तक कि मेरी नातिन वहाँ थीं, उसने मुझ से पूछा, 'नानी आप हमेशा बाजू वाले ब्लाऊज़ क्यों पहनती हों?'

मैंने कहा, 'तुम जानती हो, ये बड़े महत्वपूर्ण चक्र हैं, हमारे शरीर के सब से अधिक महत्वपूर्ण चक्र। यदि आप उन्हें खुला रखेंगे, ये दोंनो, या ये दोनों, तब आप को समस्यायें होंगी।'

'मुझे अब पूरी बाजू के कपड़े पहनने हैं।' उसी समय वे समझ गईं। सो, कुछ इतना गहरा, यदि आप उन्हें गहराई से बताएंगे जो उनकी अबोधिता का

प्रतिनिधित्व कर रही है, वे सुधर जाएंगे...''

(१९९६, श्रीगणेश पूजा, कबेला)

यह बड़ा आसान लगता है, परन्तु यह बड़ा महत्वपूर्ण है :

''... विशुद्धि चक्र के विषय में कितनी ही बातें कही जा सकती हैं। परन्तु मैं साईड के दो चक्रों के बारे में विशेष कर चिन्तित हूँ जैसा कि आप जानते हैं कि उन में से एक ललिता चक्र बायीं ओर है और श्री चक्र दायीं ओर।

मैंने सदा स्त्रियों से कहा है, 'कृपया इन्हें ढ़क कर रखें।' यह बड़ा आसान दिखता है, पर यह बड़ा महत्वपूर्ण है। इसे नग्न न रखें क्योंकि उसकी शक्ति को बचाना चाहिए। श्री चक्र और ललिता चक्र, बड़े महत्वपूर्ण हैं। वे श्री कृष्ण की स्त्री शक्तियाँ हैं, जो समझ लेनी चाहिए कि आप जिस प्रकार अपने शरीर का सम्मान करते हैं, वैसे ही आप के चक्र होते हैं और उसी प्रकार आप कष्ट पाते हैं। उदाहरणतया यदि, आप श्री गणेश का सम्मान नहीं करेंगे तो आप कष्ट पाएंगे और यदि आप श्री गणेश का सम्मान करते हैं, पर वैसा व्यवहार नहीं करते, जैसा करना चाहिए, तो आप कष्ट पाएंगे। आपको समस्यायें होंगी। सो, सारा शरीर प्रतिक्रिया करता है। शरीर बाह्य प्रमाणों के प्रति इस प्रकार प्रतिक्रिया करता है कि आप यह देखना प्रारम्भ करते हैं कि कुछ तो गलत है कहीं और इसलिये आप ऐसे व्यवहार करते हैं...''

(२००१, श्री कृष्ण पूजा, यू.एस.ए.)

सहजधर्म है कि आप में लज्जा हो, आप में लज्जा की बुद्धि हो :

''... मेरी नातिन बिना बाजू के कपड़े पहने हुए थी, मैंने उससे कहा, 'बेहतर है कि तुम बिना बाजू के कपड़े मत पहनो।'

वह बोली, 'बहुत गर्मी है, मुझे बड़ी गर्मी लग रही है।'

वह छोटी है। मैंने कहा, 'परन्तु देखो, ये दो बड़े महत्वपूर्ण चक्र हैं। यदि आप उन्हें खुला रखेंगे, तो तब आप को समस्या होगी।' उसे वे कपड़े पहनने अच्छे नहीं लगते जो घुटनों से ऊपर हों, परन्तु वह कहती है कि लोग ऐसे कपड़े पहनते हैं जो घुटनों से भी ऊपर हों।

मैंने कहा, 'घुटने, वे बड़े महत्वपूर्ण चक्र हैं, हमें उन्हें कपड़ों से ढ़क कर रखना चाहिए अन्यथा यदि उन पर प्रभाव हो जाएगा तो हमें घुटनों की तकलीफ़ होगी।'

तत्क्षण वह बदल गई, तत्क्षण। 'माँ, मैं अन्दर की ओर ब्लाऊज पहनूंगी और कुछ ऊपर, बाहर की ओर।' उसी समय, क्योंकि उसे पता था कि यह स्वाभाविक निषेध है कि हमें अपने ये दो चक्रों को और इन चक्रों को खुला नहीं रखना चाहिए। परन्तु आजकल न जाने क्यों, जितनी लम्बी टांगें होती हैं, उतने छोटे कपड़े होत हैं। और मुझे समझ नहीं आता कि टांगों में क्या है, सारी सुन्दरता टांगों में ही है क्या?

मैं एक स्त्री से मिली, जो मेरे साथ यात्रा कर रही थी। वह बुर्का पहने थी, क्योंकि वह मुस्लिम थी और जब तक हम लन्दन पहुँचे, उसने बुर्का उतार दिया और उसके कपड़े काफ़ी ऊँचे थे घुटने से। मैंने कहा, 'यह किस प्रकार की मुस्लिम स्त्री है? यह तो ईसाईयों से भी गई बीती है क्योंकि वे ऐसी चीज़ नहीं पहनेंगी, आप जानते हैं कि हवाई जहाज़ से बाहर निकलने के लिए आपको सीढ़ियों से नीचे उतरना होता है।' कोई लज्जा नहीं, कोई शर्म नहीं-कुछ नहीं। बेशर्मी! सो, सहज धर्म है कि आप में लज्जा हो, शर्म की अक्ल हो...''

(१९९७, श्रीकृष्ण पूजा, कबेला)

न केवल वे बड़ी अच्छी दिखती है, परन्तु वे भद्र स्त्रियों के समान दिखती हैं :

''... जो भी पहनावा हम पहनते हैं, वह लम्बे समय से परंपरागत हैं, हज़ारों वर्षों से हम साड़ी पहन रहे हैं। वास्तव में यात्रा में साड़ी के साथ थोड़ी जटिलता हो जाती है। मैं कभी जीन्स नहीं पहन सकती हूँ, चाहे आप कितना भी प्रयत्न करें क्योंकि यह हमारी परंपरा है और हमारी परंपरा में साड़ी में ही एक स्त्री सम्मानित लगती है। कुछ शहरों में शादी के पहले वे हर प्रकार का पहनावा पहनती हैं, परन्तु शादी के बाद वे गृहलक्ष्मी का पद संभाल लेती है- अर्थात् घर की देवी। वह देवी है और यदि वह देवी है तो परिवार में हर प्रकार के आशीर्वाद आते हैं। हमने आपने अनुभव से देखा है कि यदि स्त्री गृहलक्ष्मी है, फ़ातिमा के समान, तो उस परिवार में सब अच्छा होता है। मैं आपके

बाज़ार में गई और परंपरागत पहनावें खरीदे और ये सब लड़कियाँ, सारे विश्व से आई हुई, उन्हें पहन रही हैं। न केवल वे बड़ी अच्छी दिखती हैं, पर वे भद्र स्त्रियों के समान दिखती हैं...''

(१९९४, लेडीज़ पब्लिक प्रोग्राम, ट्यूनेशिया)

कृपा कर के उद्योगियों के हाथ में मत खेलिए :

''... कल मैंने देखा कि, अनेक स्त्रियों ने अपने बाल काट लिए हैं। कृपा कर के इन उद्योंगियों के हाथ में न खेलें, उन्हें पता है आपको कैसे मूर्ख बनाना है। मैंने देखा है कि बड़ी भयंकर बातें होती हैं क्योंकि ये उद्योगी आपको विज्ञापन के द्वारा लुभाते हैं। हाल ही में पैरिस में उन्होंने कहा कि स्कर्ट छह इंच की होनी चाहिए और हमें कहीं भी लम्बी स्कर्ट नहीं मिल पाई। कल्पना कीजिए, इन सब ठंडे देशों में अनेक लोगों को वैरीकोजवेन्स हो गई हैं। वे बालों, शरीर व चेहरे के नये ढंग शुरू करते हैं। वे हर प्रकार की निरर्थक चीज़ें शुरू करते हैं। परन्तु सहजयोगिनियों को समझना चाहिए कि वे क्या कर रही हैं। आप को बिल्कुल भी उनके जाल में नहीं फँसना चाहिए...''

(१९९७, दिवाली पूजा, रूमानिया)

आपको किसी को भी आपके सहस्रार को छूने की अनुमति नहीं देनी चाहिए :

''... तो आप परिवार की देवी हैं, आपमें शक्ति होनी चाहिए और आपको बहुत केअरफुल होना चाहिए। आप सहजयोगिनियाँ हैं तो आपने आपके सहस्रार को छूने की अनुमति किसी को भी नहीं देनी चाहिए। और आपके पावित्र्य से ही आपकी शक्ति आती है। भारत में हज़ारों महिलाओं को आत्महत्या करनी पड़ती है क्योंकि वे किसी आदमी द्वारा उनके शरीर को छूने देना नहीं चाहती। आप अब सहज कल्चर में हैं और सहज कल्चर में आपको बहुत डिग्नीफाईड और मैच्यूअर्ड मैनर के साथ बर्ताव करना पड़ता है...''

(१९९७, दिवाली पूजा, रूमानिया)

आपको लज्जा आनी चाहिए, आपको अपने शरीर के प्रती आदर और हम्बल होना चाहिए :

''... उदाहरणतया मैंने देखा है कि बच्चों को अपने कपड़े उतारने में बड़ी शर्म आती है-यहाँ तक कि छोटे लड़के भी, मैंने देखा है, वे दूसरों की उपस्थिति में अपने कपड़े नहीं उतारते। उन्हें शर्म आती हैं। इन सब का विवरण इस प्रकार किया जा सकता है, 'या देवी सर्वभूतेषु लज्जा रूपेण संस्थिता।'

इसलिये आपको शर्माना चाहिए, आपको विनम्र होना चाहिए और अपने शरीर का सम्मान करना चाहिए। यह आजकल के आधुनिक समय में यह बड़ा महत्वपूर्ण है। शरीर को खुला रखना, स्त्रियों की बड़ी उपलब्धि माना गया है। वे आदिवासी बनने का प्रयत्न कर रही हैं। उस समय उन लोगों को ये सब विचार नहीं थे और वे इतने गड़बड़ाये भी नहीं थे। सो, यदि उनकी स्त्रियाँ कम कपड़ों में भी होती थीं तो उसका यह अर्थ नहीं होता था कि वह किसी प्रकार का 'सैक्स' का प्रतीक हैं या पुरुषों के लिए कोई आकर्षण या पुरुष कोई अजीब हरकते करते, दिखाने के लिए कि, उन्हें स्त्रियों के लिए विशेष आकर्षण है। मेरा तात्पर्य है, आपको क्यों करना चाहिए? यह पूर्णतया असंगत है कि पुरुष स्त्रियों के प्रति आकर्षित हैं और स्त्रियाँ पुरुषों के प्रति आकर्षित हो और सड़क पर, गली में आप जाएं और देखते हैं वह सब चल रहा है। यह अधर्म सबसे ज़्यादा खराब बात है, क्योंकि यह एक श्राप है। क्योंकि सहजयोग में आने के पश्चात् भी लोग ऐसी मूर्खता शुरू कर देते हैं। उन सब को पागलखाने जाना चाहिए, मैं सोचती हूँ, वे सहजयोग के लिए बेकार हैं, परन्तु ज्यों ही आपको आत्मा का प्रकाश मिलता है, तो धर्म स्थापित हो जाता है...''

(१९९७, श्रीकृष्ण पूजा, कबेला)

तो सहजयोग में आने के पश्चात् महालक्ष्मी होने के लिए आपको ज्ञात होना चाहिए कि आपको ऐसे पहनावा पहनने चाहिए जो पूर्णतया सही हो।

(१९९७, श्रीकृष्ण पूजा, कबेला)

अधिक समय शीशे के सामने नहीं व्यतीत करना चाहिए :

''... सर्वप्रथम स्वयं पर हँसना सीखिए। वह स्वयं का आनन्द लेने का सबसे अच्छा तरीका है। और अधिक समय शीशे के सामने नहीं व्यतीत करना चाहिए, वह दूसरा तरीका है। यदि आप शीशे के सामने अत्यधिक समय बिताएंगे तो आपके साथ कुछ खराबी है। व्यक्तिगत रूप से मैं समझती हूँ कि यह बाधा है शायद। सो, आपको अपने अन्दर यह देखना चाहिए, 'क्या हम सहज धर्मी हैं?'...''

(१९९७, श्रीकृष्ण पूजा, कबेला)

अधिकतर यह स्त्रियों के लिए है कि वे समझें कि वे कैसे कपड़े पहनती हैं, कैसे वे रहती हैं :

''... जब हम वहाँ गये, जहाँ भी हम गये उन्होंने हमें कहा, यहाँ तक कि एक दुकान में, जब वर्षा हो रही थी, वे हमें एक भेंट दे रहे थे। तब मैंने कहा, 'यह क्या है? वे हमें इस प्रकार भेंट क्यों दे रहे हैं?' तो, जो स्त्री अनुवाद कर रही थी वह बोली, 'वे सोच रहे हैं कि आप राज परिवार से हैं।'

मैंने कहा, 'उनको किस बात से लग रहा है कि हम राज परिवार से हैं?'

'क्योंकि आप हेयर ड्रेसर के पास नहीं जाती हैं।'

मैंने कहा, 'सच में?'

'हाँ, जापान में, राज परिवार के लोग कभी हेयर ड्रेसर के पास नहीं जाते।'

मैंने कहा, 'मुझे यह पता नहीं था कि वे हेयर ड्रेसर के पास नहीं जाते।'

'इसलिये वे सोचते हैं कि आप राज परिवार से हैं।'

जरा सोचिए, लोगों को बाल बनाने के क्या क्या विचार होते हैं। परन्तु भारतवर्ष में एक स्त्री के बाल ठीक से बनने चाहिए। उसे एक हिप्पी के समान नहीं दिखना चाहिए। क्योंकि अनेक लोग होते हैं जो अभी भी हिप्पीपने में विश्वास करते हैं और अपने बालों को वैसा बनाते हैं। अब स्त्री समाज में

बड़ा भाग निभाती हैं, जैसा कि मैंने आपको बताया था। वह जिस प्रकार भी पहनती हैं, कहाँ, किस प्रकार जाती हैं, वह सब बच्चे अपनी माँ से अधिक सीखते हैं न कि पिता से उतना। कभी-कभी पिता से भी काफ़ी सीखते हैं, परन्तु वास्तविकता में सब सूक्ष्म सभ्य बातें वे माँ से सीखते हैं, इसलिये यह, अधिक स्त्रियों पर लागू होता है कि वे कैसे कपड़े पहनती हैं, कैसे रहती हैं...''

(१९९८, दिवाली पूजा, इटली)

जो लोग फैशन बनाते हैं, उनके हाथों में खेलना मूर्खता है :

''... मैं लन्दन गई थी, वहाँ मैंने एक भारतीय सहजयोगिनी से पूछा, 'आजकल क्या फैशन है?' तो उसने कहा, 'झिपरेया'। मराठी में 'झिपऱ्या' का अर्थ है, यदि आप माथे को ढ़क कर ऐसे बाल रखें। भारत में यदि आपके बाल इस प्रकार होते हैं तो माँ कहेगी कि, 'अपने झिपरेया हटाओ।' क्योंकि यदि आप अपने बाल वैसे रखेंगी तो आप की आँखें तिरछी हो जाती हैं। परन्तु वह फ़ैशन है कि बाल ऐसे रखें, कभी-कभी तो आँखों के ऊपर भी। सो, वह झिपरेया फ़ैशन है। और मैं देखती हूँ कि यह काफ़ी साधारण हो गया है, हर कोई, प्रतिष्ठित स्त्रियाँ भी, सभी इस प्रकार के बाल रखती हैं, सिवाय मिसेज़ थैचर के। मुझे पता नहीं कि मिसेज़ थैचर कैसे इस से बच गईं। परन्तु कोई भी कुछ भी करता है, उसका अनुसरण स्त्रियों को नहीं करना चाहिए-यह गुलामी है।

क्योंकि यह फ़ैशन है, इसलिये वे करती हैं: वह फ़ैशन है, इसलिये वे करेंगी। इस प्रकार करना सम्पूर्ण मूर्खता है और फैशन बनाने वालों के हाथ में खेलना, क्योंकि आप स्वतंत्र हैं। आप को अपने चरित्र में खड़ा होना चाहिए: आपको अपनी समझदारी में खड़ा होना चाहिए। अपने चेहरे नष्ट करने के स्थान पर उन्हें अपनी प्रतिष्ठा में रह कर सुधारें, अपनी समझदारी से। अब यह ज़्यादा स्त्रियों के लिए है, मुझे ऐसा कहने के लिए क्षमा करें। लक्ष्मी पूजा अधिक स्त्रियों के विषय में है कि उन्हें क्या समझना चाहिए, कैसा होना है, कैसा होना चाहिए?...''

(१९९८, दिवाली पूजा, इटली)

III. बहस न करें, परन्तु अपने अन्तर्ज्ञान को विकसित करें

आपको बहस नहीं करनी है :

''... नि:संदेह, पुरुष अधिक बुद्धिमान होते हैं, परन्तु स्त्रियों को अन्तर्ज्ञान होगा और वे सबक सीखेंगे। आप ज़ोर दे कर मत कहें, 'यह सब जैसा आप चाहती हैं, वैसा कार्यान्वित होगा क्योंकि आप के पास अन्तर्ज्ञान है, आप को समझ में आ गया है कि क्या होने वाला है और आप चकित हो जाएंगे कि यह सब कैसे कार्यान्वित होगा। ठीक है, अब क्या कोई प्रश्न हैं...''

(१९८८, इन्ट्युशन एण्ड वीमेन, पैरिस)

तो, आप अपने अन्तर्ज्ञान को विकसित करें, बुद्धि को नहीं :

''... बुद्धिमत्ता। बुध्दिमत्ता स्थूल है। उदाहरण के लिए, बुद्धिमत्ता से वे कहेंगे कि हमें देरी हो रही है, हमें जाना है, बुद्धिमत्ता से, घड़ी से, इत्यादि। ठीक है, परन्तु अन्तर्ज्ञान से आप जान जाएंगे कि हमें देर नहीं होगी, तो आप अन्तर्ज्ञान को विकसित करें न कि बुद्धि को। परंतु तकलीफ़ यह है कि आप बुद्धि के साथ तुलना करते हैं। बहस के अनुसार आप कहेंगे, 'नहीं, अभी तीन मिनट बाकी हैं।'

वे कहेंगे, 'दो मिनट।'

आप कहेंगे, 'तीन मिनट।'

'दो मिनट।'

हाँ ऐसा ही है। परन्तु वास्तव में आप को कहना चाहिए, 'ठीक है, देखते हैं तीन मिनट। चलो देखते हैं, देखते हैं।' तब वह पाएंगे कि जो आपने कहा वह ठीक है। हमें केवल एक ही बार कहना है। समाप्त। उसके बाद वह कहता है, 'ठीक है, ठीक है, हम इस ओर से जाएंगे।' वह फ़िर आगे कहता है, 'मैं सोचता हूँ हम गलत जा रहे हैं। मैं सोचता हूँ कि जो तुमने कहा था, वह ठीक था। हमें इस ओर जाना है...''

(१९८८, इन्ट्युशन एण्ड वीमेन, पैरिस)

IV. सतर्कता का महत्व

गृह की पत्नी में सतर्कता होनी चाहिए :

''... गृहलक्ष्मी वह स्त्री है, जिसे यह ज्ञात होना चाहिए कि उसके ऊपर महान जिम्मेदारी है, सहजयोग का महान समाज बनाने के लिए। वह एक साधारण स्त्री नहीं है। पहले कितनी स्त्रियों को साक्षात्कार मिला है? परन्तु यदि सहजयोग में आप स्त्रियों को देखते हैं, तो आप पाएंगे कि बहुत कम स्त्रियाँ हैं, जो वास्तव में सतर्क हैं। अधिकतर वे अचेत अवस्था में हैं, उन्हें कुछ पता नहीं है। उन्हें खाना बनाना भी ठीक से नहीं आता, उन्हें कुछ भी पूछिए तो उन्हें कुछ पता नहीं होता है। आप उनसे बात करें, तो ऐसा अनुभव होता है, कि उन्होंने किसी प्रकार की दवा ले रखी है, कुछ भी उनके सिर में नहीं घुसता। कभी-कभी ऐसा लगता है कि, 'बेहतर है, मैं इसे स्वयं ही कर लूँ।' असंभव!

सतर्कता चली गई है क्योंकि सतर्कता जो दायीं ओर से आती है वह निरर्थक बातों में व्यर्थ हो जाती है। चित्त, निरर्थक बातों में व्यर्थ हो जाता है इसी कारण से घर की स्त्रियों की विवेक बुद्धि खत्म हो गई है, यह जानने के लिए कि उन्हें पूर्ण रूप से सतर्क, समझदार और सयाना होना चाहिए। उन्हें हर बात पता होनी चाहिए, परन्तु ऐसा नहीं है। वे केवल हवा में रहती हैं, कहीं लटकी हुईं। आप को पता नहीं कि उन्हें क्या कहें, कैसे कोई चीज़ के लिए पूछें। कुछ भी बात का विवरण उन्हें देना, असंभव बात है। तो, वह सतर्कता, घर की स्त्रियों में होनी चाहिए, यह पूर्णतया महत्वपूर्ण है...''

(१९९१, हम्सा पूजा, न्यूयौर्क)

सहजयोग उन स्त्रियों के लिए है, जो सतर्क एवं विवेकशील है :

''... परन्तु यदि आप में सतर्कता नहीं है, तो आप एक गृहलक्ष्मी नहीं हो सकतीं, आप एक अच्छी माँ नहीं हो सकती, आप एक अच्छी पत्नी नहीं हो सकती, इसमें कोई गुलामी नहीं है। उन्हें यह भी नहीं पता है कि उनके पतियों को क्या खुश करता है, परिवार में शान्ति कैसे बनाएं, क्या कहना चाहिए, कब सुन्दर बातें कहनी चाहिए और कब सख्ती बरतनी चाहिए। यह

सब विवेक बुद्धि नहीं है, या वे कर्कश हैं या वे गुलाम हैं।

तो, सहजयोग ऐसी स्त्रियों के लिए है, जो सतर्क हैं, विवेकशील हैं, जिन्हें जीवन के बारे में सब कुछ पता होता है, उन्हें यह भी नहीं पता कि पैरों में चक्र कहाँ हैं। अपनी माँ को देखो, वह एक स्त्री है, उसे इतना पता है। उन्हें कुछ नहीं पता कि कैसे इन चक्रों में से कुण्डलिनी पार होती है और जब होती है तो वह क्या योग्यता रखती है। परन्तु कुण्डलिनी स्वयं स्त्री शक्ति है। उसे आप के विषय में एक-एक बात पता है, आपके बच्चे के विषय में...''

(१९९१, हम्सा पूजा, न्यूयौर्क)

हमें सतर्क होना है, अत्यन्त सतर्क और माँ हम पर निर्भर करती हैं :

''... तो, यह चरित्र, जब आप साड़ी पहनती हैं, तो आपको पता होना चाहिए कि कैसे बाँधना है पीछे की ओर व लड़ना है, अन्यथा आप में सहज की संस्कृति नहीं है या तो आप अत्यन्त दबाने वाली हैं या फिर आप इतनी बात मानने वाली हैं कि बन्द गोभी के समान हैं। आप को यह समझना चाहिए कि हमें सतर्क होना है, अत्यधिक सतर्क और माँ हमारे ऊपर निर्भर करती हैं, हमारे व्यक्तित्व पर, जिस प्रकार हम स्वयं को विकसित करने वाली हैं, हमारे बच्चों को, अपने पतियों को, हमारे सहजयोग के समाज को, सम्पूर्ण विश्व निर्मला धर्म को। स्त्रियाँ ही समाज को बनाती हैं। पूरा ब्रह्माण्ड एक स्त्री के हाथों में है, जो बच्चों को बनाती हैं...''

(१९९०, मैरिज एडवाईज़ टू वीमेन, भारत)

V. बायीं ओर व दायीं ओर

हमारा आनन्द जिस के बारे में हम बात करते हैं, हमारे हृदय के अन्दर, उसे बाहर की ओर अभिव्यक्त होना है :

''... मैंने ध्यान दिया है, कि नि:संदेह मैं भी एक स्त्री हूँ, स्त्रियों में एक जल शक्ति, रोने की होती है और सोचती हैं कि वे बड़ी अभागी, दयनीय हैं और सब को दयनीय बना देती हैं। यह उनकी शक्ति है। यह मैंने देखा है। मेरा तात्पर्य है कि यह सबसे खराब गाना है, जो आप किसी दिन भी गाती हैं।

परन्तु यह किसी के दिमाग में आया है, बड़ी नकारात्मक है। यही नहीं केवल, पर यह दर्शाता है कि वह व्यक्ति कभी प्रसन्न नहीं हो सकता और किसी को प्रसन्न नहीं होने देना चाहता।

प्रत्येक स्त्री के भीतर मातृत्व होता है, महान योग्यता होती है, त्याग, सब कुछ होता है। परन्तु उसके साथ-साथ, उन्हें यह भी जानना चाहिए कि वे बायीं ओर झुकी हैं और हमारा आनन्द, जिसके विषय में हम बोलते हैं, हमारे हृदय के अन्दर, उसे बाह्य में अभिव्यक्त होना है। लोगों को देखना चाहिए कि हम आनन्दित हैं, कि हम प्रसन्न लोग हैं, कि हम दूसरे लोगों के समान नहीं हैं, जो छोटी-छोटी बातों में रोना शुरू कर देते हैं।

जैसे कि जब मेरे पिता की मृत्यु हुई तो मैं हैरान थी कि मैं निर्विचार हो गई, पूर्णतया निर्विचार। करीब तीन दिन के लिए मैं निर्विचार थी, न तो पीड़ा का विचार आया, न ही अप्रसन्नता का विचार या कुछ भी नहीं आया, केवल निर्विचार। और सब हैरान थे क्योंकि मैंने उनकी देखरेख की थी और मेरा अर्थ है कि वे मुझ से बहुत जुड़े हुए थे, बहुत प्रेम करते थे, सब कुछ था, परन्तु मैं हैरान थी कि अचानक ही मैं कैसे निर्विचार हो गई ?

तो, यदि आप एक सहजयोगिनी हैं, तो संकट के समय आपको निर्विचार हो जाना चाहिए, वह एक प्रतीक है। मैंने अपने स्वयं के साथ देखा है, जब कोई संकट परिवार में आता है, मैं निर्विचार हो जाती हूँ। उसका अर्थ क्या है ? कि परमात्मा आपको, आप की समस्याओं को अपने अन्दर ले लेते हैं। वे अपना हाथ रखते हैं, वे अपनी सुरक्षा में रखते हैं और आपको इस में से बाहर निकालते हैं और आपको सम्पूर्णतया निर्विचार बनाते हैं...''

(१९९१, दिवाली पूजा, कबेला)

मैं आपसे कहती हूँ कि यह रोने का चक्कर एक प्रकार के अहंकार की अभिव्यक्ति है :

''... अत:, इस जीवन काल में आपको जो उच्चतम चीज़ साध्य करनी है, वह है आपका उत्थान और परमात्मा के साम्राज्य में आपकी स्थिति। विशेषतया स्त्रियों के विषय में मुझे आप से कहना है, क्योंकि सब शोकजनक

चीज़ें पढ़ कर कितनी ही दु:खान्तक चीज़ें। बाप रे! यह ग्रीक दु:खान्त! यह दुखान्त, वह दु:खान्त, यह सब स्त्रियों की नसों में कार्य करना शुरू कर देता है। कोई यदि, छोटी सी भी बात कहे तो वह विस्फ़ोटक हो जाती है, वे ऐसा व्यवहार करती हैं, जैसे कि, 'हे प्रभु, क्या हो गया? उसने मुझे ऐसा नहीं कहना चाहिए था।'

परन्तु सर्वप्रथम हमें यह देखना चाहिए, कि हम स्वयं के साथ क्या करते हैं, हम स्वयं को क्या हानि पहुँचाते हैं, हम उसके लिए तो कभी नहीं रोते। हमने देखा है कि पश्चिम में स्त्रियों ने कैसे स्वयं का विनाश किया है, वे कभी उसके लिए नहीं रोती हैं, कभी नहीं, कभी नहीं। पर यदि कोई एक छोटा सा शब्द भी उन्हें कहता है, तो वे रोती हैं....भारतवर्ष में भी।

परन्तु, मैंने देखा है कि कई बड़ी समझदार स्त्रियाँ भी होती हैं, पूर्व में और पश्चिम में, जिनमें सहन की बड़ी समझ होती है, जीवन के प्रति राजसी मुद्रा। जैसे कि, एक हाथी चल रहा है और कुत्ते भौंक रहे हैं, सो क्या फ़र्क पड़ता है? वह राजसी वैभव तब आता है जब आपके अन्दर आनन्द हो! हमारा सिद्धान्त होना चाहिए कि, 'कोई भी मुझे अप्रसन्न नहीं कर सकता है।' कुछ भी मुझे अप्रसन्न नहीं कर सकता अन्यथा आप बायीं ओर झुकना शुरू हो जाती हैं। या स्त्री रोना शुरू करती है व पुरुष बायीं ओर जाना शुरू हो जाता है और अचानक ही पाते हैं कि उसके ऊपर दस भूत बैठे हैं। कैसे उस पर वे आते हैं? 'मैं कभी भी कब्रिस्तान नहीं गया हूँ, माँ मैं कभी भी किसी ऐसे स्थान पर नहीं गया हूँ, मैंने कभी किसी को मरते हुए नहीं देखा है।' तब आप भूतिया कैसे बन गये?' 'मैं कभी किसी गुरु के पास नहीं गया,' पत्नी को देखो, पत्नी रोने वाली गुड़िया है। हर बात के लिए वह रोती है...''

(१९९१, दिवाली पूजा, कबेला)

मुझे आपसे वादा चाहिए कि आप बिल्कुल नहीं रोएंगी :

''... तो आज मुझे आप सब से वादा चाहिए कि आप बिल्कुल भी रोएंगी नहीं। फूलों के बजाए, आप मुझे यह वादा रूपी फूल दें। मैं कभी नहीं रोती हूँ। हाँ कभी-कभी सांद्र करूणा, एक या दो आँसू हो सकता है मेरी

आँखों से निकलें। आखिर मैं एक माँ हूँ। पर इस प्रकार नहीं कि, बैठ कर रो रहे हैं, रो रहे हैं, मिरगी रोग ग्रस्त के समान। अपना गौरव रखें। आप सब सहजयोगिनी हैं, कोई भी ऐसी पुस्तक न पढ़ें जो रोने के बारे में है।

पुस्तके जो बड़ी गहराईभरी हैं, वे आप को छू जाती हैं, आप का रोने का मन करता है, वह ठीक है। सिनेमा में आप देखते हैं, कि एक स्त्री अपने पति को सता रही है, वहाँ वे रोएंगी, घर आकर वे अपने पति को सताएंगी, क्या फायदा? मैंने अनेकों ऐसी देखी हैं। सिनेमा में वे रोएंगी। जब कोई और रोता है तो उन्हें दर्द होता है, जब वे खुद रोती हैं, तो वे कभी नहीं देखतीं कि वे क्या कर रही हैं। सो, मेरा आज एक आदेश है कि आप को रोना नहीं है। अब आप परमात्मा के साम्राज्य में हैं और परमात्मा के साम्राज्य में आप रोते नहीं हैं...''

(१९९०, दिवाली पूजा, कबेला)

जब आप दायीं ओर अत्यधिक चली जाती हैं तो आपको बायीं ओर की पकड़ हो जाती है :

''... क्योंकि भूतों के लिए पुरुषों के बजाए स्त्रियों को पकड़ना आसान है, यह सत्य है। जब आप दायीं ओर अत्यधिक चली जाती हैं, तो आप उसी समय बायीं ओर में पकड़ी जाती हैं, क्योंकि आप झूलें के समान गतिमान हैं क्योंकि स्वभावतः आप बायीं ओर की हैं, तब भूत आपको दूसरे लोगों की अपेक्षा अधिक पकड़ते हैं...''

(१९८८, श्री एकादश रूद्र पूजा, ऑस्ट्रिया)

VI. वर्चस्व के विषय में

वे खराब करने वाली हैं क्योंकि वे बड़ी दबाने वाली हो गई हैं :

''... अब गहरी समस्या जो मुझे दिखती है, स्त्रियाँ जो कहने को मेरी शिष्याएं हैं, वे सहजयोग को खराब करने वाली हैं। मैं इसे बड़ी स्पष्टतः देख सकती हूँ अब। मैं इसे इतना स्पष्ट देख सकती हूँ, पूर्णतया, स्पष्टतः। वे खराब करने वाली हैं क्योंकि वे बड़ी दबाने वाली हो गई हैं। क्योंकि वे सोचती हैं कि वे सहजयोग को जानती हैं। वे सोचती हैं कि वे महान हो गई हैं। लीड़र की

पत्नी स्वयं को लीड़र समझती है। यदि आप किसी को बुला कर यह कहती हैं कि, 'आओ, आ कर यह मेरा काम करो।' पत्नी सोचती है कि उसका अधिकार पति पर माँ से भी अधिक है। आज के दिन स्त्रियाँ ही अपराधी हैं और यही हैं जो आपको हिदायत देना चाहती हूँ...''

(१९८८, श्री एकादश रूद्र पूजा, विएना)

एक मानसिक बंधन उन्हें हैं : स्त्रियों की स्वतन्त्रता :

''... और विशेषतया, पश्चिम में आप देखते हैं 'वुमेन्स लिब' (स्त्रियों की स्वतंत्रता) और ये सब मूर्खता पूर्ण विचार, सहजयोगियों के दिमाग में भी घुस गयी है। एक उन्हें मानसिक बन्धन है, 'वुमेन्स लिब', स्त्रियों की स्वतन्त्रता।

अब सहजयोग में कोई भी आप को दबा नहीं सकता क्योंकि आप आत्मा हैं और आत्मा को दबाया नहीं जा सकता है। यदि आप सोचते हैं कि आप दबाये जा रहे हैं तो आप आत्मा नहीं हैं। अब हमें समझना चाहिए कि हम सहजयोग में स्त्रियाँ हैं और हमें अपनी सन्तुलन की शक्ति को समझना है। जैसा कि मैंने अनेकों बार कहा है, रथ के दो पहिये होते हैं, एक बायीं ओर एवं एक दायीं ओर, अब बायें को दायीं ओर जोड़ा नहीं जा सकता है और दायें को बायीं ओर नहीं जोड़ा जा सकता है। हम ऐसे बने हैं। हम परमात्मा द्वारा बनाए गये हैं। पर आपको बड़ा गर्व होना चाहिए कि आप स्त्रियाँ हैं...''

(१९८८, इन्ट्युशन एण्ड वीमेन, पैरिस)

'हम ऊँचे हैं, वे नीचे हैं' यह निरर्थकता चली जाएगी :

''... कुछ दिन पहले हम अमेरिका में थे। मैंने लड़कियों से कहा, 'बेहतर है, थोड़ा इन्तजार करो और हम यह कर सकते हैं, कि ठीक है, मैं माँ हूँ, आप मुझे भोजन दे सकती हो यदि आप ऐसा चाहती हो। मुझे बूरा नहीं लगेगा। पहले लड़कों को भोजन दो और फ़िर लड़कियों को खाना चाहिए।' उनमें से एक मुझ पर बड़ी क्रोधित हो गई, वह बोली, 'माँ, यह क्या है? वे हमें दबा रहे हैं।' कोई पहले खाये या बाद में, इसमें दबाने की क्या बात है? मेरा अर्थ है, आप खाने ही वाले हैं, पहले या बाद में। मुझे इसमें दबाने की

बात समझ नहीं आती।

परन्तु आप के पास विशेषाधिकार है कि आप इतने लोगों की देखरेख कर सकती हैं। इसमें इतना गलत क्या है? आप देखिए, कि सारा वातावरण इतना अज़ीब है कि, यदि पुरुष पहले भोजन खाते हैं, तो स्त्रियाँ अपने आप को नीचा समझती हैं। यह मूर्खतापूर्ण है क्योंकि यह तो विशेष अधिकार है, आप एक माँ के समान हैं, आप को उनकी देखभाल करनी है और आप को उन्हें खिलाना है। यह विशेषाधिकार है कि गृहलक्ष्मी को वैसा करना चाहिए, हर एक की देखभाल करनी चाहिए, उन्हें खाने के लिए भोजन दें और उन्हें संरक्षणाधीन जान कर उनके साथ व्यवहार करें, कुछ इस प्रकार। यह इतना विशेषाधिकार है, यह सम्पूर्ण परिपक्वता का प्रतीक है। आपने छोटी-छोटी लड़कियों को देखा है, यदि उनकी परवरिश सही ढ़ंग से हुई है, अन्यथा वे भयंकर हो सकती हैं। परन्तु साधारणत: छोटी लड़कियाँ बड़ी विशाल हृदय की होती हैं, पुरुषों से भी अधिक, वे सदा आप को प्रसन्न करने का प्रयत्न करती हैं। उन्हें बड़ा बोध होता है, यदि कोई बैठा हो तो वे आएंगी, आप को भोजन देंगी, देखभाल करेंगी। मैंने अपनी तीन नातिनों को देखा है, ऐसा करते हुए। एक बार धोबिन घर आई तो उन्होंने उसे कहा, 'आप सोफ़े पर ही बैठो।'

उसने कहा, 'नहीं, मैं नहीं सोफ़े पर बैठ सकती।'

'नहीं आप को सोफ़े पर जरूर बैठना है।' उन्होंने उसके लिए पंखा चलाया और रसोई घर में जो कुछ भी खाने को था, वे ले कर आईं। उसके लिए खाने को कुछ-कुछ ले कर आईं। बड़ी वाली को मैंने पूछा, 'तुम क्या बनना चाहती हो?'

उसने कहा, 'मैं नर्स या एअर-हॉस्टैस बनना चाहती हूँ।'

'वही दो काम हैं जिनमें हम दे सकते हैं, नहीं क्या, खाना! अन्यथा वहाँ.... मेरा तात्पर्य है कि यह एक विशेषाधिकार है। दूसरे कार्यों में आप यह महान काम नहीं कर सकते हैं, उदारता का कार्य, खाना देने का। इसलिये मैं नर्स या एअर हॉस्टैस बनना चाहती हूँ।'

और वे खेलती हैं, मैंने इन लड़कियों को खेलते हुए देखा है, 'अब मैं

एअर हॉस्टैस हूँ, अब आप यह खाइए।' वे छोटी-छोटी चीज़ों में भोज़न लाती हैं, वे अपनी खुद की चीज़ें बनाती हैं, 'अब मैं एअर हॉस्टैस हूँ।' और वे लाती हैं। उसमें कोई खाना नहीं होगा, उसमें हो सकता है कुछ पत्थर उन्होंने रखे हैं या कुछ और। 'आप को खाना चाहिए, आप को अपना ध्यान रखना चाहिए, आप पतले हो रहे हैं...' इस प्रकार कितना मधुर। तब वे कुछ तकिये लाएंगी, 'अब आप लेट जाईये।' एअर होस्टैस के समान वे काम करती हैं। 'क्या आप को ठंड लग रही हैं? क्या आप को कम्बल या कुछ चाहिए?'

मैंने कहा, 'यह कौन सा खेल है?'

'हम एअर हॉस्टैस हैं।'

यह एक विशेषाधिकार है, एक अबोध विशेषाधिकार और यदि वह हम विकसित करें, यह अधिकार की मूर्खता कि, 'हम ऊँचे हैं, वे नीचे हैं,' यह मूर्खता चली जाएगी। कौन है ऊँचा और नीचा? जैसे कुछ बाल यहाँ हैं, कुछ वहाँ, क्या वे ऊँचे या नीचे हैं? यह मूर्खतापूर्ण विचार है, जो हमारे दिमाग में घुस गया है, कि हम ऊँचे हैं, नीचे...''

(१९८२, दिवाली पूजा, लन्दन)

अच्छी सहजयोगिनी बनने के लिए सर्वप्रथम आप को एक उत्तम पत्नी होना है :

''... आप में से कितनी अपने पतियों को दबा कर रखती है? सावधान रहें। (एक योगिनी अपना हाथ ऊपर उठाती है)। केवल वही एक ईमानदार व्यक्ति है, मैं समझती हूँ कि मैं आप सब को जानती हूँ, जो दबा कर रखती हैं और कभी-कभी उन्हें तोड़ कर रखने का भी प्रयत्न करती हैं। अब मैं आप से विनती कर रही हूँ क्योंकि आप शक्ति हैं, आप पुरुष के पीछे, शक्ति हैं। आप लोग हैं जो उन्हें महान बनाने वाली हैं। आप हैं जो सहजयोग को गतिशील ऊर्जा बनाने वाली हैं। आप इस भूमि माता के समान हैं, जिसे सब सुन्दर फूल देने हैं। वे कहाँ से आते हैं? ये सब वृक्ष। यह भूमि माता बड़ी साधारण दिखाई देती है, परन्तु वह हमें क्या देती है, उसे देखो। उन सब सुन्दर चीज़ों को देखो।

यह समझना चाहिए कि एक अच्छी सहजयोगिनी बनने के लिए, सर्वप्रथम आप को एक अति उत्तम पत्नी बनना है और न कि दबाने वाली पत्नी, हर समय अपने आप को सामने धकेलने वाली...''

(१९८८, श्री एकादश रूद्र पूजा, ऑस्ट्रिया)

वही स्त्री स्वर्ग के लिए सीढ़ी बन सकती है या नीचे गिराने वाली :

''... यह मुझे आप से बताना है कि आप के अन्दर महान शक्ति है। सहजयोग आप के लिए या आप के बच्चों तक ही सीमित नहीं होना चाहिए, सो, आप के अन्दर जो गहराई है, उसे छूएं। आज की समस्या यह है कि स्त्रियों ने अपने गुणों को खो दिया है, यह आज की मौलिक समस्या है। उनमें स्पर्धा आ गई है, धन की लालसा, सफ़लता की लालसा, सब निरर्थक बातें। उनमें उत्थान की दिशा की ओर इच्छा नहीं है। सो, आपको बहुत-बहुत सावधान होना होगा। मूलतः इस समस्या को आप को देखना चाहिए और मैं सब सहजयोगियों से विनती करूंगी कि सतर्क रहें। वही स्त्री, आज स्वर्ग के लिए सीढ़ी बन सकती है या नीचे गिरने का मार्ग। किसी प्रकार उन्होंने वह स्थिति प्राप्त कर ली है कि वे हिटलर के समान हुक्म चलाती हैं...''

(१९८८, श्री एकादश रूद्र पूजा, ऑस्ट्रिया)

आपका कार्य है, साधारण सरल-सीधे तरीकों से उनके दबाने की आदत को निष्क्रिय करना :

''... उसके विपरीत, यदि आप हर समय दबाने का प्रयत्न करें, तो वह आपका कार्य नहीं है, हर समय दबा कर रखना। आप का कार्य है, सीधे-सरल तरीकों से उनकी दबाने की आदत को निष्क्रिय करना...''

(१९९७, नवरात्रि पूजा की पूर्व संध्या, कबेला)

यदि आप कोसती हैं, तो वह गृहलक्ष्मी नहीं है :

''... यह मनुष्य की प्रतिष्ठा के विरोध में है। आपको दूसरे मनुष्य को सजाना है, आपको इसे सुन्दर बनाना है, आपको इसे आनन्दमय व प्रसन्न बनाना है, सबको खुश रखना है, हर समय कोसना नहीं है। यदि आप कोसती

हैं, तो आप गृहलक्ष्मी नहीं हैं:वह गृहलक्ष्मी नहीं है। आप को कोसना नहीं चाहिए, 'यह करो, वह करो, खड़े हो जाओ, क्या कर रहे हो, इस तरफ़ खड़े हो जाओ, उस ओर जाओ।' यह सब निरर्थक है। उस व्यक्ति को रहने दो, मनुष्य की प्रतिष्ठा अत्यधिक महत्वपूर्ण है। सबकी इज़्ज़त करो...''

(१९८१, दिवाली पूजा, लन्दन)

XII. सहजयोगी की समस्त जानकारी के लिए

सहजयोग के बारे में आपको कितना मालूम है :

''... सो, मुझे आप लोगों से आग्रह करना है, सर्वप्रथम, सब सहजयोगियों को पुरुषों के समान सहजयोग का ज्ञान होना चाहिए। केवल मुस्कुराना व अच्छे कपड़े पहनना ही महत्वपूर्ण नहीं है। सहजयोग में आप को उतना ही ज्ञान होना चाहिए, जितना कि किसी सहजयोगी को होता है। यदि आपने बच्चों को पैदा किया है तो इसका यह अर्थ नहीं है कि आपने कोई महान उपलब्धि पाई है। कोई भी बच्चे पैदा कर सकता है, कुत्ते, बिल्लियाँ सभी। और कुछ हद तक आपके पति भी इसके जिम्मेदार हैं। सो, बच्चे पैदा कर के आपने कोई महान उपलब्धि नहीं पाई है। बच्चों की देखभाल करके या हर समय अपने पति को दबा कर।

आपको सहजयोग की कितनी जानकारी है? मुझे मालूम है कि कुछ को तो पैरों के चक्रों के विषय में भी नहीं पता है। वे सहजयोग के विषय में कुछ भी नहीं जानना चाहती हैं। केवल वे सहजयोग को कभी-कभी अपने पतियों को दबाने के लिए इस्तेमाल करना चाहती हैं। आप को इसका सामना करना है। आप को गहरायी में कितना सहजयोग का ज्ञान है? अधिकतर आप लोगों को अपने अन्दर ही इतनी समस्याएं हैं। जैसा कि मैंने देखा है कि ज्योंही आप अपने हाथ किसी की ओर करती हैं, 'ओह, मुझे यहाँ पकड़ आ रही है।' वह आपके अन्दर के भूत का प्रतीक है। और मैंने देखा है कि लोग कहते हैं कि वे संवेदनशील हैं। यह इतनी बहकाने वाली बात है, 'मैं बड़ी संवेदनशील हूँ, मैं सहजयोग में बड़ी ऊँची हूँ।' आप इस तरीके से ऊँची नहीं हो सकती हैं। आप को पूर्णतया निपुण होना है, दोषरहित, स्वास्थ्य और सहजयोग सम्पूर्ण ज्ञान

होना चाहिए। आप में से कितनों ने 'एडवैन्ट' को पढ़ा है...''

(१९८८, एकादश रूद्र पूजा, ऑस्ट्रिया)

आप की गुरू एक स्त्री है :

''... मैं यह कहने का प्रयत्न कर रही हूँ कि आपको यह जानना है कि सहजयोग क्या है? आपकी गुरु एक स्त्री है। वह समस्त ज्ञान का स्रोत है। वह समस्त ज्ञान का महासागर है। और हमें क्यों पीछे रहना है? हर बात में हमें समानता चाहिए, पुरुषों के साथ। यहाँ तक कि कपड़े पहनने में भी और हर बात में। और सहजयोग के ज्ञान के बारे में क्या? कितनों ने दूसरों को साक्षात्कार दिया है? हाथ ऊठाईये। केवल स्यिाँ। वह अच्छा है, सो, इसके लिए हमें गर्व होना चाहिए। आप को जानना चाहिए कि आप को सहजयोग का कितना पता है, मानसिक तौर पर, भावनिक तौर पर...''

(१९८८, एकादश रुद्र पूजा, ऑस्ट्रिया)

सहजयोग केवल पुरुषों के लिए ही नहीं बना है, यह आप के लिए बना है :

''... भारतवर्ष में, प्राचीन समय में, परमात्मा के विषय में पढ़ाया जाता था, धर्म आदि के विषय में। कितनी महान स्त्रियाँ यहाँ थीं, गार्गी (जनक के समय की प्राचीन दार्शनिक) और मैत्रेयी (वैदिक दार्शनिक) और वे सब जो बड़ी विदूषी थीं। सो, आप को किसी भी प्रकार से ऐसी स्त्री नहीं होना है, जिन्हें सहजयोग का कुछ भी ज्ञान नहीं है। सहजयोग केवल पुरुषों के लिए ही नहीं बना है, यह आपके लिए बना है, ज़्यादा आपके लिए बना है क्योंकि आप शक्ति हैं और मैं आपकी माँ हूँ।

मैं देखती हूँ कि स्त्रियों में यह कमी है कि वे साड़ियों इत्यादि के लिए अधिक चिंतित होती हैं, मेरा तात्पर्य है कि अब बालों के सँवारने से अब वे साड़ियों पर आ गई हैं। मैं यह अनुभव करती हूँ कि यह वैसा ही है। निश्चित ही साड़ियाँ बड़ा अच्छा पहनावा है। इसे पहनना अच्छा है, इस से हम भारत के बुनकरों को काफ़ी प्रोत्साहन देते हैं। ये बड़ी कलात्मक और अच्छी होती हैं और स्त्रित्व की झलक का प्रतिनिधित्व करती हैं। परन्तु इसका यह अर्थ नहीं है कि आप इतनी स्त्रित्व में खो जाएं कि आप सहजयोग ही न समझें। मैंने

देखा है कि स्त्रियों को पैरों के चक्रों का पता ही नहीं है। भारतीय स्त्रियों को पता है। पुरुषों को पता है। भारतीय स्त्रियों को पता है, पर पश्चिम की स्त्रियों में बहुतों को नहीं पता। उन्हें चक्रों के विषय में पता नहीं है उन्हें कुण्डलिनी ऊपर उठानी नहीं आती है, उन्हें पता नहीं कि क्या समस्या है। सो, एक बार वह तौर-तरीका, वह जीवन छोड़ दिया कि अब साड़ी पहन रही हैं, इसका यह अर्थ नहीं है कि आप गोशा में रहें, जहाँ उन्हें चादर लेना होता है, जिसे वह कहते हैं...''

(१९९०, एडवाईज़ टू वीमेन, सांगली, भारत)

VIII. अफ़वाह उड़ाना

उन्हें अत्यधिक सावधान रहना होगा, वे दूसरों का न्याय करना शुरू कर देती हैं :

''... आत्मसाक्षात्कार का अर्थ है कि अपनी आत्मा को जानना, पिछली बार यहाँ पर्थ में मैंने कहा था, और वैसे भी, कि किसी के बारे में वैसी बातें करना, कहानियाँ फैलाना, विशेषतया स्त्रियों को सावधान रहना चाहिए क्योंकि वे बाईं ओर होती हैं, उन्हें अत्यधिक सावधान रहना चाहिए, वे दूसरों का न्याय करना शुरू कर देती हैं। वे सोचती हैं कि वे सम्पूर्णतया प्रतीक हैं, वे न्याय करती हैं, वे अपने पतियों से कहती हैं, फिर पति अन्य पति से कहता है फिर पति अपनी पत्नी से कहता है।

आपको पूर्ण रूप से विवेकशील एवं समझदार स्त्रियाँ होना है। यदि आप समझदार नहीं हैं तो यह बीमारी के समान फैलेगा। सहजयोग में यह एक बीमारी है, जिसे ईसा ने 'मरमरिंग सोल' कहा है। उन्होंने कहा, 'बिवेर ऑफ़ द मरमरिंग सोल'...''

(१९९१, महावीर पूजा के पश्चात का प्रवचन, ऑस्ट्रेलिया)

किसी के विरोध में बात सुनना, बात करना आपको टालना चाहिए:

''... विशेषतया, इस पहलु में (दूसरों की पीठ पीछे बातें करना) मैं स्त्रियों से विनती करूंगी, खास कर लीड़रों की पत्नियों की, बहुत बड़ी

जिम्मेदारी है। यदि वे इस प्रकार बातें करने लगीं, इस प्रकार की बातों में रूचि लेंगी, तब वे दूसरों के निम्न स्तर पर आ जाती हैं और उनका मातृत्व ललकारा जाता है। जो भी माँ अपने बच्चों को इस प्रकार की बाते करने देती है, वह वास्तव में बच्चों के सारे जीवन को खराब कर रही है।

सहजयोग में जो भी किसी की बुराई करता है, वह वास्तव में दोनों के लिए बहुत खतरनाक है, परन्तु खास कर के उस व्यक्ति के लिए जो करता है। सो, हर किसी को यहाँ तक कि बुरी सोच से भी बचना चाहिए, न केवल बोलने से। यदि कोई ऐसे बोलता है, तो आप को अपने कानों पर हाथ रख कर कहना चाहिए, 'मुझे मत बताओ, मैं किसी के विरोध में कुछ नहीं सुनना चाहती।' क्योंकि जब हम किसी के विरोध में बोलना शुरू करते हैं, तो हमारे अन्दर उस व्यक्ति की सभी बुराईयां आ जाती हैं। उसके अलावा हमारा दिमाग खराब होता है, मन में अशुद्धता आती है। तब आप औरों से बोलते हैं, यह बढ़ती है और अधिक खराब हो जाती है।

यह स्त्रियों की जिम्मेदारी है कि वे अत्यन्त सावधान रहें क्योंकि यह बात स्त्रियों में अधिक होती है, क्योंकि वे थोड़ी वर्जित हैं। उनकी अपवर्जित सहेलियाँ होती हैं और अपवर्जित जीवन होता है। वे पुरुषों से अलग प्रकार की होती हैं। यदि पुरुषों को किसी से क्रोधित होना है या किसी से कुछ कहना है तो वे जाकर लड़ेंगे और इसे समाप्त कर देंगे, परन्तु स्त्रियाँ अपने दिमाग में रखेंगी और कुछ कहेंगी और यह प्रारम्भ करना बड़ी खराब बात है, यह एक कीड़े के समान चलता है और बड़ा छूत का होता है। सो, आप सब को याद रखना है कि यह पहली बात है, जो आपको त्यागनी है, किसी के विरोध में सुनना, बोलना, छोटेपन की बातें...''

(१९९१, ईस्टर पूजा, सिडनी)

XI. लीड़र की पत्नी

लीड़र की पत्नी एक माँ के समान होती है :

''... मुझे आज एक बात कहनी है, कि ऐसी परिस्थितियों में हमें फ़ैसला करना है कि यदि लीड़रों की पत्नियां विनम्र, दयालु या करुणामयी,

गृहलक्ष्मी, अत्यन्त मधुर सामूहिकता के प्रति, नहीं हैं, तो हमें पति व पत्नी को लीड़र के पद से हटाना होगा। हम ऐसे लीड़र नहीं रख सकते जिनकी पत्नियाँ भयानक हों, नहीं, क्योंकि लीड़र की पत्नी एक माँ के समान होती है।

पाँच प्रकार की माताओं का वर्णन किया गया है, उनमें से एक है जो गुरू या लीड़र की पत्नी होती है, और यदि लीड़र की पत्नी दूसरे प्रकार की है तो बेहतर है कि लीड़र हट जाए, अपनी पत्नी को सुधारे। जो भी संभव है, करें। जब तक वह ठीक नहीं होती, उसे लीड़र नहीं रहना चाहिए। यह बड़ा महत्वपूर्ण है, क्योंकि मैंने देखा है कि ऐसी स्त्रियाँ, पुरुषों को नीचे गिराती हैं और न केवल यह, वे सहजयोग को भी नीचे ले आती हैं, सहजयोगियों को भी और परमात्मा की सारी व्यवस्था को भी।

इसलिये, सब को सावधान रहना चाहिए और स्त्रियों को समझना चाहिए कि यदि वे लीड़र की पत्नी हैं तो उन्हें अत्यन्त बढ़िया, दयालु, उदार, बाँटने वाली, देखभाल करने वाली होना चाहिए, एकदम माँ समान और निरर्थकता को सहन नहीं करना चाहिए और जब लोग गलत कर रहे हों तो उन्हें सुधारना चाहिए। उन्हें किसी की भी शिकायत अपने पति से नहीं करनी चाहिए, स्वयं सब कुछ करने की जिम्मेदारी नहीं लेनी चाहिए, जो उन्हें नहीं करनी होती है। यदि वे उस स्तर की नहीं हैं, तो वे सब के लिए किसी काम की नहीं हैं और उन्हें कोई अधिकार नहीं है कि वे लीड़र की पत्नी होने का गर्व करें...''

(१९८७, श्रीराम पूजा, स्विटजरलैंड)

आपको उसके सामर्थ्य, योग्यता और नाम के स्तर का होना है :

''... मैं देखती हूँ कि कुछ लोग बड़े अच्छे हैं। कुछ लीड़र अत्यन्त अच्छे हैं परन्तु पत्नियाँ बड़ी सख्त, कठोर होती हैं, दुष्ट, तकलीफ़जनक, स्वार्थी। इस प्रकार के अवगुणों के साथ आप सहजयोग में विकसित नहीं हो सकतीं। यह सौभाग्य है, अवसर है, कि आप का पति लीड़र है, आपके देश में सहजयोग में उच्चतम पुरुष हैं और आप को भी वहाँ उस स्तर पर, उसकी योग्यता, सामर्थ्य और नाम के अनुकूल होना है, अन्यथा आपको कोई अधिकार नहीं है...''

(१९८७, श्रीराम पूजा, स्विटजरलैंड)

लीड़रों की पत्नियों को हर एक की देखभाल करनी है, उनके प्रति दयालु होना है :

''... यदि आप रोब जमाने वाली स्त्री हैं, प्रत्येक व्यक्ति में दोष ढूंढ़ती हैं, तब आप बिल्कुल भी गृहलक्ष्मी नहीं हैं, कभी-कभी मैंने देखा है, विशेषतया लीड़र की पत्नी वैसी होती है। वे कहीं अधिक दबाने वाली एवं दोष निकालने वाली होती हैं, यहाँ तक कि कोई भी लीड़र ऐसा नहीं करता है। वे मूर्ख के स्वर्ग में रहती हैं। वे लीड़र नहीं हैं पर मूर्ख का स्वर्ग है, यह सोचती हैं कि वे सहजयोग की आत्मा हैं। इन मूर्ख स्त्रियों को ठीक होना है और सही व्यवहार करना है। मैं इसलिये कह रही हूँ क्योंकि मैंने देखा है कि ऐसी स्त्रियाँ 'स्किझोफ्रेनिक' (बाईं ओर की बाधा) हो जाती है क्योंकि वे काल्पनिक दुनिया में रहती हैं। लीड़र नहीं, ऐसी स्त्रियों को कोई अधिकार नहीं है, इस प्रकार का व्यवहार करने का।

लीड़रों की पत्नियों को सब की देखभाल करनी है, उनके प्रति दयालु होना है और उन्हें लीड़र व अन्य सभी के बीच में खड़ा होना है ताकि जब लीड़र क्रोधित हो, तो उसे कहना चाहिए, 'अब यह ठीक है, क्षमा करो, क्षमा करो,' इस प्रकार। वह लीड़र की पत्नी का कर्तव्य है...''

(१९८७, क्रिटिसिज़म, अहंकार और दायीं ओर के खतरे, फ्रांस)

सो, पत्नियों की ज़्यादा जिम्मेदारी है :

''... वे आनन्द का स्रोत हैं न कि नियंत्रण करने का। वे मातृत्व का स्रोत हैं न कि गुरुत्व का। सो, उन्हें बड़े अलग प्रकार के व्यक्तित्व का होना है। इसके बजाए वे सोचती हैं कि हम गुरु की पत्नी हैं, इसलिये हम जो चाहें कर सकती हैं। हम लोगों को दबा सकती हैं, उन पर चिल्ला सकती हैं और सब प्रकार की व्यवस्था कर सकती हैं। नहीं, उन्हें पूर्णतया पीछे रहना है। उसके बारे में मैं कह सकती हूँ कि उनमें से अनेक बहुत अच्छी पत्नियाँ हैं, जिन्होंने बहुत अधिक समझदारी, सहजयोग में अपने कर्तव्य के प्रति दिखाई है...''

(१९८६, गुरु पूजा, ऑस्ट्रिया)

X. पूर्वी और पाश्चात्य संस्कृति

दोनों संस्कृतियों ने स्त्रियों की पदावनत निम्न स्तर के मानव की करी है :

''... यह देखना भी महत्वपूर्ण है कि, इन दोनों, पूर्व व पश्चिम की संस्कृतियों में बच्चों के साथ कैसा व्यवहार किया जाता है। पूर्व में हम देखते हैं कि बच्चे अपनी माँ का कहना मानते हैं, यदि वे कट्टरवादी संस्कृति के नहीं हैं। यह संस्कृति स्त्रियों की पदावनत निम्न स्तर के मनुष्य में करती है, जहाँ वह पुरुषों एवं बच्चों द्वारा दबाये जाने योग्य समझी जाती है।

पश्चिम में भी वैसा ही होता है। बच्चे अपनी माँ का सम्मान नहीं करते हैं, न ही वे उनका कहना मानते हैं। मैं सोचती हूँ, यह इसलिये है क्योंकि साधारणतया पाश्चात्य स्त्रियां अपना अधिक समय अपनी दिखावट व शरीर की देखभाल में व्यतीत करती हैं न कि बच्चों की देखभाल व उन्हें प्यार करने में...''

(१९९५, वर्ल्ड कान्फ़रन्स ऑन वीमेन, बीजिंग)

भारतीय समाज घर की स्त्रियों द्वारा संभला हुआ है :

''... हमारे देश में, मैं कहूँगी कि घर की स्त्रियों को सारी ही प्रशंसा जाती है क्योंकि हम लोग आर्थिक, राजनैतिक शासकीय, विषयों में अच्छी नहीं हैं। पुरुष व्यर्थ हैं, उन्हें कोई घर का काम नहीं आता है, वह स्त्रियों ने अपने ऊपर ही रखा है, परन्तु हमारा समाज, प्रथम श्रेणी का है, उसे घरेलू स्त्रियों ने संभाला हुआ है...''

(१९८८, श्री फ़ातिमा पूजा, स्विटजरलैंड)

पूरे विश्व में मुस्लिम औरतें अत्यधिक पीड़ित हैं :

''... सबसे खराब हाल है बांगला देश में, सबसे खराब हाल। एक सप्ताह में चार स्त्रियाँ अर्धनग्न अवस्था में भूमि माँ में दबा दी गयी और उन्हें पत्थरों से मारा गया क्योंकि उनके पतियों ने कहा कि, वे दूसरे पुरुषों की ओर देख रही थीं। आखिर उन स्त्रियों ने आत्महत्या कर ली।

आपने सुना होगा, बांगला देश की एक स्त्री तलिस्मा के बारे में। अब वह स्वीडन में छुपी हुई है क्योंकि उसने कहा, कि यह बेहतर होगा कि हम

दुबारा कुरान को पढ़ें क्योंकि यह स्त्रियों के प्रति कठोरता अत्यधिक है और हमें इसे सुधारना चाहिए, सो, उसे स्वीड़ेन भाग कर छुप जाना पड़ा। अब वे चाहते हैं कि उसे बांगला देश भेज दिया जाए, उस पर केस चले, क्योंकि उस पर फ़तवा ज़ारी किया गया है। हो सकता है, वे उसे मार डालें।

आप देखिए, पूरे विश्व में मुसलमान औरतें सर्वाधिक पीड़ित हैं। मोहम्मद साहब ने ऐसी मूर्खता को कभी भी अनुमति नहीं दी होती। उन्होंने रहीम और रहमत (करुणा और दया) के विषय में कहा। इन स्त्रियों की स्थिति अरब के देशों में भी बहुत खराब है...''

(१९९४, लेड़ीज पब्लिक प्रोग्राम, ट्यूनेशिया)

पूर्व में हम कह सकते हैं, कि अधिकतर स्त्रियां डरपोक, दबाई हुईं हैं और स्वयं को बता नहीं सकती, जब कि पश्चिम में अधिक तर स्त्रियों को कामूकता के प्रतीक के स्तर पर गिरा दिया गया है :

''... स्त्रियों ने साधारणत: अनेक वर्षों से बहुत कष्ट पाया है, जैसा कि मुझ से पहले स्त्री ने कहा है क्योंकि हमने यह अहसास नहीं किया है कि उनका क्या महत्व है और मनुष्य समाज में उनका क्या कार्य है। समाज, जो कि उसकी रचना है, स्त्रित्व को दबाने व नियंत्रित करने का प्रयत्न करता है। पूर्व में, हम कह सकते हैं, कि कट्टरवादिता के प्रभाव के कारण स्त्रियां अत्यधिक दबाव में रही हैं और उनका सदाचार स्वतंत्रता के बजाए , भय पर आधारित है। पश्चिम में, उन्होंने अपनी स्वतन्त्रता के लिए लड़ाई की है, पर जो उन्हें मिली है, वह कृत्रिम स्वतन्त्रता है। पश्चिम में स्त्रियों को सामाजिक एवं सदाचार के मूल्यों का बहिष्कार करने की स्वतन्त्रता है।

इस प्रकार, पूर्व में, हम कह सकते हैं, अधिकतर स्त्रियां डरपोक, दबाई गई हैं और अपनी भावनाओं को व्यक्त नहीं कर सकती हैं, जब कि पश्चिम में, हम देखते हैं कि अधिकतर स्त्रियों को कामुकता का प्रतीक बना कर रख दिया गया है। वे अपना शरीर दिखाने के लिए आतुर हैं। उनकी उत्सुकता फ़ैशन, विज्ञापन और सस्ती प्रसिद्धी में दिखाई देने में है। अधिकतर उन्होंने इस स्थिति को स्वीकार कर लिया है, क्योंकि अन्यथा वे इस संघर्ष भरे

पाश्चात्य संसार में जीवित न रह पातीं...''

(१९९५, वर्ल्ड कान्फरन्स ऑन वीमेन, बीजिंग)

पुरुषों के साथ होड़ में वे अत्यन्त स्वेच्छ हो गई हैं :

''... इसके साथ-साथ अन्त में मैं कहूँगी कि, जब हम स्त्रियों के अधिकारों की मांग करते हैं, तो हमें स्त्रियों के मूल कर्तव्यों पर भी ज़ोर देना चाहिए, जो कि मनुष्य समाज के प्रति हैं। पाश्चात्य स्त्रियां या जिन्होंने पश्चिम में शिक्षा प्राप्त की है और कुछ अन्य भी मैंने देखा है, जब वे राजनैतिक, आर्थिक या शासकीय भागों में जाती हैं तो वे दूसरी हद तक चली जाती हैं। पुरुषों के साथ होड़ में वे अत्यन्त स्वेच्छ, स्वयं में केन्द्रित और महत्वाकांक्षी हो गई हैं। उनमें वे शान्त करने वाली, प्रसन्न करने वाली विशेषताएं नहीं बची हैं, जो शान्ती एवं सन्तुलन लाती हैं। इसके विपरीत वे दबाने वाली, मौज-मस्ती खोजने वाली व्यक्तित्व की हो जाती हैं। उन्हें प्रसन्न करने वाली, मधुर एवं प्रतिष्ठित व्यक्तित्व के बजाए अपने शारीरिक आकर्षण की अधिक चिन्ता रहती हैं। वे जाने या अनजाने में अपनी मूलतः व्यक्तित्व को पुरुषों से जल्दी खो देती हैं। इस सब से संघर्षमय समाज बनता है और बच्चे सड़कों पर घूमते हैं और युद्ध के लिए तैयार होते हैं।

हमें इन दो चरम सीमाओं के बीच सन्तुलन की आवश्यकता है। हमें पुरुषों के बराबर, न कि समान साथी, स्त्रियों में चाहिए, पुरुषों की प्रकृति की सूक्ष्म समझदारी के साथ, और अपने आन्तरिक सन्तुलन के साथ, उन्हें कैसे सन्तुलन में लाया जाए। हमें सन्तुलित स्त्रियों की आवश्यकता है, जिनके अन्दर शान्ति हो ताकि मनुष्य जाति में सन्तुलन आ सके...''

''...मैंने यह पाया है कि कलियुग में विशेष कर पश्चिम में, समस्यायें स्त्रियों से आती हैं...''

(१९८८, इन्ट्युशन अँड वीमेन, पैरिस)

ऐसी सब मूर्खतापूर्ण काम वे करती हैं :

''... एक स्त्री, जिसे मैं जानती थी, वह पचासी वर्ष की थी, वह घोड़े से गिर कर मर गई। स्वाभाविक है और आप पचासी वर्ष की आयु में क्या

अपेक्षा कर सकते हैं, यह तो ज्ञात ही था। पचासी वर्ष की आयु में उस स्त्री को घर में स्थिर होना चाहिए था, अपने नाती-पोतों की देख-रेख करे, हो सकता है उसके पड़ पोते भी रहे हों। इसके विपरीत वह क्यों पच्चीस वर्ष की लड़की के समान घोड़े पर चढ़ना चाहती थी। सो, ऐसी सब मूर्खतापूर्ण हरकतें वे करती हैं और फ़िर वे कहेंगी, 'क्या गलत है?' मूर्खता में कोई गलती नहीं है, 'क्या गलत है?' ऐसे लोग समाज के लिए बेकार हैं, दूसरों के लिए...''

(१९८२, श्री गणेश पूजा, ब्राईटन, यू.के.)

तत्क्षण वे मुँह पर ही सुना देगी :

''... दूसरी बात यह है अब, आप एक भारतीय घर में जाएं, उनकी रंगों की व्यवस्था भिन्न होती है। यदि आप दक्षिण भारतीय के यहाँ जाएं, उनकी अलग होती है। सब का अलग स्वाद होता है। ज्योंही वे प्रवेश करेंगे, पाश्चात्य स्त्रिया, 'क्या रंगसंगती है! आपने क्या खरीदा है! हे प्रभु, यह भयानक है।' वे तत्क्षण मुँह पर बोल देगी...''

(१९९७, नवरात्रि पूजा की पूर्व संध्या, कबेला)

यह एक सूक्ष्म प्रकार की भौतिकता है :

''... कोई बात नहीं, यदि घर थोड़ा साफ़ नहीं है, यदि कुछ गिर गया है। भारत में कोई स्त्री ऐसा नहीं करेगी। अब मेहमान बैठे हैं और वह हूवर के साथ लगी है। दूसरी बात यदि कुछ टूट जाता है, जैसे कि थर्मामीटर टूट गया, भारत में वे कहेंगे, 'बड़ा अच्छा हुआ, अब कोई बुखार नहीं आएगा, थर्मामीटर टूट गया।'

परन्तु मैंने पश्चिम में देखा है, यह बड़ी हैरानगी की बात है, जैसे कि यदि कॉफ़ी गिर गयी, मैं मेहमान हूँ, तत्क्षण वे हूवर ले आएंगी, कुछ साफ़ करने के लिए ले आएंगी - उस व्यक्ति की उपस्थिति में। अब यदि एक गिलास टूट जाए, समाप्त। यह महत्वपूर्ण नहीं है। यह अत्यन्त सूक्ष्म प्रकार की भौतिकता है, मैं सोचती हूँ, वह व्यक्ति वहाँ बैठा है, जो मेहमान है, और आप क्यों यह सब उसकी उपस्थिति में कर रही हैं? परन्तु ये पाश्चात्य स्त्रियां कभी समझती ही नहीं...''

(१९९७, नवरात्रि पूजा की पूर्वसंध्या, कबेला)

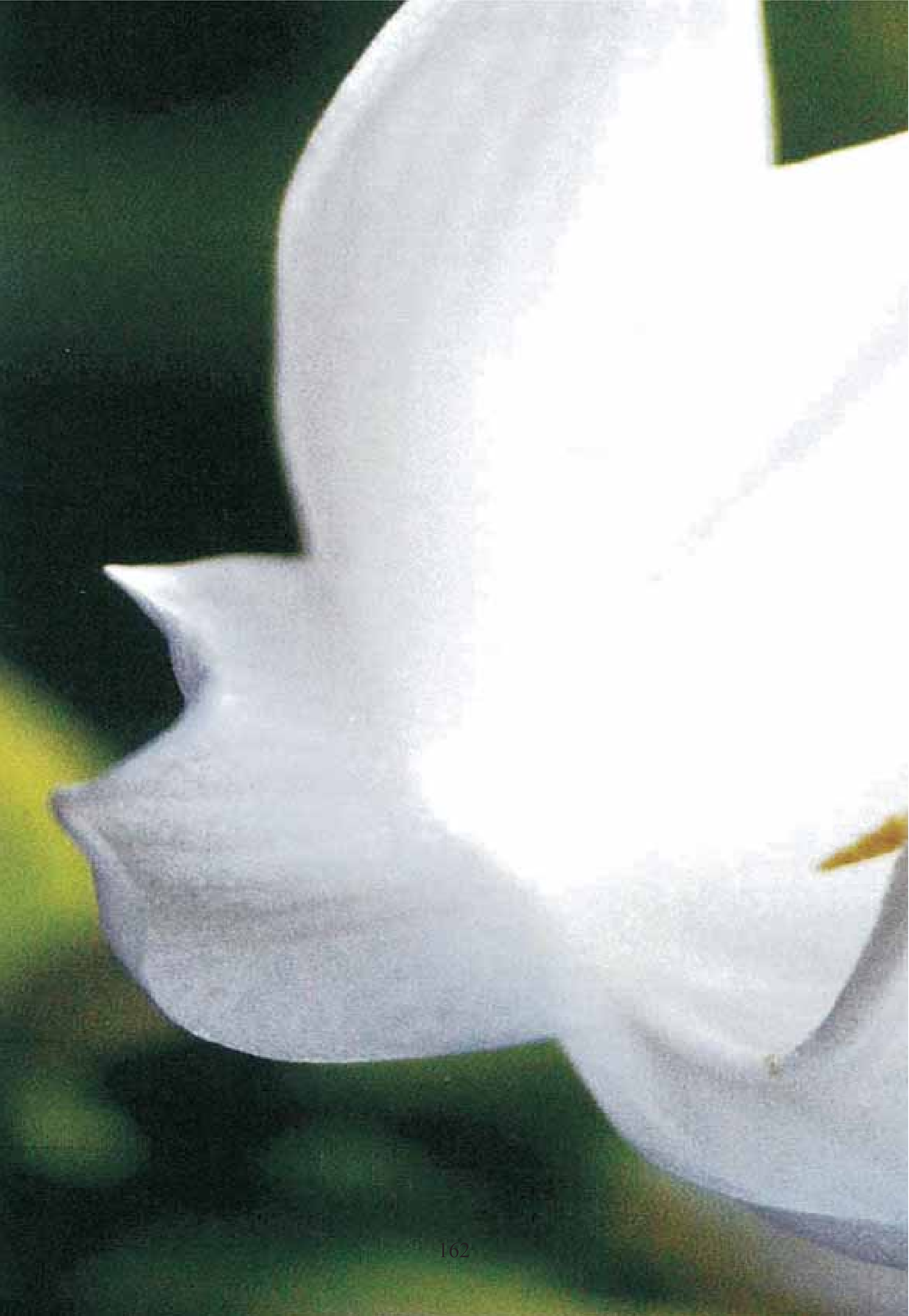

पवित्रता और अबोधिता

विशुद्ध प्रेम का सार और आनन्द का स्रोत अबोधिता है। पवित्रता हमारी शक्ति है, अस्तित्व की सुगन्ध। यदि हम आत्मा के विशुद्ध आनन्द का अनुभव करना चाहते हैं तो दोनों का सम्मान करना चाहिए।

भारतीय परंपरा में, लड़कियाँ छोटी उम्र से ही कलायें सीखती हैं, विवाह के लिए तैयार करने के लिए। लड़के तैयार होते हैं एक स्थिर व्यवसाय के लिए और परिवार की जिम्मेदारियों का भार उठाने के लिए। बचपन से ही दोनों को अपने भावी पति या पत्नी के साथ का अनुभव सिखाया जाता है। इस प्रकार अबोधिता एवं पवित्रता की जाती है और अन्तरधर्म को प्रबल किया जाता है। इससे सुरक्षा मिलती है और शादी से पूर्व कामूक संबंधों को अनावश्यक कर देती है।

श्रीमाताजी चाहेंगी कि सहज समाज भी इन सिद्धान्तों का पालन करे, विवाह के पूर्व पवित्रता की रक्षा होनी चाहिए, यह शारीरिक एवं भावनात्मक कार्यक्षेत्र में लागू होता है। यहाँ तक कि 'बॉयफ्रैन्ड', 'गर्लफ्रैन्ड' होना, इश्कबाज़ी, रोमांस आदि मूलाधार को नुकसान पहुँचाते हैं और इन से दूर रहना चाहिए।

पश्चिम में वे साधारण विचार नहीं हैं, परन्तु सुरक्षा, शुद्धता और धर्म को समाज में पुन:स्थापित करने का मार्ग है। पवित्रता और अबोधिता हमारी मर्यादाओं का मूल आधार हैं और हमें आनन्ददायक, प्रेममय और शुद्ध सम्बन्धों को रखने की स्वतन्त्रता देते हैं।

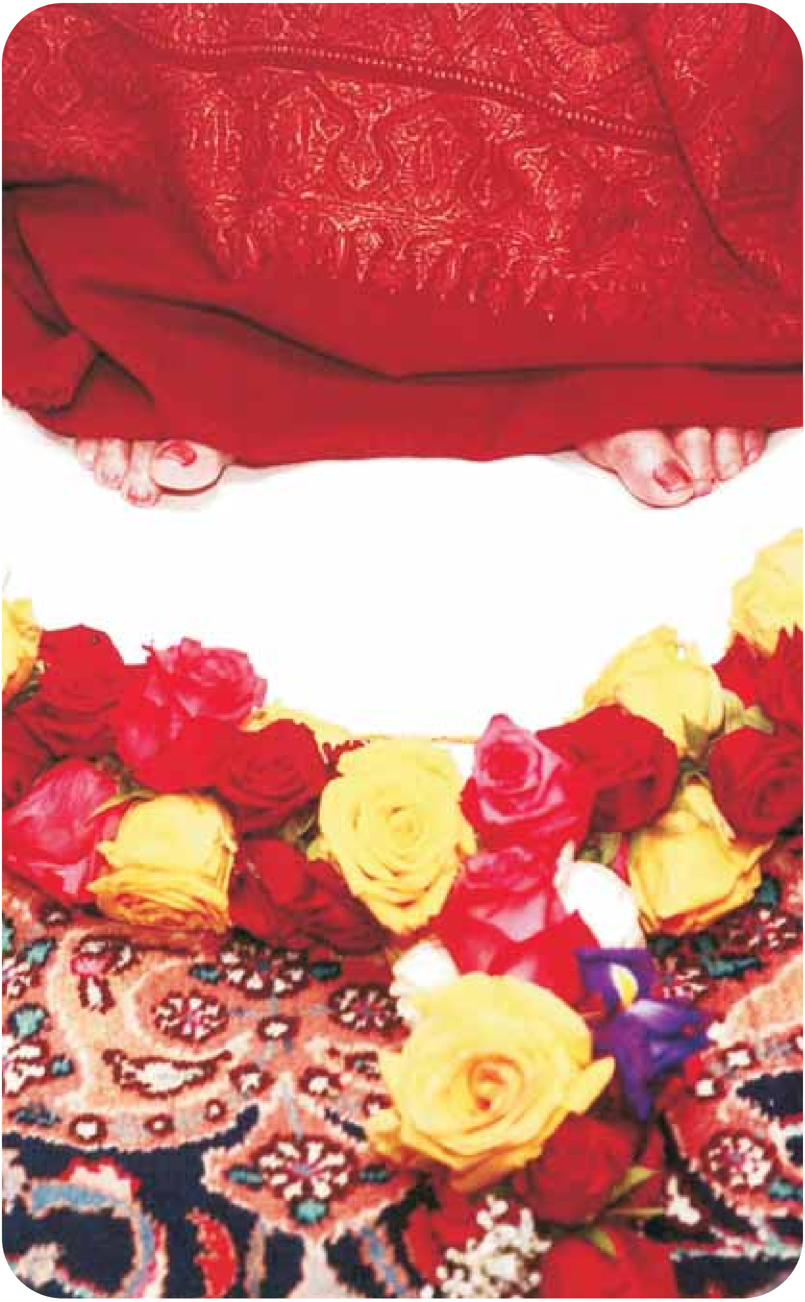

अबोधिता का महत्व

यह महत्वपूर्ण है कि वे अपनी अबोधिता को बचा कर रखें :

''... अब यह गणेश, जब वे बचपन में होते हैं, जैसा कि आप देखते हैं, जब एक बच्चा जन्म लेता है, बच्चे अत्यन्त संरक्षणशील या प्रज्वलित होते हैं, आप कह सकते हैं, कोई भी उनकी अबोधिता को छू भी नहीं सके। जब वे पूर्णतया छोटे होते हैं तो वे इस विषय में जानकार नहीं होते। परन्तु जब वे थोड़ा बड़े होते हैं, तो वे बड़े सतर्क हो जाते हैं और उनके कपड़े दूसरों की उपस्थिति में उतारना, उन्हें अच्छा नहीं लगता है, वे अपनी अबोधिता के प्रति बड़े शर्मीले हो जाते हैं। उन्हें अपनी नग्नता के प्रति लज्जा आती है, ताकि उनकी अबोधिता पर आघात नहीं होता है और यदि वे निर्मल हैं, तो एक नग्न स्त्री को देखते ही वे अपनी आँखें बंद कर लेते हैं, वे एक नग्न स्त्री या नग्न पुरुष को देखना नहीं चाहेंगे।

सो, यह स्वाभाविक समझदारी है, अर्न्तज्ञानात्मक समझदारी है कि यह महत्वपूर्ण है कि वे अपनी अबोधिता को बचाएं। अब हमारे अन्दर अबोधिता क्या है? यह हमें क्या करती है? मैंने पहले भी आपसे बताया है कि यह हमें विवेक बुद्धि देती है...''

(१९८२, श्रीगणेश पूजा, स्विटजरलैंड)

अबोधिता हमारा स्वभाव है, इस रचना का सार है :

''... हमारी प्राथमिकताएं बदलनी होंगी, यदि श्री गणेश जी की पूजा करनी है। आज हम किस की पूजा कर रहे हैं-अपने भीतर की अबोधिता की। हम उसकी पूजा कर रहे हैं, जो मंगलमय है, अबोध है। अबोधिता, जो हमारे अन्दर गहराई में है, वह हमारा चरित्र है, वह हमारी प्रकृति है, हम उसके साथ ही पैदा हुए हैं-इस सम्पूर्ण रचना का आधार है, इस रचना का सार है...''

(१९८५, श्रीगणेश पूजा, इंग्लैंड)

अबोधिता सार की ओर ले जाता है और सार जो है वो प्रेम है :

''... इस प्रकार हमने श्रीगणेश की गुणवत्ता को हमारे अन्दर आत्मसात

करना चाहिए। उनकी अबोधिता जो हमारे अन्दर है उसे हमें प्रकटित करना है...''

(१९९४, श्रीगणेश पूजा, मास्को)

अगर आप अपनी अबोधिता का सम्मान नहीं करोगे तो फिर आपको सच्चाई का ज्ञान प्राप्त नहीं होगा :

''... अबोधिता प्रेम का स्रोत है। छोटे बच्चों की तरह, जब आप उन्हें प्यार से नाचते हुए देखेंगे तब आप को उनके लिये जबरदस्त प्रेम का अनुभव होगा। अगर आप अपनी अबोधिता का सम्मान नहीं करोगे तो आप कभी प्रेममयी व्यक्ति नहीं बन पाओगे और बिना प्रेम के आप कभी सत्य को जान नहीं पाओगे। बल्कि कभी-कभी आप को अजीब महसूस होगा और कभी ड़र जब आप किसी अबोध व्यक्ति के प्रति प्रेम प्रकट करना चाहेंगे तब। अबोध लोग कभी नुकसान जनक नहीं होते हैं...''

(१९९४, श्रीगणेश पूजा, मास्को)

आप खुशी का स्रोत बन जायें :

''... अगर श्रीगणेश आप के अन्दर होंगे तो आप हर-एक जन बच्चे की तरह हो जाओगे। बच्चों की तरह मासूम। आप किसी से कुत्ते के भौंकने के जितना गुस्सा नहीं हो जाते। मुझे पता है कि ऐसे कई सहजयोगी हैं कि जो हर वक्त कुत्तों की तरह भौंकते रहते हैं या फिर भिखारियों की तरह। पर आप एक छोटे बच्चे की तरह मधुर बन जाते हैं, जो हर वक्त आप को लुभाने की कोशिश करते हैं, अच्छी बातें करने की कोशिश, हर वक्त आप को खुश रखने की कोशिश करते हैं। ऐसी खुशी का वह स्रोत है और इसी तरह से आप खुशी का स्रोत, सुख का स्रोत, परिपूर्णता का स्रोत। हर वक्त खुशी से खिलखिलाते, हर वक्त बुदबुदाते रहते हैं। किस तरह से बच्चे आप को आनन्द प्रदान करते हैं, उन्हें आप देखें, ध्यान दें। किस तरह से वे छोटी-छोटी हाथों से आपको पकड़ कर आप के इर्द-गिर्द घूमते रहते हैं। किस तरह से उनको पता चलता है कि क्या सही है। एक आत्मसाक्षात्कारी बच्चा एक सयाने

व्यक्ति की तुलना में अधिक समझदार होता है। ये मैंने देखा है ...''

(१९८५, श्रीगणेश पूजा, इंग्लैंड)

प्रेम का प्रकाश ही आनन्द है :

''... और कुछ भी आपको आनन्द नहीं दे सकता, केवल प्रेम, जिसे आप अपने हृदय में अनुभव करते हैं, वह आपको आनन्द देता है...''

(१९७९, सभी चक्रों पर परामर्श, मुंबई)

आनन्द की सात सतहें :

''... यह तकनीक हमारे अन्दर सात परतों पर कार्यान्वित होती है। इन सात परतों की बाहरी सीमा पर इस आनन्द की लहरें उठती हैं: वे हमारे मस्तिष्क के किनारे पर आती हैं और आनन्द के बुलबुले रचती हैं। परन्तु यदि मस्तिष्क एक तर्कसंगत चट्टान है, तो ये बुलबुले मिट जाते हैं, और चट्टान पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता। सो, एक प्रेममय व्यक्ति, तर्कसंगत व्यक्ति से हज़ारों गुना बेहतर है। परन्तु अधिक तर लोग इस प्रेम को सब से बाहरी सतह की सीमा पर ही अनुभव करते हैं, जो मूलाधार का प्रकाश है।

जैसा कि आपको ज्ञात है कि मूलाधार से मलत्याग का कार्य होता है और यह कितना महत्वपूर्ण है, मलत्याग सही होने पर हम कितने मुक्त अनुभव करते हैं। यह मूल चीज़ हैं, पर वह आराम आपको एक प्रकार का आनन्द या प्रसन्नता देता है, बड़ा स्थूल है, बड़ा निम्म स्तर का है, परन्तु वह आनन्द प्राप्त करना हमारे लिए बड़ा महत्वपूर्ण है। परन्तु इस आनन्द को गहराई के संवेदनशील आनन्द पर हावी नहीं होने देना है, अबोध बनना है। मैं जानती हूँ कि व्यक्ति अबोध नहीं हो सकता पर सहजयोग में, मूलाधार की सफ़ाई से हो सकते हैं। सो यह बड़ा महत्वपूर्ण है कि हमारा मूलाधार स्वच्छ हो, अबोधिता स्थापित होनी चाहिए ताकि ये स्थूल आनन्द, हमारे जीवन के वर्षक्रम को न ढ़क सकें और हमें इन स्थूल आनन्ददायक वस्तुओं का गुलाम न बनाये। परन्तु सहजयोग में मूलाधार को साफ़ करने का यह अर्थ नहीं है कि किसी प्रकार के कष्टप्रद ख्याल या अवरोध के पीछे पड़ जाएं, परन्तु एक अबोध

बच्चे के समान स्वाभाविक मुक्त करें इन लहरियों को, जो जरूरी नहीं कि अन्य आनन्द की सतहों में जायें।

आपने देखा होगा कि जब सागर की लहरें किनारे को छूती हैं, तो वे वापिस मुड़ जाती हैं। यदि किनारे पर सख्त चट्टानें हों तो, यह मुड़ना बड़ा गहरा होगा और लहरें बड़ी गहराई में जाएगी। यदि मस्तिष्क अहंकार से भरा हो-अहंकार से ढ़का हो, तो इन लहरों का महत्व जीवन में साधारणतया जितना होता है, उससे अधिक होता है। अबोधिता ही एक मार्ग है जिसके द्वारा हम इन लहरों का वापिस छह महत्वपूर्ण सतहों पर मुड़ना निष्क्रिय कर सकते हैं...''

(१९७९, सब चक्रों पर परामर्श, मुंबई)

''...सहजयोग में, जैसा कि आप जानते हैं, सदाचार सब से महत्वपूर्ण चीज़ है...''

(१९९३, दीवाली-शादियों की घोषणा, रशिया)

अपनी पवित्रता की गहराई के बिना आप उन्हें समझ नहीं सकते :

''... ईसामसीह अबोधिता हैं। यदि आप में अपनी पवित्रता की गहराई नहीं है, तो आप उन्हें समझ नहीं सकते हैं। आप उनकी पूजा नहीं कर सकते। उन लोगों ने अपनी ओर से यही एक उत्तम कार्य किया है कि आपकी पवित्रता को ही नष्ट कर दिया, ताकि उन्हें कोई पहचान ही नहीं सकें। यह सब आपको अपने ध्यान के प्रयत्न से आता है। अब एक प्रयत्न केवल यह है कि आप को ध्यानयुक्त होना है। बस, इतना ही। अपने ध्यान को जारी रखें, ध्यानयुक्त होने का प्रयत्न करें। साक्षी अवस्था क्या है, कुछ नहीं, केवल यह कि आप ध्यान युक्त हैं...''

(१९८५, श्रीगणेश पूजा, इंग्लैंड)

जीवन अबोधिता है :

''... अब आपको महाराष्ट्र की गलियों में यह निरीक्षण करना है, अभी मैं रेलगाड़ी से आ रही थी-मैंने देखा कि कोई पुरुष स्त्रियों में रुचि नहीं ले रहा था। कोई स्त्रियां पुरुषों में रुचि नहीं रख रही थीं। कुछ पुरुष एक दूसरे के गले लग रहे थे, चल रहे थे, अबोधिता से पकड़े हुए। मेरा तात्पर्य है कि सारा

वातावरण ऐसा था, कि जीवन अबोधिता है...''

(१९८५, पूजा, नासिक, भारत)

अबोधिता आती है, जब आप इसे नष्ट नहीं करते :

''... पुरुष और स्त्रियां, सभी को साथ-साथ चलना है, क्योंकि जैसा कि मैंने बताया कि, प्रथम विशेषता बुद्धि है, परन्तु मूलाधार का सार अबोधिता है, वे अबोधिता से बने हैं। गणेश की शक्ति अबोधिता है। और अबोधिता आती है, जब आप इसे नष्ट नहीं करते हैं। वास्तव में एक बच्चा अबोध पैदा होता है, परन्तु यदि माँ वैसी होती है, तो उसी समय बच्चा सीख लेता है, और यदि पिता वैसा है, तो बेटा वैसा बनता है। परन्तु बाद में इसका असर होता है, चाहे वह माँ हो या पिता। सारा समाज पतोन्मुख है, पतन की ओर जा रहा है, नीचे जा रहा है। आप इसे स्पष्टत: देख सकते हैं...''

(१९९१, श्रीगणेश पूजा, ऑस्ट्रेलिया)

एक बार आपको साक्षात्कार प्राप्त हो जाता है, आपका चित्त अबोध हो जाता है :

''... यह अबोधिता कभी नष्ट नहीं होती क्योंकि यह अनन्त है, पर हो सकता है कि हमारी गलतियों के कारण कभी वह बादलों से ढ़क जाये। परन्तु एक बार आप साक्षात्कार पा लेते हैं तो आप की अबोधिता पुन: स्थापित हो जाती है, आप में प्रकट होती है और आप अबोध बन जाते हैं। आपका चित्त अबोध बन जाता है...''

(१९९४, श्रीगणेश पूजा, मौस्को)

मानसिक तौर पर आप देखें कि यह मन कहाँ जाता है :

''... किसी पुरुष को आप छुएं, किसी स्त्री को आप छुएं, किसी स्त्री को आप देखें, मुझे बिल्कुल समझ ही नहीं आता। यह बन्दरों से भी खराब है, भयंकर। आप को इसे सहलाना है, शीतल करना है, ताकि गणेश अपने आशीर्वादों को आपके मूलाधार में प्रदान कर सकें।

इसमें कोई शोभा नहीं है। परन्तु यह इतना बाह्य नहीं है कि मैं कहूँ कि, 'आपको अपना सम्मान करना चाहिए।' इन शब्दों द्वारा मैं कार्यान्वित नहीं कर सकती, मैं जानती हूँ। आपको बैठना है, ध्यान करना है और इसे शान्त करने का प्रयत्न करना है। मैं लीड़र के साथ बातचीत करूंगी और उसे बताऊंगी कि इस विषय में क्या-क्या किया जा सकता है, क्योंकि मैं आपको खुल्ले में इस प्रकार नहीं बता सकती हूँ। परन्तु फिर भी यह केवल शारीरिक हैं। मानसिक तौर पर आपको सतर्क रहना है कि यह मन कहाँ जाता है, गंदी बातों की ओर। यह हमेशा इस उत्तेजना की ओर क्यों जाता है? पक्षियों को देखें, फूलों को देखें, प्रकृति को देखें, सुन्दर लोगों को देखें, केवल देखें...''

(१९८५, मूलाधार एड्रैस, बर्मिंगहैम, यू.के.)

हमें अपने मन के प्रति पूर्णतया सतर्क रहना चाहिए :

''... हम अबोधिता के बारे में बात करते हैं, परन्तु अपने अन्दर अबोधिता को जाग्रत करने के लिए हमें पूर्ण रूप से सतर्क रहना चाहिए, अपने मन के प्रति सतर्क रहना चाहिए। यह क्या सोच रहा है? यह कहाँ जा रहा है? यह चोर कहाँ जा रहा है? क्या यह कुछ चालाकियाँ करने का प्रयत्न कर रहा है? क्या यह कुछ ठगने वाला है? ठीक है! आप को सतर्क रहना होगा, अत्यन्त सतर्क...''

(१९८५, मूलाधार एड्रैस, बर्मिंगहैम, यू.के.)

निर्विचार स्थिति में आप गलत प्रकार के मूलाधार से लड़ सकते हैं :

''... निर्विचार स्थिति में आप गलत प्रकार के मूलाधार से आए विचारों के साथ लड़ सकते हैं। हो सकता है आप में से कुछ के मूलाधार पर भूत हों। हमारे पास ऐसे भूतों के लिए कुछ शारीरिक इलाज हैं, जो मैं किसी समय आपको बताऊंगी, आप वे पूछ सकते हैं। परन्तु आप हमेशा यह नहीं कह सकते हैं कि, 'यह भूत है, मैं तो ठीक हूँ'...''

(१९८५, मूलाधार एड्रैस, बर्मिंगहैम, यू.के.)

केवल एक ही प्रभाव है, जो वास्तव में कार्य कर सकता है, वह है उत्थान की ऊँचाई :

''... अनेक कारण है, जिनके द्वारा हम यह अभिव्यक्त करते हैं कि हम अभी भी खराब मूलाधार के चंगुल में फँसे हैं। जिस प्रकार आप कपड़े पहनते हैं, जिस प्रकार आप चलते हैं, जिस प्रकार आप बैठते हैं, जिस प्रकार से आप दूसरे लोगों पर प्रभाव जमाने के लिए व्यवहार करते हैं। मुझे सहजयोग में अन्य लोगों से प्रभावित होना है। केवल एक ही प्रभाव वास्तव में कार्य कर सकता है, वह है उत्थान की ऊँचाई जो अन्य लोगों ने प्राप्त की है। आप कर सकते हैं इसे, यह कठिन नहीं है।

जब इतने बिखरे हुए मूलाधार के होते हुए भी कुण्डलिनी उठ सकती है, तो मुझे पूर्ण विश्वास है कि आप अपने मूलाधार को पूर्ण रूप से सुधार सकते हैं। परन्तु सबसे पहले आपका प्रश्न मूलाधार को मज़बूत करने का है। जिसके लिए मैं सोचती हूँ कि आप सबको एक प्रकार की तपस्या करनी चाहिए।

इसी कारण से मैं कभी-कभी कहती हूँ कि पश्चिम के लोगों को कम माँस खाना चाहिए, विशेष रूप से लाल माँस और बीफ़ और घोड़े और कुत्ते-और मुझे पता नहीं है कि आप और क्या खाते हैं (हँसती हैं)। अधिकांश शाकाहारी भोजन खाएं, मैं शाकाहारी बनने को नहीं कह रही हूँ, आप समझ लें कि...''

(१९८५, मूलाधार एड्रैस, बर्मिंगहैम, यू.के.)

यह स्वतः आएगा :

''... केवल यह प्रश्न है 'आपका चित्त कहाँ हैं?' बदलिये, चित्त को बदलिये। प्रारम्भ में आपको कुछ व्यायाम की आवश्यकता पड़ेगी, कुछ प्रयत्न और बाद में स्वतः ही आ जाएगा। आपको शक्ति नहीं लगानी होगी, आपको चिन्ता नहीं करनी है। इसके विपरीत आपके लिए अन्य होना असंभव हो जाएगा। इतने मानसिक बंधन हैं। हम लोग इन बंधनों के हाथों में खेल रहे हैं और हमने अपने आपको नष्ट कर लिया है। और यह बंधन सबसे खराब है और सबसे सूक्ष्म है। सहजयोग में इससे लड़ना असंभव है, जब तक

कि प्रत्येक सहजयोगी इसकी देखभाल करने की जिम्मेदारी न लें।

मूलाधार सबसे नाजूक और सबसे शक्तिशाली चक्र है। इसकी अनेक परते हैं और इसके अनेक आयाम हैं। यदि आपका मूलाधार ठीक नहीं है, तो आपकी स्मरणशक्ति नहीं रहेगी। और यदि आपका मूलाधार ठीक नहीं है तो आप की बुद्धि भी नहीं रहेगी। आप को दिशाओं का ज्ञान नहीं होगा। अमेरिका में जो चालीस वर्ष की आयु के पहले पागलपन आ रहा है, वह मूलाधार खराब होने के कारण है। अधिकांश बेइलाज बिमारियाँ कमज़ोर मूलधार के कारण होती हैं, शारीरिक स्तर पर। मानसिक स्तर पर, अधिकांश मानसिक समस्यायें जो हमने वहाँ देखी हैं, मैं कहूँगी नब्बे प्रतिशत, कमज़ोर मूलाधार के कारण हैं। यदि एक व्यक्ति का मज़बूत मूलाधार है, शक्तिशाली मूलाधार, वह मुसीबत में नहीं फँसता, क्योंकि आप जानते हैं कि पीछे में मूलाधार की बड़ी मज़बूत गिरफ़्त होती है (श्रीमाताजी अपना हाथ अपने सिर के पीछे रखती हैं)।

जब आप का मन भटकता है तो आप मस्तिष्क को दोष देते हैं, परन्तु वह मस्तिष्क नहीं, मूलाधार के कारण अधिकतर होता है, इसलिये अपनी शारीरिक और भावनिक सुरक्षा के लिए आप को मूलाधार के प्रति समझदारी बरतनी होगी...''

(१९८५, मूलाधार एड्रैस, बर्मिंगहैम, यू.के.)

व्यभिचार का अर्थ :

''... गणपतिपुले की एक विशेष महत्ता है, क्योंकि वे महागणेश हैं। मूलाधार के गणेश, विराट में महागणेश बन जाते हैं-वह मस्तिष्क है। इसका अर्थ है कि यह श्रीगणेश का आसन है। इसका तात्पर्य है कि श्रीगणेश अपने आसन से अबोधिता के सिद्धान्त का शासन करते हैं। आपको, जैसा कि पता है कि यह सिर के पीछे 'औप्टिक थैलेमस' के क्षेत्र में स्थित है-जैसा कि इसे 'औप्टिक लोब' कहा जाता है और यह आँखों को अबोधिता प्रदान करता है।

जब वे ईसा मसीह के रूप में अवतरित हुए-जो यहाँ सामने होता है, आज्ञा पर-उन्होंने बड़ा स्पष्टत: कहा कि, 'आपकी आँखों में व्यभिचार नहीं

होना चाहिए।' यह बड़ी सूक्ष्म बात है जिसे लोग समझते नहीं है कि इस व्यभिचार शब्द का अर्थ क्या है? साधारणतया व्यभिचार का अर्थ अपवित्रता समझा जाता है। आँखों में किसी भी प्रकार की अपवित्रता नहीं होनी चाहिए, यह बड़ा कठिन है। उन्होंने यह कहने के स्थान पर कि आप साक्षात्कार लें व अपना पीछे का आज्ञा स्वच्छ करें, उन्होंने सारांश में कहा, 'आप की आँखों में व्यभिचार नहीं होना चाहिए।' और लोगों ने सोचा, यह असंभव स्थिति है। क्योंकि उन्हें अधिक समय तक जीने नहीं दिया गया, वास्तव में उनकी सार्वजनिक आयु साढ़े तीन वर्ष की थी। सो, उन्होंने जो कुछ भी कहा है, उसका विशेष महत्व है, कि आप की आँखों में व्यभिचार नहीं होना चाहिए। जब अबोधिता होती है तो वहाँ कोई व्यभिचार नहीं होता, अर्थात् कि कोई अपवित्रता नहीं होती। उदाहरणतया, हम अपनी आँखों के साथ कुछ देखते हैं, और हम उसे प्राप्त करना चाहते हैं, हम सोचने लगते हैं। विचार एक 'चेन' के समान, एक के बाद एक प्रारम्भ हो जाते हैं और तब हम भयंकर विचारों के जाल में फँसते जाते हैं, फिर हम उन विचारों के गुलाम बन जाते हैं। हमारे अनजाने में ही हमारी आँखें बड़ी स्थूल वस्तुओं की ओर मुड़ जाती हैं और हमें नीचे की ओर ले जाती हैं...''

(१९८६, श्रीमहागणेश पूजा, गणपतिपुले)

आवश्यक बातों को उसकी जड़ से सीखें :

''... और, जिस प्रकार हमने विद्युत के विषय में इतनी बातें आप से सीखी हैं, आप भी, बेहतर होगा, हम से विष्णुमाया की शक्ति के विषय में कुछ चीज़ें सीखें। अपनी जड़ों के लिए कुछ सीखने में कोई हानि नहीं है क्योंकि यदि वृक्ष ही खराब हो गया है, तो इसे जड़ों से आवश्यक बातें सीखनी हैं। और वह है, भाई और बहन के सम्बन्ध की पवित्रता...''

(१९८७, श्रीविष्णुमाया पूजा, न्यूयौर्क)

लालसा (काम वासना) को मारें :

''... मनुष्य जाति में छः शत्रु होते हैं। परन्तु आधुनिक समय में वे कई गुणा बढ़ गये हैं, सोचती हूँ। सर्वप्रथम है कामवासना। अपनी इस लालसा को

मार दीजिए। यह काम की लालसा आज पश्चिम को लालच से भी अधिक नष्ट कर रही है। सो, सर्वप्रथम अपनी इस लालसा को मारें...''

(१९८५, मूलाधार एड्रैस, बर्मिंगहैम, यू.के.)

हमें किसी भी प्रकार की कोई समस्या नहीं होगी :

''... सो, यह इतना बड़ा आशीर्वाद है और साथ ही वादा है कि यदि हम अपने श्रीगणेश तत्व का ध्यान रखेंगे:स्वयं को स्वच्छ रखेंगे, अपनी आँखें स्वच्छ रखेंगे, सब के साथ पवित्र संबंध रखेंगे, तो हमें किसी भी प्रकार की कोई समस्या नहीं होगी। आप के अपनी पत्नी के साथ सही सम्बन्ध होंगे, बच्चों के साथ सही सम्बन्ध होंगे और परिवार में सही सम्बन्ध होंगे। समाज में सही सम्बन्ध, आर्थिक, राजनीति में सही सम्बन्ध, और भिन्न-भिन्न क्षेत्र जिनमें आप जाते हैं...''

(१९९६, श्रीगणेश पूजा, कबेला)

अबोधिता से सम्बन्धित आर्थिक लाभ :

''... सर्वोत्तम तरीका है कि आप खुद अबोध एवं धार्मिक रहें। गणेश सदाचार के मूल आधार हैं, जब समाज में सदाचारी व्यवहार खो जाता है, तो वह समाज नष्ट हो जाता है। चाहे उन्हें कितनी ही आर्थिक लाभ हों या राजनैतिक लाभ हों, वे सब अन्दर से ही नष्ट हो जाते हैं...''

(१९९४, श्रीगणेश पूजा, मॉस्को)

एक अबोध व्यक्ति दिखावे का प्रयत्न नहीं करती :

''... एक व्यक्ति जो अबोध होती है, वह पूर्णतया विनम्र होती है, वह कभी दिखावा नहीं करती, उसे पता ही नहीं है कि कैसे दिखावा करना है। उदाहरण के लिए श्रीगणेश जी के पास वाहन के रूप में छोटा सा मूषक है। परन्तु यदि आप दिखावटी लोगों को देखें, वे अपनी हैसियत से बढ़ कर, बड़ी उधारी ले कर कारें खरीदने का यत्न करते हैं, केवल यह दिखाने के लिए कि वे अमीर हैं। यह उन लोगों की बीमारी है जो अबोध नहीं होते और इस संसार

में लोग इसका बड़ा लाभ उठाते हैं...''

(१९९४, श्रीगणेश पूजा, मॉस्को)

आँखों से काम वासना और लालच निकल जाता है :

''... सहजयोग में मैंने देखा है कि लोग वास्तव में बड़े अबोध हो जाते हैं। श्रीगणेश, जो आपके सिर के पीछे भी हैं, जो वहाँ महागणेश स्वरूप हैं, आँखों पर कार्यान्वित हो जाते हैं। आपकी आँखों से काम वासना एवं लालच निकल जाता है, क्योंकि आप अपने चित्त में अबोध बन जाते हैं...''

(१९९४, श्रीगणेश पूजा, मॉस्को)

पवित्रता की शक्ति

पवित्रता एक पुष्प की सुगन्ध है, हमारे अस्तित्व का सार :

''... लोग आकर्षक दिखने के लिए कई काम करते हैं, अपनी ऊर्जा को व्यर्थ नहीं गंवाओं इस प्रकार, आप सन्त हैं। परम्परागत तरीके से, जैसे हम रहते हैं, हमें वैसे ही रहना है और उस परम्परा से उत्थान की ओर जाना है, कुछ नया मत करो, कुछ अजीब, निरर्थकता से भरा हुआ। हमें किसी को भी आकर्षित नहीं करना है। पवित्रता पुष्प की सुगन्ध है, जो मधुमक्खियों को आकर्षित करती है, वह पुष्प का मधु है, हमारे अस्तित्व का सारांश है...।''

(१९८५, श्रीगणेश पूजा, ब्राईटन इंग्लैंड)

मैं आपके अन्दर पवित्रता के रूप में निवास करती हूँ :

''... क्योंकि मैं आपके अन्दर पवित्रता के रूप में निवास करती हूँ। यदि श्रीगणेश मंगलता हैं, तो मैं आपके अन्दर पवित्रता के रूप में निवास करती हूँ। पवित्रता कभी आक्रमक नहीं होती हैं, कभी कर्कश नहीं होती, क्योंकि इसकी कोई आवश्यकता नहीं है। कोई ज़रूरत नहीं है, आप इतने शक्तिशाली हैं, आप इतने शक्तिशाली हैं कि किसी पर आक्रमक होने की आवश्यकता नहीं है। आप को आक्रमक क्यों होना है, आप किसी से भयभीत नहीं है...''

(१९८५, श्रीगणेश पूजा, ब्राईटन इंग्लैंड)

मेरे बच्चों के तौर पर आप पवित्रता के आशीर्वाद का आनन्द पाते हैं, जिस प्रकार मैंने अपने मनुष्य जीवन में किया है :

''... सो, आज आप श्रीगणेश की पूजा करने आए हैं-अपने अन्दर। मुझे समझ नहीं आता, मुझे क्यों गणेश रूप में पूजना है। क्योंकि मैं वह हूँ। जब आप मुझे पूजते हैं तो आप चाहते हैं कि आप के अन्दर वे गणेश जागृत होने दें। जो भी मैं कहती हूँ वह आप के अन्दर गणेश जागृत होने के लिए मंत्र बन जाये ताकि मेरे बच्चों के रूप में आप पवित्रता के आनन्द को पायें, जैसा कि मैंने आनन्द पाया है,

मेरे समस्त मनुष्य जीवन में और मेरे समस्त दिव्य जीवनों में। आप भी उतनी मात्रा में आनन्द पायें, यही मैं चाहती हूँ। कम से कम आप इसका स्वाद लें...''

(१९८५, श्रीगणेश पूजा, ब्राईटन इंग्लैंड)

''... पवित्रता बहुत उदार है, बहुत खुबसुरत है। हमेशा ताजगी भरी और जवान, बहुत उदात्त और बहुत गरिमामय...''

(१९८५, श्रीगणेश पूजा, ब्राईटन इंग्लैंड)

यदि आप में पवित्रता नहीं है तो आप में विश्वास नहीं हो सकता :

''... पवित्रता आपके विश्वास का संघटन है। जब आपको परमात्मा पर विश्वास होता है, तो आप पवित्र हैं। जब आपको स्वयं में विश्वास होता है, तो आप पवित्र हैं। आप को अपनी पत्नी में विश्वास है, तो आप पवित्र हैं। आपको अपनी पत्नी में क्यों विश्वास होना चाहिए? क्योंकि आप एक पवित्र व्यक्ति हैं, वह कैसे अपवित्र हो सकती हैं? आप का अपने बच्चे पर विश्वास, पवित्रता है, क्योंकि आप पवित्र हैं, तो आपका बच्चा कुछ और कैसे हो सकता है? विश्वास का संघटन, पवित्रता है और वह आप में साक्षात्कार के पहले भी हो सकता है। कई लोगों का होता है। वास्तव में कर्पूर जिस प्रकार विस्फ़ोटक होता है और उड़ जाता है खुशबू बन कर, उसी प्रकार पवित्रता विश्वास में कार्यान्वित होती है।

यदि आप में पवित्रता नहीं है तो आप को विश्वास नहीं हो सकता, किसी भी चीज़ में, क्योंकि या तो आप भावनाओं के साथ व्यवहार कर रहे हैं कि आप भावनिक रूप से मेरे साथ जुड़े हैं और या आप मेरे साथ मानसिक तौर पर जुड़े हैं। परन्तु यदि आप पवित्र हैं तो विश्वास प्रत्यक्ष प्रकट होगा। अपने अन्दर आप को विश्वास करने की जरूरत नहीं है, 'अब माँ, मैं अपने अन्दर विश्वास करूंगी।' आप नहीं कर सकते। विश्वास हवा में उड़ने वाला होता है और वह उड़ने वाली सुगन्ध पवित्रता से आती है...''

(१९८५, श्रीगणेश पूजा, ब्राईटन इंग्लैंड)

अच्छाई, करुणा, सब कुछ पवित्रता के बोध से आती है :

''... सो, आज से हम तारों या चाँद को नहीं देखेंगे, पर पृथ्वी माता को

देखेंगे। ब्रह्माण्ड में वह कुण्डलिनी का प्रतिनिधित्व करती है, वह और कुछ नहीं परन्तु पवित्रता है। वह केवल पवित्रता है। क्या आप विश्वास कर सकते हैं? क्या शक्ति है। मातृत्व, सब कुछ पवित्रता है। पितृत्व, कोई भी सम्बन्ध, पवित्रता है। शुद्धता, पवित्रता की सुगन्ध है। अच्छाई, करुणा, सब कुछ पवित्रता से आती है, पवित्रता का बोध, जो मानसिक नहीं है। यदि आप मानसिक तौर पर पवित्र हैं, तो वह भयंकर हो सकती है। जैसे कुछ 'नन' होती हैं या कुछ वे लोग जो सन्यासी होते हैं, वैसा नहीं। पवित्रता आपके अन्दर सहज ही बनी कुण्डलिनी है, वह कार्यान्वित होती है क्योंकि वह मुझे समझती है। वह मुझे समझती है। वह मुझे जानती है, वह मेरा अंग-प्रत्यंग है, वह मेरी परछाई है। सो, आप अपनी कुण्डलिनी को स्वयं पवित्र बना कर मजबूत बनाएं...''

(१९८५, श्रीगणेश पूजा, ब्राईटन इंग्लैंड)

यह सन्यास नहीं है, यह आप के अस्तित्व का सम्मान है :

''... सो, इस बार आप सब भारत में आ रहे हैं, मुझे आपसे अनुरोध करना है कि आप दुर्व्यवहार न करें और इस प्रकार मेरा सम्मान करें। बचपने का व्यवहार, जैसा आप पिक्चरों में, फिल्मों में देखते हैं, वह मूर्खता न करें। आप इन सब से ऊपर हैं। आप अपनी पवित्रता के आसन से अपना चित्त एवं उपलब्धियाँ देखें। हम अपना स्थान नहीं छोड़ सकते चाहे हमारी जयजयकार हो या न हो, कुछ फ़र्क नहीं पड़ता। हम अपना आसन नहीं छोड़ सकते। जैसे कि सब अवधूत कहेंगे कि 'तकिया नहीं छोड़ना।'अर्थात् हम अपना आसन नहीं छोड़ेंगे। हम अपने आसन पर हैं। हमारा आसन कमल में है। हम कमल को नहीं छोड़ सकते हैं। हम कमल में बैठे हैं, वह हमारा आसन है। तब सब मूर्खतापूर्ण चीज़ें जो आपने पाल रखी हैं, छूट जाएंगी। आप देखेंगे, आप एक सुन्दर हस्ती बन जाएंगे। सब भूत भाग जाएंगे, सब पकड़ भाग जाएंगी, परन्तु मैं बार-बार आप से कह रही हूँ कि यह सन्यास नहीं हैं। यह आपके अस्तित्व का सम्मान है। जिस प्रकार आप बाह्य में मेरा सम्मान करते हैं, आप अपने भीतर मेरा सम्मान करें। इतना सरल है...''

(१९८५, श्रीगणेश पूजा, ब्राईटन इंग्लैंड)

हमारे अन्दर सर्वोच्च चीज़ कामूकता नहीं है, परन्तु पवित्रता है :

''... आपके अन्दर का चुम्बक श्रीगणेश हैं। बहुत लोगों को ज्ञात है कि मुझे दिशाओं का अत्यधिक ज्ञान है, वह इस चुम्बक से आता है, जो परिपूर्ण है। यही चुम्बक है, जिसके कारण आप हर समय आत्मा के प्रति चिपके रहते हैं या अनुकूलित रहते हैं। यदि आप में पवित्रता का बोध नहीं है तो आप इधर या उधर हिलते रहेंगे। अचानक ही आप एक बड़े अच्छे सहजयोगी बन जाते हैं, कल शैतान हो जाएंगे-क्योंकि आप में कुछ नहीं है जो आपको आत्मा के महान विचार से जोड़ कर रखें। आइये, हम इसका सामना करें। अब हम सब सहजयोगियों को यह जानने का समय आ गया है कि हमारे अन्दर सर्वोच्च चीज़ काम-भावना नहीं है, परन्तु पवित्रता है। और यही आपको परिपक्व करेगी...''

(१९८५, श्रीगणेश पूजा, ब्राईटन इंग्लैंड)

यदि माता-पिता में पवित्रता नहीं है, तो बच्चे ठीक नहीं महसूस करते, वे शान्ति का अनुभव नहीं करते, वे अशान्त हो जाएंगे और वही अशान्ति उनके अन्दर विकसित होगी :

''... परन्तु वह संवेदनशीलता आपकी पवित्रता की गहरायी से आती है। आप बच्चों को सुनें और आप हैरान हो जाएंगे कि वे कैसे बात करते हैं और वे क्या कहते हैं, वे कैसे बर्ताव करते हैं, वे कैसे आपको प्रसन्न करने का प्रयत्न करते हैं। मेरा तात्पर्य है कि पश्चिम में बच्चे बहुत बिगड़ गये हैं, वे आपको इतना प्रसन्न नहीं करते हैं, वे आपको काफ़ी तकलीफ़ देते हैं, क्योंकि बार-बार वही बात।

यदि माता और पिता में पवित्रता नहीं है, तो बच्चे ठीक नहीं अनुभव करते, वे शान्ति का अनुभव नहीं करते, वे अशान्त होते हैं, तब वे उस अशान्ति को अपने अन्दर विकसित कर लेते हैं। एक पवित्र मनुष्य कभी भूतबाधित नहीं हो सकता। आप, हो सकता है बड़े अकलमंद हैं, आप एक बड़े लेखक हो सकते हैं, पर आप भूतबाधित हो सकते हैं। पवित्र लोगों से भूतों को ड़र लगता है। यदि एक पवित्र व्यक्ति सड़क पर जा रहा हो तो सारे भूत भाग जाएंगे। वे सिर्फ़ भाग जाते हैं...''

(१९८५, श्रीगणेश पूजा, ब्राईटन इंग्लैंड)

यदि आप में पवित्रता नहीं है, तो आप कहीं के नहीं हैं :

"... और हमारे अन्दर की नकारात्मकता श्रीगणेश के प्रकाश में गायब हो जाती है। आप दूसरे व्यक्ति में स्पष्टत: देख सकते हैं। यदि आप में पवित्रता नहीं है तो आप कभी नहीं देख सकते कि कौन पवित्र या अपवित्र है, कभी नहीं। सब एक से हैं, 'बहुत अच्छा, बहुत अच्छा, बड़ा अच्छा व्यक्ति है, बड़ा अच्छा व्यक्ति है।' मेरा अर्थ है कि वास्तव में भूतबाधित लोगों को बड़े अच्छे लोगों का प्रमाणपत्र दे दिया जाता है, सहजयोग में भी और मैं कभी-कभी हैरान होती हूँ कि क्या हो रहा है, यह क्या है? कैसे ये लोग ऐसे प्रमाणित किए गये हैं? क्या वे इसे अनुभव नहीं कर सकते? उनमें कोई प्रकाश नहीं है। चाहे आप को साक्षात्कार मिल जाता है, यहाँ तक कि यदि आप की आत्मा सामूहिक चेतना को कार्यान्वित कर रही है, चाहे आप लोगों को आत्मसाक्षात्कार दे रहे हैं, तब भी आप कहीं नहीं हैं, यदि आप में पवित्रता नहीं है, यह एक टूटे हुए शीशे के टुकड़े के समान है जो कुछ प्रतिबिम्बित करने का प्रयत्न कर रहा है, परन्तु कभी भी सही चित्र नहीं दिखा सकता..."

(१९८५, श्रीगणेश पूजा, ब्राईटन इंग्लैंड)

पवित्रता बड़ी आनन्ददायक होती है :

"... वे किसी भी देश से संबंधित नहीं हैं, वे और नहीं है: वे श्रीगणेश के देश में है, जो प्रेम एवं आनन्द का देश है। यदि आप प्रेम व आनन्द नहीं दे सकते तो आप में कुछ खराबी है। उनके इस गुण से ही लोग पवित्र हो जाते हैं क्योंकि पवित्रता बड़ी आनन्ददायी है, अत्यन्त आनन्ददायी। यह ऐसी वस्तु नहीं है जिसे आप किसी को दे सकते हैं या बता सकते हैं, या किसी को जबरदस्ती दे सकते हैं या किसी पर प्रतिबंध लगा सकते हैं, पर यह आनन्द पाने के लिए है।

स्वयं आनन्द पाना एवं दूसरे व्यक्ति की पवित्रता का आनन्द लेना, गणेश जी का बड़ा आशीर्वाद है, इतना बड़ा आशीर्वाद कि आप स्वयं अपनी पवित्रता का आनन्द पाते हैं। आप दूसरे व्यक्ति की परवाह नहीं करते कि वह पवित्र है या नहीं, वह खराब कार्य कर रहा है या नहीं, या वह विनाशित व्यक्ति है-कुछ फ़र्क नहीं पड़ता। आप उससे बिगड़ नहीं जाते। आप की

अपनी पवित्रता है, आप का स्वयं का जीवन, अत्यन्त पवित्र क्षणों का...''

(२००२, श्रीगणेश पूजा, कबेला)

धर्म का आनन्द, हृदय में अमृत गिरने का आनन्द :

''... तब वही चीज़ होगी कि धर्म के आनन्द का ही अनुभव होगा, उसका अनुभव होगा यदि आप उसे अपने तक सीमित रखेंगे। वह किसी से बाँटा नहीं जा सकता है। सच्चरित्र बाँटा नहीं जा सकता है। क्या मैं अपना सच्चरित्र आप से बाँट सकती हूँ? मैं नहीं कर सकती। आप उसका समर्थन कर सकते हैं। किसी में सच्चरित्र है तो आप उसका समर्थन कर सकते हैं। परन्तु उस धर्म का आनन्द, वह हृदय में गिरता हुआ अमृत और कोई उसका आनन्द नहीं पा सकता। आप अपनी पवित्रता का आनन्द लेते हैं।

यह बेशक लिखा गया है, 'यह नहीं करना चाहिए, यह नहीं करना चाहिए।' ये सब आदेश आये हैं, पर वे केवल परमात्मा से ही आ सकते हैं, आप से नहीं। यदि आप दूसरों पर ये करते हैं तो अपनी समाप्ती है, आप ने धर्म का आनन्द खो दिया है...''

(१९७९, सब चक्रों पर परामर्श, मुंबई)

श्रीगणेश दिखाते हैं कि हमारा मधुर स्वभाव होना चाहिए :

''... धार्मिकता का सम्बन्ध न केवल आपके वैवाहिक जीवन से है, इसका सम्बन्ध आपके राजनैतिक, आर्थिक और राष्ट्रीय जीवन से भी है। समस्त समस्या भरे प्रश्नों को सुधारने के लिए पवित्रता ही मुख्य साधन है, या उन समस्याओं का सम्पूर्ण हल निकालने के लिए है। पवित्र लोगों में भी एक खतरा है कि वे अत्यन्त रूखे या गर्म मिजाज़ के हो सकते हैं, कभी-कभी अहंकार भरे भी। परन्तु श्रीगणेश इसके विपरीत हैं जो बाईं ओर हैं।

श्रीगणेश की पवित्रता एक अनन्त बच्चे की है। वह बड़ी मधुर है। उनके शरीर की गति इतनी नाजुक एवं शीघ्रगामी है और...... इतनी आकर्षक है। वे मोदक खाते हैं, जो एक मिठाई होती है, जो बनाने में बड़ी सरल है, परन्तु बड़ी स्वादिष्ट है-यह दिखाने के लिए कि हमारी मधुर प्रकृति होनी चाहिए,

मधुर स्वभाव। सो, यह समझ है कि जो लोग अत्यन्त पवित्र होते हैं वे बड़े रूक्ष व गर्म स्वभाव के होते हैं, ये पूर्णतया गलत है।

विशेष कर, स्त्रियों के लिए यह जानना सहजयोग में बड़ा महत्वपूर्ण है, कि श्रीगणेश बायीं ओर कार्य करते हैं न कि दायीं ओर। यह बड़ी भारी गलती है कि जब हम दायीं ओर उनका उपयोग करते हैं, अपनी बुद्धि की, अपने प्रेम की अभिव्यक्ति करने के लिए.....धार्मिकता द्वारा। इस विशेष गुण के बारे में बताने का कोई अन्त नहीं है, जिसे हम सबको अपने भीतर लाना है, सम्मान देना है व पूजा करनी चाहिए...''

(१९८७, इनोसन्स एण्ड श्रीगणेश, गणपतिपुले)

यहाँ तक कि आपकी क्षणिक दृष्टि शान्ति और धीरज ला सकती है और तनाव कम कर सकती है :

''... केवल एक बात है, जब आप ध्यान करते हैं, तो.... इस का विश्वास करें कि आपकी मंगलता और पवित्रता को आपकी नसों के अन्दर आना है, आपके 'सैन्ट्रल नर्वस सिस्टम' पर क्योंकि वह चैतन्य का सार है। चैतन्य, जो चारों ओर बह रहा है, और यदि वह पवित्रता के रूप में है तो आप की एक क्षणिक दृष्टि बड़े सुन्दर फल ला सकती है, शान्ति व धीरज ला सकती है। यह अबोधिता और पवित्रता शान्तिदायक है, वह तक्रार, तनाव कम करती है, क्योंकि आप अपनी पवित्रता का आनन्द उठाते हैं, क्योंकि आप अपने गौरव का आनन्द उठाते हैं। कृपया पवित्रता का सार बनने की इच्छा रखें...''

(१९८७, इनोसन्स एण्ड श्रीगणेश, गणपतिपुले)

विवाह के बिना किसी प्रकार का कोई भी सम्बन्ध अधार्मिक है :

''... मोहम्मद साहब के समय बहुत अधिक संख्या में स्त्रियाँ थीं व पुरुषों की संख्या कम थी, क्योंकि अनेक पुरुष मारे गये थे, सो, मोहम्मद साहब को समझ नहीं आ रहा था कि क्या करें। उन्होंने सोचा कि, 'ठीक है, हमें शादियाँ करनी होंगी', क्योंकि शादी के बिना कोई भी, किसी प्रकार का सम्बन्ध अधार्मिक होता है। उन्होंने कहा कि, 'हमें शादियाँ करनी चाहिए। हमारे पास अनेक स्त्रियाँ हैं इसलिये, पुरुषों की संख्या के अनुसार हमें स्त्रियों

की संख्या का विभाजन करना चाहिए। यदि पुरुषों की संख्या अधिक है, तो इसके विपरीत करेंगे। परन्तु हमें शादी करनी है।' अर्थात् हमें सामूहिक रजामन्दी लेनी है, आशीर्वादित होने के लिए सामूहिक रज़ामन्दी होनी ही चाहिए। सो, उन्होंने कहा, 'ठीक है, पाँच स्त्रियों के साथ विवाह करो।' परन्तु वे स्वयं हैरान हो गये थे कि बड़ी आयु के पुरुष छोटी उम्र की लड़कियों के साथ विवाह नहीं करते थे, लोग उस समय इतने संवेदनशील थे।

उन्होंने कहा कि, 'हम इन छोटी लड़कियों के साथ कैसे विवाह कर सकते हैं?' तो उन्होंने कहा कि, 'ठीक है, मैं एक से विवाह करूंगा। नहीं तो ये छोटी लड़कियाँ कहाँ जाएंगी। छोटी आयु के लड़के बचे नहीं हैं, क्या करें?' परन्तु आज कल किसी अस्सी वर्ष के पुरुष को एक छोटी १८ वर्ष की लड़की के साथ विवाह करने के लिए कहें तो वह शीघ्र ही तैयार हो जाएगा। मैं उसे मूर्ख बूढ़ा आदमी कहूंगी, क्योंकि वह समझता नहीं है। वह यह नहीं समझता कि यह लड़की उसका पति के रूप में सम्मान नहीं कर पाएगी और वह पति के जीवन का आनन्द नहीं पा सकता है। वह दादा या पड़दादा है, उसे पड़दादा के समान व्यवहार करना चाहिए: वह उसका आदर्श सम्बन्ध एक छोटी लड़की के साथ होना चाहिए...''

(१९८२, हृदय, विशुद्धि, आज्ञा, सहस्रार, यू.के.)

प्रतिष्ठा के साथ रहो और सम्बन्धों में सम्पूर्ण आदर्शवादिता का बोध :

''... ये सब आदर्श आज गड़बड़ा गये हैं, हमारे दूसरों के साथ सम्बन्ध। हर स्त्री को आकर्षक होना चाहिए, क्यों? हर पुरुष को आकर्षक होना चाहिए, क्यों? इससे आपको क्या प्राप्त होने वाला है? उसका फायदा क्या है? आकर्षकता, ठीक है, जहाँ तक आप अप्रिय नहीं हैं, जब तक आप दूसरे लोगों के साथ आदर्श सम्बन्ध रखते हैं। यदि सम्बन्ध एक कुत्ते व बिल्ली के जैसे हो जाए तो बेहतर है कि इस प्रकार के विचार न रखें। यह एकदम गलत है कि किसी चीज़ के पीछे भागना, जो हमारे रास्ते की नहीं है।

मनुष्यों को प्रतिष्ठा एवं सम्पूर्ण आदर्शवादिता के बोध के साथ रहना चाहिए, जहाँ तक कि उनके आपसी सम्बन्धों की बात है। यदि आप यह कहें, 'क्या गलत है?' तब यह एक तर्क है। सब गलत है। एक गलत नहीं, पर सब

कुछ गलत है। परन्तु यदि आप को पुष्पों से भरा समाज चाहिए ता आप को अपने पारिवारिक जीवन के आदर्शों का पालन करना चाहिए, यह बड़े महत्व की बात है। परन्तु यह आप के साथ घटित होता है, ज्यों ही आप साक्षात्कार पाते हैं। मुझे उस पर भाषण नहीं देना पड़ता, आप अपने आप एक बड़े अच्छे पति एवं बड़ी अच्छी पत्नी बन जाते हैं। सहजयोग में से सुन्दर परिवार बाहर आते हैं, ऐसे अनेक हैं। सहजयोग में अनेक सुन्दर परिवार हैं और अब महान बच्चे, महान ऋषि, जो फिर से जन्म लेना चाहते थे, वे पुनः जन्म ले रहे हैं...''

(१९८२, हृदय, विशुद्धि, आज्ञा, सहस्रार, यू.के.)

आप को ज्ञात है कि अबोधिता से आप कितने शक्तिशाली बन जाते हैं :

''... सो, उन्होंने अपनी पवित्रता का कैसे सम्मान किया। किसी प्रलोभन में आ जाना आसान है। परन्तु यदि यह आपकी शक्ति है तो क्यों आप को किसी निरर्थक बात के अधीन होना चाहिए? सहजयोग में हमें यह समझना है, पुरुष को भी जानना है कि यदि उसकी पत्नी इतनी पवित्र है और अच्छी है, तो उसे उसका सम्मान करना चाहिए।

उन्हें यह भी समझना है कि उनकी रक्षाबंधन की बहनें भी हैं। हम राखी की बहन की पवित्रता का सम्मान करते हैं और हम किसी भी प्रकार से ऐसे लोगों के साथ सम्बन्ध नहीं रखते, जो अपनी पवित्रता का सम्मान नही करते। तब पुरुष भी पवित्र बन जाते हैं और यह पवित्रता आपकी मुख्य शक्ति है। यह पवित्रता श्रीगणेश की शक्ति है। और जब आप में यह श्रीगणेश की शक्ति आती है, तो आपको पता है कि आप कितने शक्तिशाली बन जाते हैं, उस अबोधिता के साथ जो आप में जागृत हो गई है। पवित्रता के बिना, स्त्रियाँ, सहजयोग में कुछ भी प्राप्त नहीं कर सकती हैं...''

(१९९३, श्रीफ़ातिमा पूजा, इस्तंबुल)

मानसिक और भावनिक शक्तियाँ सापेक्ष हैं :

''... तब आप की शक्ति क्या है? वह है आपकी पवित्रता। परन्तु पश्चिम में प्राथमिकताएं उल्टी हैं। आप की शक्ति क्या है? जरा सोचिए। अपने अन्दर सोचिए। क्या मानसिक शक्ति है, जो महत्वपूर्ण है। मैंने आपको

बताया है, मानसिक शक्ति का कोई काम नहीं है, क्योंकि यह केवल लकीरी है, यह एक ही दिशा में गतिशील होती है, गिर जाती है, फिर आप के पास वापिस आती है। इसमें कोई तत्व नहीं है। यह केवल मानसिक उभार है, प्लास्टिक। आपकी भावनिक शक्ति क्या है? आपकी भावनिक आपको कहाँ ले जाती है? चाहे आप में अच्छी भावनायें हों, जैसे कि आप अपनी पत्नी से अत्यधिक प्रेम करते हैं, आपको यह कहाँ ले जाता है?

एक कवि तुलसीदास थे, जो अपनी पत्नी से बहुत प्रेम करते थे और एक बार वह अपनी माँ के घर गयीं थी। वे इसे सहन नहीं कर पाए और उसे देखने गये और वे उसकी बाल्कनी से चढ़ कर उसके पास गये और उसे बड़ा धक्का लगा। उसने पूछा, 'आप कैसे चढ़ कर आये?' उन्होंने कहा, 'तुम ने वहाँ रस्सी लगाई थी।' वह बोली, 'नहीं।' और उन्होंने देखा कि एक बड़ा साँप लटका हुआ था। सो, वह बोली, 'जितना प्रेम आप को मेरे लिए है, यदि उतना ही आपको परमात्मा के लिए हो तो आप कहाँ होंगे?'

सो, ये भावनायें आपको कहाँ ले जाती हैं? निराशा की ओर। अप्रसन्नता की ओर, विनाश की ओर। मानसिक शक्ति आप को एक भयंकर चीज़ देती है जिसे अहंकार कहते हैं, जो दूसरों को नष्ट करता है और भावनिक शक्ति केवल आप को रोना-धोना और सदा अप्रसन्नता देती है, 'अरे, मैंने फ़लाने इन्सान पर इतना भावनिक खर्च किया है और मुझे क्या मिला?' सो, यह परम नहीं है, यह आपेक्ष है। मानसिकता में आप शून्य हैं क्योंकि आप किसी को नष्ट नहीं कर सकते और भावनिकता में आप शून्य हैं क्योंकि आप लोगों को अपनी भावनाओं से अधीन नहीं कर सकते हैं।

सो, आपकी शक्ति क्या है? आप की शक्ति कहाँ है? यह आत्मा में होती है। परन्तु आत्मा की उपलब्धि के पूर्व आप की क्या शक्ति है? क्या कुण्डलिनी है? वह सो रही है। तब आप की शक्ति क्या है? वह है आपकी पवित्रता। यदि एक मनुष्य पवित्र है, पवित्र स्वभाव है और वह अपनी पवित्रता में खड़ा होता है, तो यह कार्यान्वित होता है...''

(१९८५, श्रीगणेश पूजा, ब्राईटन)

हमारे अन्दर श्रीगणेश को ठीक होना है :

''... कुछ ऐसी चीज़ें हैं, जो आप को थोड़ी अलग लगेंगी, परन्तु आप को धक्का नहीं लगना चाहिए। जैसे कि सहजयोग में हमें अपनी पवित्रता का सम्मान करना चाहिए। स्त्रियों को सम्मान करना है और पुरुषों को सम्मान करना है क्योंकि हमारे श्रीगणेश को ठीक रहना है। जो सहजयोग में आए हैं, वे हैरान होंगे कि सहजयोग में आने के पश्चात् किसी को 'एड्स' नहीं है..... सो, इस गणेश को हमारे अन्दर मज़बूत होना चाहि,। कैथलिक चर्च के समान कोई रोक नहीं है। सहजयोग में 'सैक्स' और कुछ नहीं केवल पत्नी के साथ ईमानदारी व समझदारी का सम्बन्ध है। न यह 'फ्रॉयड' है न कैथलिक चर्च...''

(१९८७, क्रिटीसिज़्म, ईगो, राईट साईडेड डेन्जर, फ्रान्स)

सहजयोग में जो कुछ भी आपने खोया है, उसे पुन:स्थापित कर सकते हैं :

''... परन्तु अब एक आपत्ती है, कि जब लोग विदेश जाते हैं, पति-पत्नी और यह और वह, आपस में चुम्मी लेते हैं व एक दूसरे को छेड़ते हैं। उसकी क्या आवश्यकता है? आप एक व्यक्ति को 'किस' करते हैं और फिर आकर मुझे उस व्यक्ति के विरोध में कहते हैं, मैंने देखा है।

यदि आपको स्वयं को बनाये रखना है, तो वह आपकी पवित्रता और गोपनीयता। इसलिए आप के पास कोई इच्छा शक्ति नहीं है कुछ करने के लिए। यदि कोई मूर्ख व्यक्ति आपको आकर कुछ कहता है, आप कहेंगे, 'ठीक है, हम इसका स्वीकार करते हैं।' आपके व्यक्तित्व का सार आपकी पवित्रता है। और सहजयोग में, जो कुछ भी आप खो चुके हैं, उसे पुन:स्थापित कर सकते हैं। इसलिए गहराई की कमी है। और यही कारण है कि लोगों के स्वभाव में दृढ़ता नहीं है, कोई अटलता नहीं है। अब आप को मेरे भाषण के लिए बारह सौ लोग मिलेंगे और अगले दिन एक भी नहीं, सब खो गये। क्योंकि कोई आधार नहीं है, एक ढीले जोड़ की तरह। कोई जोड़ नहीं है, वह जोड़ का केन्द्र आपकी पवित्रता है...''

(१९८५, श्रीगणेश पूजा, ब्राईटन, इंग्लैंड)

अब यदि कोई पवित्रता की बात करता है तो लोग सोचते हैं कि वह पागल होगा :

''... आज कल, यह बड़ा ही आधुनिक तरीका है सोचने का, अपवित्र जीवन की ओर बहाव और हर प्रकार के गलत विचार पवित्रता के विषय में। अब, यदि कोई पवित्रता के विषय में बोलता है तो लोग सोचते हैं कि वह पागल होगा-यह कैसे हो सकता है? आज-कल सब कुछ किया जाता है, सब प्रकार के फैशन हैं। अब, एक बार फ़ैशन शुरू होता है, तो वह फैलता जाता है। तब सभी उसी प्रकार का पहनावा धारण करेंगे। उनका खुद का कोई अस्तित्व नहीं है। सभी एक ही प्रकार से घूमेंगे, खास कर के स्त्रियों ने अपनी पवित्रता का बोध खो दिया है, जिस प्रकार वे कपड़े पहनती हैं, कभी-कभी इससे मुझे बड़ा धक्का लगता है। ऐसे कपड़े पहनने की आवश्यकता क्या है? आप क्यों नहीं ठीक से कपड़े पहनते? परन्तु यह केवल दिखावा है कि उनका स्वयं का कोई चरित्र नहीं है। वे, हो सकता है, कि कहें, 'मैं यह हूँ, मैं वह हूँ।' पर वे हैं नहीं। वे कुछ भी नहीं हैं, क्योंकि वे हर प्रकार के भागते हुए प्रभाव के पीछे भागती हैं...''

(२००२, श्रीगणेश पूजा, ब्राईटन, कबेला)

इन सब मूर्खताभरे विचारों से ऊपर उठने की शक्ति मांगिए :

''... आज, इस दिन, मैं कहूँगी कि आपको इन सब मूर्खतापूर्ण विचारों से ऊपर उठने की शक्ति मांगिए, जो आप में बैठ गए हैं। और आप वे विशेष लोग बनें, जो सब से अलग हैं, जो अपनी पवित्रता का आदर करते हैं और अपनी बहनों की पवित्रता का आदर करते हैं। इस भाव को विकसित करें, इस देश में स्वास्थ्य और समृद्धि बनायें...''

(१९८०, रक्षा बन्धन, लन्दन)

यदि हम अपनी पवित्रता के स्तर पर नष्ट हो जाएं तो आपको जो आशीर्वाद मिलना चाहिए, वह नहीं मिलता :

''... आप लोगों का जन्म श्रीगणेश की छवि में हुआ है, जो आखिर में ईसा मसीह बनते हैं। इसलिए आप की प्रवृत्ति, पवित्रता की ओर कैसी होनी

चाहिए, यह बड़ा महत्वपूर्ण है। सब से महत्वपूर्ण बात है कि यदि हम अपनी पवित्रता के स्तर पर नष्ट हो जाएं तो सहजयोग अत्यन्त कठिन होता है और यह आप को जो आशीर्वाद मिलना चाहिए, वह नहीं देता...''

(१९९८, श्रीगणेश पूजा, कबेला)

घमण्ड अपवित्र व्यक्तित्व का प्रतीक है :

''... सब अपवित्र लोग घमण्डी होते हैं, अन्यथा वे स्वयं को कैसे क्षमा कर सकते हैं? आप किसी वेश्या से बात करें, दो मिनट में आप को पता चल जाएगा कि वह वेश्या है, क्योंकि वह अत्यन्त घमण्डी है। क्या गलत है? मैं वेश्या हूँ, तो क्या? घमण्ड अपवित्र व्यक्तित्व का प्रतीक है। और ऐसा व्यक्ति संकुचित विचारों का हो जाता है क्योंकि वह शर्मिन्दा है, दूसरों का सामना करने में शर्मिन्दगी मेहसूस करते है। परन्तु एक पवित्र व्यक्तित्व खुला है, उसे किसी का भय क्यों होगा? हर एक के साथ अच्छे से बात करता है, हर एक के प्रति दयालु, अपनी पूर्ण अबोधिता व सरलता से और हर तीसरे व्यक्ति के साथ प्रेम नहीं करने लगता, जिसके भी सम्बन्ध में आता है...''

(१९८५, श्रीगणेश पूजा, ब्राईटन, इंग्लैंड)

एक बार यह पवित्रता हमें छोड़ना शुरू करती है तो हमें किसी बात का बुरा नहीं लगता :

''... इस्लाम में पवित्रता पर अत्यधिक ज़ोर दिया गया है, बहुत अधिक और यह इस सीमा तक पहुँच गया कि मोहम्मद साहब ने कहा, 'आप चार या पाँच पत्नियाँ रख सकते हैं, पर वेश्याओं को नहीं रखें।' एक बार यह पवित्रता हमें छोड़ना शुरू करती हैं, तो हमें किसी भी बात का बुरा नहीं लगता। हमने इसका परिणाम अनेक ऊँचे पद वाले व्यक्तियों में कार्यान्वित होते हुए देखा है। ये ऊँचे पद वाले लोग सोचते हैं कि वे बड़े उच्च हैं और वे ईसा मसीह द्वारा दिए गये आदेशों को छोड़ सकते हैं और वे जो चाहे कर सकते हैं, जो स्त्रियाँ उनके नीचे काम करती हैं, उनके साथ दुर्व्यवहार करते रहते हैं। वे चाहे छुपा कर करें, चाहें कहीं भी करें, परन्तु श्रीगणेश देखते हैं और उन्हें इन कामों के लिए दण्डित करते हैं। इस प्रकार के कार्य, जो

सहजयोग के क्षेत्र में नहीं आते हैं, उन्हें करना भयंकर है...''

(१९९८, श्रीगणेश पूजा, कबेला)

आपको स्वयं को ठीक करना है और श्रीगणेश जी से आपको क्षमा करने के लिए अनुरोध करना है :

''... दूसरी बात उनके बारे में है कि, वे पवित्र लोगों का सम्मान करते हैं, जिनके जीवन में पवित्रता प्राथमिकता है। पवित्रता उनके द्वारा पूजित है। यह केवल स्त्रियों में ही नहीं, परन्तु पुरुषों में भी पवित्रता की वे अपेक्षा रखते हैं। साक्षात्कार के पश्चात् आप को पूर्ण रूप से पवित्र होना चाहिए। आप को हर ओर अपनी आँखें नहीं दौड़ानी चाहिए और जिसे कहा जाता है कि छोटी स्त्रियों व पुरुषों के साथ, गन्दे तरीके से आँखों द्वारा सूचना देना और अपनी पवित्रता को खराब करना। आपकी आँखें स्वच्छ होनी चाहिए, आप के विचार स्वच्छ होने चाहिए। उसके लिए आप को अन्तरावलोकन करना चाहिए और देखना चाहिए कि आप क्या गलतियाँ कर रहे हैं और किस प्रकार का अपवित्र व्यवहार आप का है। आप को स्वयं को सही करना है और श्रीगणेश से क्षमा माँगनी है।

यदि आप क्षमा माँगेंगे, वे कुछ भी क्षमा कर सकते हैं। वे इतने अबोध एवं सुन्दर हैं कि वे क्षमा कर देते हैं। यह बड़ा महत्वपूर्ण है:हमारा सम्पूर्ण सदाचार हमारे पवित्रता के विचारों पर निर्भर है। हमें बड़ा पवित्र होना चाहिए। कितने ही धर्म आए हैं और उन्होंने पवित्रता के विषय में कहा है परन्तु धर्म अब इतने बेकार हो गये हैं, वे आधाररहित हो गये हैं, जो भी उनके लिए लिखा गया है, उसका सही पालन नहीं हो रहा है। वे हर प्रकार के काम करते हैं व स्वयं को हिन्दू, मुसलमान, ईसाई कहलाते हैं। हर प्रकार के धर्म। वास्तव में सब धर्म पूर्ण रूप से विफ़ल हो गए हैं और इसलिए श्रीगणेश उनके पीछे पड़ जाते हैं...''

(१९९९, श्रीगणेश पूजा, कबेला)

श्रीगणेश आपकी आँखों द्वारा कार्य करते हैं :

''... बच्चों को देखो, बच्चे वैसे नहीं होते हैं। उनके पास अपवित्र जीवन

द्वारा लोगों पर प्रभाव डालने के विचार नहीं होते हैं, किसी में भी नहीं। इसके विपरीत बच्चे बड़े सचेत होते हैं और वे बड़े पवित्र लोग बनना चाहते हैं। इसका आँखों पर प्रभाव होता है, मैं कहूँगी कि श्रीगणेश आँखों द्वारा कार्य करते हैं। आप किसी व्यक्ति को कैसे देखते हैं, इसका बड़ा महत्व होता है। मैंने देखा है कि लोग अपनी आँखों पर पूर्ण नियन्त्रण खो देते हैं। वे लगातार इस व्यक्ति को देखेंगे। दूसरे व्यक्ति को बिना किसी कारण के देखते जाएंगे, परन्तु यह आप में गणेश के कोई नियन्त्रण न होने का विषय है...''

(२००२, श्रीगणेश पूजा, कबेला)

''...सहजयोगियों को सर्वप्रथम अपनी आँखों को स्थिर करना है क्योंकि यह ईसा मसीह की शक्ति से सम्बन्धित है...''

(१९९८, श्रीगणेश पूजा, कबेला)

यह स्त्रियों व पुरुषों के लिए है :

''... कुछ देशों में लोग सोचते हैं कि पवित्रता केवल स्त्रियों के लिए है और पुरुषों के लिए नहीं। पर यह सत्य नहीं है। इस्लाम के लोग ऐसा सोचते हैं। यह बड़ा गलत है। यह दोनों के लिए है। जैसे कि यदि एक व्यक्ति दूसरे पर दबाव डालता है, जैसे कि पुरुष, स्त्रियों को ज़बरदस्ती पवित्र बनाना चाहते हैं और स्वयं नहीं हैं, तो स्त्रियाँ पवित्र नहीं होंगी। डर के मारे वे दिखाई देंगी पर मौका मिलते ही वे गलत जीवन को अपनायेंगी क्योंकि वे देखती हैं कि पुरुष उन्हें दबा कर रखने का प्रयत्न करते हैं। तब वे सोचती हैं, 'क्या गलत है, यदि वे कर सकते हैं, तो हम क्यों नहीं?'

सो, पूरे समाज को एक शरीफ़ और शिष्ट, प्रतिष्ठित जीवन को अपनाना चाहिए। यह केवल कपड़ों में ही नहीं, पर दिन प्रतिदिन के जीवन में भी महत्वपूर्ण है। अन्यथा एक प्रकार की असुरक्षितता पुरुषों और स्त्रियों में कार्यान्वित हो जाती है और अनेकों उलझने, अत्यन्त उलझनभरा जीवन शुरू हो जाता है...''

(१९९३, श्रीगणेश पूजा, बर्लिन, जर्मनी)

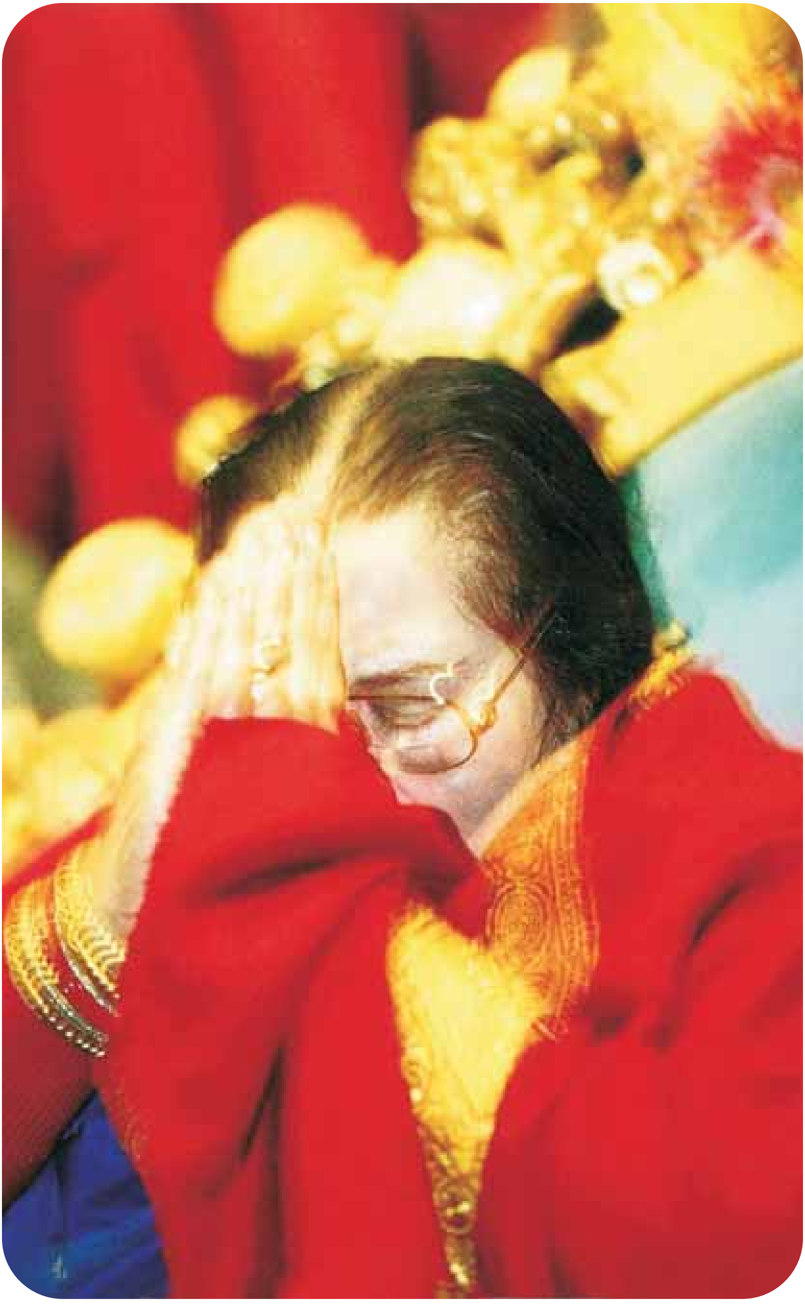

पाश्चात्य समाज की कल्पनायें

आप सैक्स को तर्कसंगत कैसे बना सकते हैं? यह स्वाभाविक है :

''... परन्तु जैसे ही आप पाएंगे कि पश्चिम में एक सचमुच विवेकशील व्यक्ति ढूँढ़ना कठिन है। आप कह सकते हैं कि लोग अतिशिक्षित हैं और वे भौतिक जीवन को बड़ी अच्छी तरह समझते हैं, परन्तु जहाँ विवेक का प्रश्न है, उनके व्यवहार को देख कर धक्का लग सकता है। मुझे समझ ही नहीं आता-इसके पीछे क्या बुद्धिमानी है?

क्योंकि उनकी समस्त बुद्धि 'सैक्स' बन गई है। वे सदा 'सैक्स' के विषय में सोचते हैं और वे सदा 'सैक्स' के विषय में ही सब जानना चाहते हैं। यदि आप 'सैक्स' के विषय में सोचना शुरू करेंगे तो स्वभाविक है कि आप की अबोधिता नष्ट हो जाएगी उसी समय। क्योंकि आप अपनी बुद्धि 'सैक्स' में इस्तेमाल नहीं कर सकते। मुझे समझ नहीं आती आपकी बुद्धि। आप कैसे 'सैक्स' को तर्कसंगत बना सकते हैं। यह बड़ी स्वाभाविक है और उस विषय में सोचने से क्या आप आनन्द पा सकते हैं? कैसे आप कर सकते हैं? यह ऐसा होगा कहना कि हम एक फूल को फल में बदल सकते हैं, केवल सोच कर...''

(१९८२, श्रीगणेश पूजा, जिनेवा)

विवाह के पूर्व कौमार्य को सम्भल कर रखना चाहिए :

''... मैं सन्यास नहीं सिखा रही हूँ। पन्द्रह वर्ष की आयु तक प्रथम, अबोधिता संरक्षित और लाल रंग की होती है। तब धीरे-धीरे, यदि व्यक्ति सही प्रकार से परिपक्व होता है, मूर्ख लोग नहीं, परन्तु जो सही तरह से पन्द्रह वर्ष के बाद परिपक्व हो रहे हैं, तब वह नारंगी रंगी की होने लगती है, अर्थात् जब आपकी शादी हो जाती है तो यह लाली चली जाती है और वह नारंगी रंगी की होनी शुरू हो जाती है।

अर्थात् कि, संरक्षण का भाग खत्म हो जाता है। इसका अर्थ है कि शादी के पूर्व कौमार्य को बचा कर रखना चाहिए, जब तक कि आप उस व्यक्ति से

मिलें जिससे विवाह करना है। वह लाली कौमार्य का संरक्षण है। तब, जब आप की शादी हो जाती है, तो संरक्षण की आवश्यकता नहीं होती। परन्तु यह केवल एक व्यक्ति की ओर होना चाहिए-वह है आप का पति या पत्नी। तब सही परिपक्वता आती है और जब तक आप पचास वर्ष के होते हैं, यह नारंगी रंग की हो जाती है अर्थात् अलगाव। आप का फिर मन नहीं करता और 'सैक्स' के जीवन का। उसकी आवश्यकता भी नहीं है तब आप सही परिपक्व अबोधिता प्राप्त करते हैं। जिसकी सही पके हुए मिट्टी के बर्तन के साथ तुलना की जा सकती है...''

(१९८२, श्रीगणेश पूजा, जिनेवा)

यदि कोई एक फ्रौइड (Freud) आता है तो इसका यह अर्थ नहीं कि आप उसे स्वीकारें :

''... लोग अब बीमार हैं। पूरे पाश्चात्य जीवन में, ऐसा लगता है कि वे बीमार हैं। बीमार, क्योंकि उन्होंने कभी श्रीगणेश को पहचाना नहीं है। यदि एक फ्रौइड आता है तो इसका यह अर्थ नहीं है कि आप उसे स्वीकार करें। परन्तु आप ने किया-जैसे कि वह बड़ा महत्वपूर्ण कार्य था और उससे अधिक महत्वपूर्ण कुछ नहीं था। सो, आज हमें सामना करना है, अपनी उत्थान की शक्ति एवं बंधनों की शक्ति जो हमारे पास रही है। जब फ्रौइड ने बंधनों की बात की तो उसे पता नहीं था कि वह एक दूसरे भयंकर बंधन में बांध रहा है आपको भयंकर...''

(१९८५, श्रीगणेश पूजा, ब्राईटन, यू.के.)

एक बार जब आप अपनी पवित्रता को छोड़ देते हैं तो आप समझ नहीं सकते कि कोई पूर्णतया पवित्र हो सकता है :

''... यहाँ तक कि आज वे एक फिल्म बना रहे हैं, जिसमे 'मेरी' को एक वेश्या दिखा रहे हैं। मेरा अर्थ है कि यहाँ तक आप आ पहुँचे हैं। भारत में आप यदि ऐसा कहेंगे भी तो वे आप की अच्छे से पिटाई करेंगे, कोई भी, चाहे मुस्लिम, हिन्दू, ईसाई। जिस प्रकार वे ईसा के विषय में बात करते हैं, उससे बड़ा धक्का लगता है। मेरा तात्पर्य है, कि एक भारतीय को यह आघात देता है। आप

कैसे कह सकते हैं, क्योंकि एक बार आप अपनी पवित्रता को छोड़ देते हैं तो आप यह समझ ही नहीं सकते कि कोई और पूर्णतया पवित्र हो सकता है।

एक चोर के लिए, सभी चोर हैं, क्योंकि आप को अपनी पवित्रता के लिए सम्मान नहीं है, आप कल्पना नहीं कर सकते हैं कि ईसा क्या हो सकते थे। आप कल्पना नहीं कर सकते, आप स्वीकार नहीं कर सकते...''

(१९८५, श्रीगणेश पूजा, ब्राईटन यू.के.)

ईश्वरीय में जो गलत है वह गलत है और जो सही है, वह सही है :

''... मैं फ्रान्स में थी और एक लड़की मेरे पास आकर रोने लगी।

उसने कहा, 'मैं इन मनोवैज्ञानिकों के पास कभी नहीं जाऊंगी।'

मैंने पूछा, 'क्यों?' 'वे मेरे पिता के बारे में गंदी बातें कह रहे थे। जरा सोचिए।

और लोगों ने इस भयंकर फ्रौइड के विचारों को स्वीकारा है। यह मूलतः गलत है। चाहे वे ऐतिहासिक हैं या जो भी हैं, आप इसे त्याग दें। ईश्वरीय में जो गलत है वह गलत है, जो सही है, वह सही है...''

(१९८५, श्रीगणेश पूजा, ब्राईटन यू.के.)

मैं समझ नहीं पायी कि ये स्त्रियाँ यहाँ क्या कर रही थीं :

''... अब जब हम अपनी धार्मिकता को आगे बढ़ाते हैं, जब हम देखते हैं-मेरा अर्थ है, कि मुझे, जब मैं यहाँ पहले आई थीं, मैं बहुत समय पूर्व आई थी। जैसा कि मैंने आप को बताया था। जब मैंने देखा कि किस प्रकार स्त्रियों ने कपड़े पहने थे, मैं हैरान हो गई थी। ये स्त्रियाँ क्या कर रही हैं? वे स्वागत लिख रही हैं और वेश्याओं के समान, पुरुषों को आकर्षित कर रही हैं। यह भयंकर था। मुझे समझ नहीं आया कि कैसे उन्होंने अपना चरित्र खो दिया है। एकदम जैसे नग्नता सड़कों पर चल रही हो। यह कुरुपता है, और मैं सारे समय उल्टियाँ कर रही थी, मैं बड़ी बीमार थी। मुझे समझ ही नहीं आया कि ये स्त्रियाँ यहाँ क्या कर रही थीं...''

(१९८०, रक्षा बन्धन, लन्दन, यू.के.)

आजकल के विद्वेष के कारण :

''... ये भयंकर चीज़ें इस प्रकार कार्यान्वित हो रही हैं कि आप कल्पना नहीं कर सकते कि कौन सी शैतानी शक्तियाँ कार्य कर रही हैं। जो वेश्यायें मर चुकी हैं, उनकी आत्माएं आपको ग्रसित कर रही है। हर प्रकार की दुष्ट और गंदी स्त्रियाँ, जिन्हें मन्दिररूपी घरों के दरवाजे पर आने की अनुमति नहीं है, वे आपके घरों में प्रवेश कर रही हैं क्योंकि आपने उनके जीवन के तरीके को अपना लिया है। वे केवल एक ही बात कहती हैं, 'क्या गलत है।' इसकी गहरायी को समझना है कि यह आज के विद्वेष का सबसे बड़ा कारण है-न केवल शारीरिक, न केवल भावनिक, न केवल सदाचारी, परन्तु सामाजिक विद्वेष है...''

(१९८०, रक्षा बन्धन, यू.के.)

सामाजिक जीवन में सम्बन्धों की पवित्रता :

''... क्योंकि जब सम्बन्ध में दुष्टता (धूर्तता) बहुत बढ़ जाती है तो वह अन्त में दूषित 'सैक्स' का जीवन बन जाता है। तब, आप किसी के घर जाओ, तो आप देखेंगे कि कोई दोस्त रहने आया था और माँ के साथ भाग गया या उस प्रकार की कुछ मूर्खता। सो, बाईं ओर, इस प्रकार का अजीब सम्बन्ध, जब आप को सामाजिक जीवन में सम्बन्ध की पवित्रता समझ नहीं आती है, वह गिर जाती है और उससे समस्यायें बनती हैं...''

(१९८०, द न्यू एज, यू.के.)

यदि वह आकर्षण अभी भी है, तो आप का मूलाधार मज़बूत नहीं होगा :

''... और बिना मज़बूत, शक्ति शांती मूलाधार के आप ऊपर नहीं उठ सकते चाहे आप कुछ भी कर लें। भारतीय लोग, जिन्होंने अपने मूलाधार का सम्मान किया है, कितने ही तरीके दिये गये हैं, किस प्रकार अपने मूलाधार की शक्ति को उठाया जा सकता है, परन्तु वह पाश्चात्य के लोगों में कार्यान्वित नहीं होगा, क्योंकि वह क्षती पा चुका है। वह टूट फूट गया है, जो मूलाधार के शारीरिक हिस्से पर कार्य नहीं करता, भावनिक ओर भी नहीं जिसे हम मन कहते हैं, बायीं ओर।

चाहे आप उस प्रकार बात न करें, परन्तु आप का मन उसी क्षेत्र में है और आप फिर भी उसी क्षेत्र के बारे में सोचते हैं, यहाँ तक कि मानसिक तौर पर भी आप उसी में हैं। या आप चीज़ें देख रहे हैं। देखना चाहते हैं, उनका आनन्द लेना चाहते हैं। वह चिपका हुआ आकर्षण अभी भी है। आप का मूलाधार मज़बूत नहीं हो सकता। हमें यह समझना है कि मैं पाश्चात्य के लोगों से बात कर रही हूँ। मैं यही बात भारतीय लोगों से नहीं कहूँगी। सो, अब हमें और परिश्रम से कार्यान्वित करना है। आप अपने पर नज़र रखें, स्वयं से बर्ताव करें। यह अधिकतर मानसिक क्रिया है, मेरा अर्थ है भावनाओं की ओर। आपको अपने मन पर नज़र रखनी है...''

(१९८५, मूलाधार, बर्मिंगहैम, यू.के.)

अहंकार को फ़र्क नहीं पड़ता, चाहे लोग आपको देख रहे हैं :

''... दूसरी भयंकर बात पश्चिम में यह है कि स्त्रियों को अपने शरीर को दिखाना है, पुरुषों को उत्तेजित करने के लिए। मैं सोचती हूँ कि पुरुष भी वैसा ही करते हैं। वे सदा एक दूसरे को उत्तेजित करते हैं और उसी उत्तेजना में रहते हैं।

आप को सुन्दर वस्तुएं जैसे फूल, सुन्दर गहने आदि को खुला दिखाना है, ठीक है? परन्तु आप एक वस्तु नहीं हैं, यह आपकी निजी जायदाद है। आप अपना सारा सोना सड़कों पर नहीं डालते, कभी प्रयत्न करें। लोग आप के सोने पर आक्रमण करेंगे, वह आपको अच्छा नहीं लगेगा परन्तु आप की पवित्रता को लूटेंगे, इस से आपको फ़र्क नहीं पड़ता। सब लोग आप को गंदी नज़रों से देखते हैं। आप को बेइज्जती नहीं लगती। क्योंकि अहंकार एक गंदा पदार्थ है, उसे फ़र्क नहीं पड़ता, लोग आप को देख रहे हैं इससे अहंकार प्रसन्न होता है। वे आप को लूट रहे हैं। वे आप की पवित्रता को लूट रहे हैं। परन्तु सहजयोगी वैसे नहीं होते। पर फिर भी, अभी भी मैं कहूँगी कि आप को अपने हृदय स्वच्छ करने हैं, मन को स्वच्छ करना है, अपने को इससे बाहर निकालें...''

(१९८५, मूलाधार, बर्मिंगहैम, यू.के.)

आप की उच्चतम सम्पत्ति को बचा कर रखना है :

''... मन को बड़ी अजीब स्थान पर रखा गया है और इसलिये लोगों के

मस्तिष्क में महान जटिलता होती है। वे बड़े गड़बड़ाये हुए लोग हैं। क्योंकि इस प्रकार के जीवन में कोई बुद्धिमत्ता नहीं है। आप केवल 'सैक्स' की दिशा में चलने वाले व्यक्तित्व बन जाते हैं। वास्तव में यह इसके विपरित है। यदि आप धन की ओर झुकते हैं तो आप धन को बचा कर रखना चाहते हैं। यदि आप अधिकृत सम्पत्ति की ओर झुकते हैं तो आप उसे बचाना चाहते हैं। यदि आप को कोई प्राचीन वस्तु मिलती है, तो आप उसे बचाना चाहते हैं तो क्यों नहीं आप की इस सम्पत्ति को, जो उच्चतम है, उसे बचा कर रखना चाहिए, सजाना चाहिए, पूजा करनी चाहिए...''

(१९८५, मूलाधार, बर्मिंगहैम, यू.के.)

यदि आप को साक्षात्कार मिल सकता है, तो यह भी क्यों नहीं? :

''... मैं इस विषय पर चिन्तित हूँ कि गोपनियता से लोग इसमें लिप्त हो रहे हैं और कई बार पाखण्ड करने में बुरा नहीं लगता है। वे सहजयोगी तो हैं, परन्तु इस विषय में वे सोचते हैं कि वे जैसा चाहे कर सकते हैं और कभी-कभी उनमें से कुछ कहते हैं, 'माँ ने कहा है, यह ठीक है।' मैंने ऐसा कभी नहीं कहा। यह एक विषय है जिस पर मैं समझौता नहीं कर सकती हूँ।

आप को अपनी ओर पवित्रता से सोचना है, जीवन की ओर, अपने अस्तित्व की ओर, अपने व्यक्तित्व की ओर। आप लोग सन्त हैं और यदि सन्त का चरित्र अच्छा नहीं होगा, मैं इसे चरित्र कह रही हूँ, चरित्र का सार-वह सन्त नहीं है।

सो, इस पवित्रता को बनाए रखना है। उस पर कोई समझौता नहीं हो सकता। आप हर चीज़ की जड़ों पर आघात नहीं कर सकते। यदि यह सामूहिक तरीके से कार्यान्वित हो जाता है, कोई स्वयं को धोखा नहीं देता और मन को उत्थान के सही रास्ते पर डालता है। उत्थान के विषय में सोचें कि कैसे अपने आप को ऊपर उठाएंगे, आनन्ददायक क्षण जो आप को मिले, उन्हें सोचें। पहले दिन जब आप मुझे मिले, सोचें, और सब सुन्दर और पवित्र चीज़ों के बारे में सोचें, तो आपका मन स्वच्छ हो जाएगा। और जब भी कोई ऐसा विचार आए तो कहना है, 'यह नहीं, यह नहीं, यह नहीं।' यह शारीरिक

की अपेक्षा अधिक मानसिक है। मुझे पता है कि यह कठिन है, परन्तु यदि आप को साक्षात्कार मिल सकता है तो यह क्यों नहीं ?

आप सब को यह समझना है कि इस पर कोई समझौता नहीं है और एक दिन आ सकता है, यदि आप इसे जारी रखें, तो आप पूरी तरह बाहर फेंक दिये जाएंगे, जिस प्रकार कोई अन्य शैतान फेंका जाता है। सो, कोई समझौता नहीं है। स्वयं से कहें कि अपने आपको धोखा मत दो, स्वयं को मत ठगो। यदि आप में कुछ चिपक अभी है, तो आप उत्थान नहीं कर सकते। आप नीचे खींच लिए जाएंगे क्योंकि वह आपकी कमज़ोरी है और आप निर्बल और निर्बल और निर्बल हो जाएंगे...''

(१९८५, मूलाधार, बर्मिंगहैम, यू.के.)

तीस वर्ष पूर्व कोई फ़िल्म नहीं होती थी जिसमें शैतान की विजय हो :

''... मुझे याद है कि करीब तीस, चालीस वर्ष पहले या उसके भी पहले, जब हम फ़िल्म देखते थे, वे रंगीन फ़िल्में नहीं होती थीं। अमेरिका की फ़िल्में बहुत सुन्दर होती थीं जिनमें कुछ ठोसता होती थी। वे यह नहीं दिखाते थे कि एक विवाहित पुरुष दूसरी विवाहित स्त्री के पीछे भागते हुए। ऐसी कोई कहानियाँ नहीं। सुन्दर पारिवारिक जीवन का शुद्ध स्वरूप। सब कुछ पोषक दिखाया जाता था।

हमने कभी ऐसा नहीं सुना जहाँ शैतान विजयी हो। अब आप देखते हैं एक चोर और वह चोर 'हीरो' बन जाता है। लोग उन फिल्मों को देखते हैं और विशेष कर बच्चे, मैंने देखा है, उनमें चोर, एक महानतम का प्रतीक होता है। सो वे पूर्णतया भवसागर के विरोध में जा रहे हैं, हमारे अन्दर के धर्म के विरोध में, पूर्णतया।

वह चीज़ जिसने आप के भवसागर का पोषण करना था, जिसने धर्म को बनाये रखना था, वह अब भवसागर को पूर्णतया विघ्नमय बना रही है। यह माया है-वही विद्युत जिसने आप को सही रास्ता दिखाना था, अंधेरे में प्रकाश, वही आप को चुम्बक के समान विनाश की ओर खींच रहा है...''

(१९८७, श्रीविष्णुमाया, न्यूयौर्क)

आपको सिद्ध करना है कि अबोधिता का सम्मान होना चाहिए :

''... सर्वप्रथम हमें यह समझना है कि हम बड़े संकटपूर्ण और खतरनाक समय में पैदा हुए हैं। ईसा के समय बड़े कम लोग थे, जो उनका अनुसरण करते थे और वे कुण्डलिनी के बारे में भी कुछ नहीं समझते थे। उन्हें कोई ज्ञान नहीं था। उन्हें यह ज्ञान नहीं था कि ईसा, श्रीगणेश के अवतार हैं। परन्तु केवल ईसाई देशों में ही आप ईसा का अपमान देखेंगे, अबोधिता का खुले आम अपमान, कभी-कभी कानूनी तौर पर भी स्वीकारा जाता है।

सो, जब हम इतनी भयंकर परिस्थितियों में पैदा हुए हैं, हमें एक महान शक्ति, आध्यात्मिकता की बनानी है। जब मैं आज आई थी, उस समय बिल्कुल हवा नहीं थी, एक पत्ता भी नहीं हिल रहा था, परन्तु आप सब गा रहे थे और आप लोगों से ज़ोरदार हवा आ रही थी, और उससे मुझे लगा कि इस दिव्य शक्ति का संचरण हो गया है, यह कार्यान्वित हो रहा है, केवल यही नहीं, पर यह बड़ा शक्तिशाली भी है, साधारणतया हवा मेरे पास नहीं आती है, वह उल्टे मेरे से जाती है, परन्तु यह इतनी अधिक हवा थी कि मुझे किसी का हाथ पकड़ना पड़ा और एक पत्ता भी हिल नहीं रहा था। सो, इस सामूहिक शक्ति से, जो आपके पास है, आप को उसके सहारे लड़ना है, भागना नहीं है, पलायन नहीं करना है और सिद्ध करना है कि अबोधिता का सम्मान होना चाहिए।

आदिशक्ति ने प्रथम श्रीगणेश को बनाया, वे सब से प्रथम देवता बनाए गये थे, क्यों? क्योंकि वे सारे वातावरण को चैतन्य से भर देना चाहती थीं, पवित्रता से, मंगलता से। यह अभी भी है। यह हर जगह पर है आप इस चैतन्य का कार्यान्वित होना अनुभव कर सकते हैं। परन्तु यह आधुनिक दिमाग में घुसता नहीं है क्योंकि आधुनिक दिमाग को पता नहीं है कि यह अबोधिता क्या है? उन्हें अबोधिता के विषय में कुछ नहीं पता है, जिस प्रकार वे सब जगह जा रहे हैं, ऐसा पहले कभी नहीं हुआ इस पृथ्वी पर।

सो, अबोधिता के साथ नैतिक जीवन आता है। नैतिकता, अबोधिता की अभिव्यक्ति है। एक व्यक्ति को अबोधिता यह दर्शाती है कि वह व्यभिचारी होने की योग्यता नहीं रखता...''

(१९९६, श्रीगणेश पूजा, कबेला)

अबोधिता पर आक्रमण है, अबोधिता का कोई सम्मान एवं मूल्य नहीं है :

''... आज हम श्रीगणेश की पूजा करने वाले हैं, यह आज सही समय है, मैं सोचती हूँ, जहाँ, कि विशेष कर यूरोप के देशों व अमेरिका में अबोधिता का कोई सम्मान नहीं है, अबोधिता का कोई मूल्य नहीं है। वे समझते नहीं हैं कि मनुष्य जीवन के लिए अबोधिता का सम्मान अपने भीतर और बाहर, कितना महत्वपूर्ण है।

मनुष्य का जीवन, जानवर के जीवन से भिन्न है। जानवरों पर हर समय, नियंत्रण है, या हम कह सकते हैं कि वे पूर्ण रूप से पाश में हैं, सदाशिव की इच्छा के अन्दर। इसलिए उन्हें पशुपति कहते हैं। परन्तु मनुष्यों को अपना उत्थान चुनने की स्वतन्त्रता दी गई है, सही को चुनने की, सत्य को चुनने की। उसे वे केवल अबोधिता द्वारा उपलब्ध कर सकते हैं...''

(१९९६, श्रीगणेश पूजा, कबेला)

आज, अबोधिता को पूर्णतया ललकारा गया है:

''... केवल अबोधिता ही आनन्द का स्रोत है। अबोधिता के बिना आप किसी चीज़ का पूर्ण आनन्द नहीं ले सकते हैं। यह अबोधिता आज, पूर्ण रूप से ललकारी गयी है और अबोधिता को समाप्त करने के लिए बड़ी सूक्ष्मता से, कई बड़े नकारात्मक, क्रूर, अपराधी प्रकार के लोग हैं, जो इस ओर कार्य कर रहे हैं। उनके मन, यदि आप कहें भूतबाधित, तो ऐसा नहीं लगता है क्योंकि और बातों में वे बड़े अक्लमंद हैं। एक प्रकार से सृजनात्मक हैं-भयंकर बातों में। सो, आप यह नहीं कह सकते कि वे बुद्धिमान नहीं हैं, परन्तु इस प्रकार का भयंकर चीज़ें करने का ज्ञान वे कहाँ से पाते हैं?

इस कलियुग में, जिस प्रकार सहजयोग में है, सभी जन्म ले सकते हैं, स्वतन्त्रता है। पहले यह इतनी नहीं थी, कि हर प्रकार के शैतान लोगों ने पृथ्वी पर जन्म लिया है। ये शैतान लोग शैतानी विचार पैदा करते हैं, जिन्हें लोग पकड़ते हैं और साथ चल देते हैं। यहाँ तक कि एक अच्छा व्यक्ति भी इसमें आ सकता है, यहाँ तक कि एक संत भी इस से हिल सकता है। सो, ये शैतानी शक्तियाँ, जो आज कार्य कर रही है, वे मूलत: इन भयंकर लोगों से आ रही

हैं। पहले, हो सकता है वे अगुरू के रूप में आयें व कुछ मूर्खता सिखायें-जैसे रजनीश। फिर कुछ 'फ़िलोसोफ़र' लोगों से-जैसे फ्रौइड, जिसे अभी तक कुछ देशों ने महान 'फ़िलोसोफ़र' के रूप में स्वीकार कर रखा है और अभी भी कुछ मनोवैज्ञानिक उसे भगवान के समान पूजते हैं। उसके इस ज्ञान को बिना सोचे समझे कि वह क्यों वैसा कर रहा है, स्वीकारा गया है। फ्रौइड यहूदी था और उसने देखा कि अमेरिका में ईसाईयों ने यहूदियों को सताया था। यह एक और ईसा-विरोधी कार्य है। जब उन्होंने यहूदियों को सताया, तो इसने सोचा कि बेहतर है, उन्हें अनैतिक बना दिया जाए, उनकी अबोधिता का विनाश कर दिया जाए और उसने कुछ अपनी 'थ्योरियाँ' शुरू की जो बड़ी मानसिक आघात देने वाली थीं, कि साधारणतया कोई भी सन्तुलित व्यक्ति उसे नहीं स्वीकारता, परन्तु अमेरिका में अनेक लोगों ने इसे स्वीकारा...''

(१९९६, श्रीगणेश पूजा, कबेला)

डिज़ाईनर अज़ीब कपड़े बनाते हैं स्त्रियों के शरीर को खुला दिखाने के लिए:

''... अबोध व्यक्ति अपने शरीर की चिन्ता नहीं करता है, फ़ैशन की या अपने शरीर में कुछ जोड़ने की, जैसे लोग प्रदर्शनी के लिए कपड़े पहनते हैं। मैं आप से कह रही हूँ कि यह सब मूर्खता आप के देश में आ रही है। मैं आशा करती हूँ कि आप लोग समझेंगे कि सुन्दरता का उच्चतम गुण, व्यक्तित्व का गुण अबोधिता है। जब अबोधिता खत्म हो जाती है, तो लोग इन डिज़ाईनरों के हाथों में खेलते हैं, जो अजीब से कपड़े बनाते हैं। वे स्त्रियों के लिए ऐसे कपड़े बनाते हैं, जो उनके शरीर की प्रदर्शनी करते हैं और जितना ये प्रदर्शन करेंगे, उतने ही महँगे होते हैं। इतनी सर्दी होने के बावजूद भी वे ऐसे कपड़े पहनने का प्रयत्न करेंगे जो बहुत कम हों...''

(१९९४, श्रीगणेश पूजा, मॉस्को)

लज्जा का बोध होना है

स्त्रियों और पुरुषों में लज्जा का बोध विकसित होना चाहिए :

''... यह अच्छा दिखता है, यह सुन्दर लगता है। यदि आप में लज्जा का बोध हो, थोड़ी शर्म हो तो यह आपको अतिरिक्त आकर्षण देता है। आप देखिए, आप की 'वेल्ज़ की राजकुमारी' को सुन्दर माना जाता है। वह शर्मिली है। उसकी शर्म कितनी प्राकृतिक है। वह शर्म नहीं है, जैसे कि-मुझे पता नहीं, कौन सा जानवर ऐसे करता है, पर वह जिसे कोई शर्म नहीं है। मेरा अर्थ है, मुझे पता ही नहीं कि कौन सा वह है, सब में लज्जा का बोध होता है, यहाँ तक कि जानवर भी।

सो, हम में वह लज्जा का बोध क्यों नहीं होना चाहिए? किस प्रकार स्त्रियों के प्रति व्यवहार करना चाहिए, कैसे.... मैंने एक स्त्री को देखा है इंग्लैंड से भारत जाते हुए और वह गई और उसने मिस्टर मोदी की पीठ पर एक बड़ा थप्पड़ मारा, 'हैलो मोदी, कैसे हो?' और मोदी को ऐसा धक्का लगा। उसका कोई वैसा अर्थ नहीं था-वह अबोध थी परन्तु सहजयोग में हम ऐसा कोई व्यवहार नहीं करने वाले हैं। किसी बेढ़ंगी, आधुनिक स्त्री के समान। हमें यह समझना चाहिए कि हमारे अन्दर लज्जा का बोध होना चाहिए। आप कैसे बात करते हैं, यहाँ तक कि मेरे साथ भी वे ऐसे बात करेंगे, एक हाथ वैसे कर के, 'माँ, आप देखिए, यह चीज़ हो रही है।' परन्तु, वह सब करने की आवश्यकता नहीं है। इस प्रकार बात करें, जो शान्तिकर और सुन्दर हो ...।''

(१९८४, रक्षा बन्धन, यू.के.)

गहराई वाला व्यक्तित्व, इन चीज़ों को बाह्य में नहीं दर्शाता है:

''... एक बार मैं 'सैल्फ्रिजिस' में गई थी, मैं आपको एक बड़ी रोचक कहानी बताती हूँ। इतनी भीड़ में, दो लोग थे, एक पुरुष और एक स्त्री, सारे समय 'किस' कर रहे थे, कोई परवाह नहीं कि लोग आस-पास हैं, जो उसी

सीढ़ी पर हैं। हर स्थान पर वे 'किस' कर रहे थे, जो भारतीय वहाँ थे, उन्हें सता रहे थे और दूसरे लोग भी थे जैसे चीन के लोग, मिस्र के लोग, एक प्रदर्शनी चल रही थी और अगली बार मैंने उन्हें देखा तो वे 'किस' नहीं कर रहे थे।

मैंने पूछा, 'क्या हुआ?'

'हमारा तलाक हो गया है।'

मैंने पूछा, 'उस दिन आप लोग इतना अधिक 'किस' क्यों कर रहे थे?'

तो उन्होंने कहा, 'क्योंकि हमारा तलाक होने वाला था और हम अन्तिम बार कर रहे थे।'

क्या स्तर है, कल्पना करें, क्या स्तर! किसी के लिए क्या प्रेम, क्या भावनाएं, कुछ भी उस प्रकार का नहीं। सारे समय एक दूसरे के साथ झगड़ा करना, अन्त में तलाक और इस प्रकार की प्रदर्शनी। गहरायी का व्यक्तित्व इन चीज़ों का बाह्य में प्रदर्शन नहीं करता। मुझे बताया गया है कि यहाँ पब्लिक स्कूल में यह कहा गया है कि आपको अपनी भावनाओं को कभी बाहर नहीं दिखाना चाहिए, पर और चीज़ें आप दिखा सकते हैं, उपहासपूर्ण या निर्लज्ज। पर अपनी भावनाएं नहीं। बड़ी बेतुकी जगह है यह। इन सब बातों को आपने भेड़ों के समान, बिना सोचे अपना लिया है..."

(१९८५, श्रीगणेश पूजा, ब्राईटन)

आज-कल आधुनिक समय में हम कैसे निर्लज्ज हो गये हैं :

"... सो, आज मैं यह सोच रही थी कि आजकल, आधुनिक समय में हम कैसे निर्लज्ज हो गये हैं। कैसे हमने अपनी प्रतिष्ठा के लिए अपनी पवित्रता को किनारे कर दिया है। यदि हमारा कुछ सम्मान-प्रतिष्ठा है तो आप की पवित्रता भी होगी, परन्तु, आप स्वयं को असम्मानित कर रहे हैं और आप सोचते हैं कि आप बड़े तीक्ष्ण बुद्धि और आधुनिक बन गये हैं, इस प्रकार पापमय बन कर। इस आधुनिक समय में जो दुष्कर्म हो रहे हैं, वे एकदम गलत हैं और हमें उससे पूर्णतया घृणा करनी चाहिए। आप को इस सब के पास नहीं

जाना चाहिए क्योंकि यह सब गलत है और इस प्रकार श्रीगणेश क्रोधित हो जाते हैं।

यह समझने के लिए कि हमारा महत्वपूर्ण मूल क्या है, शराफ़त बड़ी महत्वपूर्ण है और वह है पवित्रता। आप जानते हैं कि भारत में बत्तीस हज़ार स्त्रियों ने स्वयं को जला दिया था, अपनी पवित्रता को बचाने के लिए। मैं उसी परिवार से हूँ, आप सोच सकते हैं कि उनमें कितना साहस रहा होगा, कितना विश्वास उन्हें अपनी पवित्रता पर रहा होगा। 'यदि हमारी पवित्रता चली गई तो हमारे जीवन का क्या लाभ?' उन्हें अपनी पवित्रता की परवाह थी और उन्होंने इतना त्याग किया यह दिखाने के लिए कि पवित्रता सबसे महत्वपूर्ण होनी चाहिए। यह केवल स्त्रियों के लिए ही नहीं, पर पुरुषों के लिए भी है। पुरुषों के लिए श्रीगणेश बहुत महत्वपूर्ण हैं क्योंकि पुरुष अनेक बीमारियाँ विकसित कर सकते हैं, यदि वे श्रीगणेश का सम्मान नहीं करेंगे...''

(१९९९, श्रीगणेश पूजा, कबेला)

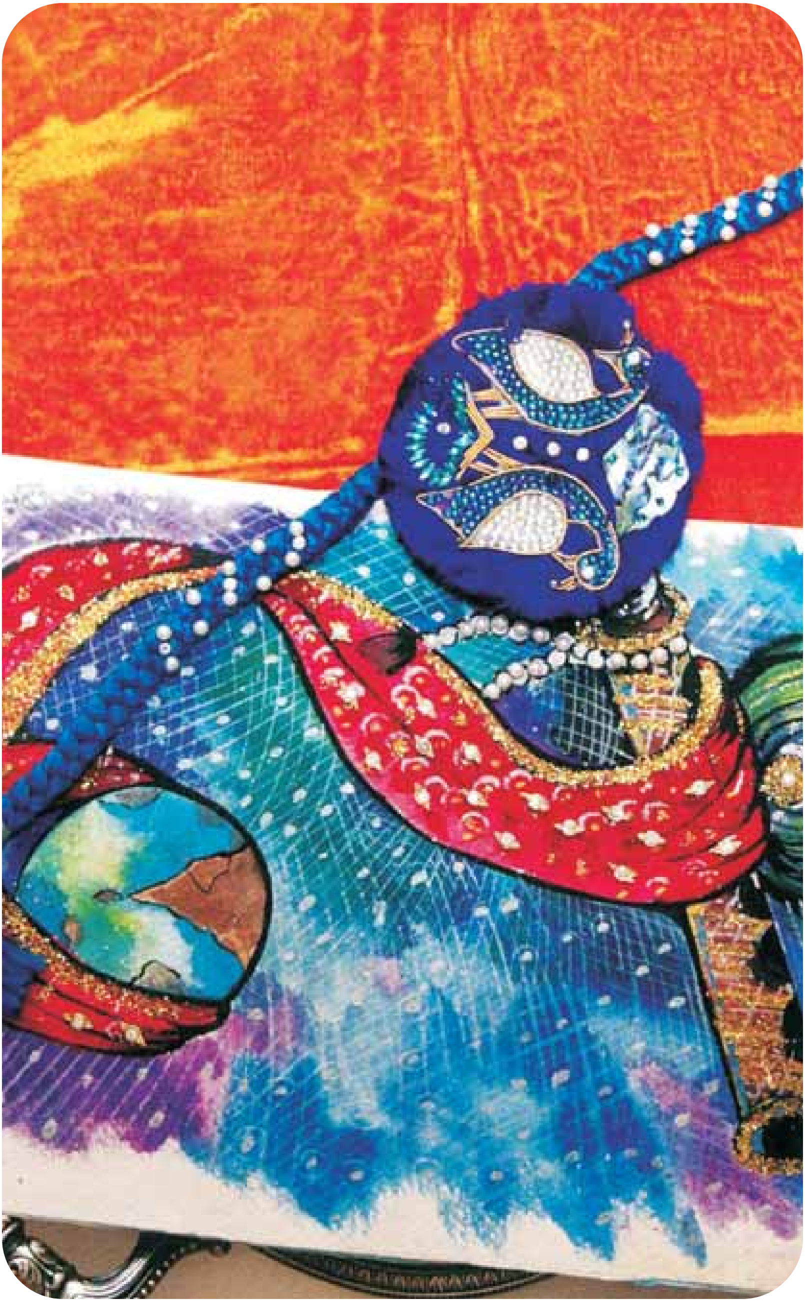

दोष का उद्‌गम

सबसे बड़ा दोष है कि जब वो बहनत्व की सीमा पार करता है :

''... अब ये सम्बन्ध गायब हो रहे हैं, जिन्हें पुन: जीवित होना है, उन्नत होना है और पुन: विकसित होना है और इस प्रकार हम अपनी बाईं विशुद्धि को सुधारेंगे। बायी विशुद्धि, दोषी भावना से आती है, परन्तु अवचेतन में सबसे बड़ा दोष मनुष्य में आता है, जब वह बहनत्व की सीमा पार कर देता है। यह उसके मन में सब से बड़ा दोष होता है जिसका उसे ज्ञान नहीं है। यदि आप उस दोष को पूर्णतया निकाल सकें। बायी विशुद्धि, मैं देखती हूँ कि केवल पश्चिम में हैं। मैंने यह आप को कई बार बताया है। अब दूसरे सभी दोष उसी दोष के ऊपर बनते जाते हैं। जैसे कुछ वियतनाम में हो रहा है, उसके विषय में दोषी भावना का होना-वास्तव में यह आपके मन को एक से दूसरे पर बदल रहा है। वास्तव में यह दोष है। सूक्ष्म रूप से यह वह दोष हैं कि हर स्त्री को आपने पहले कामुकताभरी आँखों से देखा है, यही दोष है। वह दोष बड़ा हो जाता है और आपको दूसरा चित्र दिखाता है, क्योंकि आप वास्तविकता को स्वीकार नहीं करना चाहते हैं। सो, यह आप को एक दूसरा चित्र देता है, 'ओह, मैं उस बात के लिए दोषी हूँ, मैं गरीब लोगों के लिए बड़ा दोषी अनुभव करता हूँ ...''

(१९८०, रक्षा बन्धन, लन्दन)

यदि आप अनैतिक हो जाते हैं तो अवचेतन में दोष की रचना हो जाती है :

''... परन्तु, तब आप कुछ पाते हैं-अब बायां पकड़ रहा है, सो अब आप को पता है कि यह दोषी भावना के कारण है, जो आप के अवचेतन में बन गया है, आप बायें में पकड़ रहे हैं। यह किसी भी कारण से हो सकता है क्योंकि आप में सही प्रकार से नैतिकता का बोध नहीं था। वह भूल है। बायी विशुद्धि अनैतिकता है। यदि आप अनैतिक रहे हैं, तो आप को यह मिलती है। फिर बहन का सम्बन्ध, फिर दोषी भावना जो अवचेतन में बन जाती है। यदि अवचेतन में आप अनैतिक होते हैं, तो दोषी भावना बन जाती है। ऐसी दोषी

भावना किसी अन्य करण की दोषी भावना के जैसे आती है। जैसे कि आप देखें, वास्तविक दोषी भावना किसी और कारण से है, पर लोग इस की अभिव्यक्ति किसी और कारण से करते हैं। ठीक है? ...''

(१९८०, टू नो वेयर यू आर, चेल्सम रोड, यू.के.)

हर प्रकार की उलझनें :

''... अब बायी

विशुद्धि की समस्या तब शुरू होती है, जब हम बहन के सम्बन्ध में या करीबी सम्बन्ध जैसे माँ के सम्बन्ध में उलझ जाते हैं। यह मिस्टर फ्रौइड का कार्य है। हर प्रकार की उलझन। दूसरे पुरुषों के साथ सम्बन्ध, दूसरी स्त्रियों के साथ के सम्बन्धों की समस्याएं, कोई समझने की शक्ति नहीं है। कोई भी जो विवाहित है, अविवाहित है, कोई भी, आँखे दूसरों पर है...''

(१९८१, सार्वजनिक कार्यक्रम, विशुद्धि और आज्ञा चक्र, सिडनी)

धार्मिकता में आप कभी दोषी नहीं अनुभव करेंगे और आप किसी भी निरर्थकता का सामना कर सकते हैं :

''... दोषी भावना, जो बायी विशुद्धि पर कार्य करती है, उसका इलाज हो सकता है, यदि आप अपनी पवित्रता को विकसित करें। आप को कभी दोषी भावना नहीं सताएगी क्योंकि वह धार्मिकता आप में है। उस धार्मिकता मेंआप कभी भी दोषी नहीं अनुभव करेंगे और आप किसी भी निरर्थकता का सामना कर सकते हैं क्योंकि आप पवित्रता के सत्य पर खड़े हैं। आज, मैं कहूँगी कि एक विशेष दिवस है, जब हम पवित्रता के महान आदर्श, फ़ातिमा की पूजा कर रहे हैं...''

(१९९३, श्रीफ़ातिमा पूजा, इस्तंबुल)

पश्चिम में, बहन क्या है, भाई क्या है यह समझने की व्यवस्था ही उन्होंने खो दी है :

''... जब हम दोषी अनुभव करते हैं, प्रथम हम दोषी अनुभव करते हैं,

जब हमारा सम्बन्धों के प्रति बोध ठीक न हो। उदाहरण के लिए, हम भाई-बहन के सम्बन्ध को नहीं समझते हैं, जो इतना पवित्र है और हर प्रकार की अपवित्रता से ऊपर है। परन्तु जैसा कि आप जानते हैं, पश्चिम में, शायद पीने के कारण या हर प्रकार के कार्य करने के कारण, जो चेतना के विरोध में हैं, लोगों में अच्छाई खो गई है और उसमें उनकी वह व्यवस्था भी खो गई है जिससे बहन क्या है, भाई क्या है, समझने की शक्ति होती है...''

(१९८८, श्रीविष्णुमाया पूजा, शूडी कैम्प, यू.के.)

भाई-बहन का सम्बन्ध

आधुनिक समाज में स्त्री और पुरुष के सम्बन्धों ने अपनी सीमाएं खो दी हैं। अबोधिता और पवित्रता के गुणों का सम्मान नहीं होता, जब कि वे सन्तुलित समाज का आधार हैं।

विवाह के बाहर स्त्रियों और पुरुषों को भाई-बहन का सम्बन्ध रखना चाहिए, जो सम्मान से अबोधिता एवं सुरक्षा से परिपूरित हो। श्रीमाताजी ने एक बार कहा कि, 'यदि ऐसा हो जाए तो वह मेरे लिए अति आनन्ददायक दिन होगा।'

सच्ची स्वतन्त्रता और संरक्षण समाज में, धर्मपर आधारित हैं जिसमें स्त्रियों के लिए प्रत्येक पुरुष भाई है और पुरुषों के लिए, सब स्त्रियां बहनें हैं। ऐसी पवित्र भावनाओं से हम एक दूसरे के साथ का पूरा आनन्द उठा सकते हैं और अनैतिक समाज में जो हर समय का भय व तनाव होता है, उसे दूर कर सकते हैं।

एक विशुद्ध सम्बन्ध

सहजयोग के समाज में उस पवित्रता को बचा कर रखना है :

''... अब अखिरी दिन (दीवाली का) बड़ा महत्वपूर्ण है, बड़ा व्यापक दिन है, मैं कहूंगी, जिसे 'भाईदूज' कहते हैं। इसे मराठी में 'भाऊबीज' कहते हैं। भाई और बहन का सम्बन्ध अत्यधिक मजबूत होना चाहिए और उस सम्बन्ध की पवित्रता को बनाए रखना चाहिए। यह आवश्यक नहीं है कि आप लोग भाई और बहन के रूप में जन्में हों, परन्तु आप जन्मे हैं क्योंकि यदि आप साक्षात्कारी हैं, तो आप भाई और बहन के रूप में जन्में हैं।

सो, सहजयोग के समाज में वह पवित्रता बनायी रखनी चाहिए, बड़ा महत्वपूर्ण है कि हम ऐसी स्थिति को विकसित करने का प्रयत्न करे जिसमें भाई और बहन बड़े पवित्र हैं। उनके सम्बन्ध बड़े विशुद्ध होते हैं। और उन्हें कभी भी ललकारना नहीं चाहिए। यहाँ तक कि यदि आप किसी को अपना भाई कहें, तो वह आप का भाई है और इस सम्बन्ध को आप जितना विकसित करेंगे, उतनी ही आपकी बायी विशुद्धि बेहतर होगी। क्योंकि बायी विशुद्धि, परमात्मा के साथ सम्बन्ध है, भाई के रूप में और देवी के साथ बहन के रूप में...।''

(१९८१, दिवाली पूजा, यू.के.)

हमारे आपसी सम्बन्ध को पवित्र और पवित्र और पवित्र होना है :

''... इसी प्रकार सहजयोगी और सहजयोगिनी, भाई-बहन हैं। आप को यह समझना है कि आप भाई-बहन हैं और हमारे आपसी सम्बन्ध को पवित्र और पवित्र और पवित्र होना है...''

(१९८०, रक्षा बन्धन, लन्दन)

यह सम्बन्ध सहजयोग में आप के विकास और शुद्धता का पोषक है :

''... और यह (भाई-बहन का सम्बन्ध) इतनी सुन्दरता से बनाये

रखना है कि यह पवित्रता कभी दूषित न हो। आप शुद्ध स्तर में रहें। यह सहजयोग का पोषण है, यह आपके विकास व शुद्धता का पोषण है। पवित्रता हमारे लिए सब से महत्वपूर्ण चीज़ है, हर प्रकार की शुद्धता। यदि आप पवित्र हैं तो आप कुछ कृत्रिम नहीं करेंगे, अर्थात् जो पवित्र न हो।

सो, सर्वप्रथम, आप स्वयं शुद्ध रहेंगे और आप पवित्रता को स्वीकारेंगे, पवित्रता की तारीफ़ करेंगे और आप पवित्रता द्वारा संभले रहेंगे। कोई भी अपवित्रता आप के साथ हाथ नहीं जोड़ेगी या समझौता करने का प्रयत्न नहीं करेगी। इसलिए पवित्रता आप की माँ का नाम है। आप को पता है कि मेरा नाम पवित्रता है और यह पवित्रता ऐसी है कि वह सब कुछ पवित्र कर देती है। पवित्रता ऐसी होनी चाहिए कि वह पवित्र कर दे, अन्यथा पवित्रता का कोई अर्थ नहीं है...''

(१९८२, दिवाली पूजा, लन्दन)

सहजयोग में हम धर्म के मार्ग से विचलित नहीं हो सकते :

''... परन्तु मुझे आप से बताना है कि यदि आप नीति के मार्ग से हट कर किसी भी दिशा में चले जाते हैं तो फिर सहजयोग ही आप को बचा सकता है। पुनः सन्तुलन में आने के लिए और कोई मार्ग नहीं है। और एक बार आप सहजयोग में आते हैं तो आप धर्म के मार्ग से विचलित नहीं हो सकते। यदि आप ऐसा करते हैं तो आप सहजयागे से बाहर चले जाते हैं। यह इतना सीधा है।

ऐसा नहीं है, 'ठीक है, कोई फ़र्क नहीं पड़ता, माँ को माफ़ कर देना चाहिए।' ये चीज़ें मैं क्षमा कर देती हूँ, ठीक है, मैं क्षमा करती हूँ, क्योंकि आप में अभी भी कुछ मनुष्यों की कमज़ोरियां हैं, इसलिए मैं क्षमा करती हूँ।

परन्तु सहजयोग में आप नहीं कर सकते। सहजयोग को अपनी पवित्रता बनाए रखनी है। यदि आप ऐसे सब लोगों को सहजयोग में प्रवेश करने की अनुमति देते हैं तब सहजयोग में कोई पवित्रता नहीं होगी और फिर सभी ऐसा या वैसा करना शुरू कर देंगे और कहेंगे, 'आखिर, हम सब सहजयोगी हैं, वे भी सहजयोगी हैं, यदि उन्होंने किया है, तो हम क्यों नहीं...''

(१९९८, न्यू इअर पूजा, भारत)

यदि वे यहाँ व्यवस्थित किये जा सकते तो यह मेरे लिए अति आनन्द का एक बड़ा दिवस होगा :

''... परन्तु मैंने पाया कि ये भाई-बहन के सम्बन्ध, भारत में इतनी सुन्दरता से व्यवस्थित हैं, कि यदि यहाँ भी वे ऐसे ही व्यवस्थित हो जाएं तो यह मेरे लिए वास्तव में अति आनन्द का दिन होगा क्योंकि उसका अर्थ है कि आपने इस अनैतिकता के शैतान पर विजय पा ली है। पवित्रता, काम वासना व लोभ को पूर्णतया मन से हटाना और अपनी बहन को स्नेह देना। भारत में यह सार्वजनिक है, सब की बहन होती है:सब सहजयोगियों की बहन होती है और वे अपनी बहन का उस प्रकार ध्यान रखते हैं...''

(१९८३, दिवाली पूजा, हैम्पस्टैड, यू.के.)

आईये, पवित्रता को समझ कर अपनी बायीं विशुद्धि को स्थापित करें :

''... आईये, आज हम स्थिर हो जाएं और आपस में यह तय करें कि हमें भाई-बहन की पवित्रता समझ कर अपनी बायीं विशुद्धि को स्थापित करना है। भाई-बहन की पवित्रता को स्थापित करना है...''

(१९८०, रक्षा बन्धन, लन्दन)

इस विचार पर कि, सब मेरे भाई-बहन हैं, मन को शुद्ध करें :

''... आज के दिन हम भारत में भाई-बहन के सम्बन्ध को मनाते हैं। वे बड़े पवित्र हैं। भाई-बहन का रिश्ता बिना काम-वासना और लालच के होता है। यह पवित्र रिश्ता है जहाँ बहन अपने भाई की सुरक्षा के लिए प्रार्थना करती है और भाई अपनी बहन के क्षेम के लिए प्रार्थना करता है।

सो, इस समय आपको अन्य सहजयोगी और सहजयोगिनियों के विषय में अपने भाई-बहन के रूप में सोचना है। आप को वैसा सोचना है। अपने हृदय को शुद्ध करें। इन देशों में बड़ी अजीब बात है कि ऐसा कोई सम्बन्ध नहीं है। उस विचार पर आज अपने मन को शुद्ध करें कि बाकी सब मेरे भाई-बहन हैं। यदि आप विवाहित हैं तो ठीक है, पर बाकी सब को अपने भाई-

बहन के रूप में देखने का प्रयत्न करें...''

(१९८३, दीवाली पूजा, यू.के.)

यदि स्त्रियों के प्रति आप की बहनत्व की भावनाएं अच्छी और मज़बूत हैं, तो आपकी बायीं विशुद्धि बड़ी अच्छी होगी :

''... जैसा कि आप जानते हैं कि श्रीकृष्ण की बहन नंद के घर उत्पन्न हुई थी और श्रीकृष्ण स्वयं कारागार में जन्मे थे और आपस में अदलबदल कर दी गई। उन्हें श्रीकृष्ण के स्थान पर लाया गया और जब कृष्ण के मामा कंस ने उसे मारने का प्रयत्न किया, तो वह आकाश में चली गई और बिजली के समान वह बोली, 'तुम्हें मारने वाला अभी भी गोकुल में रह रहा है, 'सो, यह बिजली जो हम देखते हैं, वह उस शक्ति का प्रतिनिधित्व करती हैं, जिसे हम विष्णुमाया कहते हैं, यह बहन की शक्ति है। यदि आप की बहनत्व की भावनाएं स्त्रियों के प्रति अच्छी व मज़बूत है तो आप की बायीं विशुद्धि बहुत अच्छी होगी...''

(१९८१, दिवाली पूजा, यू.के.)

यह सम्पूर्ण पवित्रता की भावना अपनी कई समस्याओं को साफ करती है :

''... परन्तु यदि एक व्यक्ति एक सहजयोग और एक सहजयोगिनी है, तो इस पवित्रता की भावना को अपने अन्दर विकसित होने दें। आप हैरान होंगे, वह अनेक समस्याओं को निकाल देगी, हमारा चित्त हमारे अन्दर बड़ी सुन्दरता से स्थिर हो जाएगा...''

(१९८०, रक्षा बन्धन, लन्दन)

सहजयोगिनियों को पवित्र स्त्रियाँ होना है और पुरुषों को भी :

''... यह अजीब देश है जहाँ कोई भी सम्बन्ध पवित्र नहीं है। ऐसी गन्दगी है कि यदि आप पढ़ेंगे तो विश्वास नहीं करेंगे, ऐसा व्यभिचार। विशेष कर अबोध बच्चों पर आक्रमण हो रहा है। उन के बारे में कौमार्य रूप सोचें। सावधान रहें और छोटी लड़कियों को जानना चाहिए कि वे कुमारी है। यदि वे लड़कों के साथ बाहर जाती हैं, और वे सहजयोगी हैं, तो वे सही नहीं है।

सहजयोगिनियों को पवित्र स्त्रियाँ होना है, शक्तिशाली, पवित्रता उनकी शक्ति है और पुरुषों को भी। सहजयोग के बाद, पुरुषों को अपनी पवित्रता के प्रति सचेत होना चाहिए, वह उनकी भी शक्ति है...''

(१९८३, दिवाली पूजा, यू.के.)

यदि आप किसी को बहन कहें तो इससे अहंकार नीचे आता है :

''... मर्यादाओं के पीछे जो धारणा है, वह यह है कि जब आप किसी को बहन या भाई कहते हैं तो यह केवल बोलने भर की बात नहीं होती है, 'आप मेरी बहन हैं।' यह अन्दर से होता है और बड़ा गहरा है। आप को वह बहन की भावना को विकसित करना है, क्योंकि इसी प्रकार आप की उत्कृष्टता ऊपर आएगी, आप की बायीं विशुद्धि सुधरेगी, आप की विष्णुमाया को सन्तुष्टि मिलेगी। यदि आप किसी को बहन बुलाएंगे-बहन के, बेटी के, माँ के सम्बन्ध, अहंकार को नीचे ले आते हैं, जो कि बाईं विशुद्धि में छुपा है।

इसलिए, जिसे आप बहन कहते हैं, उसके साथ दयालु एवं विनम्र रहने का प्रयत्न करें, उसका साथ दें, उसका ख्याल रखें। यदि आप किसी को भाई कहते हैं तो आपको उसकी सुरक्षा के लिए प्रार्थना करनी है और तभी आप को भी उससे सुरक्षा माँगने का अधिकार होता है। और आप को उसे कुछ देना भी है और उसकी देखभाल का प्रयत्न करना है, अपने घर में उस का स्वागत होना चाहिए और उसे अपना अंग-प्रत्यंग समझना चाहिए क्योंकि वह आपके बहुत करीब है, क्योंकि वह आपका भाई है और वह आपके बहुत करीब है...''

(१९८४, रक्षा बन्धन, यू.के.)

ये बातें अपने आप ही कार्यान्वित होगी :

''... दोनों गुणों का पोषण और विकास होना चाहिए और पुरुष और स्त्री के बीच पवित्र प्रेम का रिश्ता होना चाहिए, पवित्र प्रेम। एक बार आप स्वयं को पवित्र बनाना शुरू करेंगे तो ये चीज़ें स्वत: कार्यान्वित होंगी और आप एक दूसरे का सम्मान करेंगे...''

(१९८३, दिवाली पूजा, यू.के.)

इस प्रकार का सस्ता दिलफेंक धंधा सहजयोग के लिए नहीं है :

''... जब एक स्त्री विपत्ति में होती है, एक पुरुष उस की मदद के लिए आएगा, यहाँ तक कि यदि वे विवाहित हैं, वह उसके साथ भाग जाएगा, इस प्रकार की मदद वह उसे विपत्ति में डाल देता है, एक दूसरी विपत्ति बनाने के लिए। सो, इस प्रकार हमें समझना चाहिए, कि इस प्रकार का बाजारू दिल फेंक धंधा सहजयोग के लिए नहीं है। हमारे हृदय में आत्मा निवास करती है। हम लोग प्रतिष्ठित लोग हैं और हमें उस प्रतिष्ठा में ऊपर उठना है और उस प्रतिष्ठा के साथ रहना है और आत्मा का अपमान नहीं करना चाहिए या उसे किसी के वशीभूत नहीं होने देना चाहिए...''

(१९८४, रक्षा बन्धन, यू.के.)

यह पवित्रता का बड़ा मधुर और नाजूक सम्बन्ध है, सहायता का :

''... विष्णुमाया के सम्बन्ध में यह है कि विष्णुमाया श्रीकृष्ण की बहन है। उसने ही श्रीकृष्ण के आगमन की घोषणा की थी। उसने अपना जीवन, श्रीकृष्ण के जीवन को बचाने के लिए त्याग दिया। विष्णुमाया श्रीकृष्ण के सब ओर रहती है और वह द्रौपदी के रूप में जन्मी थी, जो कि बाद में दुर्योधन द्वारा अपमानित हुई थी और श्रीकृष्ण ने ही आ कर उसकी सहायता की।

सो, यह बड़ा मधुर सम्बन्ध है, पवित्रता एवं सहायता का। एक बड़ा नाजुक सम्बन्ध भाई-बहन का रखना चाहिए और आज वह विशेष सम्बन्ध है। जो लोग आज राखी बाँधना चाहते हैं, वे मेरे सम्मुख आज बाँधें। यह किसी भी अन्य सम्बन्ध से बड़ा सम्बन्ध है क्योंकि वहाँ कोई आप की अपनी बहन है। परन्तु यदि वह आप की अपनी बहन नहीं है तो आप याद रखें कि आप सब एक ही माँ से पैदा हुए हैं। सो, भाई-बहन का सम्बन्ध ठीक होना चाहिए...''

(१९८४, रक्षा बन्धन, यू.के.)

भाई और बहन को सदैव खुले तरीके से कहना चाहिए जो भी वे सोचते हैं - कि क्या गलत है :

''... सो, आज एक बहुत बड़े सम्बन्ध का दिन है, भाई-बहन के बीच

में, जहाँ एक बहन कभी अपराधी नहीं अनुभव करती और न ही भाई स्वयं को दोषी अनुभव करता है। भाईयों और बहनों को कभी भी अपने बारे में दोषी नहीं महसूस करना चाहिए और उन्हें सदैव खुले तरीके से बताना चाहिए, जो भी वे सोचते हैं कि गलत है या सही है। इस में कोई हानि नहीं है, एक बहन सदा अपने भाई को सुधार सकती है व भाई अपनी बहन को सुधार सकता है।

यह ऐसा सम्बन्ध है जिसमें किसी को भी बुरा नहीं मानना चाहिए क्योंकि यह अत्यधिक शुद्ध सम्बन्ध है जिसकी आप कल्पना कर सकते हैं। माँ के रूप में यदि वह कुछ कहती है तो आयु के इतने बड़े अन्तर के कारण आप शायद न समझें। हो सकता है, यदि पिता कुछ कहें, तो बच्चे न समझें, आयु का अन्तर अधिक है। परन्तु भाई और बहन, यदि वे आपस में सहजयोग को समझें, तो उन्हें पूर्ण अधिकार है, यह कहने का, कि उनमें क्या गलत है आरै उसे ठीक करें, न कि उसे दोषी भावना के रूप में रख लें...''

(१९८७, श्रीविष्णुमाया पूजा, न्यूयौर्क)

हमें अपने बीच में एक बड़े पवित्र संबंध में स्थिर होना है :

''... परन्तु अब राखी-बहन के साथ और बेहतर है। राखी-बहन के साथ हमने एक बड़ा सुन्दर वातावरण स्थापित कर लिया है, कि जो कोई भाई है, उसके साथ आप गलत संबंध नहीं रख सकते। यह आप में प्रेमालाप का स्वांग खत्म कर देता है, सब प्रकार के अजीब सम्बन्धों को विवाह के टूटने की अलग-अलग समस्याएं, लोगों की भटकन, एक बार जब आप समझ गये हैं कि हमें पहले अपने बीच में एक अत्यन्त पवित्र सम्बन्ध में स्थिर होना है।

इस प्रकार से, सहजयोग में, हम उस पवित्र सम्बन्ध को स्थापित करते हैं। और आप को यह देखना है कि यह पवित्र सम्बन्ध आप को आनन्द, प्रसन्नता और खुशी देता है। यह पवित्र सम्बन्ध कोई जबरदस्ती का नहीं है। यदि आप अपनी बहन को कुछ नहीं दे सकते हैं या भाई अपनी बहन के लिए कुछ नहीं कर सकता, तो कोई बात नहीं। सम्बन्ध हृदय में है और तब अनुभव होता है जब आप उस सम्बन्ध को अनुभव करते हैं, उस मधुरता को पवित्रता

को, तब वह बहता है। मुझे कुछ लोग पता हैं, जिन्होंने भाई और बहनों के लिए कितने त्याग किये हैं...''

(१९८७, श्रीविष्णुमाया पूजा, न्यूयौर्क)

मेरी पत्नी के सिवाय, सब मेरी बहने हैं :

''... यह सम्बन्ध इतना पवित्र है जिसे कुछ नहीं चाहिए। पत्नी कह सकती है कि, 'यदि आप मुझे कोट नहीं दोगे तो मैं तलाक दे दूंगी।' इंग्लंड और ज्यादा तर अमेरिका में ऐसा होता है। परन्तु एक बहन तलाक नहीं दे सकती। इस बार समाचार पत्र में उन्होंने मेरे भाई का नाम छपवाया, सो मैंने कहा, 'मैं क्या कर सकती हूँ? वह मेरा भाई है।' अच्छा या बुरा, वह मेरा भाई है। मैं उसे तलाक नहीं दे सकती। यह एक ऐसा सम्बन्ध है जिसे आप तोड़ नहीं सकते हैं। यह सम्बन्ध आप को प्रकृति ने दिया है।

परन्तु जब आप सामूहिकता में आते हैं, तो इस सम्बन्ध का सम्मान करना चाहिए, यह बड़ा महत्वपूर्ण है। यदि इस सम्बन्ध का आप सम्मान नहीं करते तो आप, सामूहिकता में कार्यान्वित नहीं कर सकते हैं। जैसे कि एक 'पार्टी' में मैं जाती हूँ और अनुभव करती हूँ कि कुछ अजीब सा हो रहा है। किसी की पत्नी किसी के पति के साथ फँसी हैं। हर प्रकार की अजीब हरकतें होती हैं। परन्तु सामूहिकता में, यदि आप जानते हैं कि मेरी पत्नी के सिवाय, बाकी सब मेरी बहनें हैं और आप की आँखें स्थिर हो जाती हैं। आप की आँखों से अबोधिता छलकती हैं। यह बहुत सीधी बात है...''

(१९८७, श्रीविष्णुमाया पूजा, न्यूयौर्क)

भाई-बहन के सम्बन्ध की सुन्दरता और शक्ति :

''... आपने देखा होगा कि जब साक्षात्कार मिल जाता है तो आप की आँख में चमक आ जाती है, वह विष्णुमाया है। यह विष्णुमाया है जो आप की आँखों में चमकती है और वही आप को माया से निकालती है। आप ने देखा होगा कि, जो आत्मसाक्षात्कारी लोग होते हैं उनकी आँख में चमक होती है और यही चमक आप को भाई-बहन के सम्बन्ध की सुन्दरता को समझाती है एवं अनुभव कराती है। सहजयोग के प्रारम्भ में मुझे इसे स्थापित

करना असंभव लगा, सो, मैंने कहा, ‘चलो, विष्णुमाया का प्रयत्न करते हैं।’ और यह कार्यान्वित हुआ। वास्तव में हमें स्वभावत: पता है कि यह गलत है। हमें प्राकृतिक तरीके से पता है कि यह गलत है। हमें उसके लिए कानून नहीं चाहिए...’’

(१९८७, श्रीविष्णुमाया पूजा, न्यूयौर्क)

इस सम्बन्ध को अत्यन्त स्वच्छ रखना है :

‘‘... सो, सब को यह समझ लेना है कि इस सम्बन्ध को अत्यन्त स्वच्छ, सुन्दर और पूर्णतया खुला रखना है, उसमें कोई औपचारिकता नहीं होनी चाहिए, कि एक भाई कहे, ‘आई एम सॉरी’ और बहन कहें, ‘आई एम सौरी।’ आपको खुले तरीके से कहना है, आपको कभी अपने भाई या बहन के विषय में बुरा नहीं मानना चाहिए।

परन्तु यह इसके विपरीत भी हो सकता है। मैंने लोगों को देखा है, जैसे कि एक भूतग्रस्त स्त्री थी जो पता चला कि अत्यन्त भूतग्रस्त है और तब किसी ने कहा कि, ‘परन्तु वह मेरी राखी-बहन है।’ तो क्या हुआ, ज्यों ही वह भूतमयी हो जाती हैं तो कोई राखी नहीं है, कोई भी अपवित्रता आती है तो और राखी नहीं, समाप्त। वह काफ़ी समय पूर्व टूट गयी...’’

(१९८८, श्रीविष्णुमाया पूजा, शूडी कैम्प, यू.के.)

इसे कभी भी आपकी विवेक बुद्धि को ढकना नहीं चाहिए :

‘‘... आपको शुद्ध व्यक्तित्व के शुद्ध सम्बन्ध रखने हैं। आप का अपवित्र व्यक्तित्व नहीं हो सकता और फिर मुझे सहायता करनी है, ‘मुझ में राखी के लिए कमजोरी है’ यह सब ने अमेरिका में मेरे लिए अनेक समस्याएं खड़ी की हैं, यह राखी बहन का धंधा। आप देखिए, यह उसकी राखी-बहन है और इस राखी-बहन ने एक समस्या खड़ी करनी शुरू कर दी, हम कह सकते हैं षडयंत्र रचना। उसने अपने राखी-भाईयों को फोन करना शुरू कर दिया और सब राखी-भाई उस षडयंत्र में शामिल हो गये। सो, किसी भी प्रकार इससे आपकी विवेकशीलता बीच में खड़ी होती है...’’

(१९८८, श्रीविष्णुमाया पूजा, शूडी कैम्प, यू.के.)

इस राखी सम्बन्ध को सहजयोग के लिए संभालने वाला एवं पोषक होना चाहिए :

''... समझना चाहिए कि जब राखी-बहन आप को कुछ बता रही है- क्या यह सहजयोग के विरोध में है या सहजयोग के लिए है? वह बीच में विवेकशीलता है। आपको विवेक से यह देखना चाहिए कि राखी का सम्बन्ध पोषक होना चाहिए, सम्भालने वाला होना चाहिए और सहजयोग के लिए सहायक होना चाहिए अन्यथा इसका अस्तित्व नहीं है। हम सहजयोग में भाई-बहन हैं। जो भी इसे तोड़ता है, तो वहाँ कोई भी सम्बन्ध नहीं है। यदि आप इस साधारण बात को समझें तो मैं सोचती हूँ कि आज हमने अच्छा काम किया है...''

(१९८८, श्रीविष्णुमाया पूजा, शूडी कैम्प, यू.के.)

बहन और भाई की भूमिकाएं

I. बहन की भूमिका

वह उसे सही मार्ग दिखाती है, प्रकाशित करती है और कभी-कभी आघात देती है :

''... हर जगह पर जो विद्युत का काम है वह बहन अपने भाई के लिए करती है-उसके लिए खाना पकाती है, सही मार्ग बताती है, उसे वह प्रकाशित करती है और कभी उसे आकस्मिक आघात भी देती है। उन्हें कुछ आघात मिलने ही हैं, अन्यथा उन्हें यह ज्ञात नहीं होगा कि इसे कैसे कार्यान्वित करना है। और सबसे उत्तम, आप को सावधान रहना होगा कि किस, तकनीकी से आप को बहन को सम्भालना है। यदि आप को पता नहीं है कि बहन को कैसे सम्भालना है, तो आप पूर्णतया गलत हो सकते हैं और आप को वह मिल सकता है जिसकी आपने कभी अपेक्षा नहीं की होगी...''

(१९८७, श्रीविष्णुमाया पूजा, न्यूयौर्क)

यह सम्बन्धों को बढ़िया तरीके से जोड़ता है :

''... बहन का सम्बन्ध सदा पति-पत्नी के लिए मज़बूत जोड़ देता है। मुझे पता है कि यदि मेरे पति मुझे कष्ट देने का प्रयत्न करेंगे तो उनकी खुद की बहन ही उनके पीछे पड़ जाएगी। और उन्हें इस बारे में सावधान रहना चाहिए और वही मेरे लिए है। यदि मैं कुछ गलत करूंगी तो मेरा भाई मेरे पति का साथ देगा, मेरा नहीं। सो यह सम्बन्धों को सीमेंट के समान जोड़ता है...''

(१९८७, श्रीविष्णुमाया पूजा, न्यूयौर्क)

यह बहन आप को धार्मिक बनना सिखाती है :

''... ऐसी बात से पत्नी भी बड़ी खुश होती है (रक्षा बन्धन) क्योंकि यदि पति की बहन नहीं होती है तो वह अपने पति के साथ विवाहित जीवन का आनन्द कैसे लेगी? क्योंकि पति की आँखें दूसरी स्त्रियों की ओर सदा

रहेगी। यह बहन आप के चित्त को ऐसा रखना सिखाती है कि आप स्वत: धार्मिक बन जाते हैं...''

(१९८०, रक्षा बन्धन, लन्दन)

II. भाई की भूमिका

श्रीकृष्ण अपने सभी शस्त्र ले कर अपनी बहन की पवित्रता को बचाने के लिए आए :

''... इसी प्रकार जब द्रौपदी को ललकारा गया, तब श्रीकृष्ण हस्तिनापूर में नहीं थे, जहाँ वह हुआ था। वे हज़ार मील से भी अधिक दूरी पर थे। उन्होंने कहा, 'शंख, चक्र, गदा, पद्म, गरुड, लई सिधारे।' वे अपने वाहन पर सभी अस्त्र-शस्त्र, शंख, चक्र, गदा, पद्म ले कर आये। ये सब वे अपनी बहन की पवित्रता बचाने के लिए लाये।

हमारे इतिहास में अनेक घटनाएं हैं, मैं नहीं जानती कि मैं आप के इतिहास में से कुछ बता सकती हूँ। परन्तु मैं कहूंगी कि जब मैं अब्राहम लिंकन को देखती हूँ, मैं सोचती हूँ कि वे 'स्टैच्यू ऑफ़ लिबर्टी' के महान भाई थे। जिस प्रकार वे स्त्रियों के लिए लड़े इतने पवित्र प्रेम से, बिना कुछ पैसे लिए, शराबी पतियों को सजा देने के लिए। यह एकदम एक अच्छे और शक्तिशाली भाई का व्यवहार है। परन्तु मैं सोचती हूँ कि अब, वे भावनाएं खत्म हो रही हैं...''

(१९८७, श्रीविष्णुमाया पूजा, न्यूयौर्क)

एक बहन की रक्षा होनी चाहिए :

''... जो भाई अपनी बहन के पति की पवित्रता की परवाह नहीं करते और गलत कार्य करने में समर्थन देते हैं व करने को कहते हैं, उसकी गलतियों को छुपा देते हैं, तो ऐसा करने वाला भी इस गलत कार्य में उतना ही जिम्मेदार है। जैसे कि सहजयोग में आप जानते हैं कि बहन की रक्षा की जानी चाहिए और बहन का पति, यदि कुछ गलत कर रहा हो, तो भाई को उसे बता देना चाहिए।

एक बार भारत में एक समाचार पत्र ने मेरे बारे में कुछ टिप्पणी की। मेरे

भाई लड़ने को तैयार थे। मैंने सोचा, 'अब यह तो बड़ा भयंकर होने वाला है, मैं कैसे इसकी व्यवस्था करूं?' यह एक बड़ी समस्या थी।

वे लोग न्यायालय में जाने वाले थे, तब मैंने उनसे कहा, 'मैं न्यायालय में नहीं जाऊंगी।'

'ठीक है, मत जाओ, परन्तु हम जाएंगे।' उन्होंने मेरे पति से भी कहा। मुझे समझ नहीं आया कि क्या करूं। मैंने एक सहजयोगी को पत्र लिखा कि, 'जा कर समाचार पत्र के सम्पादन से मिलो, उसे कहो, कि ये मेरे भाई हैं, सावधान हो जाओ। वे भारत में बड़े शक्तिशाली लोग हैं और यहाँ से मेरे पति।' यह बड़ा भयंकर था।

परन्तु उन लोगों ने क्षमा नहीं माँगी, सो मैंने विष्णुमाया का सोचा, एक बड़ी हड़ताल हुई और वह समाचार पत्र पूरे छः महीने के लिए बन्द हो गया। उन्हें बहुत बड़े घाटे पड़े और जब उन्होंने पुनः प्रारम्भ किया तो उनके कर्मचारियों ने कहा, 'आप ने क्यों श्रीमाताजी के विरोध में लिखा था? हम वापिस नहीं आएंगे' और उन्हें क्षमा माँगनी पड़ी...''

(१९८७, श्रीविष्णुमाया पूजा, न्यूयौर्क)

कितनी काव्यमयी बात कही :

''... इतिहास में दो बड़ी सुन्दर घटनायें हुई हैं, जो मेरे दिमाग में इस समय आ रही है, मैं आपको बताऊंगी, उनमें से एक है शिवाजी की। जब शिवाजी दो बार उनके जीवन में बड़ी विलक्षण घटनाएं हुईं, एक बार उनके समक्ष एक बड़ी सुन्दर स्त्री को उपस्थित किया गया। लोगों ने उसकी सब वस्तुएं, गहने लूट लिए थे क्योंकि वह एक मुसलमान वेश्या की लड़की थी। उन्होंने उसे लूटने का प्रयत्न किया और उसे शिवाजी के समक्ष लाये।

शिवाजी ने उसे देख कर कहा कि, 'कृपा कर के अपना नकाब हटाओ।' क्योंकि मुसलमान स्त्रियाँ नकाब रखती थीं। जब उसने नकाब हटाया, उन्होंने कहा, 'यदि मेरी माँ तुम्हारे समान सुन्दर होती तो मैं भी इतना ही सुन्दर होता।'

कितनी काव्यमयी बात कही, 'यदि तुम मेरी माँ होती तो मैं भी इतना ही

सुन्दर होता। अर्थात् तुम मेरी बहन हो।' तब वे उन सब लोगों के साथ बड़े क्रोधित हो गये और पूछा, 'आप इसे वापिस ले जाओ और ऐसे किसी स्त्री के साथ नहीं करना।' यही नहीं, उन्होंने उसे अनेक गहने और वस्तुएं दीं, यह कहने के लिए, कि वह बहन है, जो अपने पति के पास पूरे सम्मान के साथ जा रही है। उसका पति शिवाजी का खतरनाक दुश्मन था। कैसे उन्होंने इतनी पवित्रता के साथ समस्या का हल निकाला और उसका पति इस भावना के कारण नर्म व्यक्ति बन गया...''

(१९८७, श्रीविष्णुमाया पूजा, न्यूयौर्क)

केवल एक राखी पर। कल्पना कीजिए, केवल एक राखी :

''... दूसरा, उनके जीवन काल में एक किला था, जो अब मेरे घर के समीप है, पूना में। एक राजपूत स्त्री थी, जिसका नाम कमल कुमारी था। वह एक पुरुष द्वारा बन्दी बनायी गयी थी, जो उस किले का अफ़सर था, वह मुस्लिम था। और वह इस कमल कुमारी से कह रहा था, 'तुम मुझ से विवाह करो।' वह इसे स्वीकार नहीं करती थी। वे लोग उसे कहीं से जबरदस्ती उठा लाये थे। उसे स्वीकार नहीं था, वह राजपूत थी। और उसने कहा, 'कल तक तुम्हें मेरे साथ विवाह करना होगा।' इस स्त्री को समझ नहीं आया क्या करे सो किसी के साथ बड़ी गोपनीयता से उसने शिवाजी को एक पत्र, राखी के साथ भेजा, परन्तु वह शिवाजी की माँ के हाथ पहुँचा।

माँ ने शिवाजी को घोड़े पर संदेश भेजा, 'जितनी जल्दी हो सकता है, यहाँ आओ, यदि आप खाना खा रहे हो तो यहाँ आ कर हाथ धोना।' उस हद तक। शिवाजी अपनी माँ के अत्यन्त आज्ञाकारी थे। हमें उनके चरित्र से सीखना चाहिए। वे जल्दी से वहाँ गये, क्योंकि आज्ञा पालन उनकी शक्ति थी। वे वहाँ पहुँचे और पूछा, 'माँ क्या है?' तो उन्होंने कहा, 'मैं आप के साथ शतरंज खेलना चाहती हूँ।'

उन्होंने कहा, 'अभी क्यों?' 'मुझे शतरंज खेलना है।' वे समझ नहीं सके माँ ने शतरंज खेली व जीत गयी। वे उन्हें बता सकती थीं परन्तु वे उन पर विष्णुमाया का प्रभाव डालना चाहती थीं।

वे हार गये, 'माँ, आपकी क्या इच्छा है?'

उन्होंने कहा, 'आज मैं चाहती हूँ कि रात तक इस किले को हासिल करो।'

'आज?'

'हाँ।'

तब उन्होंने शिवाजी को पत्र एवं राखी दिखायी। राखी इतनी शक्तिशाली थी कि माँ को अपने बेटे से कहना पड़ा, जो कि महाराष्ट्र को मुसलमानों के चंगुल से छुड़ाने के लिए जिम्मेदार थे, कि उन्हें उस किले को जा कर हासिल करना है। एक धागे से इतना शक्तिशाली संदेश। वे आए और चिन्तित थे कि कैसे करें? अचानक ही एक भद्र पुरुष तानाजी, उन्हें अपने बेटे के विवाह के लिए, अपने काका के साथ आमन्त्रित करने आ पहुँचे। और उन्हें इतना चिन्तित देखा और पूछा, 'आप इतने चिन्तित क्यों हैं महोदय?'

उन्होंने कहा, 'मेरी माँ ने ऐसी माँग की है।' उसने कहा, 'ठीक है, मैं जा रहा हूँ। आप को जाने की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि हमारे पास मेरे जैसे अनेक तानाजी होंगे, परन्तु हमारे पास एक ही शिवाजी है, मैं यह करूंगा।' उन्होंने कहा, 'परन्तु तुम्हारे बेटे का विवाह होने वाला है।'

उसने कहा, 'पहले मेरी तलवार का विवाह इस किले से होने दें, बाद में मैं अपने बेटे का विवाह करूंगा।'

ऐसे लोग भी थे। ऐसा त्याग। केवल उस राखी पर। जरा सोचिए, केवल एक राखी। ठीक है, वे इस लड़की को पहचानते नहीं थे, वे उसके पिता को नहीं जानते थे, उन्हें उसके विषय में कुछ भी जानकारी नहीं थी। उन्होंने उसे कभी देखा नहीं था। क्या आप किसी के बारे में सोच सकते हैं, जो आधुनिक समय में ऐसा करेगा? हम अपने को बड़ा उत्कृष्ट शक्तिशाली महान लोग समझते हैं। यहाँ तक कि फ़िल्मों में भी हमें यह दिखाने की ज़रूरत नहीं है, कोई भी ऐसी फ़िल्म को देखने नहीं आएगा क्योंकि वे स्वयं को हीन अनुभव करेंगे।

वे वहाँ गये और एक प्रकार के अंकुश का उपयोग किया जिसने किलों को दृढ़ता से जोड़ दिया। एक रस्सी के साथ वे ऊपर चढ़े और किले को जीत लिया।

यह तय किया गया था कि यदि वे सफ़ल हुए तो वे आग जलाएंगे जिसे शिवाजी देख कर नीचे आ जाएंगे। उन्होंने प्रात:काल आग देखी व वहाँ गये और एक पेड़ के नीचे तानाजी का शव पड़ा था। उन्होंने उसे देखा और कहा, 'हमें किला तो मिल गया परन्तु हमने एक शेर खो दिया है।' इसलिये इसे शेर का किला कहते हैं-सिंहगढ़, जिसे आप मेरे घर से स्पष्ट देख सकते हैं। पर ये एक छोटी सी चीज़ राखी के स्मारक है। एक छोटा सा अभिव्यक्ति का प्रतीक, जो कि किले पर किले हासिल कर सकता है...''

(१९८७, श्रीविष्णुमाया पूजा, न्यूयौर्क)

मुझे पता था कि यह युक्ति भारतीय दिमाग से कार्य करेगी :

''... एक दूसरा, यह कहानी मैंने पहले भी कही है, परन्तु मैं आज इसे दोहराऊंगी-अलैक्ज़ैन्डर को एक राजा जिसका नाम पुरु था, ने उसे बन्दी बनाया। अलैक्ज़ैन्डर ने एक भारतीय स्त्री से विवाह किया था और महान अलैक्ज़ैन्डर कारागार में था। वह विष्णुमाया का दिन था। सो, उसने भेजी, यह स्त्री बड़ी चतुर थी, उसने एक छोटी थाली में राखी रख कर उसे अच्छी तरह ढ़क कर पुरु राजा के पास भेजा। और जिस प्रकार रिवाज़ था, उस दिन यह उसे भेंट की गई। उसे स्वीकारना पड़ा। यदि भेजी गई है तो आपको स्वीकारना ही होता है। एक बहन किसी भी काख से भेजती है पर आप को स्वीकार करनी ही होती है। और राजा पुरु ने इसे स्वीकार किया और यह बाँधी गयी।

तब उन्होंने पूछा, 'मेरी बहन कौन है?'

वे बोले, 'आप की बहन अलैक्ज़ैन्डर की पत्नी है।'

वे बोले, 'हे भगवान, इसका अर्थ है कि मैंने अपने जीजा को बन्दी बनाया है।' तत्क्षण जीजा बन जाता है, तत्क्षण। कोई शादी नहीं हुई, पर वह जीजा है।

वे शीघ्र कारागार में गये, महान सम्राट के सामने दण्डवत किया। वे समझ नहीं पाये कि पुरू को क्या हो रहा है? क्यों उसने ऐसा किया?

वे अपनी भाषा में बोले, 'महोदय, मुझे क्षमा करें, मुझे पता नहीं था कि आप मेरे जीजा हैं, जो भी मैंने किया है उसके लिए मैं दुःखी हूँ, क्या आप मुझे क्षमा करेंगे।' उसे ला कर अपने सिंहासन पर बैठाया। उसे समझ नहीं आ रहा था कि क्या हो रहा है? उसे बिठाया, माला पहनायी, आरती उतारी, गहने दिये, उन्हें बड़ी मालाएं, हीरें एवं माणिकों की पहनायी, पैर छुए, पैर धोए और बड़े सम्मान के साथ उसे घर भेजा।

वह समझ नहीं सका, 'क्या वह पागल हो गया है या वह भूतबाधित है?' उसने सोचा होगा कि किसी ग्रीक ने उसे भूतबाधित किया होगा, जिस प्रकार वह आत्मसमर्पण कर रहा है।

जब वह घर गया, उसकी पत्नी मुस्करा रही थी। उसने पूछा, 'तुम क्यों मुस्करा रही हो?' वह बोली, 'मुझे पता था कि यह युक्ति भारतीय दिमाग पर कार्य करेगी।'

'क्या युक्ति थी?'

उसने एक धागा दिखाया, 'यह युक्ति थी।'

वह समझ नहीं सका और उसे देखने लगा, 'यह क्या है?' उसने कहा, 'यह राखी है। यह चीज़ है जो मैंने उसे भेजी थी, यह एक बहन का प्रतीक है और इसके कारण आप छोड़ दिये गये हो।'

अलैक्ज़ैंडर बैठ गया और बोला, 'हे भगवान, ये लोग एक धागे के कारण दुश्मन को छोड़ देते हैं। मैं इन लोगों को नहीं पकड़ सकता। वे बहुत अच्छे हैं। वे बड़े सूक्ष्म हैं, ऐसी सूक्ष्मता हम नहीं समझ सकते।' वह वापिस चला गया और अपने साथ कुछ कवि ले गया, जिन्होंने उसकी प्रशंसा गायी कि वह कितना उदार व्यक्ति था...''

(१९८७, श्रीविष्णुमाया पूजा, न्यूयौर्क)

रक्षा बन्धन की परम्परा

बहन उसके लिए कुछ अच्छी चीज़ें खाने के लिए बनाती है :

''... अब आज का दिन है जब भारत में उत्सव मनाया गया था और जहाँ किसी ने किसी को राखी बाँधी थी, जिस में उन्हें एक बहन मिली और अब दस वर्ष बीत गये हैं उन बातों को, परन्तु उस दिन वे अपनी बहन को बुलाएंगे। बहन आती है, वह राखी बाँधती है और भाई को उसे एक मधुर सी भेंट देनी होती है। बहन उसके लिए कुछ अच्छी चीज़ें खाने के लिए बनाती है और सब लोग बड़े खुश होते हैं ...''

(२००२, श्रीगणेश पूजा, कबेला)

रक्षा बन्धन सुरक्षा का बन्धन है :

''... आज भारत में हम एक विशेष उत्सव मनाते हैं, इसे रक्षा बन्धन कहते हैं। रक्षा का अर्थ संरक्षण और बन्धन का अर्थ बंध गये, सुरक्षा का बन्धन। यहाँ बड़ा अच्छा सामाजिक रिवाज है, एक सुन्दर उत्सव मनाने का। आज पूर्णिमा का दिन है और इस दिन हम धागे का फ़ीता उस व्यक्ति की कलाई में बाँधते हैं जिसकी सुरक्षा चाहते हैं। यह भाईयों और बहनों के बीच में होता है। बहनें इसे भाईयो की कलाई में बाँधती हैं और बाँधते समय वे अपना प्रेम उस कलाई के आसपास बाँधती हैं, यह अपना प्रेम देने का दिन है, सब अपने भाई को सुरक्षा के रूप में उस धागे के द्वारा देती है। यह एक बड़ा साधारण धागा होता है और इसे बायें हाथ में बाँधते हैं, परन्तु लोग दायें हाथ में बाँधते हैं, जो कि एक गलती है, परन्तु इसे बायें हाथ में ही बाँधना चाहिए।

हमारे सहजयोग में बाईं कलाई का महत्व यह है कि यह बायीं विशुद्धि है। बायीं विशुद्धि, जो यहाँ है। और यहाँ बायीं विशुद्धि की अभिव्यक्ति होती है, आप इसे अच्छी तरह जानते हैं। बायीं विशुद्धि का स्थान है जहाँ भाई-बहन का सम्बन्ध होता है। जब वे हमारे अन्दर विघ्न डालते हैं तो हमें बायीं विशुद्धि की समस्या हो जाती है।

आज के आधुनिक समय में, पवित्र सम्बन्ध की बातें लोगों को तंग करती हैं, परन्तु यह बड़ा व्यावहारिक और तर्कसंगत है। मैं कहूँगी कि यह अत्यधिक वैज्ञानिक है। उदाहरण के लिए प्रत्येक भाई को अपनी बहन के लिए एक विशेष भावना होती है और उसकी पवित्रता हर भाई को अत्यंत प्रिय होती है, यदि वह सन्तुलित व्यक्ति है। यदि वह असन्तुलित है तो भूल जाओ। परन्तु साधारणतया एक भाई अपनी बहन की पवित्रता के प्रति बड़ा सावधान होता है और उसे अच्छा नहीं लगता यदि कोई-किसी भी प्रकार की उसकी पवित्रता के प्रति टिप्पणी करें। मेरा तात्पर्य है कि ये स्वाभाविक बातें, हम आधुनिक विचारों या सिर पर लदी मशीनों के कारण खो चुके हैं, पर यह स्वाभाविक है उस प्रकार की पवित्र भावना आना, अपनी बहन के लिए और बहन का भाई के लिए। भाईयों और बहनों के सम्बन्ध पूर्णतया पवित्र होते हैं और इस देश में भी अच्छी तरह से स्वीकार किये गये हैं...''

(१९८०, रक्षा बन्धन, लन्दन)

भारत में यह बड़ा पूजनीय सम्बन्ध है :

''... इसके अलावा, यदि आप किसी को अपनी बहन कहते हैं या अपना भाई-यह बड़ा पूजनीय सम्बन्ध है भारत में, और यहाँ हमारे में भी होना चाहिए। यदि आप किसी को बहन कहते हैं तो न केवल आप उसके लिए वही करते हैं जो अपनी बहन के लिए करते हैं, परन्तु अपने सभी संबंधों में, सभी त्यौहारों में, घर की सभी शादियों में, वह बहन के जैसे ही मानी जाती हैं...''

(१९८०, रक्षा बन्धन, लन्दन)

अपने पूरे जीवन में आप इस सम्बन्ध को उदारता से निभाते हैं :

''... सो, उसके बाद दूसरे दिन जो बड़ा महत्वपूर्ण है, यह भाई और बहन का विशेष दिन है, जिसमें बहन अपने घर खाने पर भाई को बुलाती है और यदि वह छोटा लड़का है तो वह उसे स्नान कराएगी, यहाँ तक कि यदि वह बड़ा लड़का है तो वह अपने कपड़े पहन कर बैठ जाएगा और बहन उस पर पानी डालेगी, उसके शरीर पर सुगन्धित वस्तुएं लगाएगी और उसे स्नान

कराती है व सुरक्षा देती है। यह सम्बन्ध की पवित्रता है, भाई और बहन के मध्य। तब भाई उसे कोई भेंट देता है। वह कुछ भी दे सकता है, यह केवल प्रतीक है, उस समय भाई और बहन के प्रेम व स्नेह की अभिव्यक्ति होती है, वह बड़ा महत्वपूर्ण है। तब बहन वास्तविकता में, भाई की आरती उतार कर उसे बन्धन देती है, वास्तविक प्रकाश द्वारा। और इस प्रकार वे आपस में बड़ा संरक्षण देते हैं।

यह दिन है, जिसे मराठी में भाऊबीज कहते हैं, वह चन्द्रमा का दूसरा दिन होता है, काला चन्द्रमा। इसकी विशेषता है क्योंकि यह बड़ा महत्वपूर्ण है कि हमारा भाई और बहन का सम्बन्ध मज़बूत हो, पवित्र हो और देखभाल हो।

भारत में यदि आपको बहन या भाई कहता है तो वह बहन या भाई होता है:यह बड़ी कठिन स्थिति है। यदि कोई आपको बहन कहता है, तो आपको वह स्थिति स्वीकार करनी ही है और यदि आप उस स्थिति को स्वीकार करते हैं तो आप को पूरे जीवन भर उस सम्बन्ध को, उस उदारता को निभाना है, चाहे वह आप का भाई हो या नहीं, फ़र्क नहीं पड़ता। परन्तु एक बार आपने कह दिया कि वह आप की बहन है, तब वह सब पवित्रता वहाँ होती है, उस शुद्धता की रक्षा करनी है और उसकी रक्षा करनी है...''

(१९८२, दिवाली पूजा, लन्दन)

मर्यादाओं का सिद्धान्त

हमें समझना है कि कैसे अपने सम्बन्धों की एक दूसरे के संकोच एवं पवित्रता के सम्मान, के साथ बनाये रखना है :

''... अब हमें मर्यादाओं को समझना है, जिनके विषय में मैंने आपको पहले भी बताया है। स्त्री और पुरुष के सम्बन्ध तभी शुद्ध होते हैं यदि कुछ सीमाएं रखी जाएं। जैसे कि, मान लीजिए कि, आपके पास एक बर्तन में दूध है और दूसरे बर्तन में कुछ और है। एक बर्तन की शुद्धता बनाये रखने के लिए उसे सीमा में रखना होगा, एक प्याले में, यदि आप दोनों को मिश्रित होने दें, या दोनों गिर कर मिश्रित हो जाएं, तब कोई शुद्धता नहीं रहेगी। यह ऐसी साधारण बात है। हर एक को, हमें, यह समझना है कि कैसे अपने सम्बन्धों को, एक दूसरे के संकोच एवं पवित्रता के सम्मान के साथ बनाये रखना है।

अब, उदाहरण के लिए एक लड़की है जो आपसे छोटी है, आप को ऐसे व्यक्ति के साथ दूरी रखनी चाहिए। यदि वह आप से काफ़ी बड़ी है तो ठीक है। आप बात कर सकते हैं, हँसे या चुटकुले सुनाएं- वह आप से काफ़ी बड़ी है। परन्तु साधारणतया, एक लड़की जो आप से छोटी है, यहाँ तक कि काफ़ी छोटी है, आप दूर रहने का प्रयत्न करें, आखिर यदि वह छोटी लड़की है : उसके बच्चे नहीं हैं, पर फ़िर भी। आप को यह सब चीज़ें सीखनी जरूरी है, कैसे दूरी रखी जाये। अब, यदि एक पुरुष आप से छोटा है, तो आप के मन में उस व्यक्ति के लिए खराब विचार नहीं होने चाहिए-यह एकदम बेतुका है...।''

(१९८४, रक्षा बन्धन, यू.के.)

यह एक सीमा पार नहीं कर सकता, मर्यादाएं होनी चाहिए :

''... पूरी बात यह है कि यह सम्बन्ध (भाई और बहन) इतना विशेष है, इतनी करीबी और इतना शुद्ध और ऐसा सम्बन्ध आप किसी स्त्री या दोस्त के साथ विकसित कर सकते हैं। सब को यह याद रखना है कि यह एक सीमा को पार नहीं कर सकता है, मर्यादा होना ज़रुरी है। अन्यथा, वे भाई-बहन बन

जाते हैं और फिर शादी कर लेते हैं, यह संभव नहीं है। सो, हमें सीमाएं रखनी है, वह बड़ा महत्वपूर्ण है। सहजयोग में हमें मर्यादायें और सीमायें रखनी हैं। और उनमें से एक यह है कि एक बार आप किसी को भाई या बहन कहते हैं, तो यह पूर्णतया शुद्ध सम्बन्ध होता है। इससे थोड़ा हम आगे जाएं और आप का सम्बन्ध कह सकते हैं कि पति के छोटे भाई के साथ ऐसा होना चाहिए जैसे वह आप का छोटा भाई हो, सभी, पति के छोटे भाई, या पति से छोटे सहजयोगी/इसके विपरीत ऐसा ही पुरुषों के लिए है, सब पुरुष, उनकी पत्नियाँ, बड़ी औरतें पत्नी से बड़ी आप की बहनों के समान हैं, बड़ी बहनें।

मेरा अर्थ है कि यह सम्बन्ध इतना मधुर है और आप को कुछ समझदारी देता है। किस से कितना फ़ासला रखना है, किस के साथ खुलना है, किस के साथ फ़ासला रखना है...''

(१९८१, दिवाली पूजा, यू.के.)

यदि आप मर्यादाओं में नहीं रहेंगे तो यह सहजयोग को मारना होगा :

''... यह मारना होगा, यह पूर्णतया सहजयोग को मारना होगा, यदि आप अपनी मर्यादाओं में नहीं रहेंगे। यह सबसे आवश्यक बात है, जो आप को जाननी है। मैंने बार-बार आप से कहा है, कैसे कपड़े पहनें, कैसे आप स्वयं को सम्भालते हैं, कैसे आप बोलते हैं, कैसे आप खुद बोलने से अधिक लोगों को सुनते हैं, कैसे आप शान्त होते हैं, यह सर्वोत्तम तरीका है लोगों पर प्रभाव डालने का और सहजयोगी की अभिव्यक्ति का...''

(१९८४, रक्षा बन्धन, यू.के.)

आनन्द लेना किसी भी रोमांस, विवाह या सांसारिक चीज़ों से ऊँचा है :

''... आप के आपस के सम्बन्धों की मर्यादा, शुद्ध प्रेम एवं पवित्रता है। जब तक आप शुद्ध सम्बन्ध विकसित नहीं करते, आप नष्ट होने वाले हैं। देखिए, इस उंगली को इस हाथ के साथ शुद्ध सम्बन्ध रखना है। यदि इस उंगली को इस हाथ के प्रति कोई अशुद्ध भावनाएं हैं तो यह इसे अशुद्ध कर देगी, खराब कर देगी। इसी प्रकार हमें एक दूसरे के साथ अत्यन्त पवित्र सम्बन्ध रखने हैं। अर्थात् हमें अपना हृदय किसी दूसरे व्यक्ति को बिना किसी

काम-वासना या लालच के देना चाहिए, इसका हमें प्रयत्न करना चाहिए। एक दूसरे की सहायता करने का प्रयत्न करें। मैंने देखा है कि जब वे दूसरों के साथ काम-वासना या लालच के साथ जुड़ते हैं-यह सहजयोगियों के लिए नहीं है, परन्तु गैर सहजयोगियों के लिए-वे इतने अधिक उस व्यक्ति में रूचि रखते हैं। यह अत्यन्त निम्न प्रकार का मोह है।

परन्तु सहजयोग में आप का जोड़ आप की आत्मा के साथ है और आत्मा हमारे अस्तित्व का शुद्धतम स्वरूप है। हमें इसे पूर्णतया शुद्ध रखना है और तब आनन्द, किसी भी रोमांस, विवाह या सांसारिक चीज़ से ऊँचा होता है, यह उच्चतम और सर्वोच्च है। पहले उसे प्राप्त करें। पहले आप ऊपर उठें, उसे प्राप्त करें, उस पवित्रता को प्राप्त करें, वह बड़ा महत्वपूर्ण है।

अब स्त्रियों और पुरुषों के सम्बन्ध, मैंने आप को बताया है कि आप को किसी भी सोने के कमरे में नहीं प्रवेश करना चाहिए जहाँ स्त्रियाँ हैं, यह सही नहीं है न ही स्त्रियों को पुरुषों के कमरे में जाना चाहिए...''

(१९८४, रक्षा बन्धन, यू.के.)

यह हमारे ऊपर थोपा नहीं गया है, यह स्वभावतः है :

''... सबसे पहले हमें यह समझना है कि गणेशजी हमें मर्यादाएं देते हैं, यह हमारे अन्दर सहज ही है। यह हमारे ऊपर जबरदस्ती थोपा नहीं गया है, सहज ही है। यदि आप देखें, एक छोटी लड़की शर्मीली होती है, उसे पता है कि स्वयं को कैसे बचाना है। यहाँ तक कि लड़के भी शर्मिले होते हैं और वे स्वयं को सुरक्षित करने का प्रयत्न करते हैं। परन्तु वह अन्दर की अबोधिता का तिरस्कार करते हैं, क्योंकि अहंकार है। 'क्या गलत है?' आप उन्हें कुछ भी कहें : 'क्या गलत है?' और आप को ज्ञात नहीं है कि यह कितना विनाशकारी है...''

(१९९१, श्रीगणेश पूजा, कैनबरा, ऑस्ट्रेलिया)

यदि आप वास्तव में अपने श्रीगणेश को कार्यान्वित करना चाहते हैं तो-ध्यान करना सर्वोत्तम है :

''... मेरा अर्थ है कि कोई मर्यादाएं नहीं हैं और इसका अर्थ है कि आप

श्रीगणेश को पूरी तरह से वंचित कर रहे हैं। गणेश ने ये मर्यादाएं हमारे अन्दर स्वभावत: बनाई हैं। यहाँ तक कि एक वेश्या, को भारत में, यदि यह जीविका बनानी है क्योंकि उसे इसमें जबरदस्ती डाला गया है, हो सकता है कि उसे कहीं से लाया गया हो, या हो सकता है कि किसी बड़ी समस्या के कारण वह वेश्या बन गई हो, वे देखेगी कि उसका बच्चा बच जाएं। उसे पता है कि यह गलत है। परन्तु यहाँ, स्थिति इतनी खराब है कि उन्हें पता ही नहीं है कि यह गलत है। क्या आप सोच सकते हैं कि यह तो हद ही हो गई कि आप स्वयं को पानी में डूबते हुए देख रहे हैं और जानते हैं कि मरने वाले हैं, तब भी मज़ा ले रहे हैं, 'बड़ा अच्छा है, मैं मरने वाला हूँ।' यह बुद्धि की स्थिति है। यह वास्तव में आघातिक है।

सो, अब हमें समझना है कि हमारी मर्यादाएं क्या हैं, हमें कैसे अपनी मर्यादाओं के अन्दर रहना है। मुझे विश्वास है कि यदि आप अपना श्रीगणेश कार्यान्वित करें-उस के लिए सर्वोत्तम है, ध्यान करना। अपने आप को अच्छे घास (दुर्वा) पर रखें। उस पर बैठें, बायाँ हाथ प्रकाश के साथ रखें और दायां हाथ भूमि माँ पर रखें और अथर्वशीर्ष कहें। यदि आप उसे याद कर लें तो बड़ा अच्छा है। नहीं तो आप पुस्तक से पढ़ सकते हैं या प्रारम्भ में गणेश मंत्र कहें। यह आप को बहुत सहायक होगा। यह आप की आँखों को सहायता देगा, आपको पूरी तरह सहायता करेगा, यह बड़ा अच्छा होगा...''

(१९९१, श्रीगणेश पूजा, कैनबेरा, ऑस्ट्रेलिया)

हमें स्वयं को देखने का भी प्रयत्न करना चाहिए :

''... यह सहजयोगियों के लिए बड़ी गम्भीर बात है, बहुत, बहुत गम्भीर। उन्हें अपनी अबोधिता को पुन: जीवित करना है। उन्हें अपनी मर्यादाओं को पुन: जीवित करना है, उन्हें सीमाओं में रहना है, यह बड़ा महत्वपूर्ण है। अन्यथा मैं कहूँगी कि यदि आपने अपना गेहूं सब ओर फैला दिया है, तो आप ऊँचाई पर कैसे पहुंचोगे? आप को उन्हें कुछ बस्तों में डालना है, कुछ मर्यादाएं। केवल मर्यादा से आप ऊपर उठ सकते हैं। निश्चित ही कुण्डलिनी सहायता करेगी। निश्चित ही गणेश भी सहायता करेंगे, परन्तु हमें भी अपने आप को देखते रहना चाहिए। अन्तरावलोकन होना चाहिए।

'क्या हम अभी भी उसी स्तर पर हैं?'

मैंने अनेक लोगों को बताया है कि आप को घास पर नज़र रख कर चलना चाहिए, केवल तीन फुट की ऊँचाई तक, क्योंकि तीन फुट तक आप को केवल बच्चे और भूमि पर फूल दिखेंगे, उससे ऊपर नहीं। मैं सोचती हूँ कि उससे ऊपर कुछ बहुत सुन्दर नहीं होगा। या फ़िर काफ़ी ऊपर, जहाँ केवल लोगों के सिर दिखें, इस बीच कुछ नहीं। हमारे जीवन की पद्धती इतनी अजीब है-मेरा मतलब है कि मुझे पता नहीं कैसे समझाऊं, पर यह स्वीकार है...''

(१९९१, श्रीगणेश पूजा, कैनबेरा, ऑस्ट्रेलिया)

वह आपको आप का स्वयं का व्यक्तित्व देते हैं :

''... परन्तु श्री गणेश आप को एक व्यक्तित्व देते हैं। वे आप को आप का स्वयं का व्यक्तित्व देते हैं, क्योंकि वे आप को मर्यादाएं देते हैं। मर्यादाओं के द्वारा ही आप को व्यक्तित्व मिलता है। व्यक्ति अपनी मर्यादांओं के कारण पहचाना जाता है और वे हमारे अन्दर आनी चाहिए, हमारी मर्यादाएं...''

(१९९१, श्रीगणेश पूजा, कैनबेरा, ऑस्ट्रेलिया)

यह सब आपके अन्दर जाग्रत है :

''... सहजयोग में हम अपने आदि काल से चले हुए निषेध पर चित्त डालते हैं। वे आदिकालीन है। ये निषेध आदिकालीन हैं। यदि आप उन्हें पार कर देते हैं। यदि आप अपनी मर्यादा छोड़ देते हैं, तो फ़िर आप चाहे मुस्लिम हैं या हिन्दू आप को बताया नहीं जा सकता है, आप अपना साक्षात्कार प्राप्त नहीं कर सकते हैं।

सो सहजयोग में, हमारे अन्दर स्थापित धर्म को जागृत किया जाता है और हम आदिकालीन निषेधों को मानते हैं, जो मनुष्यों के लिए बने हैं। यदि एक मनुष्य इन निषेधों का पालन नहीं करता तब क्या होता है.....सो, वे आदिकालीन निषेध क्या है, इनके विषय में मैं आप को गणेश पूजा में बताऊंगी और एक बार वह हमारे अन्दर जागृत होता है, तो मैं आपसे नहीं

कहती, 'यह मत करो, वह मत करो।' इसकी आवश्यकता नहीं है क्योंकि यह सब आपके अन्दर जागृत हो गया है और आप इसे करते ही नहीं हैं। सो, वह इस प्रकार अन्दर लाया जाता है...''

(१९९७, श्रीकृष्ण पूजा, कबेला)

भाई की सुरक्षा बहन करती है और बहन की पवित्रता का ध्यान भाई रखता है :

''... अब (विष्णुमाया) वह बहन है, इसे अच्छी प्रकार समझ लेना चाहिए। बहन का सम्बन्ध एक शुद्ध सम्बन्ध होता है। आज-कल तो वैसे सब कुछ ही गड़बड़ाया हुआ है, परन्तु वह भाई और बहन के मध्य शुद्धतम सम्बन्ध है। भाई की रक्षा बहन करती है और बहन की पवित्रता की देखभाल भाई करता है।

यदि बहन की पवित्रता को खतरा हो या वह अपनी पवित्रता के साथ खिलवाड़ कर रही हो और भाई को इस बात से दु:ख नहीं होता है तो वह भाई नहीं है। वह अब और उसका भाई नहीं है। यह उसकी जिम्मेदारी है कि वह ध्यान रखे कि उसकी बहन अपनी पवित्रता को बनाये रखे। केवल उसकी पवित्रता उसे बचा सकती है। यह पारस्परिक कार्य है। यदि यह भावना विकसित नहीं होती है कि, 'वह मेरी बहन है और मुझे उसकी पवित्रता की देखभाल करनी है, उसके लिए मुझे अपना व्यवहार ठीक रखना है, ताकि वह मुझ में दोष नहीं पाये।' यह इतना स्वच्छता का कार्य कार्यक्रम है, जितना कि विद्युत के पास आप को स्वच्छ करने का कार्यक्रम है...''

(१९८७, श्रीविष्णुमाया पूजा, न्यूयौर्क)

प्रेम के स्वांग के विषय में एवं प्रेम में बंधना

हो सकता है कि हम ऐसे लोगों द्वारा घिरे हो जिनके लिए प्रेमी व प्रेमिका रखना साधारण बात हो-परन्तु हम जानते हैं कि हम एक गहरा सम्बन्ध रखना चाहेंगे, जो आध्यात्मिक मूल्यों पर आधारित हो।

यह आवश्यक है कि हम याद रखें कि हमारा आत्मसम्मान धैर्यशाली होने से एवं विवाह तक प्रतीक्षा करने से, मज़बूत होता है।

पवित्रता का जीवन यापन करने से, इसके अर्थ का सारांश है कि इससे हमें अधिकतम लाभ होता है-हमें निःसंदेह घर पहलु में सफ़लता प्राप्त होगी। जिन लोगों ने इस मार्ग, को अपनाया है, हम उनकी शक्ति एवं आनन्द का अनुभव करते हैं।

जब हमे अपने भावी पति या पत्नी के विषय में सोचते हैं, तो हम चाहेंगे कि वे भी हम से विवाह करने के पूर्व पवित्र हों। यह इस बात का संकेत करता है कि वास्तव में हमारे लिए क्या महत्वपूर्ण है।

स्वतंत्रता-मर्यादाओं की सुरक्षा और आपसी एक दूसरे के साथ का आनन्द, शुद्ध सम्बन्धों के साथ प्रारम्भ होता है। जैसे कि श्रीमाताजी कहती हैं, 'अब मैं देखती हूँ कि जो छोटी उम्र के लोग सहजयोग में आए हैं वे बड़े स्वतंत्र लोग हो गये हैं। वे स्त्रियों के पीछे नहीं भागते हैं, स्त्रियाँ, पुरुषों के पीछे नहीं भागती हैं। वे एक साथ हैं, वे एक साथ बैठते हैं, एक साथ बोलते हैं, एक साथ हँसते हैं, परन्तु इस सब में पवित्रता है यहाँ।'

आपको सावधान रहना है कि सम्बन्ध शुद्ध रहें :

''... परन्तु जब दूसरों की बात होती है, तो आप के सम्बन्ध पूर्णतया पवित्र होने चाहिए, जिसमें कोई उपयोगिता उठाने की बात न हो। चाहे वे प्रेमालाप के स्वांग की उपयोगिता हो-या पैसे की उपयोगिता हो। यहाँ यदि आप किसी का लाभ उठाते हैं पैसे द्वारा, तो उसे ठग कहते हैं, परन्तु प्रेम के स्वागं को कुछ नहीं कहते। मैं तो सोचती हूँ कि वह तो और भी खराब अपराध है, ईसामसीह के अनुसार। सो, आपको इस बात की ओर सावधान होना है और यह समझना है कि एक दूसरे के साथ सम्बन्ध शुद्ध होने चाहिए ...।''

(१९८४, रक्षा बन्धन, यू.के.)

आपके चित्त को दैवी खिड़की के द्वारा प्रकाशित होना है :

''... अनेक लोगों ने मुझ से एक प्रश्न पूछा है। आज्ञा को कैसे स्थिर करें? आज्ञा हमारे 'ओप्टिक थैलेमस' में जहाँ हमारी नाड़िया एक दूसरे को पार करती हैं, स्थित है। ऐसा कहा गया है कि यदि आप की आँखें अस्थिर हैं तो आप का आज्ञा अस्थिर होगा। आप को अपनी आँखों को स्थिर करना होगा? आपको उन्हें शान्त करना है।

अब, इसे आप पुराना, प्राचीन, आज की तारीख का नहीं इत्यादि कहते हैं। परन्तु आप को अपनी आँखों को स्थिर करना है और इस प्रकार स्थिर करना है कि वह आँखों के लिए अत्यन्त शान्तिमय हो। आँखों को अत्यधिक सहलाने वाली चीज़ है, हरी घास। यदि आप हरी घास को देख सकें अपनी आँखों से, अर्थात् कि आप भूमि पर आँखें रख कर चलें। आप की आँखे शान्त हो जाएंगी, आप का आज्ञा ठीक हो जाएगा, इसलिए ईसा मसीह ने कहा है कि, 'मैं आप को व्यभिचारी आँखों के विषय में बताता हूँ।' उन्होंने व्यभिचारी आँखों के बारे में बात करी। वे आँखें जिनके द्वारा आप व्यभिचार करते हैं।

आजकल, यह बड़ी साधारण बात है। एक पुरुष ने हर स्त्री को देखना है। हर पुरुष को एक स्त्री ने ज़रूर देखना है, जैसे कि यह सब से महत्वपूर्ण कार्य हो। यदि आप ने एक स्त्री को नहीं देखा तो आप समाप्त हैं। मेरा अर्थ है कि

यह आधुनिकता का प्रतीक है। परन्तु मैं पुराने जमाने की स्त्री हूँ। और ईसा ने कहा, 'आप की आँखों में व्यभिचार नहीं होना चाहिए।' और जिन लोगों की व्यभिचारी आँखें हैं वे और कोई नहीं परन्तु पाश्चात्य ईसाई हैं। जो हर समय, यहाँ तक कि चर्च में, उपदेश देते समय भी, उनकी आँखें व्यभिचार के साथ घूमती हैं।

इन आँखों को बहुत-बहुत शुद्ध, बहुत-बहुत गहरा और बहुत प्रेममयी होना है, यदि आप को अपनी आज्ञा, सही करनी है क्योंकि आप आँखों द्वारा ग्रहण करते हैं। यदि आपने आँखें बंद कर ली हैं, तो आप किसी चीज़ पर चित्त नहीं डालते क्योंकि आप ने आँखें बंद कर ली हैं। आप अपने अन्दर और विचारों को नहीं जोड़ रहे हैं। परन्तु यदि आप की आँखें खुली हैं, तो आप और अधिक विचारों को जोड़ रहे हैं, क्योंकि जहाँ भी आँखे जाती हैं, वहाँ चित्त जाता है। आप चीज़ें देखते हैं, विचार उत्पन्न करते हैं और अन्दर डालते हैं।

सो, आपका चित्त जिसे आत्मा पर जाना चाहिए, परमात्मा पर जाना चाहिए, उसे परमात्मा की खिड़की में से प्रकाशित होना है। यह सुन्दरता नष्ट हो जाती है, जिस प्रकार हम अपनी आँखों का इस्तेमाल करते हैं और उनका सम्मान नहीं करते। भूमि पर उगे घास के समान और कुछ भी इतना शुद्ध नहीं है या स्वयं भूमि, जो हमारे पाँव लेती है, हमें आधार देती है, हमारी देखभाल करती है, हमें समृद्ध बनाती हैं। हमें अपनी आँखें भूमि माता पर रखनी चाहिए, न कि हर व्यक्ति को देखें...''

(१९७८, आज्ञा चक्र, लन्दन)

हम किस के लिए इतनी अधिक ऊर्जा व्यर्थ गँवा रहे हैं :

''... परन्तु सहजयोग के अनुसार, आप में से अनेकों को ज्ञात है कि, जब आप किसी की ओर देखते हैं तो आप की आँखों को क्या होता है। हो सकता है कि कोई हस्ती आप की आँखों में प्रवेश कर ले और आप हैरान होंगे कि ये जो प्रेमालाप का स्वांग होता है, यह उस हस्ती के अन्दर आने के कारण ही होता है। मैंने पहले भी इस विषय में बताया है और मेरे बताने पर लोगों को अच्छा नहीं लगा। परन्तु मैंने प्रत्यक्ष में वास्तविक हस्तियों को, आँखो से

दूसरे की आँखों में प्रवेश करते हुए देखा है। मैंने देखा है कि बड़े सीधे लोग जो ऐसे स्थान में आते हैं जैसे कि 'पार्टी' में। पार्टियों में लोगों की आँखों द्वारा हस्तियों की अदलाबदला होती है। एक बार यह एक व्यक्ति में जाती है, तो वह उसे दूसरे व्यक्ति में डालता है। हर समय आप का चित्त दूसरी ओर जाता है। आप को अनुभव होता है यह किस ओर आकर्षित हो रहा है परन्तु आप को पता नहीं कि क्यों यह आकर्षित हो रहा है।

अब, कुछ चिन्ह भी उसी प्रकार बनते हैं। उनकी समस्याओं को और बढ़ाने के लिए, आप देखें कि पूरा समाज उस ओर कार्यान्वित है कि आप को ऐसा दिखाई देना चाहिए, कि हर पुरुष आप को देखे। हर स्त्री आप को देखे। क्यों? क्या लाभ है? यदि मैं आप की ओर देखती हूँ तो मुझे क्या मिलता है? किसी को देखने से मुझे क्या मिलता है? केवल किस व्यक्ति को देखने से क्या लाभ होता है? हम इतनी अधिक ऊर्जा किस लिए व्यर्थ गवाँ रहे हैं?...''

(१९७८, आज्ञा चक्र, लन्दन)

आपको अपना चित्त एक समझदार वैवाहिक जीवन की ओर मोड़ना है :

''... आप लोग स्वयं अपने मूलाधार का अनुभव कर सकते हैं। उसे आप अपनी उंगलियों की छोरों पर भी अनुभव कर सकते हैं। और उसके प्रति सतर्क रह सकते हैं। यदि आप स्वयं के प्रति दयालु होना चाहते हैं, तो यह समझ जाईये कि आप को अपना चित्त एक समझदार विवाहित जीवन की ओर मोड़ना है, परन्तु वह भी अत्यधिक नहीं होना चाहिए। क्योंकि अब मुझे क्या पता चला है कि, पश्चिम में लोगों ने नये तरीके निकाले हैं, अपने चित्त को एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति की ओर स्थानांतरित करने का। अपने शुद्ध चित्त को नष्ट करने के लिए उन्होंने कई प्रकार के मानसिक नट-सम्बन्धी विचार निकाले हैं। ऐसे लोगों के हाथों में मत खेलो...''

(१९८५, मूलाधार ऐड्रैस, बर्मिंगहैम, यू.के.)

यह एक अन्य पाश्चात्य पागलपन है कि आप प्रेम में जकड़े जाते हैं :

''... मेरा अर्थ है कि मुझे यह समझ ही नहीं आता है, यह केवल एक संकल्पना है, यह मैं आप से पुनः बड़ी स्पष्टतः कह रही हूँ। क्योंकि यदि आप

प्रेम में हैं, तो क्यों इतनी बार आप का तलाक होता है? यह केवल लगाव है, जो आप को किसी के लिए अनुभव होता है और अगले ही क्षण आप तलाक के लिए तैयार हैं...''

(१९९०, विवाह पर परामर्श, दिल्ली)

आप को व्यक्ति के चैतन्य के साथ रहना है :

''... परन्तु यह सही मार्गर्शन में विवेकशील निर्णय होना चाहिए। यह बड़ा गलत है। आप को किसी व्यक्ति का उसी प्रकार न्याय करना चाहिए, जिस प्रकार के आप हैं और वह भी मुख्यत: चैतन्य के अनुसार। क्योंकि सहजयोग में आप को उस व्यक्ति के चैतन्य के साथ ही रहना है। वह बड़ा महत्वपूर्ण है। सो, इस प्रकार की चीज़, इसके पीछे गिरना, उसके प्रति इत्यादि बड़ा अस्थायी है, आप को पता नहीं है। इसलिए पश्चिम में विवाह इतनी शीघ्रता से खत्म हो रहे हैं...''

(१९९०, विवाह पर परामर्श, दिल्ली)

वे सब एक दूसरे के साथ प्रेम का स्वांग कर रहे हैं, परन्तु यह एक आनन्दरहित उद्योग है :

''... प्रथम, जैसा कि मैंने आप से बताया कि, सदाचार, हम सब के लिए उच्चतम प्राथमिकता होनी चाहिए। जरा सोचिए, लोग किस प्रकार जीवन व्यतीत करते हैं। उदाहरण के लिए, मैं अपने पति के साथ पश्चिम में, एक दूसरे वातावरण में, एक दूसरे समाज में जा चुकी हूँ। हम पार्टियों में भी गये हैं, हम ऐसी सब चीज़ों में गये और मैंने क्या पाया, कि कोई पुरुष सुरक्षित नहीं है, कोई स्त्री सुरक्षित नहीं है। वे सब एक दूसरे के साथ प्रेम का स्वांग कर रहे हैं। भगवान ही जानें, किस लिए यह एक आनन्दरहित उद्योग है। और जब वे वापिस घर जाते हैं तो क्या पाते हैं कि पत्नी गायब है या पति गायब है। इस प्रकार की इतनी असुरक्षित जिंदगी है उनकी, क्योंकि उन्हें सदाचार का बोध नहीं है। उनके लिए इस प्रकार के आनन्द बड़े महान हैं और इस प्रकार की, जीवन के प्रति गलत सोच के कारण वे इतनी अधिक असुरक्षितता का कष्ट पा रहे हैं...''

(१९९१, ईस्टर पूजा, सिडनी)

वे सैक्स के विषय में इतना अधिक बोलते हैं कि धक्का बैठता है :

''... आप हैरान होंगे कि पाश्चात्य देशों में, नपुंसकता का प्रतिशत अनुपात इतना ऊँचा है कि अविश्वसनीय- यह इस प्रकार है। वे 'सैक्स' के विषय में इतना बोलते हैं कि धक्का बैठता है। यह कभी कार्यान्वित नहीं होता। इन पश्चिम के देशों में इतनी नपुंसकता फैल गई है। बिमारियाँ, गन्दी बिमारियाँ जो इन अविवेकी 'सैक्स' कार्यों के कारण होती है, का प्रतिशत इतना बढ़ गया है कि व्यक्ति को सतर्क रहना चाहिए...''

(१९७९, गुरु पूजा, डौलिस हिल, यू.के.)

स्वतंत्रता वह है कि आप इसे कुशलता से व्यवस्थित कर सकते हैं :

''... स्वतंत्रता अलग है और परित्याग अलग है। ये दो चीज़ें हैं। इसे सब को समझना चाहिए जैसे कि हाथ में पतंग है, ठीक है? तब यह आप के हाथ में है। परन्तु यदि आप पतंग को जहाँ वह चाहे उसे उड़ने दें तो वह परित्याग है। सो, स्वतंत्रता वह है जिसमें आप इसे कुशलता से व्यवस्थित कर सकते हैं, उसे वैसे ले जा सकते हैं, जैसे आप चाहें, वह स्वतंत्रता है। तब आप स्वतंत्र हैं। परन्तु यदि आप इनके हाथों में हैं.....बिना आधार के भटक रहे हैं, तब यह परित्याग है.... जिसके लिए सदैव एक दंड होता है...''

(१९७९, गुरु पूजा, डौलिस हिल, यू.के.)

ईसाईयों ने सब सीमाएं पार कर ली है :

''... उदाहरण के लिए, आप इसे स्पष्टत: समझें कि ईसाईयों ने बिल्कुल भी गणेश तत्व का उपयोग नहीं किया है। परन्तु पूरे में यह शुरू से आखिर तक लिखा है कि आप को अपना सदाचारिता का ख्याल रखना है: पुरानी टैस्टामैन्ट में, लिखा है कि, 'आप व्यभिचार नहीं करेंगे', परन्तु ईसा ने उसे और भी सूक्ष्म बना दिया है, अति सूक्ष्म क्योंकि वे आज्ञा पर हैं, आँखों पर नियंत्रण करते हैं। सो, उन्होंने कहा, 'आप की आँखें व्यभिचारी नहीं होनी चाहिए,' परन्तु ईसाईयों ने व्यभिचार की सारी सीमाएं पार कर दी हैं। सारी सीमाएं। मुझे पता नहीं कि अब वे किस हद तक जाने वाले हैं। वे वास्तव में पागल हो गये हैं, जिस प्रकार के वे प्रयोग कर रहे हैं।

और तब, आप के बच्चों का क्या होगा? आप के समाज का क्या होगा? यही अब हो रहा है, सम्पूर्ण असन्तुलन। पूरी तरह से असन्तुलन में हैं, वे सब समाज जहाँ वे व्यभिचार को अपना जीवन का तरीका बना रहे हैं। जो ईसा ने कहा है, उसका एकदम विपरीत वे कर रहे हैं...''

(१९९२, श्रीगणेश पूजा, पर्थ)

सहजयोग में यहाँ पवित्रता है :

''... सहज धर्म में आप काम-वासना एवं लोभ को सरलता से छोड़ देते हैं, वह मुझे ज्ञात है। मेरा अर्थ है कि यदि वे इसे भी नहीं छोड़ सकते तो वे सहजयोगी नहीं कहे जा सकते हैं। सबसे पहले आप काम-वासना और लोभ को छोड़ देते हैं। मैंने देखा है कि अब जो छोटी आयु के लोग सहजयोग में आ रहे हैं, वे बड़े स्वतंत्र लोग बन जाते हैं। वे स्त्रियों के पीछे नहीं भागते, स्त्रियाँ, पुरुषों के पीछे नहीं भागती हैं। वे एक साथ हैं, वे एक साथ बैठते हैं, एक साथ हँसते हैं, एक साथ बात करते हैं, परन्तु वहाँ पवित्रता है। कुरान में यह विवरण किया गया है कि, 'जब कियामा आएगा तो सुन्दर पुरुष और सुन्दर स्त्रियां होंगी, परन्तु उनमें कोई काम-वासना और लोभ नहीं होगा, वे पवित्र होंगे।' आज आप देख सकते हैं कि वह काम-वासना और लोभ, आप लोगों में अधिकतर समाप्त हो गया है। स्वभावत: यह समाप्त हो गया है और अप आप स्वयं देख सकते हैं कि आप इस दास्यता से स्वतंत्र हो गये हैं...''

(१९७८, आज्ञा चक्र, लन्दन)

श्रीमाताजी द्वारा पुरुष एवं महिलाओं पर दिये गये प्रवचन की सूची

परिशिष्ट

दिनांक	नाम	देश
18-12-78	सा.कार्यक्रम:आज्ञाचक्र, ईसामसीह, अहंकार	लंदन
16-01-79	मूलाधार चक्र	मुंबई
1979	गुरुपूजा	लंदन
30-12-79	सभी चक्रों पर परामर्श	मुंबई
00-03-80	बचपन पर	यू.के.
03-03-80	विवाह का मूल्य (विवाह समारोह के पहले प्रवचन)	लंदन
05-05-80	सहस्रार दिवस पूजा	लंदन
26-08-80	सार्वजनिक कार्यक्रम : रक्षाबन्धन	लंदन
07-09-80	आश्रम प्रवचन:आप कहाँ हैं कैसे जानें ?	लंदन
15-11-80	सेमिनार प्रवचन:द न्यू एज प्लॉ हैच	यू.के.
05-12-80	विवाह और सामूहिकता (विवाह के पहले प्रवचन)	लंदन
00-03-81	सार्वजनिक कार्यक्रम	सिडनी
28-03-81	सार्वजनिक कार्यक्रम : नाभि चक्र	सिडनी
31-03-81	सार्वजनिक कार्यक्रम : विशुद्धि और आज्ञा चक्र	सिडनी
24-05-81	सबकॉन्शस, सुप्राकॉन्शस	लंदन
27-10-81	दिवाली प्रवचन : पुरुष और स्त्रिओं में सम्बन्ध	लंदन
09-11-81	दिवाली पूजा : महालक्ष्मी की शक्ति	लंदन
29-11-81	विवाह समारोह:विवाह मतलब आनन्द देना	लंदन
02-04-82	श्रीराम नवमी पूजा	लंदन
00-07-82	सार्वजनिक कार्यक्रम : हृदय से सहस्रार तक	डर्बी, यू.के.
22-09-82	श्रीगणेश पूजा	ट्रोनिक्स, सीएच
14-11-82	दिवाली पूजा	लंदन
03-11-83	दिवाली पूजा	यू.के.
14-02-84	वधूओं को उपदेश	बोर्डी, भारत
11-08-84	रक्षाबन्धन	हौन्सले, यू.के.
02-09-84	श्रीगणेश पूजा	रफेलबर्ग, सीएच
05-09-84	ग्रेगौर के घर में बातचीत	विएन्ना, ॲट.
19-01-85	श्रीकृष्ण पूजा	नासिक, भारत
20-04-85	सेमिनार प्रवचन:मूलाधार चक्र में सुधार	बर्मिंगहैम, यू.के.
31-05-85	श्रीदेवी पूजा	सैन दिएगो, युएसए

04-08-85	श्रीगणेश पूजा	ब्राइटन, यू.के.
01-01-86	श्रीमहागणेश पूजा	गणपतिपूले
17-09-86	लिडरशीप एण्ड एडमिनिस्ट्रेशन	देन हैग, एनएल.
04-05-86	सहस्रार दिवस पूजा	अल्प मोट्ट, आयटी
06-07-86	गुरू पूजा	मुंडेन, एटी.
23-08-86	श्रीकृष्ण पूजा	Schwarzsee, CH
07-09-86	श्रीगणेश पूजा:गणेश तत्व की स्थापना	Camp Marston, US
21-09-86	श्रीलक्ष्मी पूजा	Mechelen, BE
21-09-86	बेल्जियम और हौलंड की भूमिका	Mechelen, BE
17-08-87	क्रिटीसीजम, इगो, राइट-साइड डेंजर	फ्रान्स
03-05-87	सेमिनार प्रवचन:द घोस्ट ऑफ मटेरिएलिझम	Thredbo, AUS
04-10-87	श्रीराम पूजा	Les Avants, CH
02-01-87	अबोधिता और श्रीगणेश प्रवचन	गणपतिपूले
09-08-87	श्रीविष्णुमाया पूजा	न्यूयोर्क, युएसए
30-12-87	विवाह पर प्रवचन	कोल्हापूर, भारत
10-01-88	श्रीसूर्य पूजा	मुंबई, भारत
08-06-88	श्रीएकादश रूद्र पूजा	मोडलिंग, ॲट.
19-06-88	प्रवचन-स्त्रीत्व और महिलाओं की भूमिका	शुडी कैम्प
09-07-88	अंतर्ज्ञान और स्त्रियाँ	पैरिस, एफआर
10-07-88	श्रीहम्स स्वामिनी पूजा	Grafenaschau, DE
14-08-88	श्रीफ़ातिमा पूजा	St. Georges, CH
20-08-88	श्रीविष्णुमाया पूजा	शुडी कैम्प, यू.के.
11-12-88	श्रीआदिशक्ति पूजा	राहुरी, भारत
23-07-89	गुरु पूजा	Lago di Braies
00-12-90	विवाह पर प्रवचन	दिल्ली, भारत
01-01-90	विवाह, स्त्रियों को उपदेश	सांगली, भारत
21-10-90	दिवाली पूजा	Chioggia, IT
28-03-9I	श्रीमहावीर पूजा	पर्थ, ऑस्ट्रेलिया
31-03-91	इस्टर पूजा	सिडनी, ऑस्ट्रे.
14-04-91	श्रीगणेश पूजा	कैनबेरा, ऑस्ट्रे.
28-04-91	श्रीहम्सा-स्वामिनी पूजा	क्विन्स, युएसए
10-11-91	दिवाली पूजा	कबेला, इटली
26-12-91	विवाह के पहले प्रवचन	गणपतिपुले

09-02-92	श्रीगणेश पूजा	Gidgegannup,AUS
24-10-92	दिवालीपूजा	Timisoara, RO
16-05-93	श्रीफ़ातिमा पूजा	इस्तंबूल, टीआर
21-07-93	श्रीगणेश पूजा	Dallgau, DE
13-11-93	विवाह की सूचना	मॉस्को, आरयू.
28-12-93	विवाह समारोह के पहले वधूओं से बातचीत	गणपतीपूले, भारत
28-12-93	विवाह के समारोह पहले वधू और वर से बातचीत	गणपतीपूले, भारत
02-04-94	समारोह से पहले बातचीत	सिडनी, ऑस्ट्रे.
11-09-94	श्रीगणेश पूजा	मॉस्को, आरयू.
13-11-94	ट्यूनिशिअन महिलाओं से बातचीत	Sidi Bou Said, TN
04-12-94	श्रीराजलक्ष्मी पूजा	दिल्ली, भारत
13-09-95	स्त्रियों की चौथी विश्व परिषद में बातचीत	बीजिंग, पीआरसी
15-09-96	श्रीगणेश पूजा	कबेला, इटली
23-08-97	श्रीकृष्ण पूजा	कबेला, इटली
06-09-97	श्रीगणेश पूजा की पूर्वसंध्या में बातचीत	कबेला, इटली
04-10-97	नवरात्री पूजा की पूर्वसंध्या में बातचीत	कबेला, इटली
31-12-97	श्रीशक्ति पूजा	कळवा, भारत
05-09-98	श्रीगणेश पूजा	कबेला, इटली
25-10-98	दिवाली पूजा	Novi Ligure, IT
31-12-98	नववर्ष पूजा	कळवा, भारत
25-09-99	श्रीगणेश पूजा	कबेला, इटली
23-03-00	नववधू और वरों से बातचीत	दिल्ली, भारत
23-09-01	विवाह समारोह के पहले वधू और वर से बातचीत	कबेला इटली
14-09-02	श्रीगणेश पूजा	कबेला, इटली
15-09-02	नववधूओं से बातचीत	कबेला, इटली

CREDITS

COMPILATION AND BOOK RESEARCH :

Henno and Trupta deGraaf, Lakshmi Ward, Marie Rajan, Victoria Zyblut, Phil Ward

PHOTOGRAPHY :

Paul Anant, Calin Chiroiu, Matthew Cooper, Dmitry Kovalev, Michael Markl, Richard and Gautama Payment, Axinia Samoilova, Vera Subkus

DESIGN CREDITS :

Dara Tittjung, Mario Barba, Manfred Tittjung

सर्वाधिकार सुरक्षित

बिना पूर्व आज्ञा के इस पुस्तक के किसी भी भाग की प्रतिलिपि या किसी भी रूप में प्रसारण वर्जित है। कोई भी व्यक्ति अनधिकृत रूप से यदि इसका प्रकाशन करता है तो उस पर हानिपूर्ति का दावा किया जाएगा।

SAHAJA YOGA INTERNATIONAL • VISHWA NIRMALA DHARMA •

WWW.SAHAJAYOGA.ORG

NITL

सहजयोग के बारे में अधिक जानकारी के लिये देखें www.sahajayoga.org